गूजरात
पुरातत्त्वमंदिर
ग्रन्थावली



ग्रन्थाङ्क १५

प्रकाशक,
कोठारी विठ्ठलदास मगनलाल
गूजरात विद्यापीठ, अमदावाद.

卐

मुद्रणस्थान आदित्यमुद्रणालय
रायखडरोड–अहमदाबाद
मुद्रक गजानन [illegible]

विज्ञापन

गूजरातपुरातत्त्वमंदिरनी प्रबंध समितिना संवत् १९७९ ना भादरवा व० १३ नी बेठकना ठराव १ (परिशिष्ट १) मुजब आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां आवे छे

गूजरात विद्यापीठ कार्यालय,
अमदावाद.
आसो वद १२, सं० १९८१

प्रकाशक

प्रवेश

प्राकृतव्याकरणना शिक्षक अने शिष्य माटे आ पुस्तकना परिचय पूरती थोडी माहिती आ प्रमाणे छे

अहीं नीचेना चार मुद्दाओ विषे क्रमवार लखवानु छे—

१ रचनाशैली

२ प्राकृतभाषा

३ अर्धमागधी भाषा

४ प्राकृतभाषाना व्याकरणो

१ रचनाशैली

आचार्य हेमचद्रना प्राकृतव्याकरणने सामे राखीने आ पुस्तक लखवामा आव्यु छे पण क्रमने फेरववामा आव्यो छे हेमचद्रना प्राकृतव्याकरणमा सौथी पहेला प्राकृतभाषानु व्याकरण आपेलुं छे अने पछी क्रमे शौरसेनी, मागधी, पैशाची—चूलिका पैशाची अने छेल्ले अपभ्रशनु व्याकरण आपवामा आवेलु छे त्यारे प्रस्तुत पुस्तकमा ए बधा व्याकरणोने साथे साथे समाववामा आव्या छे एटले आ पुस्तकमा प्राकृतनु व्याकरण आपता जे जे नियममा शौरसेनी, मागधी, पैशाची—चूलिका पैशाची अने अपभ्रशनी विशेषता होय ते पण साथे साथे—प्राकृतभाषाना नियमनी साथे—ज आपवामा आवी छे जेमके,

प्राकृतमा साधारण रीते क, ग, च, ज, त, द, प, ब, य अने व नो लोप थाय छे (जूओ पृ० १०) आ नियम आपवानी साथे ज तुरत थइ शके ए दृष्टिए एम पण जणाव्यु छे के, शौरसेनीमा 'त' नो 'द' थाय छे, मागधीमा 'ज' नो 'य' थाय छे, पैशाचीमा 'द' नो 'त' थाय छे अने अ[illegible] '[illegible]' नो 'ग' थाय छे (जूओ पृ० १२ अने १३)

आ रीते वर्णविकारने लगता बधा नियमोने आपवामा आ
दे नियमोमा सौथी पहेला सर्व साधारण नियमोने आपवामा आ
छे अने पछी विशेष (आपवादिक) नियमोने मूकवामा आव्या।
नाम अने आख्यातना प्रकरणमां प्राकृत, शौरसेनी वगेरेना रूपो
साधना बताव्या पछी क्रमवार प्राकृत, शौरसेनी वगेरेना रूपो
मूकवामा आव्या छे अने केटलेक ठेकाणे ए बधा रूपोने साथे सा
थर ज ओळखा पण मूकेला छे (जूओ पृ० १२५–१२६–१२८
१२९–१३०–१३२–१३३ नामप्रकरण अने पृ० १४१ तर
पृ० २९१ आख्यात प्रकरण)

खास विशेषता (विशेषताओने टिप्पणमा मूकेली छे)

(१) पालिनी साथे सरखामणी

प्राकृतभाषाना वर्णविकारना नियमोने पालिभाषाना वर्णविकार
नियमोनी साथे सरखाववामा आव्या छे अने केटलेक स्थळे तो पालि
शब्दोने पण मूकवामा आव्या छे (पालिशब्दो माटे जूओ पृ० ८,
१५–१८ वगेरे)

नामना, धातुना, कृदन्तना अने तद्धितना रूपोने पालिरूपोनी
साथे मूकवामा आव्या छे अने केटलीक जग्याए पालिना प्रत्यय
आपीने पण सरखामणी बतावी छे (प्रत्ययो माटे जूओ पृ० २४८
अने ३३४) संधिप्रकरणमा अने बीजे पण समुचित स्थळे सरखा
मणी माटे पालिना नियमोने आपवामा आव्या छे एकदर रीते पालि
अने प्राकृतनी सरखामणी सविस्तर दर्शाववामा आवी छे अने ते
एटला ज माटे के, प्राकृतनो अभ्यासी साथे साथे पालिने पण सर्वांशे
शीखी शके

(२) वैदिक संस्कृत अने प्राकृतनो संबध

जूनामा जूना वररुचिथी छेक छेल्ला मार्कंडेय सुधीना बधा प्राकृतव्याकरणकारोए प्राकृतरूपोनी साधना माटे लौकिक (वैदिकेतर) संस्कृतनो ज उपयोग करेलो छे, तदनुसार आ पुस्तकमां पण ए ज शैलीने मान्य राखवामा आवी छे परतु अत्यारना विपुल साधनोथी एम जणाय छे के, प्राकृतभाषानो संबध वैदिक संस्कृतनी साथे पण छे (जूओ आर्यविद्याव्याख्यानमाळा पृ० १९४–२०९) तेथी प्राकृत रूपोनी साधना माटे वैदिक शब्दोने पण मूळभूत राखवा ए, सरखामणीनी दृष्टिए विशेष अगत्यनु छे आ वातने सूचववा वैदिक संस्कृतने मुळभूत राखीने पण सरखामणी करवामा आवी छे. (जूओ पृ० ४९–९४–२०९)

प्राकृतना एवा तो घणा य नियमो छे जे वैदिक संस्कृतना रूपो साथे मळता आवे छे,

[जेमके, अन्त्यव्यजनलोप (जूओ पृ० १० नि० १)

वैदिकरूपो

पश्चा (पश्चात्)

उच्चा (उच्चात्)

नीचा (नीचात्)

युष्मा (युष्मान्)

देवकमभि (देवकर्मभि)

आ बधा वैदिक रूपोमा अन्त्यव्यजननो लोप थएलो छे

'र' 'य' नो लोप

(जूओ पृ० १६ नि० ७ तथा पृ० १५ नि० ४)

अपगल्भ (अप्रगल्भ)

तृच् (त्र्युच्)

पेला रूपमां 'र' नो अने बीजामा 'य' नो लोप थएलो छे

संयुक्तनी पूर्वे ह्रस्व (जूओ पृ० ४ नि० १)
रोदसिप्रा (रोदसीप्रा)
अमत्र (अमात्र)
'ऋ' नो 'उ' (जूओ पृ० ७ नि० ८)
वृुद (वृन्द)
'द' नो 'ड' (जूओ पृ० ६८-६९ द-विकार)
दुदभ, दूडभ वगेरे
पूरोदाश, पूरोडाश

[उपर्युक्त उदाहरणोना वैदिक स्थळो माटे अने विशेष उदाहरणो माटे जूओ आर्यविद्याव्याख्यानमाळा पृ० २०३ थी २०८]

पण पुनरुक्ति वधी जाय अने प्रवेश करनारने कठण लागे एवी
ए बधा नियमोने अहीं नथी आपवामा आव्या

(३) आदेशो करवा करता मूळ शब्द उपरथी ज विकृत शब्दने बतावयो

जूना वैयाकरणोए संस्कृत शब्दोना आदेशो करीने प्राकृत शब्दो बनाववानी रीत स्वीकारी छे पण भाषानुं ऐतिहासिक अने शास्त्रीय दृष्टिए निरूपण करवु होय तो जे जे शब्दोनी सरखामणी करी शकाती होय त्या आदेशो करवा करता ए मूळ शब्दोना ज उच्चारणजन्य वर्णविकारोने बताववा जोइए जेमके,

'ओळ' सूचक प्राकृत 'ओलि' शब्दनी साधना माटे नराप्, आळम्, निर्येक्, प्रामाणिक, वींटी मवमाणी, मत्वी, श्रेणि, ... माटे जूओ आदेशनो ... 'पंक्ति' अर्यमा ... पुल, हक्को अने कुल पटल अर्यमा ...) वपराना 'आलि' शब्द ... बनाववानी सत्रामण २

ज 'आवलि' शब्दना 'आउलि' 'ओलि' रूपो बनावीने 'ओलि' शब्द बनाववानी रीत ऐतिहासिक अने भाषाशास्त्रनी दृष्टिए वधारे सुसगत लागे छे.

'सूक्ष्म' ना 'ऊ' नो 'अ' करीने 'सण्ह' रूप बनाववा करता 'श्लक्ष्ण' नु सहज भावे थतु 'सण्ह' रूप ज अधिक सगत लागे छे

आम करवाथी उच्चारणोथी थता क्रमिक वर्णविकारो कळी शकाय छे अने व्याकरणमा आवतो गौरवदोष पण अटकी शके छे

आ हकीकत अहीं मात्र एक उदाहरण द्वारा ज दर्शाववामा आवी छे (जूओ पृ० ९४)

(४) आगमोना नहि सधाएला रूपोनी साधना

जैन आगमोना केटलाक रूपो जे अत्यार सुधी अणमाध्या हता तेने पालिभाषाना रूपो द्वारा साधवानो प्रयत्न करवामा आव्यो छे (जूओ पृ० १३६ अने २६४)

२ प्राकृतभाषा

शौरसेनी अने मागधीनु क्षेत्र एना नाम उपरथी ज जाणितु छे पैशाचीनु क्षेत्र—

" पाण्डच-केकय-बाल्हीक-सिंह-नेपाल-कुन्तला ।
सुधेष्ण-भोज-गान्धार-हैव-कन्नोजनास्तथा ॥
एते पिशाचदेशा स्युस्तद्देश्यस्तद्गुणो भवेत् " ।

(षड्भाषाचन्द्रिका पृ० ४ श्लो० २९.

आ श्लोकमा जणावेलु छे साधारण प्राकृत अने क्षेत्र व्यापक छे एटले ए माटे कोई देशने निर्देशी शकाय

वैयाकरणोए शब्दशास्त्रनी दृष्टिए प्राकृतना त्रण प्रकार जणावेला छे १ संस्कृतजन्यप्राकृत, २ संस्कृतसमप्राकृत अने ३ देश्यप्राकृत.

[१ जेनी व्युत्पत्तिनो वधारे भाग रचे प्रकारना संस्कृत साथे छे ते संस्कृतजन्यप्राकृत

२ संस्कृतनी जेवु प्राकृत ते समसंस्कृतप्राकृत

नीचेना एक ज श्लोक द्वारा संस्कृतसमप्राकृतनो परिचय थई जाय छे

" चारुसमीरणरमणे हरिणकलङ्ककिरणावलीसविलासा ।
आबद्धराममोहा वेलमूले विभावरी परिहीणा " ॥ १ ॥
(*भट्टिकाव्य १३ मो सर्ग)

३ देश्यप्राकृतनो नमूनो आ प्रमाणे छे

" रे गोआलुअ खोसल इमाण खोट्टीण मज्झमावडिओ ।
छुट्टिस्ससि कह व तुम अकुट्टिओ टकराहि फुड " ॥
(देशीनाममाला पृ० ९८ श्लो० ६०]

प्रस्तुत व्याकरण पेला प्रकारने लगतु छे बीजो प्रकार तो संस्कृत व्याकरणथी ज सिद्ध छे अने त्रीजा प्रकारनु प्राकृत हजु सुधी शास्त्रीय गवेषणानो विषय न बनेलु होवाथी आमा तेनु निरूपण करवु योग्य थयु नथी एना बोध माटे देशीनाममाला वगेरे देश्य भाषाना कोशोथी ज चलावी लेवु पडे एम छे

३ अर्धमागधी भाषा

प्राकृत, शौरसेनी वगेरे भाषाओनु व्याकरण लखता आमा क्याय अर्धमागधी विषे लखवामा नथी आव्यु, तथी कोइ एम तो न ज समजी ल्ये के, अर्धमागधी कोई भाषा ज नथी

---

* भट्टिकाव्यना आ सर्गमा समसंस्कृतप्राकृतना आवा अनेक काव्यो छे, आ सर्गनु नाम ज ' भाषासमावेश ' छे,

जैनसूत्रोमा केटलेक ठेकाणे अर्धमागधीने भापा तरीके जणावी छे अने साथे एम पण कहेवामा आव्यु छे के, 'भगवान् महावीर अर्धमागधी भापामा उपदेश करता हता'

अर्धमागधीने लगता जैनसूत्रोना उल्लेखो आ प्रमाणे छे

"भगव च ण अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ" (समवाय—अगसूत्र पृ० ६० समिति)	"भगवान् अर्धमागधीभापा द्वारा धर्मने कहे छे"
प्र०—"देवा ण भते कयराए भासाए भासति ? कयरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ?	"हे भगवन् । देवो कइ भापामा बोले छे ? अथवा बोलाती भापामा कइ भापा विशिष्ट छे ?
उ०—गोयमा ! देवा ण अद्ध-मागहाए भासाए भासति, सा वि य ण अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी विसिस्सइ" (भगवती—अगसूत्र श० ५ उ० ४ पृ० १८१ प्रश्न—२० राय० अने समिति पृ० २३१ सू० १९१)	हे गौतम ! देवो अर्ध मागधीभापामा बोले छे अने बोलाती भापामा पण ते ज भापा—अर्ध मागधीभापा—विशिष्ट छे"

" तए ण समणे भगवं महावीरे कूणिअस्स भभसारपुत्तस्स अद्धमागहाए भासाए भासति " (औपपातिक-उपांग सूत्र ९० ७७ समिति)	" त्यार पछी भगवान महावीर भंभसारपुत्र कोणिकने अर्धमागधीभाषामां धर्म कहे छे "
प्र०—" से किं त भासारिया ?	" भाषानी दृष्टिए आर्य कोने कहेवा ?
उ०—भासारिया जे ण अद्धमागहाए भासाए भासेंति " (प्रज्ञापना-उपांगसूत्र ९० ९६ समिति)	जेओ अर्धमागधीभाषामा बोले छे तेओने भाषानी दृष्टिए आर्य समजवा "

आ उपरथी 'अर्धमागधी' ने भाषा तरीके अने 'महावीर अर्धमागधीभाषामा उपदेश करता हता' ए बने वातो स्वीकारी शकाय एवी छे पण 'अर्धमागधी' ना भाषा तरीकेना उल्लेख मात्रथी ज कांइ एनु व्याकरण लखी शकाय नहि

व्याकरण लखवा माटे तो एना विपुल साहित्यने सामे राखवु जोइए, जेथी बीजी भाषाओ करतां अर्धमागधीनी जे खास खास विशेषताओ होय ते बधी साधी शकाय कांइ बे चार रूपोनी विशेषताने लीधे कोइ एक भाषाने बीजी भाषाथी जुदी पाडी शकाय नहि तेम ज बे चार रूपोने साधवा माटे जुदु व्याकरण पण लखी शकाय नहि, जो फक्त बे चार रूपोनी ज विशेषताने लीधे एक

भाषाने बीजी भाषाथी जुदी गणावी शकाती होय अने एनु व्याकरण पण लखी शकातु होय तो भाषाओनो अने व्याकरणोनो अत ज केम आवत ?

आ सबधमा आचार्य हेमचद्रनुं ज उदाहरण बस छे श्री हेमचद्रे प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रशना व्याकरणो लख्या छे तेम साथे साथे आर्षप्राकृतने पण लीधु छे साधारण प्राकृत करता आर्षप्राकृतमा काइक विशेषता जरूर छे पण ते एटली नजीवी छे के, तेनु जुदु व्याकरण करवु तेमने योग्य नथी जणायु आ ज कारणथी साधारण प्राकृतना पेटामा आर्षप्राकृतने पण एमणे भेळवी दीधु छे

हेमचद्र जेवा जैन वैयाकरण शौरसेनी, मागधी अने पैशाची जेवी प्राय जैनेतर ग्रथोमा वपराएली के नाटकीय भाषाओनु व्याकरण लखवा प्रेराय अने जैनआगमोनी भाषानु व्याकरण न लखे ए काइ अर्थविनानी वात नथी

जैनपरपरामा अर्धमागधीना साहित्य तरीके प्रसिद्धि पामेलु समस्त आगमसाहित्य एमनी सामे ज हतु, ए विषेनो भाषानो अने भावनो एमनो अभ्यास पण गभीर हतो छता य एमणे ए साहित्यने लगतु एक जुदु व्याकरण केम न लख्यु ? ए प्रश्न एमने माटे थवो सहज छे

ए प्रश्ननो उत्तर आचार्य हेमचद्रे पोतानी कृतिद्वारा ज आपी दीधेलो छे आपणे जेम आगळ जोइ गया के, आर्षप्राकृतमा जुदु व्याकरण करवा जेवी खास विशेषता न जणायाथी जेम एने साधारण प्राकृतना पेटामा समावी दीधु छे तेम आगमसाहित्यनी भाषामा पण ए बन्ने प्राकृतो करता एवी विशिष्ट विशेषता न जणायाथी

एमणे ए भापाने ए बने प्राकृतोमा भेळवी दीधी छे अने ए ज कार-णथी एनु जुदु व्याकरण करवा तेओ प्रेराया पण नथी

एमना समयनु वातावरण जोता तो जरुर ए पाणिनिना वैदिक व्याकरणनी पेठे जैनआगमोनी भापानु पण व्याकरण रुखवाने प्रेराया होत

जैनपरपरामा आचार्य हेमचद्र ज एक एवा प्रतिष्ठापक पुरुष छे जेमणे जैनोनी साहित्यने लगती प्रतिष्ठा माचववानो भगीरथ प्रयत्न सेव्यो छे नवु व्याकरण, नवु छंद शास्त्र, नवु अलकारशास्त्र, नवु धातुपारायण, नवा कोशो, नवो निघटु, नवु पुराण अने नवु योग शास्त्र वगेरे ए बधु जैनोनी विशेपताने खातर नवु नवु करया छता आगमोनी भापाना ज प्रसगमा एमणे वृद्धप्रवादनी सामे पण जे मौन वताव्यु छे ते ज आपणा ए प्रश्नना पूर्वोक्त उत्तर माटे पूरतु छे

वळी, आचार्य हेमचद्र पोते एम पण मानना लागे छे के, आगमोनी भापा अर्धमागधी तो जरुर कही शकाय पण जो एमा 'अर्धमागधी' नामने योग्य केटलीक विशेपताओ मागधी भापानी पण भळेली होय आ विशेपताओ तपासता एमने तो फक्त मागधीनी एक ज विशेपता मुख्यपणे जणाणी छे ते विशेपता प्रथमाना एकवचनमां मागधीना 'ए' प्रत्ययनो प्रयोग जेमके, जीवे, अजीवे, लोए, अलोए, आसवे, सवरे, बधे, मोक्खे वगेरे पण आ एक ज विशेपताने लीधे तेओ आगमोनी भापाने अर्धमागधी कहेवी योग्य धारता नथी अने प्राकृत के आर्पप्राकृतथी जुदी पण गणी शकता नथी माटे ज एमणे आगमोनी भापाने माटे पोताना व्याकरणमा कोइ खास स्थान आपेलु नथी। साथे साथे एटलु पण जणावी देवु जोइए के, हेमचद्रना

ध्यानमा आवेली ए एक विशेषता पण काइ आगमोनी भाषामा व्यापक रीते आवेली नथी, एमा तो 'ए'ना प्रयोगनी पेठे प्राकृतना 'ओ' प्रत्ययवाळा पण घणा रूपो–ते पण आचाराग जेवा प्राचीन सूत्रमा य–मळी आवे छे जेमके निक्खतो, उद्देसो, अप्पमाओ, निरामगधो, उवरओ, उवेहमाणो, आलीणगुत्तो, सहिओ, नाणागमो, सयवो, दोसो, हव्ववाहो, दुरणुचरो, मग्गो वगेरे (आचाराग सूत्र पृ० ४१–१२४–१२७–१३०–१९९–१६८–१८३–१८४–१८९–१९०–१९२ समितिनु) एमणे ज आ सबधमा एम जणाव्यु छे के, "प्रायोऽस्यैव विधानात् न वक्ष्यमाणलक्षणम्य" (प्रा० व्या० पृ० १९९ सू० २८७) अर्थात् "आर्ष प्रवचनमा प्राय मागधीना 'ए' प्रत्ययनु ज विधान छे, पण मागधीना बीजा बीजा लक्षणोनु नथी" आ उल्लेखमा वपराएलो 'प्राय' शब्द आगमोमा 'ए' प्रत्ययनी वपराशनो पण सकोच बतावे छे अने एथी ज एम जणाय छे के उपर्युक्त 'ओ' प्रत्ययनी वपराशनु आगमिक क्षेत्र पण काइ हेमचद्रना ध्यान बहार छे एम नथी

सार आ छे के, आचार्य हेमचद्रे पोताने उद्भवेला जैन आगमोनी भाषाने लगता प्रश्ननो खुलासो आम ने रीते करी बताव्यो छे

एक तो जैन आगमोनी कहेवाती अर्धमागधीने पोतानी कृतिमा खास जुदु स्थान नहि आपीने बीजु, एमा जोइए तेटला प्रमाणमा मागधीनी विशेषताओ न होवानु जणावीने

'आ आगमोनी भाषा अर्धमागधी नथी पण प्राकृत के आर्ष-प्राकृत छे' एम स्पष्ट शब्दोमा कहेवा जेवु जैन समाजनु वातावरण अत्यारे पण नथी तो सप्रदाय भक्तिना बारमा सैकामा तो शी रीते होय? छता य एक जवाबदार अने प्रामाणिक वैयाकरण तरीके आचार्य

हेमचन्द्रे उपर्युक्त सादी हकीकतने पण आगळ जणावेली भगिए आबाद रीते जणावेली छे अने साथे वृद्धप्रवादना अनुसंधाननी युक्ति पण बतावेली छे. आ संबंधमां एमनो आखो उल्लेख आ प्रमाणे छे "यदपि 'पोराणमद्धमागहभासानियय हवइ सुत्त'[1] इत्यादिना आर्षस्य अर्धमागधभाषानियतत्वमाम्नायि वृद्धैस्तदपि प्रायोऽस्यैव विधानात् न वक्ष्यमाणलक्षणस्य"

(प्राकृत व्या० पृ० १५९ सू० २८७)

---

१ आ उल्लेख निशीथचूर्णिमां छे जुओ लिखित प्रति पा० ३ २ पूना भा० प्रा० वि०म० सं० ए उल्लेखमांना 'अद्धमागह' शब्दनी व्याख्या करतां श्रीजिनदास महत्तरे जणाव्युं छे के, "मगहद्धविसयभासानिबद्धं अद्धमागहं" अथवा "अट्ठारसदेसीभासाणियतं अद्धमागधं" अर्थात् एमणे 'अर्धमागध' शब्दनी बे व्याख्या करी छे पहेली— मगध देशनी अडधी भाषामां नियत ते अर्धमागध बीजी—अढार जातनी देशी भाषामां नियत ते अर्धमागध

वर्तमान आगमोनी भाषामां पहेली व्याख्या तो घटती नथी एम हेमचन्द्र पोते कहे छे

बीजी व्याख्या पण जो आगमोनी भाषामां घटी शके तेवी होत तो जरूर तेने प्रधानपद आपी आचार्य हेमचन्द्र ए विषे वादक जुदु लखत अने ए रीते वृद्धप्रवादनुं ज समर्थन करत पण ए प्रखर वैयाकरण ए व्याख्या तरफ उदासीन रह्या छे, एवी जणाय छे के, ए व्याख्या पण आगमोनी भाषामां घटती नहि होय अथवा ए व्याख्यामां कंईक अन्तर हशे एवं समजवुं? ए प्रश्न ज गुचवाळो छे

रायकुमारोना विशेषणना प्रसंगमा 'अट्ठारसदेसीभासाविसारए' शब्द जैन सूत्रग्रंथोमां मळे छे त्यां तेनो अर्थ 'अढार (जातनी) देशी भाषामां विशारद' थाय छे ए शब्दना संबंधमां ए सिवाय बीजो

कशी यौगत टीकाकाराए आपी नथी तेम अन्नार जातनी देशी भाषाने अधमागधी सरीके ओळखावी पण नथी

'अट्ठारसदेसीभासाविसारए' नो उल्लेख ज्ञाताधर्मकथा अने औप पातिक सूत्रमा मळे छे

"तते ण से मेहे कुमारे बावत्तरिकलापण्डिए अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए"

ज्ञातासूत्र पृ० ३८ समिति

टीका पृ० ४२ ,,

"त्यार पछी ते मेघ कुमार बोतेर कळामा प्रवीण थयो अने अढार प्रकारनी देशी भाषामा निपुण थयो"

[टीकाकारना मत प्रमाणे 'अढार जातनी भाषामा नहि पण अढार जातनी लिपिमा' प्रवीण थयो आ अढार जातनी लिपिनो उल्लेख प्रज्ञापना सूत्रमा अने नदी सूत्रमा मळे छे]

"तए ण से दढपइण्णे दारए बावत्तरिकलापडिए अट्ठारसदेसीभासाविसारए"

औपपातिक सूत्र पृ० ९८ समिति

"त्यार पछी ते दृढप्रतिज्ञ नामनो कुमार बोतेर कळाना प्रवीण थयो अने अढार प्रकारनी देशी भाषामा निपुण थयो"

सूत्रना ए उल्लेखो जोता अढार देशने लगती आपणी ए गुच उकली शकती नथी पण एटलु कल्पी शकाय छे के, कदाच आ उल्लेखोने जोइने ज श्रीजिनदास महत्तरे पोतानी चूर्णिमा अढार जातनी देशी भाषाने 'अर्धमागधी' नु नाम आप्यु होय

श्रीहरिभद्रना विद्यार्थी अने समसमयी तथा श्रीशीलाक अपरनाम तत्त्वादित्यना शिष्य श्रीदाक्षिण्यचिह्नसूरिए रचावेली 'प्राकृत कुवलय माला' ने जोता अढार देशने लगती आपणी ए गुच कदाच उकली जाय,

–हवे 'वर्तमान जैन आगमोने–महावीर भाषित–समजीने कोई ए आगमोनी ज भाषाने अर्धमागधी कहे अने ए उपरथी ज एना व्याकरण अने कोष बनावे तो न बनी शके?' ए प्रश्ननु समाधान आचार्य हेमचद्रे पोतानी कृतिद्वारा अने उपर्युक्त उद्देशद्वारा पण करी नाख्यु छे एथी आ आगमोनी भाषाने अर्धमागधी समजवी के एम समजी ए विषेना पुस्तको लखवा ए भाषाना इतिहासमा गोटाळो करवा सिवाय बीजु शु होई शके?

आचार्य हेमचद्रना पूर्ववर्ती अने अगसूत्रोना टीकाकार आचार्य अभयदेवे पण अर्धमागधी नाम धरावती भाषाने प्राकृत लक्षणनी बहुलतावाळी जणावी छे तेमणे लख्यु छे के

'दिनल्ले गहियल्ले' एम बोलनारा होय छे

पियमहिलासगामे सुदरगोत्ते य भायणे रोद्दे।
'अट्टि माटि' भणति अवरे अधे कुमारो पलोएइ ॥

पछी आंध्रना लोकोने जोया, ए लोकोने स्त्री अने सग्राम पत्ये प्रिय होय छे, एमना गोत्रो सुदर होय छे, अने ए लोको रौद्र तथा भयकर अने 'अट्टि माटि' एम बोलनारा होय छे

उपरना उल्लेखमा गोल्ल (गौड?), मध्यदेश, मगध अन्तर्वादि, कीर, ढक्क, सिंध, कारु (कारवाड), गूर्जर, लाट, माळव, कर्णाटक, ताइअ(?) कोशल, महाराष्ट्र अने आंध्र एम सोळ देशोने जणावेला छे

कुवलयमालानो आ उल्लेख अहीं एटला माटे आप्यो छे के, एमा ए देशोनी गणना ए रीते करेली छे (आचार्य जिनविजयजीनी एक नोधद्वारा आ उल्लेखने हु 'कुवलयमाला'माथी मेळवी शक्यो छु)

" ' र-सो-र्लशौ मागध्याम् ' 'इत्यादि यत् मागधभाषालक्षणं तेन अपरिपूर्णा प्राकृतभाषालक्षणबहुला अर्धमागधी "

(औपपातिक टीका पृ० ७८ समिति)

अभयदेवे आगमोनी भाषा उपरथी नक्की करेलु अर्धमागधीनु स्वरूप जोता तो ' अर्धमागधी ' नाम ' देवादार 'ना ' रणछोड ' (रणने छोडनार) नाम जेवु लागे छे तेओ साफ साफ कहे छे के, आगमोनी भाषा प्राकृतलक्षणनी बहुलतावाळी छे अने एक लक्षण सिवाय मागधीना बीजा खास लक्षणोने एमा काइ स्थान नथी, एथी ज वाचनार समजी शकशे के, वर्तमान आगमोनी भाषाने अर्धमागधी कहेवी के प्राकृत कहेवी ?

' आगमो प्राकृत छे ' ए मत तो आज घणा समयथी चाल्यो आवे छे अने हेमचद्र अने अभयदेव करता य प्राचीन अने प्रामाणिक आचार्योए ए मतने स्वीकारेलो छे

ए सबधमा आचार्य हरिभद्र जणावे छे के,

'" प्राकृतनिबन्धोऽपि बालादिसाधारण " इति

---

१ दशवैकालिकनी टीकामा जे प्रसगे आचार्य हरिभद्रे आ उल्लेख कर्यो छे ते प्रसग आ छे

" दर्शनाचारना आठ प्रकार छे, तेमा पेहेलो प्रकार नि.शकित रहेवु ते, ' नि शकित 'नु विवरण करता कह्यु छे के, शकाना बे प्रकार छे—सर्वशका अने देशशका सवशका एटले सव प्रकारे शका अने देश शका एटले अशथी शका तेमा ' सवशका 'नु स्वरूप बतावता जणाव्यु छे के,

" सर्वशङ्का तु प्राकृतनिबद्धत्वात् सर्वमवेद परिकल्पित भविष्यतीति।"

अर्थात् 'प्राकृत भाषामा रचेलु होवाथी आ बधु य बनावटी केम न होय ? ' आवी जे जिनागम प्रत्ये शका करवी ते सवशका, आनु समाधान करता हरिभद्रे उपयुक्त उल्लेखने टाकी बताव्यो छे

आटलु लख्या पछी ए आचार्यवर "उक्तं च" कहीने पोताना उल्लेखना पोषणमा एक जूना सघाग्ने टांकी बतावे छे-

"बालस्त्रीमूढमूर्खाणां नृणां चारित्रकाङ्क्षिणाम्।
अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृते कृतः ॥"
(दशवैकालिक टीका पृ० १९३ बाबु०)

आ उपरथी आपणे जोई शकीए छीए के आपणो आ मत हरिभद्र करता य जूनो ठरे छे

जे प्रसगमा हरिभद्रे उपर्युक्त उल्लेखने मूकेलो छे ते ज प्रसगमां वादिदेवसूरिना गुरु आचार्य मुनिचद्र पण एज उल्लेखने (हरिभद्रना धर्मबिंदुनी टीकामा) मूके छे धर्मबिंदु पृ० ७७, द्वितीय अध्याय आत्मानद सभानी आवृत्ति

आचार्य मलयगिरि पण प्रज्ञापनानी पोतानी टीकामा एवा ज प्रसगमा एज वातने जणावे छे-प्रज्ञापनासूत्र टीका समितिनु पृ०६०

हेमचद्रनी पछी थयेला आचार्यो द्वारा पण एज मतने टेको आपवामा आव्यो छे—

आचार्य प्रभाचद्रे बनावेला अने श्रीप्रद्युम्नसूरिए शोधेला प्रभावकचरित्रमा (पृ० ९८-९९) जणाव्यु छे के,

"अन्यदा लोकवाक्येन जातिप्रत्ययतस्तया ।
आबाल्यात् सम्कृताभ्यासी कर्मदोषात् प्रबो(बा)धित ॥१०९

१ उपरना बधा उल्लेखोमा वपराएलो 'प्राकृत' शब्द प्राकृत भाषानो सूचक छे, अनुयोगद्वारसूत्रमा 'प्राकृत' शब्द प्राकृतभाषाना अर्थमा वपराएलो छे (पृ० १३१ स०) वैयाकरण वररुचिना समयथी तो ए शब्द ए अर्थमा वपरातो आव्यो छे, अने ए पछीना आचार्योए पण ए शब्दने एज अर्थमा वापरेलो छे माटे कोइए अहीं ए शब्दने भरडवो नहि

सिद्धान्त संस्कृत कर्तुमिच्छन् मत्र व्यजिज्ञपत् ।
प्राकृते केवलज्ञानिभाषितेऽपि निरादर ॥ ११०

\+ \+ \+

यदि (इत) विश्रुतमस्माभि पूर्वेषा सम्प्रदायत ।
चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन् ॥ ११४
प्रज्ञातिशयसाध्यानि तान्युच्छिन्नानि कालत ।,
अधुनैकादशाङ्ग्यस्ति सुधर्मस्वामिभाषिता ॥ ११५
बालस्त्रीमूढमूर्खादिजनानुग्रहणाय स ।
प्राकृता तामिहाऽकार्षीदनास्थाऽत्र कथ हि व " ॥ ११६

अर्थात् " सिद्धसेन दिवाकर नामना सुप्रसिद्ध जैनाचार्ये प्राकृत जैन आगमोने संस्कृतमा करवानी इच्छा करी " आटलु जणावी ग्रथकार पोताना तरफथी वधु जणावता कहे छे के, " बाळ, स्त्री, अने मूर्ख वगेरेनी सगवडताने माटे पूर्व पुरुषोए–सुधर्मस्वामिए–ए आगमोने प्राकृतमा रच्या छे, तो एमा आपणे शामाटे अनास्था करवी ?"

" यत उक्तमागमे " अर्थात् ' आगममा कह्यु छे के ' एम लखीने श्रीविजयानदसूरि पोताना तत्त्वनिर्णयप्रासादमा जणावे छे के,

मुत्तूण दिट्ठिवाय कालिय–उकालियगसिद्धत ।
थीबालवायणत्थ पाययमुइय जिणवरेहिं ॥

अने साथे हरिभद्रे उद्धरेलो श्लोक पण टाके छे (खरी रीते तो आ प्राकृत गाथाने हरिभद्रनी पहेला ज मूकवी जोइए पण मने एनु मूळ स्थान न जडवाथी एना उध्धृत करनारना काळक्रममा एने मूकवामा आवी छे)

अनुयोगद्वार सूत्रमा जणाव्यु छे के,

" सक्कया पायया चेव भणिइओ होंति दोण्णि वा "

(पृ १३१ समिति)

अर्थात् ' सस्कृत अने प्राकृत बे भाषाओ छे '

आ उल्लेख गीतनी भाषाना प्रसगमां छे आ उपरथी एटलु तो जरर तारवी शकाय के, अनुयोगद्वारना समयमा अर्धमागधीने प्राकृतथी जुदी ज गणवामा आवती होत तो सूत्रकार प्राकृतनी साथे ज पोतानी प्रिय अने देवभाषा तरीके प्रसिद्धि पामेली अर्धमागधीने पण सूचववी भूले खरा ?

आ प्रमाणे एक नहि पण अनेक जैनाचार्योए वर्तमान आगमोनी भाषाने स्पष्ट शब्दमा प्राकृत कहेली छे माटे अमे पण अहीं ए ज मतने स्वीकारेलो छे, अने तेथी ज प्रस्तुत व्याकरणमां पण जैन आगमोना केटलाक विशिष्ट रूपोने प्राकृतना व्याकरण साथे ज नोंधेला छे

आ तो जैनाचार्योनी ज दृष्टिए आगमोमा आवेली भाषाना सबधमा चर्चा थइ, तदुपरात बीजी त्रण दृष्टिए पण अर्धमागधी भाषानी चर्चा थइ शके छे. तेमां–

पहेली दृष्टि भरतना नाट्यशास्त्रनी,
बीजी दृष्टि प्राकृत भाषाना व्याकरणोनी
अने त्रीजी दृष्टि अशोकनी धर्मलिपिओनी
भरतना नाट्यशास्त्रमा कह्यु छे के,
" चेटाना राजपुत्राणा श्रेष्ठिना चार्धमागधी "

भरतना० अध्याय १७ श्लो० ५०

नाटकोमा पात्र तरीके आवता चेटो, राजपुत्रो अने शेठियाओ अर्धमागधी भाषा बोले छे भरतना आ उल्लेखथी आपणे नाटकोना ते ते पात्रोनी भाषाद्वारा अर्धमागधीना स्वरूपने कळी शकीशु

नाटकोनी भाषाना नमूना—

(भासनु प्रतिज्ञायौगधरायण)

भट —को काळो अह भट्टिदारिआए वासवदत्ताए उदए कीळिदु-
कामाए भद्दवदीपरिचारअ गत्तसेवअ ण पेक्खामि । भाव पुप्फ-
दतअ गत्तसेवअं ण पेक्खामि । किं भणासि एसो गत्तसेवओ
कण्डिळसुडिगिणीए गेह पविसिअ सुर पिबदि त्ति । पृ० १०२

भट —सव्व दाव चिट्ठदु राअउळे भद्दपीठिअ ण णिक्कमिअ कुदो
अअ आहिण्डदि त्ति । पृ० १०६

भट —कि णु खु एवं + होदु, इम वुत्तत्त अमच्चस्स णिवेदेमि ।
पृ० १०६

(भासनु चारुदत्त)

चेट —अम्मो अय्यमेत्तेओ ।

चेट —अम्मो भट्टिदारओ । पृ० ६७

चेट —सुहौदेसु पादेसु भूमीए पळेट्ठिदव्व । पृ० ६८

(भासनु स्वप्नवासवदत्त)

भटौ—उस्सरह उस्सरह अय्या उस्सरह । पृ० ८

चेटी—एदु एदु भट्टिदारआ इद अस्समपद पविसदु । पृ० १९

चेटी—अत्थि राओ पज्जोदो णाम उज्जइणीए सो दारअस्स कारणादो
दूदसपाद करेदि पृ० १७

(शूद्रकनु मृच्छकटिक)

चेट —अज्जुए चिश्ट, चिश्ट ।

उत्ताशिता गच्छशि अत्तिका मे
शपुण्णपुच्छा विअ गिम्हमोरी ।
ओवग्गदी शामिअ भश्टके मे ।
वणे गडे कुक्कुरशावके व्व ॥ पृ० २७

चेट —लमेदि अ लाअवल्लह तो लादिशि मच्छमशके ।
एदेहिं मच्छमशकेहिं शुणआ मडअ ण शेवदि ॥ पृ० ३१

आ बधी भाषा चेटोनी छे

राजपुत्रनी भाषा आ प्रमाणे छे

(कालीदासनु शाकुंतल)

बाल —जिंभ जिंभ ददाणि ते गणइस्स पृ० २९९

बाल —बलिअ भीद म्हि पृ० २९९

बाल —इमिणा एव्व दाव कीलिम्म पृ० २९८

हवे शेठियाओनी भाषानो नमुनो—

(शूद्रकनु मृच्छकटिक)

चन्दनदास —जेदु अज्जो

चन्दनदास —किं ण जाणादि अज्जो जह अणुचिदो उवआरो परिहवादो वि महत दुःख उप्पादेदि । ता इह य्येव उचिदाए भूमीए उवविसामि ।

चन्दनदास—अह इ अज्जस्स प्पसाएण अखण्डिदा वणिज्जा । पृ० १४

चन्दनदास —आणवेदु अज्जो किं केत्तिअ इमादो जणादो इच्छीअदि त्ति ।

चन्दनदास —अज्ज अलिअ एद केणवि अणज्जेण अज्जस्स णिवेदिद । पृ० १९

चन्दनदास —फलेण सवादिद सोहन्ति दे विकत्थिदं । पृ० १७

नाट्यशास्त्रकार भरतना उल्लेख प्रमाणे चेट, राजपुत्र अने शेठनी भाषाने अर्धमागधी कहेवामा आवे छे एना नमुना उपर आपवामा आव्या छे उपरना नमुनानी भाषा साथे आपणे आगमोनी भाषाने सरखावीए तो केवळ साभळवा मात्रथी ज शु नथी जणातु के,

ए नाटकोना पात्रोनी भाषामा अने आगमोनी भाषामा केटलो बधो तफावत छे ?

हवे आपणे जोईए के, प्राकृत व्याकरणोनी दृष्टिए आगमोनी भाषाने अर्धमागधीनु नाम आपी शकाय के केम ?

प्राकृत व्याकरणो तो घणा छे, ए बधाना नामो पण हवे पछी आपवाना छे बधा प्राकृत व्याकरणोमा वररुचिनो प्राकृतप्रकाश वधारे प्राचीन छे एमा 'मागधी' नी प्रकृति तरीके शौरसेनीने कही छे अने शौरसेनी करतां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे बतावी छे –

१ मागधीमा 'ष' अने 'स' ने बदले 'श' बोलवो

२ ,, 'ज' ने बदले प्राय 'य' बोलवो

३ ,, चवर्गना कोइ अक्षरनो लोप न करता जेम होय तेम ज बोल्वु

४ ,, 'र्य' अने 'द्य' नो 'य्य' बोलवो

५ ,, 'क्ष' ने बदले 'स्क' बोलवो

६ ,, अकारात शब्दना प्रथमाना एक वचनमा 'इ' अने 'ए' प्रत्यय वापरवो

७ ,, मागधीमा अकारान्त भूतकृदतना प्रथमाना एक वचनमा उपरना बे प्रत्ययो उपरात 'उ' प्रत्यय पण वापरवो

८ ,, षष्ठीना एकवचनमा 'ह' प्रत्यय वापरवो.

९ ,, सबोधनना एकवचनमा अन्त्य 'अ' नो 'आ' करवो

१० ,, 'स्था' ने बदले प्राकृतमा वपराता 'चिट्ठ' ना स्थानमा 'चिष्ठ' धातु वापरवो

११ „ 'घ्न' ने बदले 'कढ' 'मृत' ने बदले 'मढ' अने 'गत' ने बदले 'गढ' रूपो वापरवां

१२ „ संबंधक भूतकृदंतने सूचववा 'त्वा' प्रत्ययने बदले 'दाणि' प्रत्यय वापरवो

१३ „ 'हृदय' ने बदले 'हडक,' 'अह' ने बदले 'हके' 'हगे' 'अहकं' अने 'शृगाल' ने बदले 'शिआल' तथा 'शिआलक' शब्दो वापरवा

वररुचिए बतावेलुं मागधीनुं स्वरूप उपर प्रमाणे छे, आ सिवाय शौरसेनीना जे नियमो वररुचिए आपेला छे तेमांना निरपवाद नियमो मागधीमां पण उमेरी लेवाना छे आगमोनी[1] भाषाने जोतां तेमां फक्त वररुचिए बतावेली ६ ठ्ठी विशेषतानो य अमुक अश ('ए' नी वपराश) जोवामां आवे छे, तो मागधीना एक ज अंशनी वपराशने लीधे आगमोनी भाषा अर्धमागधी कहेवाय के नहि? ए साक्षरो ज विचारी ले

'वर्तमान आगमोनी भाषामां मागधीभाषानुं स्वरूप केटले अंशे देखाय छे?' ए प्रश्ननी परीक्षा करतां आपणे भास वगेरेनां नाटको जोया, प्राचीन वैयाकरण वररुचिने तपास्यो हवे अशोकनी धर्मलिपिओनी भाषाने पण आपणे जोइ जइए ए लिपिओनी भाषाने 'कई भाषा कहेवी?' ए प्रश्न हजी विवादग्रस्त छे तो पण एने 'प्राचीनमागधी' कहेवामां कांइ दोष जणातो नथी—बौद्धोनां त्रिपि-

---

१ मागधीनेे लगतुं स्वरूप अने उदाहरणो माटे जुओ प्राकृत प्रकाश पृ० १२८ थी १३२ तथा १३२ थी १३७ अथवा ११ मो परिच्छेद अने बारमो परिच्छेद

२ आगमोनी भाषाना उदाहरणो माटे जुओ "जैन आगम साहित्यनी मूळ भाषा कइ' ए लेख (जैन साहित्यसंशोधक पु० १ अं० १ पृ० ३१ थी ३७)

टकनी भाषा ए लिपिओनी साथे सरखामणीमा आवी शके एवी छे. त्रिपिटकमा पण 'मागधी' भाषानो उपयोग थयानु नीचेनी गाथा जणावे छे[1].

अशोकनी धर्मलिपिओमा वपराएली भाषानु बधारण तपासता आ नीचे जणावेला मुख्य नियमो उपजी शके छे

१ अद्विर्भाव (वर्णनु नहि बेवडावु)

' सयुक्त अक्षर अनादिमा होय अने सयुक्त अक्षरमानो एक अक्षर लोपाय त्यारे जे शेष अक्षर होय छे ते बेवडाय छे अथवा सयुक्त अक्षरनी पहेलानो हृस्व स्वर दीर्घ थाय छे '

प्राकृत भाषाओनो आ एक साधारण नियम छे अशोकनी धर्मलिपिओनी भाषामा ए नियम क्वचित् ज सचवाएलो जोवाय छे पण जैन आगमोनी भाषामा प्राकृतना नियम प्रमाणे ए नियम बराबर सचवाएलो छे

लिपिओनी भाषामा वपराएला एवा द्विर्भाव विनाना अने दीर्घस्वर विनाना रूपो[2] आ प्रमाणे छे

लिपिओनी भाषा	आगमभाषा	सस्कृतरूप
अप	अप्प	अल्प
कप	कप्प	कल्प

१ " सा मागधी मूलभासा नरा यायाऽऽदिकप्पिका ।
ब्रह्मना चस्सुतालापा सबुद्धा चापि भासरे " ॥

२ आमा अशोकनी धम्मलिपिमाथी जे रूपो आप्या छे ते उदाहरण रूपे छे, एने मळता बीजा अनेक रूपो छे पण बधा अहीं विस्तार भयथी आप्या नथी बीजी ए एक वात लक्ष्यमा राखवानी जरुर छे के, अशोकना मा ळीय पाठ भेद पण केटलेक ठेकाणे छे, जो के में बने त्या सुधी सर्व साधारण रूपो लेवानो प्रयत्न कर्यो छे

युत	जुत	युक्त
निखम	निक्खम	निष्क्रम
कलाण	कल्लाण	कल्याण

२ 'र' नो वैकल्पिक 'ल'

अशोकनी लिपिओमां 'र' ना स्थाने सर्वत्र 'ल' नो प्रयोग वैकल्पिक रीते थएलो देखायछे त्यारे जैन आगमोमां प्राकृत भाषाना धोरणनी पेठे 'र' नो ज प्रयोग कायम रहेलो छे

लि०	आ०	स०
आदिक्ले आदिक्रे	आइकरे आइगरे	आदिकर
परिसा पलिसा	परिसा	पर्षत्
चरण चलन	चरण	चरणम्
हिलन हिरण	हिरण्ण	हिरण्य
मरण मलने	मरण	मरणम्

३ अनादि—असंयुक्त व्यंजननो लोप

अशोकनी धर्मलिपिओमां अनादि–असंयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, ब, म अने व लोपाता नथी त्यारे आगमोनी भाषामां प्राकृत भाषानी पेठे ए बधा अक्षरो लोपाएला छे

लि०	आ०	स०
सुकत	सुकय	सुकृतम्
मिगे	मिए	मृग

उपावुपच्छदो	उवावयच्छणे	उपावपच्छन्द
समानसि	समायंमि	समाने
एते	एए	एते
विवादे	विवाओ	विवाद
पापुनाति	पाउणइ	प्राप्नोति
		वगेरे

४ श, स, ष नो उपयोग

अशोकनी धर्मलिपिओमा श, ष, अने स नो उपयोग थयलो छे त्यारे आगमनी भाषामा प्राकृत भाषानी पेठे मात्र एक 'स' नो ज उपयोग थयलो छे

लि०	आ०	सं०
पशु पसु	पसु	पशु
शत सत	सय	शत
दोस दोष	दोस	दोष
ओषदिनि ओसधानि	ओसहाणि	औषधानि
सार शाल,	सार	सार
पचसु पंचपु	पचसु	पञ्चसु

५ विजातीय संयुक्त व्यंजननो वपराश

अशोकनी धर्मलिपिओमां विजातीय संयुक्त व्यंजनोनो वै-कल्पिक वपराश घणो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृत भाषाना बंधारण प्रमाणे ए वपराश ज नथी

लि०	आ०	स०
प्राण पान	पाण	प्राण
दिव्यानि दिवियानि	दिव्वाइं	दिव्यानि
सेठे सेस्टे	सेट्ठे	श्रेष्ठ
अस्ति अत्थि	अत्थि	अस्ति
सहस्रानि सहस्रानि	सहस्साइं	सहस्राणि
पुत्र पुत	पुत्त	पुत्र
मित मित्र	मित्त	मित्र
नास्ति नथि	नत्थि	नास्ति
समण श्रमण	समण	श्रमण वगेरे

६ 'ख' 'थ' 'ध' 'भ' नो ह

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'ख' 'थ' 'ध' अने 'भ' कायम

रहे छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामा प्राकृत भाषा प्रमाणे ए चारेने स्थाने 'ह' थएलो छे

लि०	आ०	स०
लिखित	लिहिअ	लिखित
सुख	सुह	सुख
यथा	जहा	यथा
तथा	तहा	तथा
बहुविध	बहुविह	बहुविध
वध	वह	वध
साधु	साहु	साधु
आलभितु	आलहिउ	आलभताम्
		वगेरे

७ 'न' नो 'ण'

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'न' नो 'ण' नथी थएलो त्यारे जैन आगमोनी भाषामा प्राकृतना नियम प्रमाणे 'न' नो 'ण' थएलो छे

लि०	आ०	स०
देवान	देवाण	देवानाम्
पियेन	पियेण	प्रियेण
अनुदिवस	अणुदिवस	अनुदिवस
बहूनि	बहूणि	बहूनि
दान	दाण	दानम्
महानसासि	महाणसासि	महानसे

८ 'ण' नो न

अशोकनी धर्मलिपिओमा ण' ने स्थाने 'न' पण वपराएलो छे त्यारे आगमोनी भाषामा तेम नथी जणातु

लि०	आ०	स०
गननासि गणनसि	गणने	गणने

९ 'त' नो ट

अशोकनी धर्मलिपिओमा एकला 'त' नो के सयुक्त 'त' नो 'ट' थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामा एम्पळे प्राकृतनी प्रक्रिया प्रमाणे एकला 'त' नो 'ड' थएलो छे अने सयुक्त 'त' नो 'त्त' थएलो छे

लि०	आ०	स०
पटिवेदना	पडिविअणा	प्रतिवेदना
पटिपाति	पडिवत्ति	प्रतिपत्ति
कट	कड, कय	कृत
मट	मट, मय	मृत
कटव कटविय	कायव्व	कर्तव्य
किति किटी	कित्ति	कीर्ति वगेरे

१० 'प' नो व

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'प' नो 'व' नथी थएलो पण जैन आगमोनी भाषामा प्राकृतनी पेठे 'प' नो 'व' थएलो छे

लि०	आ०	स०
लिपि	लिवि	लिपि
कूपा	कूवा	कूपा
पाप	पाव	पापम्

प्रेरक प्रक्रिया ना प्रत्ययो	आप	आव	
	आपे	आवे	
	सामीपं	सामीव	समीपम्
			वगेरे

११ 'द्य' नो य

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'द्य' नो 'य' थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामा प्राकृतनी पद्धति प्रमाणे 'द्य' नो 'ज्ज' करवामा आवेलो छे

लि०	आ०	स०
उयान	उज्जाण	उद्यान
उयाम	उज्जम	उद्यम

१२ 'ञ' नो उपयोग

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'न्य,' 'ण्य' अने 'ज्ञ' ने स्थाने 'ञ' नो पण उपयोग थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामा ए त्रणेने स्थाने प्राकृतनी प्रमाणे 'न्न,' 'ण' के 'ण्ण' नो ज व्यवहार थएलो छे

लि०	आ०	स०
हञति	हणाति, हन्नति	घ्नन्ति
मञति मनति	मन्नइ	मन्यते
अञ अन्न	अण्ण, अन्न	अन्य
हिरञ	हिरण्ण	हिरण्य
पुञ	पुन्न, पुण्ण	पुण्य

नाति नाति	नाइ	ज्ञाति
रञो	रण्णो	राज्ञ
		वगेरे

१३ ति अने तु

अशोकनी धर्मलिपिओना क्रियापदोमा 'ति' अने 'तु' प्रत्ययो वपराएला छे त्यारे आगमोनी भाषामां प्राकृतनी शैली प्रमाणे 'इ' अने 'उ' प्रत्ययो वपराएला छे

लि०	आ०	स०
भोतु होतु	होउ	भवतु
होति भाति	होइ	भवति
कलेति	करेइ	करोति
		वगेरे

१४ त्य नो च

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'त्य' नो 'च' वैकल्पिक रीते वपराएलो छे त्यारे आगमोनी भाषामा प्राकृतना धोरण प्रमाणे 'त्य' नो 'च' ज करवामा आवेलो छे

लि०	आ०	स०
सातिय– सतिय–	सच	सत्य
आचायिक अतियायिक	अच्चइअ	आत्यायिक
निच	निच	नित्य

लाजिना / राजा	रण्णा	राज्ञा
लाजिने / लाजाने	रण्णो	राज्ञे
रजो / राजो	रण्णो	राज्ञः

आ उपरान्त—

ए धर्मलिपिओमां अनादि 'ट' नो 'ट' ज रहेलो छे (पटिने) त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृत प्रमाणे 'ट' ने बदले 'ड' थएलो छे (पडिए)

ए धर्मलिपिओमां 'अहं' ने बदले 'हकं' एम पण वपराएलुं छे त्यारे आगमोनी भाषामां क्याय ए रूपनो उपयोग ज नथी थएलो

आ रीते अशोकनी धर्मलिपिओनी प्राचीन मागधीनुं स्वरूप पण वर्तमान आगमोनी भाषामां अने अर्धमागधी पहेरावा पूरतुं य घटी शकतुं नथी, ए हकीकत उपर जणावेला उदाहरणोथी ज जाणी शकाय एम छे

ए आगमोनी छेल्ली संकलना थया पहेलां, एमां जेवी भाषा अत्यारे छे तेवी नहि होय ए हकीकत तो आगमोमां रहेला केटलाक जूना रूपो उपरथी ज जाणी शकाय एवी छे

आगमोनी रचनासमयनी भाषाना अने देवर्धिगणिनी संकलनासमयनी भाषाना अंतरने समजवा माटे गूजराती भाषानुं नीचेनुं उदाहरण बस छे

सं. १७३९ नी भाषा	सं. १९८४ नी भाषा
¹ समवसरणनु हुउ रे मंडाण,	समवसरणनो हुओ रे मंडाण,
माणिक हेम रजत सुप्रमाण ।	माणिक हेम रजत सुप्रमाण ।
सिंहासनी वईठा जिनवीर,	सिंहासन बेठा जिन वीर,
दिइ देशना अरथ गंभीर ॥	दीए देशना अर्थ गंभीर ॥
विद्युनमाली सुर तिहां आवइ,	विद्युमाली सुर तीहां आवे,
जिन वांदी आनंद बहु पावइ ।	जिन वंदी आनंद बहु पावे ।
चरम केवली कुण प्रभु थास्यइ,	चरमकेवली कुण प्रभु थाशे,
श्रेणिक पूछइ मन उल्हासइ ॥	श्रेणिक पूछे मन उल्हासे ॥
प्रभु कहइ सुणि श्रेणिक नृपचंद,	प्रभु कहे सुण श्रेणिक नृपचंद,
ब्रह्मलोक सामानिक इंद ।	ब्रह्मलोक सामानिक इंद ।
चउदेवीयुत विद्युनमाली,	चउदेवीयुत विद्युमाली,
सातमेइ दिनि एचवी शुभशाली॥	सातमे दिने च्यवी शुभशाली॥
ऋषभदत्तसुत तुज पुर ठामइ,	ऋषभदत्तसुत तुज पुर ठामे,
चरम केवली जंबू नामइ ।	चरम केवली जंबू नामे ।
होस्यइ ते सुणि देव अनादी,	होस्ये ते सुणी देव अनादी,
हरषइ परखइ निज कुलआदी॥"	हरखे परखी निज कुल आदी॥"
(यशोविजयजीए रचेली अने तेमनी हस्तलिखित प्रतिमांथी उतारेली)	(यशोविजयजीए रचेली अने जम्बुस्वामिना रासनी चोपडी-मांथी उतारेली)

---

¹ जुओ उट्ठी गुजराती साहित्यपरिषदनो रिपोर्ट पृ. ६२

² निबंध

उपर आपेली कविता एक ज कर्ताना छे, छता एमा काळभेदने लीधे केटो फेरफार थएलो छे, ए, जाडा अक्षरोमा मूकेला रूपो उपरथी जणाइ आवे छे

जो के २० मा सैकानी असरथी रूपातर पामेली ए कवितामा १८ मा सैकानी कविनी भाषाना केटला य रूपो जळवाइ रह्या छे तो पण रूपातर पामेली ए कवितानी भाषाने काइ १८ मा सैकानी नहि कहेवाय तेम १८ मा सैकानी भाषाथी मिश्रित पण नहि कहेवाय ते ज रीते श्री वीरना १००० मा सैकामा रूपातरने पामेला ए आगमोमा भगवान महावीरना समये रचाएला आगमोनी भाषाना केटला य रूपो जळवाइ रह्या होय तो पण ए वीरना १००० मा सैकामा रूपातरने पामेला आगमोनी भाषाने काइ वीरना समयनी भाषा नहि कहेवाय तेम वीरना समयनी भाषाथी मिश्रित पण नहि कहेवाय तात्पर्य ए छे के, भास वगेरे प्राचीन कविओनी, वररुचिनी अने छेवट अशोकनी धर्मलिपिओनी मागधी भाषानु थोडु घणु पण स्वरूप वर्तमान आगमोमा रहेलु होय तेम जणातु नथी तो पछी आगमोनी भाषाने ' अर्धमागधी ' नाम कइ रीते अपाय ?

अत्यार सुधी तो आपणे ' अर्धमागधी ' ना सबधमा पुरातन ग्रथ, टीका अने व्याकरणने आधारे विचार कर्या, पण हवे ए सबधमा आधुनिक ग्रथकारोनो अभिप्राय पण जोइ लइए

फक्त मार्कडेय अने क्रमदीश्वर सिवाय बीजा कोइ अर्वाचीन वैयाकरणे अर्धमागधीना स्वरूपने लगतो काइ उल्लेख कर्यो जणातो नथी

मार्कडेय कहे छे के —

" शौरसेन्या अदूरत्वाद् इयमेवार्धमागधी ॥

प्राकृतसर्वस्व पृ० १०२

आम लखीने एज ग्रथकार अर्धमागधीना उदाहरण तरीके आ वाक्य आपे छे—

" अज्ज वि णो शामिणीए हिलिम्बादेवीए पुत्तघडुक्कअशोए ण उवशमदि " (वेणीसहार तृतीय अक)

अने साथे—

" राक्षसी–श्रेष्ठि–चेटाऽनुकम्पादेरर्धमागधी "

ए भरतनु वाक्य पण टाकी बतावे छे

क्रमदीश्वर पोताना सक्षिप्तसारप्राकृतपादमा जणावे छे के

" महाराष्ट्रीमिश्राऽर्धमागधी " ५–९८

आ उल्लेखनी व्याख्या करता आचार्य विधुशेखर भट्टाचार्य आ प्रमाणे जणावे छे-–

" अर्धमागधी शब्द टि द्वाराई जानिते पारा याईते छे ये, ए भाषार शब्दप्रभृतिर अर्धे अश टीक मागधी अर्थात् प्राकृतमागधी। तवे ताहार अपर अपर अर्ध अश कि ? क्रमदीश्वर बलियाछेन ताहा महाराष्ट्री–प्राकृतमागधी महाराष्टी सहित मिश्रित हईया अर्धमागधी नाम धारण करे।

ताहार उदाहरण—

लभशवशनमिलशुलशिलविअलिदमदालसाजिदहिजुगे।
वीलजिने पक्खालदु मम शयलमवज्जवाल॥ "

पालिप्रकाशनी प्रस्तावना पृ० १६–१७

उपर्युक्त बने वैयाकरणोए जणावेलु अर्धमागधीनु स्वरूप आगमोनी भाषामा घटी शके खरु ? आ प्रश्ननो उत्तर आ० विधु-शेखरजीए जणावेली उपर्युक्त गाथा ज आपी रही छे

आ उपरथी वाचको जाणी शक्या हशे के, वैयाकरणोए अर्धमागधीनु जे लक्षण नक्की कर्युं छे ते आगमोनी भाषामा घटे छे के नहि ?

मार्कंडेय वगेरेए नक्की करेलु अर्धमागधीनु स्वरूप आ पुस्तकमा शौरसेनीमा अने मागधीमा आवी जाय छे, एथी पण अहीं अर्ध मागधीने माटे जुदु प्रकरण राखवामा नथी आव्यु

प्राकृतना केटलाक व्याकरणोना अने तेनी वृत्तिओना नामो

	नाम	कर्ता	सवाद
१	प्राकृतप्रकाश	वररुचि	प्रसिद्ध छे
२	प्राकृतलक्षण	चड	,,
३	प्राकृतव्याकरण	हेमचद्र	,,
४	प्राकृतसजीवनी	वसतराज	आनो उल्लेख मार्कंडेयना 'प्राकृत सर्वस्व'मा छे पृ० १ श्लो० ३
५	प्राकृतकामधेनु	लकेश्वर	
६	प्राकृतव्याकरण	समतभद्र	
७	,, वृत्ति	त्रिविक्रमदेव	
८	प्राकृत प्रक्रियावृत्ति (ढुढिका)	उदयसौभाग्य	प्रसिद्ध छे
९	प्राकृतप्रबोध	नरचद्र	
१०	प्राकृतकल्पतरु	रामतर्कवागीश	

११	प्राकृतचंद्रिका	कृष्णपंडित (शेषकृष्ण)	
१२	,,	वामनाचार्य	
१३	प्राकृतमनोरमा	भामह	आनो उल्लेख मार्कंडेयना 'प्राकृत सर्वस्व'मा छे पृ० १ श्लो० ३
१४	प्राकृतरूपावतार	सिंहराज	प्रसिद्ध छे
१५	प्राकृतदीपिका	चंडीश्वरशर्मा	
१६	प्राकृतमंजरी	कात्यायन	प्रसिद्ध छे
१७	प्राकृतसर्वस्व	मार्कंडेय	,,
१८	प्राकृतानंद	रघुनाथशर्मा	
१९	प्राकृतप्रदीपिका	नरसिंह	
२०	प्राकृतमणिदीपिका	चिन्नबोम्मभूपाल	'षड्भाषाचंद्रिका'नी प्रस्तावना पृ० १७ टि० पृ० १८ टि०
२१	प्राकृतमणिदीप	अप्पयज्वन्	,,
२२	षड्भाषामंजरी		
२३	षड्भाषावार्तिक		
२४	षड्भाषाचंद्रिका	लक्ष्मीधर	प्रसिद्ध छे
२५	षड्भाषाचंद्रिका	भामकवि	
२६	षड्भाषासुबंतादर्श		
२७	षड्भाषारूपमालिका	दुर्गणाचार्य	षड्भाषाचंद्रिका पृ० २२-२-२-९ सूत्रनी वृत्ति

	(१) 'र'	= लोप (अपभ्रंश)	१७
६	'द्र'	= लोप	१८
	र	– लोप (पालि) टि० २	१८
७	'अन्त्यव्यञ्जन' नो 'अ'		१८
८	'कादि' नो 'य'		१८
	क	= य (पालि) टि० ८	१८
	ज	= य (पालि) टि० ५	१८
९	'खादि' नो 'ह'		१९
	ख	= ह (पालि) टि० ३	१९
	घ	= ह (,) टि० ४	१९
	भ	= ह (,,) टि० ५	१९
	(१) थ	= ध (शौरसेनी)	२०
	(२) घ	= ख (चूलिकापैशाची)	२०
	ध	= थ (,,)	२०
	भ	= फ (,,)	२०
	(३) झ	= छ (,,)	२१
१०	ट	= ड	२१
	ट	= ड (पालि) टि० १	२१
	(१) टु	= तु (पैशाची)	२१
११	ठ	= ढ	२१
१२	ड	= ल	२२
	ड	= ळ (पालि) टि० १	२२
	(१) ड	= ट (चूलिकापैशाची)	२२
	(२) ढ	= ठ (,,)	२२
	(१) ण	= न (पैशाची)	२३

	ण	= न (पालि) टि० १	२३
१३	न	= ण	२३
	न	= ण (पालि) टि० २	२३
१४	न	= ण	२३
१५	प	= व	२३
	प	= य (पालि) टि० ३	२३
१६	प	= व	२४
	(१) प	= न (अपभ्रंश)	२४
१७	फ	= भ	२४
	फ	= ह	२४
	(१) फ	= भ (अपभ्रंश)	२४
	(१) ब	= प (चूलिकापैशाची)	२५
	ब	= प (पालि) टि० १	२५
१८	ब	= व	२५
	ब	= व (पालि) टि० २	२५
	(१) म	= वँ (अपभ्रंश)	२५
१९	य	= ज	२६
	य	= ज (पालि) टि० १	२६
	(१) य	= य (मागधी)	२६
	(१) र	= ल (मागधी, पैशाची)	२६
	(१) ल	= ळ (पैशाची)	२६
२०	श	= स	२७
	ष	= स	२७
	श	= स (पालि) टि० १	२७
	ष	= स (,,) ,, ,,	२७

२९	र्त	= ट्ट	३५
	त	= ट (पालि) टि० २	३५
	(१) न्त	= न्द (शौरसेनी)	३५
३०	म्न	= ण, ण्ण	३६
	म्न	= म्न (पालि) टि० १	३६
	ज्ञ	= ण, ण्ण	३६
	ज्ञ	= ण (पालि) टि० १	३६
	(१) ज्ञ	= ञ्ञ (मागधी)	३६
	ज्ञ	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	३६
	(१) ञ्ज	= ञ्ञ (मागधी)	३६
	(१) ण्य	= ञ्ञ ,,	३६
	ण्य	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	३६
	(१) न्य	= ञ्ञ (मागधी)	३६
	न्य	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	३६
३१	स्त	= थ, त्थ	३७
	स्त	= थ त्थ (पालि) टि० १	३७
	(१) र्थ	= स्त (मागधी)	३७
	स्थ	= स्त (,,)	३७
३२	ष्ट	= ठ, ट्ठ	३७
	ष्ट	= ट्ठ (पालि) टि० ३	३७
	ष्ट	= ट्ट (पालि) टि० ४	३७
	(१) ष्ट	= स्ट (मागधी)	३८
	ष्ठ	= स्ट (,,)	३८
	(१) ष्ट	= सट (पैशाची)	३८
३३	ष्म	= प, प्प	३८

	क्म	= प, प्प	३८
	ड्म	= डुम (पालि) टि० १–२	३८
	क्म	= कुम (,,) ,, ,,	३८
	त्म	= च्म (पालि) टि० ३	३८
३४	ष्प	= फ, प्फ	३९
	स्प	= फ, प्फ	३९
	ष्प	= प्फ (पालि) टि० १	३९
	स्प	= फ, प्फ (,,) ,, ,,	३९
	ष्प	= प्प टि० २	३९
	स्प	= प्प टि० २	३९
	ष्प	= प्प (पालि) टि० २	३९
	स्प	= प्प (,,) ,, ,,	
३५	ह्म	= म, म्ह	३९
	ह	= म (पालि) टि० ३	३९
३६	न्म	= म्म	३९
	न्म	= म्म (पालि) टि० ४	३९
३७	ग्म	= म्म	३९
	ग्म	= गुम (पालि) टि० ५	३९
३८	श्म	= म्ह	४०
	ष्म	= म्ह	४०
	स्म	= म्ह	४०
	ह्म	= म्ह	४०
	क्ष्म	= म्ह	४०
	श्म	= म्ह (पालि) टि० १	४०
	ष्म	= म्ह (,,) ,, ,,	४०
	स्म	= म्ह (,,) ,, ,,	४०

	(१) म्ह	= म्म (अपभ्रंश)		४०
३९	श्न	= ण्ह		४०
	ष्ण	= ण्ह		४०
	स्न	= ण्ह		४०
	ह्न	= ण्ह		४०
	ह्ण	= ण्ह		४०
	क्ष्ण	= ण्ह		४०
	क्ष्म	= ण्ह		४०
	श्न	= ण्ह, ञ्ह (पालि)	टि० ३	४०
	ष्ण	= ण्ह (,,)	,, ,,	४०
	स्न	= ण्ह (पालि)	टि० ३	४०
	ह्न	= ण्ह (,,)	टि० ३	४०
	ह्ण	= ण्ह (,,)	,, ,,	४०
	क्ष्ण	= ण्ह (,,)	,, ,,	४०
	(१) स्न	= सिन (पैशाची)		४१
	स्न	= सिन (पालि)	टि० १	४१
४०	ह्ल	= ल्ह		४१
	ह्ल	= ळ्ह (पालि)	टि० २	४१
४१	ज्ञ	= ञ		४१
	ज्ञ	= ञ (पालि)	टि० ३	४१
४२	र्ह	= रिह		४१
	र्ह	= रह, रिह (पालि)	टि० ४	४१
४३	र्श	= रिस		४२
	र्ष	= रिस		
	र्श	= रिस (पालि)	टि० १	४२
	र्ष	= रिस (,,)	,, ,,	४२

४९ 'आ' विकार ४७–४९

(क) आ = अ

(ख) आ = इ

(ग) आ = ई

(घ) आ = उ

(ङ) आ = ऊ

(च) आ = ए

(छ) आ = ओ

आ = अ (पालि) टि० २ ४७

आ = ए (,,) टि० २ ४९

५० 'इ' विकार ४९–५१

(क) इ = अ

(ख) इ = ई

(ग) इ = उ

(घ) इ = ए

(ङ) इ = ओ

(च) नि = ओ

इ = अ (पालि) टि० ६ ४९

इ = उ (,,) टि० २ ५०

इ = ए (,,) टि० १ ५१

इ = ओ (,,) टि० २ ५१

५१ 'ई' विकार ५१–५३

(क) ई = अ

(ख) ई = आ

(ग) ई = इ

(घ) ई = उ
(ङ) ई = ऊ
(च) ई = ए
ई = अ (पालि) टि० ४ ९१

९२ 'उ' विकार ९२–९४

(क) उ = अ
(ख) उ = आ
(ग) उ = इ
(घ) उ = ई
(ङ) उ = ऊ
(च) उ = ओ
उ = अ (पालि) टि० १ ९२
उ = इ (पालि) टि० २ ९३
उ = ओ (पालि) टि० १ ९४

९३ 'ऊ' विकार ९४–९९

(क) ऊ = अ
(ख) ऊ = इ
(ग) ऊ = ई
(घ) ऊ = उ
(ङ) ऊ = ए
(च) ऊ = ओ
ऊ = अ (पालि) टि० २ ९४
ऊ = अ (संस्कृत) टि० २ ९४
ऊ = ओ (पालि) टि० २ ९९



प्रकरण ६ ठ्ठ पृ० ६३-७४

असयुक्त व्यजनोना विशेष फेरफारो

प्रकरण ७ मुं

संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफार

नियमांक	उद्देश्य	विधेय	पृष्ठ
		क्क	
८६	(क) त्क	= क्क	७५
	(ख) क्ण	= क्क	
	(घ) ष्ट	= क्क	
	त्क	= क्क (पालि) टि० १	७५
	क्ण	= ग्ग (पालि) टि० २	७५
८७		क्ख, ख	७५–७६
	(क) क्ष्ण	= क्ख	
	(ख) स्त	= ख	
	(ग) स्थ	= ख	
	(घ) स्फ	= ख	
८८		ग्ग, ङ्क	७६
	(क) त्क	= ग्ग	
	(ख) ल्क	= ङ्क	
	ल्क	= ङ्क (पालि) टि० २	७६
८९		ज्झ	७६
	(क) ध्य	= ज्झ	
	(ख) ह्य	= ज्झ	
		च्छ, छ	
९०	(क) स्थ	= छ	
	(ख) स्प	= छ	
	(ग) स्प	= च्छ	

९१ ञ्न, ञ्ञ

न्य = ञ्ञ

न्य = ञ्ञ (पालि) टि० २

९२ ञ्ञा

न्य = ञ्ञा

९३ ञ्चु

श्चि = ञ्चु

९४ ट्ट

(क) त्त = ट्ट

(ख) र्थ = ट्ट

(ग) म्त = ट्ट

त = ट (पालि) टि० २

९५ ट्ठ, ठ

(क) र्थ = ट्ठ

(ख) स्त = ठ

(ग) स्थ = ठ

स्थ = ट्ठ

र्थ = ट्ठ (पालि) टि० २

स्थ = ठ (पालि) टि० ४

स्थ = ट्ठ (,,) टि० ४

९६ ड्ड

(क) र्त = ड्ड

(ख) र्द = ड्ड

९७ ड्ढ, ढ

(क) र्ध = ड्ढ

द्ध = ड्ढ
ग्ध = ड्ढ
ब्ध = ड्ढ
(ख) र्ध = ढ
द्ध = ड्ढ (पालि) टि० १ ७९
र्ध = ड्ढ ,, ,,
ग्ध = ड्ढ ,, ,,

९८ ण्ट, ण्ड, ण्ण ७९–८०

न्त = ण्ट
न्द = ण्ड
(क) ञ्च = ण्ण
(ख) र्ण = ण्ण
(ग) ह्न = ण्ण
न्त = ण्ट (पालि) टि० २ ७९

९९ त्थ ८०

(क) त्स = त्थ
(ख) त्म = त्थ

१०० द्द ८०

द्द = द्ध

१०१ न्त, न्थ ८०

न्य = न्त
ह्न = न्थ

१०२ प्प, प्फ, फ ८०–८१

त्म = प्प
ष्म = प्फ

९१ = ञ्ञ, ञ्ञ

न्य = ञ्ञ

न्य = ञ्ज (पालि) टि० २ ७६

९२ ज्झा ७७

न्ध = ज्झा

९३ ञ्चु ७७

श्चि = ञ्चु

९४ ट्ट ७८

(क) त्त = ट्ट

(ख) र्थ = ट्ट

(ग) स्त = ट्ट

त = ट (पालि) टि० २ ७७

९५ ट्ठ, ठ ७७–७८

(क) र्थ = ट्ठ

(ख) स्त = ठ

(ग) स्थ = ठ

स्थ = ट्ठ

र्थ = ट्ठ (पालि) टि० ३ ७८

स्थ = ठ (पालि) टि० ४ ७८

स्थ = ट्ठ (,,) टि० ४ ७८

९६ ड्ड

(क) र्त = ड्ड

(ख) र्द = ड्ड

९७ ड्ढ, ढ

(क) र्ध

	द्ध	= ड्ढ	
	ग्ध	= ड्ढ	
	ठ्‌य	= ड्ढ	
	(ख) र्ध	= ढ	
	द्ध	– ड्ढ (पालि) टि० १	७०
	र्ध	= ड्ढ ,, ,,	
	ग्ध	= ड्ढ ,, ,,	
९८	ण्ट, ण्ड, ण्ण		७९–८०
	न्त	= ण्ट	
	न्द	= ण्ड	
	(क) न्य	= ण्ण	
	(ख) ज्ञ	= ण्ण	
	(ग) र्ण	= ण्ण	
	न्त	= ण्ट (पालि) टि० २	७९
९९	त्थ		८०
	(क) त्स	= त्थ	
	(ख) त्म	= त्थ	
१००	द्ध		८०
	द्ध	= द्ध	
१०१	न्त, न्ध		८०
	न्थ	= न्त	
	ह्न	= न्ध	
१०२	प्प, प्फ, फ		८०–८१
	त्म	= प्प	
	ष्म	= प्फ	

[illegible] = [illegible]

[illegible] = [illegible]

[illegible] = [illegible] ([illegible]) [illegible] ८०

१०३ [illegible], [illegible] [illegible] ८१

[illegible] = [illegible]

[illegible] = [illegible]

(क) [illegible] = [illegible]

(ख) [illegible] = [illegible]

[illegible] = [illegible] ([illegible]) [illegible] ८१

१०४ [illegible] ८२

(क) [illegible] = [illegible]

(ख) [illegible] = [illegible]

(ग) [illegible] = [illegible]

१०५ [illegible], [illegible] ८२

[illegible] = [illegible]

[illegible] = [illegible]

[illegible] = [illegible] ([illegible]) [illegible] ८२

१०६ [illegible] ८२

[illegible] = [illegible]

१०७ [illegible] ८२–८३

(क) [illegible] = [illegible]

(ख) [illegible] = [illegible]

(ग) [illegible] = [illegible]

(घ) [illegible] = [illegible]

(ङ) [illegible] = [illegible]



कारक–विभक्त्यर्थ प्रकरण ११ मु पृ० २३९–२४१

अनियमित सबधकभूतकृदत प्राकृत



शुद्धिपत्र

अशुद्ध–	शुद्ध–	पृष्ठ–	पंक्ति–
व्यञ्जनम्	व्यजनम्	१०	१९
रप	स	१४	२१
न–धृष्टद्युम्न धट्ठज्जुणो आ	उदाहरण	१६	१
	अने ए उपरनु टिप्पण पृ० ३६मा प. ४ म्न–ना उदाहरणमा मूको		
	'र' लोप	१७	९ मी पंक्ति पछी मथाळु वधारवु
अपभ्रशमा	(१) अपभ्रशमा	१७	७
	म्य, श्व तस पर्स–च्छ	३२	१० मी पंक्ति पछी मथाळु वधारवुं.
म्म	ए 'म्ह'	४०	१०
टिप्पण	टिप्पण ३	४७	२८
पृ० ४४	पृ० ४८	४७	२८
६	३	६१	१०
	उ = आ विद्रुत विद्दाओ	६३	२१ मी पंक्ति पछी वधारवु
दश	दस	७३	१
न्त न्थ	१०१ न्त न्थ	८०	११

आ पछी बधा अंकोे सुधारीने वाचवा.

अथार्	अर्थात	•७	१५
ण	१ ण	९८	९
उविष्टविश	उविष्टोपावेश	१०६	१६
आ निज्ञानी	* आ निशानी	१७०	७६
		१७८	७७ मी पंक्ति पञी × × ९ × × न जोड़ए
शे०	शौ०	१४१	७
३ गामनी	गामनी	१६०	७२
यड	थड	२७४	१३
तय	नव	३७०	१७

पम्हह	पम्हुह	३६७	अत ७४
अग्न	अग्र	३३९	,, १००
विसुर	विसूर	३४२	,, १३७
उसिघ	उम्भिघ	३४४	,, १४४
हत्त्मव	हत्तुव	३४४	,, ,,
ल्पेट्ट	आयम्न	४४७	,, १४७

आ पुस्तकमा वपराएला ग्रथो अने तेना संकेतोनो खुलासो

(१)

अजितशांतिस्तव	
अमरकोश	अमरको०
आचारांगसूत्र	आ०
उत्तराध्ययनसूत्र	
उपासकदशांगसूत्रटीका	
काशिका	का०
चतुर्विंशतिस्तव	
जीवविचार	
पाणिनीय अष्टाध्यायी	पाणि०, पाणिनि०
पाणिनीय वैदिक प्रक्रिया	वैदिकप्र०
पालिकोश	
पालिप्रकाश	पालीप्र०, पालिप्र०, पा०प्र०
पालिव्याकरण (कात्यायन)	
प्राकृतकथासंग्रह	
प्राकृतरूपावतार	
भगवतीसूत्र	भगव०, भग०
मुनिवदनसूत्र	
ललितविस्तर (बौद्धग्रंथ)	ललितवि०
विसुद्धिमग्ग	
श्रमणसूत्र	

[1]व्यंजन—

क, ख, ग घ, ङ[3] (कवर्ग)

च, छ, ज, झ, ञ[4] (चवर्ग)

---

१ आचार्य हेमचंद्रना जणाव्या प्रमाणे प्राकृतमा स्वररहित व्यंजननो एटले मोडा व्यंजननो के बे तद्दन विजातीयसंयुक्त व्यंजननो-त्त, क्म, त्म वगेरेनो-प्रयोग थतो नथी तो पण 'म्ह' 'ण्ह' अने 'ल्ह'नो प्रयोग होवानु तो हेमचंद्रे पण स्वीकार्युं छे (जुओ ८—२—७४—७—७) 'अकस्मात्' शब्दने मगधदेशीय होवानुं आचार शीलांके जणावेलु छे (जुओ—" इत्थ वि जाणह अकस्मात्" सू० आ० पृ० ४०८ तथा एनी टीका पृ० २९७ स०) एथी प्राकृतमा ए ए स्थळे खोडो व्यंजन पण आवे छे 'म्ह, ण्ह अने ल्ह' उपरांत मागधीमा 'स्त' 'स्म' वगेरे संयुक्त व्यंजनो पण वपराय छे ए विषे संयुक्त व्यंजनना विकारोने जणावता आगळ जणावीशु ए सिवाय जे जे शौरसेनी वगेरे भाषाओमा व्यंजननी वपराशमा प्राकृत करता विशेष फेरफार छे ते विषे पण आ पुस्तकमा ते ते ठेकाणे जणावीशु '**' नो 'ल' थतो होवाथी एने मूर्धन्य पण कहेवामा आवे छे पालिमा ए 'ल' ने ज जुदो गणीने ३३ व्यंजनोने गणाववामा आव्या छे (जुओ कच्चा० पा० या० सू० ९)

२ 'प्राङ्' 'प्रत्यङ्' 'उदङ्'—वगेरेनी पेठ प्राकृतमां कोई पण शब्दमा स्वतंत्र रीते 'ङ' वर्णनो उच्चार थतो नथी, किंतु सङ्गो, सङ्गो पङ्को, पङ्को, अङ्गण, अङ्गण लञ्छण, लङ्घण—वगेरे शब्दोमा स्ववर्ग्यसंयुक्त 'ङ'नो प्रयोग शिष्टसमत छे संस्कृतनी पेठे प्राकृतमा 'ङ' नो प्रयोग अमुक शब्दोमा ज थतो होवाथी ए बने भाषामा स्वतंत्र 'ङ'नो वपराश विरल कहेवाय

३ 'ञ' धातुना ('शुञ्च' वगेरे) परो रूपो सिवाय संस्कृतमा क्याय पण स्वतंत्र 'ञ' नो प्रयोग मळतो नथी तेम प्राकृतमा

ट, ठ, ड, ढ, ण (टवर्ग)

त, थ, द, ध, न (तवर्ग)

प, फ, ब, भ, म (पवर्ग)

य, र, ल, व (अतस्थ)

स, ह (ऊष्माक्षर)

ं– अनुस्वार



पण क्याय स्वतन्त्र ' ञ ' प्रयोजातो नथी कञ्चुक , लाञ्छनम्, जञ्ज पूक –वगेरे प्रयोगोनी पेठे प्राकृतमा कञ्चुओ, लञ्छण, जञ्जपूओ वगेरे प्रयोगो सुव्यवहृत छे मात्र पालीमा ञाति (ज्ञाति), ञात (ज्ञात), ञाण (ज्ञान) वगेरे प्रयोगो संस्कृतना ' ज्ञ व ' जेवा पण मळी आवे छे संस्कृतमा अने प्राकृतमा एकला ' ञ ' करता स्ववर्ग्यसयुक्त 'ञ' नो प्रयोग विशेष प्रचलित छे अहिमञ्ञु (अभिमन्यु) पुञ्ञ (पुण्य), अवञ्ञा (अवज्ञा), अञ्जली (अञ्जलि)—मागधी अने ञ्ञान (ज्ञान) विञ्ञान (विज्ञान)—पैशाची ' ञ्ञ 'ना प्रयोगमा पाली, मागधी अने पैशाची विशेष समानता धरावे छे – (८–४–२९३ तथा ३०३) तथा (पालिप्र०पृ० २३–२४)

१ पालीमा ' अनुस्वार 'ने यजनमा गणावीने ' निग्गहीत 'नी सज्ञा आपेली छे आ ललितविस्तरमहापुराणमा तो एने (अनुस्वारने) अने [illegible] ज गणावेला छे आ प्रथमा वर्णवेली बराबरी [illegible] छे (जूओ ललित०पृ०१२

प्रकरण २

सामान्य स्वरविकार.

दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर[1]

१ संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्व आवेला दीर्घस्वरो प्राकृतमां प्राय ह्रस्व थई जाय छे अर्थात् संयुक्त व्यंजननी पूर्व आवेला 'आ'नो अ, 'ई' नो इ, 'ऊ'नो उ, 'ए' नो इ अने 'ओ' नो उ थई जाय छे जेमके —

आ=अ–आम्रम् अम्ब । आस्यम् अस्स । ताम्रम् तम्ब । विरहाग्नि विरहग्गी ।

ई=इ – तीर्थम् तित्थ । मुनीन्द्र मुणिंदो ।

ऊ=उ–गुरूल्लापा गुरुल्लावा । चूर्ण चुण्णो ।

ए=इ – नरेन्द्र नरिंदो । म्लेच्छ मिलिच्छो ।

ओ=उ–अधरोष्ठ अहरुट्ठ । नीलोत्पलम् नीलुप्पल ।

ह्रस्वस्वर=दीर्घस्वर.

२ संस्कृतना श्य, श्र, र्श, ष्व, श्श, ष्य, ष, र्ष, ष्व, ष्प, स्य, स्र, र्स, स्व, अने स्सनी पूर्वे रहेलो ह्रस्वस्वर प्राकृतमां प्राय दीर्घभाव पामे छे उदाहरणो नीचे प्रमाणे छे —

श्य—आवश्यकम् आवासय । कश्यप कासवो । पश्यति पासइ ।

श्र—मिश्रम् मीस । विश्राम वीसामो । विश्राम्यति वीसमइ ।

र्श[2]—सम्पर्श सफासो ।

---

१ जूओ पालिप्रकाश पृ० ८, नियम–११ (दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर) तथा पृ० ७ (ए=इ) अने (ओ=उ) अने पृ० ७ (औ=उ)

२ जूओ पालीप्र० पृ० ११–(परामर्श =परामासो) टिप्पण

श्व—अश्व आसो । विश्वमिति वीससइ । विश्वास वीसासो ।

श्श—दुश्शासन दूसासणो । मनश्शिला मणासिला ।

ष्य—पुष्य पूसो । मनुष्य मणूसो । शिष्य सीसो ।

र्ष— कर्षक कासओ । वर्ष वासो । वर्षा वासा ।

ष्व— विष्वक वीसु । विष्वाण —वीसाणो ।

ष्ष —निष्षिक्त नीसित्तो ।

स्य—कस्यचित् कासइ । सस्यम् सासं ।

स्र—उस्र ऊसो । विस्रम्भ वीसभो ।

स्व—निस्व नीसो । विस्स्वर विसासरो ।

स्स—निस्सह नीसहो ।

आ=अ

३ संस्कृतना भाववाचक अकारान्त पुंलिंगी शब्दना आदिना 'आ'नो प्राकृतमा विकल्पे 'अ' थाय छे जेमके —

प्रकार पयारो, पयरो । प्रचार पयारो, पयरो । प्रहार पहारो, पहरो । प्रवाह पवाहो, पवहो । प्रस्ताव पत्थावो, पत्थवो ।

इ=ए

४ संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्व आवेला 'इ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे जेमके —

[1]डिण्डिम —डेण्डिमो, डिण्डिमो । धम्मिल्लम् धम्मेल्लं, धम्मिल्लं । पिष्टम् पेट्ठं, पिट्ठं । पिण्डम् पेंडं, पिंडं । बिल्वम् बेल्लं, बिल्लं । विष्णु वेण्हु सिन्दूरम् सेंदूरं, सिंदूरं ।

[1] जुओ ... ३—(इ=ए)

उ=उ

५ संस्कृत शब्दोमा रहेला 'त्स अने त्थ' नी पूर्वना 'उ'नो 'ऊ' थाय छे —

त्स–उत्सरति ऊसरइ । उत्सव ऊसवो ।
उत्सिक्त ऊसित्तो । उत्सुक ऊसुओ ।

त्थ–उच्छ्वासति ऊससइ । उच्छ्वास ऊसासो ।
उच्छुक ऊसुओ ।

उ=ओ

६ संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्व रहेला 'उ' नो प्राकृतमा 'ओ' थाय छे जेमके —

[1]कुट्टिमम् कोट्टिम । कुण्ड कोण्ड । कुन्त कोन्तो ।
तुण्डम् तोंड । पुद्गलम् पोग्गल । पुष्करम् पोक्खर ।
पुस्तक पोत्थओ । मुण्डम् मोंड । मुद्गर मोग्गरो । मुस्ता मोत्था ।
लुब्धक लोद्धओ । व्युत्क्रान्तम् वोक्कंत ।

[2]ऋ=अ

७ संस्कृत शब्दना आदिभागमा आवेला 'ऋ' नो प्राकृतमा 'अ' थाय छे

कृतम् कय । घृतम् घय । घृष्ट घट्ठो ।
तृणम् तण । मृग मओ । मृष्टम् मट्ठ । वृषभ वसहो ।

---

[1] आ नियम आ बे शब्दोमा लागतो नथी –उत्सव उच्छवो ।
उत्साह उच्छाहो ।

[2] जुओ पालीप्र० पृ० ४८–(उ=ओ)

[3] जुओ पालीप्र० पृ० १–(ऋ=अ)

ऋ=उ

८ सामासिक अने गौण संस्कृत शब्दना अंत्य 'ऋ' नो प्राकृतमा 'उ' थाय छे

पितृगृहम् पिउघर । पितृपति पिउवई ।
पितृवनम् पिउवण । पितृष्वसा पिउसिआ । मातृगृहम् माउघर ।
मातृष्वसा माउसिआ । मातृमण्डलम् माउमडल ।

[1]ऋ=रि

९ संस्कृतना केवल—व्यंजन वगरना—'ऋ' नो प्राकृतमा 'रि' थाय छे

ऋक्ष रिच्छो । ऋद्धि रिद्धी । ऋषभ रिसहो ।

ऌ=इलि

१० संस्कृतना 'ऌ' नो प्राकृतमा 'इलि' थाय छे —
क्लृप्त किलित्तो । क्लृप्त किलित्तो ।

[2]ऐ=ए

११ संस्कृतना 'ऐ' नो प्राकृतमा 'ए' थाय छे —
ऐरावण एरावणो । कैटभ केढवो । कैलास केलासो ।
त्रैलोक्यम् तेलुक्क । वैद्य वेज्जो । वैधव्यम् वेहव्व ।
शैल सेल ।

औ=ओ

१२ संस्कृतना 'औ' नो प्राकृतमा 'ओ' थइ जाय छे —

---

१ जूओ पालीप्र० पृ० ३–(ऋ=रि) टिप्पण
२ जूओ पालीप्र० पृ० ३–(ऐ=ए)
[3] पालीप्र० पृ० ५–(औ=ओ)

क्रौञ्च कोंचो । कौमुदी कोमुई । कौशाम्बी कोसम्बी । कौशिक कोसिओ । कौस्तुभ कोत्थुहो । यौवनम् जोव्वण।

उपर जणावेला बधा स्वरविकारो शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने चूलिकापैशाचीमां पण एक सरखी रीते लागु थाय छे, अपभ्रंशमां ए नियमोनुं प्रवर्तन नियत रीते एटले जे रीते जणाव्युं छे ते रीते थतुं नथी तेमां क्याय क्याय 'अ'नो इ, ई, उ, 'उ'नो अ, आ, 'ऋ' नो अ, आ, इ, उ, ऋ, 'ऌ'नो इ इलि, 'ए'नो इ, ई, अने 'ओ'नो अउ अने ओ थाय छे [स्वरविकारनी दृष्टिए आ प्रवर्तन सरखुं छे, पण अनियतताने लीधे एने प्राकृतथी जूदुं पाडी शकाय छे]

अ–इ ई, उ—

स० प्रा० अ०

वचनम् वअण (वइण) वेण ।

(वईण) वीण ।

शयनम् सअण (सइन) सेन[1] ।

नयनम् नअण नइण (नइन) नेन ।

नवनीतम् नअणीअ (नउणीअ) लोणीअ ।

[वस्तुत आ रूपो 'य' अने 'व' ना सप्रसारणथी बनेला छे]

उ–अ, आ—

बाहु —बाहा (स्त्री०) बाहा, बाह, बाहु ।

ऋ–अ, आ इ, उ, ऋ–

तृण्यम् तिंध तच्चु, काञ्चु ।

[1] जओ विसुद्धिमग्ग पा० प्र ७८

तृणम् तण तिणु, तणु, तृणु ।

सुकृतम् सुकय सुकिउ, सुकिदु, सुकृदु ।

लृ–इ, इलि—

क्लृप्त किलिन्नो क्लिन्नो, किलिन्नओ ।

ए–ई, ई—

रेखा लेहा लिह, लीह, लेह ।

औ–अउ, ओ—

गौरी गोरी गउरी, गोरी ।

व्यंजनविकारोना प्रसंगमां तो ज्यां ज्यां प्राकृत करतां शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमां विशेषता छे तेने ते ते स्थळे जणाववाना छीए



प्रकरण ३

—∘※∘—

सामान्य व्यंजनविकार.

अन्त्यव्यंजनलोप

१ संस्कृत शब्दना अन्त्य व्यंजननो प्राकृतमां लोप थाय छे

अन्तर-उपरि अन्त-उपरि अन्तोवरि।

अन्तर-गतम् अन्त-गय अन्तग्गय।

जन्मन् जम्म-जम्मो। तमस् तम-तमो।

तावत् ताव। पुनर् पुण। न पुनर् न उण।

यशस् जस-जसो। यावत् जाव।

असंयुक्त व्यंजनलोप

२ स्वरथी पर आवेला अने शब्दनी आदिमां न रहेला असंयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, य, व अने म-एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां प्राय लोप थई जाय छे. उदाहरणो क्रमश नीचे प्रमाणे छे -

---

१ ...ना पाणिनि ... (... विन्दु-विन्दु। तारक-तार। इत्यादि)

२ आ नियम क्यांक क्यांक लागतो नथी जेमके सुकुसुमम्। प्रयाग ... प्रयागजल। सुगत सुगओ। ... ... । सचापम सचाव। ... । सुगम सुगर। विदुर विदुरो। सशपम् सपाव। समवाय समवाओ। देव दवो। दानव दाणवो।

... ... प्रस्तुत नियम लगाडवाथी ... ... शब्दोनो ... ... प्रत्येक नियमनो उपयोग करता क्यांक एण ... ... थाय तेवा स्थाने क्याय ... ...

क—तीर्थकर तित्थयरो। लोक लोओ।

ग—नग नओ। नगरम् नयर। मृगाङ्क मयङ्को।

च—कचग्रह कयग्गहो। शची सई।

ज—गज गओ। प्रजापति पयावइ। रजतम् रयय।

त—धात्री धत्ती—धाई। यति जई। रसातलम् रसायल।

रात्रि रत्ति—राई। वितानम् विआण।

द—गदा गया। मदन मयणो।

प—रिपु रिऊ। सुपुरुष सुउरिसो।

ब—विबुध विउहो।

य—वियोग विओओ।

व—वडवानल वडयाणलो। लावण्यम् लायण्ण।

(आ बीजा नियम अने एवा बीजा असंयुक्त व्यंजनना विकारने लगता सामान्य के विशेष नियमो पैशाची भाषामा लागता नथी जेमके,

सं०	प्रा०	पै०
मकरकेतु —	मयरकेऊ—	मकरकेतू।
सगरपुत्रवचनम्—	सयरपुत्तवयण—	सगरपुत्तवचन।
विजयसेनेन लपितम्-	विजयसेणेण लविय—	विजयसेनेन लपित।
पापम्—	पाव—	पाप—
आयुधम्—	आउह—	आयुध।)

पूर्वोक्त नियम द्वारा प्राकृतमा 'क' 'ज' 'त' अने 'द' नो लोप जणावेलो छे तो पण प्राकृतना पेटाभेदरूप शौरसेनी, मागधी पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमा ते वर्णोनो लोपाता नथी

[1]त–द

(१) [2]शौरसेनीमां अने क्यांय अपभ्रंशमां 'त' नो 'द' थाय छे

सं०	प्रा०	शौ०, अप०	सं०	प्रा०	शौ०, अप०
कथितम्	कहिअं	कधिदं।	प्रतिज्ञा	पइण्णा	पदिण्णा।
तत	तओ	तदो।	मारुति	मारुई	मारुदी।
परित	परिओ	परिदो।	मन्त्रित	मंतिओ	मंतिदो।

ज–य

(२) मागधीमां आदिस्थित के अनादिस्थित 'ज' नो 'य' थाय छे

सं०	प्रा०	मा०	सं०	प्रा०	मा०
जनपद	जणवओ	यणवदे।	दुर्जन	दुज्जणो	दुय्यणे।
जानाति	जाणइ	याणदि।	वर्जित	वज्जिओ	वय्यिदे।
गर्जित	गज्जिओ	गय्यिदे।			

त, [4]द–त

(३) पैशाचीमां अने चूलिकापैशाचीमां 'त' कायम रहे छे अने 'द' नो पण 'त' थाय छे

१ जूओ पा० प्र० पृ० ९ (त=द)

२ शौरसेनीने लगता दरेक नियमो मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमां पण लागु थई शके छे

३ जूओ पा० प्र० पृ० ७ (ज=य)

४ जूओ पा० प्र० पृ० ८० (द=त)

सं०	प्रा०	पै०,–चू० पै०	सं०	प्रा०	पै०,–चू० पै०
भगवती	भगवई	भगवती ।	प्रदेश	पदेसो	पतेसो ।
पार्वती	पव्वई	पव्वती ।	मदन	मदणो	मतनो ।
शतम्	सय	सत ।	वदनकम्	वयणय	वतनक ।
दामोदर	दामोदरो	तामोतरो ।	मदनम्	मयण	मतन ।

[1]ग–क, ज–च [2]

(४) चूलिकापैशाचीमां 'ग' नो 'क' थाय छे अने 'ज' नो 'च' थाय छे

सं०	प्रा०	चू० पै०	सं०	प्रा०	चू० पै०
गिरितटम्	गिरितड	किरितड ।	जर्जरम्	जज्जर	चच्चर ।
नगरम्	नयर	नकर ।	जीमूत	जीमूओ	चीमूतो ।
मार्गण	मग्गणो	मक्कनो ।	नियोजितम्	नियोजिअ	नियोचित ।
राजा	राया	राचा ।			

क[3]–ग

(५) अपभ्रंशमां क्यांय 'क' नो 'ग' थाय छे

सं०	प्रा०	अ०
विक्षोभकर	विच्छोहयरो	विच्छोहगरो ।

---

१ जूओ पा० प्र० पृ० ५८ (ग=क)

२ ,, ,, ,, २७ (ज=च)

३ ,, ,, ,, ,, (क=ग)

संयुक्त 'कादि' लोप

३ संयुक्त व्यंजनमा पूर्ववर्ती क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष अने स–एमला व्यजनोनो प्राकृतमा प्राय लोप थई जाय छे अने लोप थया पछी बाकी रहेला अनादिना व्यजननो द्विभाव थाय छे जेमके,

क–भुक्तम् भुत–भुत्त।	ड–खड्ग खगो–खग्गो।
मुक्त मुत–मुत्तो।	षड्ज सजो–सज्जो।
शक्त सत–सत्तो।	त–उत्पलम् उपल–उप्पल।
[1]सिक्थम् सिथं–सित्थं।	उत्पाद उपाओ–उप्पाओ।
ग–दुग्धम् दुधं–दुद्धं।	द–मद्गु मगु–मग्गू।
मुग्धम् मुध–मुद्ध।	[1]मुद्गर–मुगरो–मुग्गरो।
ट–कैटफलम् कफल–कफ्फल।	प–गुप्त गुत–गुत्तो।
षट्पद छपओ–छप्पओ।	सुप्त–सुत–सुत्तो।

---

[1] जुओ पालीप्र० पृ ८१ (क्त=त्त) (क्थ=थ)

२ त्स्र, छछ, ड्ड, थ्य अने प्फ ना स्थानमा अनुक्रम च्छ, च्छ, ड्ड थ्य तथा प्फ थाय छे

३ ग्घ, ज्झ, ड्ढ, द्ध अने ब्भ–ना स्थानमा अनुक्रम ग्घ ज्झ, ड्ढ, द्ध अने ब्भ थाय छ

४ जुओ पालीप्र० पृ० ८८ (नियम–२)

५ जु० पा० प्र० पृ० ७ (नियम–३१)

६ जु० प्रा० प्र० पृ० ८१—(क्त=त्त

श—आश्लिष्ट आलिद्धो । निष्ठुर निट्ठुर—निठ्ठुरो ।
[1]निश्चल निच्चल—निच्चलो । निष्पुंसनम् निपुंसन—निप्पुंसण ।
श्च्योतति चुअइ । [4]शुष्कम् सुक्ख—सुक्क ।
[2]श्मश्रु मस्सु । षष्ठ छठ—छट्ठो ।
श्मशानम् मसाण । स—[3]निस्पृह निपह—निप्पहो ।
हरिश्चन्द्र हरिअन्दो । [5]स्कन्द कंदो ।
श्लक्ष्णम् लण्ह । स्खलित खलिओ ।
ष—गोष्ठी गोठी—गोट्ठी । स्तव तवो ।
तुष्ट तुठ—तुट्ठो । स्नेह नेहो ।

संयुक्त 'मादि' लोप.

४ संयुक्त व्यंजनमां परवर्ती म न अने य नो प्राकृतमां प्रायः लोप थई जाय छे अने लोप थतां पछी बाकी रहेला अनादिना व्यंजननो द्विर्भाव थाय छे जेमके —

म—युग्मम् युग—युग्ग । स्मर मरो ।
रश्मि रसि—रस्सी[6] । मेरम सेर ।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० ३८ (श्च=च्छ)-निच्छलो।
२ श्मश्रु मस्सु पा० प्र० पृ० ४१ टिप्पण
३ जु० पा० प्र० पृ० २ -नि० ३८-(ष्ठ=ट्ठ ष्ठ=ड्ढ)
पृ० ३७ (स्क=ख-नि० ६८) पृ० ३ (स्त=त नि० ४८)
४ शुष्कम् सुक्ख (पा० प्र० पृ० ३७)
५ जु० पा० प्र० पृ० ४ (श्म=म्ह) पृ० २७ (स्क=क्ख)
पृ० ३९ (स्त=त्थ-नि० ६८) पृ० ७८ (स्थ=त्थ स्प=प्फ)
...ो, रसी-पालिप्र० पृ० ३० टिप्पण
पृ० -(श्म=स्म)

न—धृष्टद्युम्न धट्ठज्जुणो[1] ।   [2]ग—मुद्गम् मुग्ग—मुग्गं ।

[3]नग्न नग्ग—नग्गो ।   ग्राह गाहो ।

लग्न लग्ग—लग्गो ।   श्यामा सामा ।

संयुक्त व्यंजननो[4] लोप.

६ संयुक्त व्यंजनना पूर्ववर्ती वा परवर्ती ल, व, ब, विसर्ग अने र नो प्राय लोप थई जाय छे अने लोप थया पछी बाकी रहेला अनादिना व्यंजननो द्विर्भाव थाय छे उदाहरण —

ल—उल्का उक्का—उक्का ।   [5]ब—अब्द अद्द—अद्दो ।

वल्कलम् वक्कल—वक्कलं ।   लुब्धक लुद्धअ—लुद्धओ ।

[6]व—विक्लव विक्कव—विक्कवो ।   शब्द सद्द—सद्दो ।

अम्लम् अम्ब ।   स्तब्ध—थद्ध—थद्धो ।

[6]र—चक्र चक्क—चक्को । विसर्ग—दुःखित दुक्खिअ—दुक्खिओ ।

पक्वम् पिक्क—पिक्कं ।   दुःसह दुस्सह—दुस्सहो ।

क्षेत्रक खेत्तओ ।   निःसहम् निस्सह—निस्सहं ।

क्ष्वोटक खोडओ ।   निःसरति निस्सरइ—निस्सरइ ।

ध्वज धओ ।

१ आ शब्दमां 'ण नो विकार थतो नथी

२ जु० पा० प्र० पृ० ४८ (नि० ६२)

३ जु० पा० प्र० पृ० २९ (नि० २)

४ जु० पा० प्र० पृ० ३०—३१ (नि० —१७)

५ जु० पा० प्र० पृ० ३८—३९ (नि० ३८—३९)

६ जु० पा० प्र० पृ० ३१ (नि० ४२)

[1]र—अर्क अक—अका । [2]र—क्रिया किया ।
वर्ग वग—वग्गो । ग्रह गहो ।
दीर्घ दिघ—दिग्घो । चक्रम् चक—चक्क ।
वार्ता वता—वत्ता। रात्रि रति—रत्ती ।
सामर्थ्यम् सामथ्थ—सामत्थ । धात्री धति—धत्ती ।

अपभ्रंशमा प्राय परवर्ती 'र' नो लोप विकल्पे थाय छे
प्रिय , पिओ प्रिउ, पिउ ।

[सूचना—ज्या पूर्ववर्ती अने परवर्ती एम बे जातना व्यजननो लोप प्राप्त होय त्या प्रयोगो प्रमाणे लोपनु विधान करवु जोईए, जेमके,

पूर्ववर्तीनो लोप— परवर्तीनो लोप—

द—उद्विग्न उविग—उव्विग्गो। य—काव्यम् कव—कव्व ।
–द्विगुण बिउणो । माल्यम् मल—मल्ल ।
द्वितीय बीओ । व—द्विजाति दुआइ ।
ल—कल्मषम् कमस—कम्मस । द्विप दिओ ।
शुल्वम् सुव—सुव्व ।
र—सर्वम् सव—सव्व ।

पूर्ववर्ती अने परवर्तीनो वारा फरती लोप—
न—उद्विग्न —उव्विग—उव्विग्गो । द—द्वारम् वार ।
ग—उद्विग्न—उव्विण—उव्विण्णो । व—द्वारम् दार ।

आ बधा उदाहरणोमा त्रीजो, चोथो अने पाचमो, ए त्रणमाथी कोइ एक नियम द्वारा लोपनो सभव छे]

1 जु० पा० प्र० पृ० २० (नि० २०)
2 जु० पा० प्र० पृ० ११–१२ (नि० ११–१२)

'द्र' लोप'

६ 'द्र'वाळा संस्कृत शब्दना 'द्र' ना 'र' नो लो
प्राकृतमाँ विकल्पे थाय छे

चन्द्र चन्द्रो, चदो । द्रव द्रवो, दवो । द्रह द्र
दहो । द्रुम द्रुमो, दुमो । भद्रम् भद्र, भद
रुद्र रुद्रो, रुद्दो । समुद्र समुद्रो, समुद्दो

'अन्त्यव्यञ्जन' नो 'अ'

७ केटलाक संस्कृत शब्दोना छेवटना व्यंजननो 'अ' थाय छे
शरत् सरओ । भिषक्[2] भिसओ । इत्यादि

'कादि' नो 'य'

८. अवर्णथी पर आवेला, एक ज पदमा रहेला, असंयुक्त
अवर्णान्त क, ग, च, ज, त, द, प, य अने व–ए
व्यंजनोनो प्राकृतमा सामान्य रीते 'य' थाय छे उदाह
आ प्रमाणे छे

क—तीर्थकर तित्थयरो । शकटम् सयढं ।

ग—नगरम् नयर । मृगाङ्क मयको ।

च—कचग्रह कयग्गहो । काचमणि कायमणी ।

ज—प्रजापति पयावई । रजतम् रयय ।

---

१ आ नियम एक 'चन्द्र' शब्दने लागतो नथी चन्द्रम् च

२ प्रा० पा० प्र० पृ० १२ (नि० १५)

त—पातालम् पायाल । रसातलम् रसायल ।

द—गदा गया । मदन मयणो ।

य[1]—नयनम् नयण । दयालु दयालु ।

व[2]—लावण्यम लायण्ण ।

खादिनो 'ह'

९. स्वरथी पर आवेला, एक ज पदमां रहेला अने असंयुक्त ख, घ, थ, ध, अने भ—एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां 'ह' थाय छे जेमके

ख—मुखम् मुह । मेखला मेहला । लिखति लिहइ । शाखा साहा

घ[3]—जघनम् जहण । माघ माहो । मेघ मेहो । श्लाघते लाहइ ।

थ—कथयति कहइ । आवसथ आवसहो । नाथ नाहो । मिथुनम् मिहुण ।

ध[4]—इन्द्रधनु इन्दहणू । बधिर बहिरो । बाधते बाहइ । व्याध वाहो । साधु साहू ।

भ[5]—स्तनभर थणहरो । नभस् नह । सभा सहा । स्वभाव सहावो । शोभते सोहइ ।

---

१ आ विधान ('य' नो पण 'य' करवानु विधान) बीजा नियमनो बाध करे छे

२ क्याय कोई एकाद शब्दमा इकारथी पर आवेला 'व' नो पण 'य' थई जाय छे —पिबति पियइ ।

३ जु० पा० प्र० पृ० ५६ (घ=ह)

४ ,, ,, ,, ,, ६० (ध=ह)

५ ,, ,, ,, ,, ६२ (भ=ह)

[प्राकृतमां ख, घ, थ, ध अने भ नो ह थवानुं जणाव्युं छे तो पण शौरसेनी, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमां तेम थतुं नथी]

थ—ध

(१) शौरसेनीमां विकल्पे अने अपभ्रंशमां क्यांय क्यांय शब्दमध्यस्थित 'थ' नो 'ध' थाय छे

सं०	प्रा०	शौ०—अ०
कथम्	कह	कध, कह।
कथयति	कहेइ	कधेदि, कधेइ, कहेइ
कथितम्	कहिअ	कधिदं, कहिअ।
नाथ	नाहो	नाधो नाहो।
राजपथ	रायपहो	राजपधो रामपहो।

घ—ख, ध—थ, भ—फ[1]

(२) चूलिकापैशाचीमां 'घ' नो 'ख', 'ध' नो 'थ' अने 'भ' नो 'फ' थाय छे

	सं०	प्रा०	चू० पै०
घ—	घर्म	घम्मो	खम्मो।
	मेघ	मेहो	मेखो।
	व्याघ्र	वग्घो	वक्खो।
ध—	मधुरम्	महुरं	मथुरं।
	बान्धव	बन्धवो	पथवो।
	धूली	धूली	थूली।

१ केटलाक वैयाकरणोने मते शब्दनी आदिमां आ नियम लागतो नथी

	सं०	प्रा०	चू०पै०
भ—	रभस	रहसो	रफसो ।
	रम्भा	रभा	रफा ।
	भगवती	भगवई	फकवती

झ—छ

(३) केटलाकने मते चूलिकापैशाचीमा 'झ' नो 'छ' थाय छे

झर्झर	अज्झरो	छच्छरो ।
निर्झर	निज्झरो	निच्छरो ।

ट—ड

१० स्वरथी पर आवेला, एक ज पदमा रहेला अने असयुक्त 'ट' नो प्राकृतमा ड थाय छे

ट—घट घडो । घटते घडइ । नट नडो । भट भडो ।

डु—तु

(१) पैशाचीमा 'डु' नो 'तु' पण थाय छे

सं०	प्रा०	पैशाची	
कुटुम्बकम्	कुडुबर	कुतुबक, कुटुबक ।	
कटुकम्	कडुअ	कतुअ, कटुअ ।	
पटु	पडु	पडु	पतु ।

ठ—ढ

११ स्वरथी पर आवेला, एकपदस्थित अने असयुक्त 'ठ' नो प्राकृतमा 'ढ' थाय छे

पालीमा तो वधाय सयुक्त 'ट' नो पण 'ड' थाय छे —
निघण्टु निघण्डु । पा० प्र०

ठ—कमठ कमढो। कुठार कुढारो। पठति पढइ। मठ मढो। शठ सढो।

ढ—ल

१२ स्वरो पर आवता, एकपदस्थित अने असंयुक्त 'ढ' नो 'ल' थाय छे

ढ—क्रीडति कीलइ। गरुड गरुलो। तडागम् तलाय। वडवामुखम् वलयामुह।

ड—ट

(१) चूलिकापैशाचीमां 'ड' नो 'ट' थाय छे एम केटलाक वैयाकरणो माने छे

सं०	प्रा०	चू० पै०
डमरुक	डमरुओ	टमरुको।
तडागम्	तलाय	तटाक।
प्रतिमा	पडिमा	पटिमा।
मण्डलम्	मडल	मटल।

ढ—ठ

(२) केटलाकने मते चूलिकापैशाचीमां 'ढ' नो 'ठ' थाय छे

सं०	प्रा०	चू०पै०	सं०	प्रा०	चू०पै०
गाढम्	गाढ	काठ।	ढक्का	ढक्का	ठक्का।
दंष्ट्रा	दाढा	दाठा	षण्ढ	संढो	संठो।

१ पालीभाषामां प्राय सर्वत्र ड नो ळ थाय छे-(जु० पा० प्र० पृ०-४३ (ड=ळ)

'ण—न

(१) पैशाचीमां 'ण' नो 'न' थाय छे

सं०	प्रा०	पै०
गण	गणो	गनो ।
गुण	गुणो	गुनो ।

'न—ण

१३ स्वरपरवर्ती, एकपदस्थित अने असंयुक्त 'न' नो 'ण' थाय छे

कनकम् कणय । नयनम् नयण । मदन मयणो । मानते माणइ । वचनम् वयण । वदनम् वयण ।

न—ण

१४ संस्कृतमा शब्दनी आदिमा रहेला असंयुक्त 'न' नो विकल्पे 'ण' थाय छे

नदी णई, नई । नर णरो, नरो । नयति णेइ, नेइ ।

'प—व

१५ स्वरपरवर्ती, असंयुक्त अने एकपदस्थित 'प' नो प्राकृतमां 'व' थाय छे

उपमा उवमा । उपसर्ग उवसग्गो । गोपति गोवई । प्रदीप पईवो । महिपाल महिवालो ।

---

१ जुओ० पा० प्र० पृ० ५८ (ण=न)

२ जु० पा० प्र० पृ० ६१ (न=ण)

'प—व

१६ अवर्णथी पर आवेला, असंयुक्त अने एकपदस्थित 'प' नो प्राकृतमा 'व' ज थाय छे

कलाप कलावो । कपालम् कवाल । कपिलम् कविल । काश्यप कासवो । कुणपम् कुणव । तपति तवइ । पापम् पाव । शपथ सवहो । शाप सावो ।

प—ब

(१) अपभ्रंशमां तो 'प' ने स्थाने 'ब' पण बोलाय छे

सं०	प्रा०	अ०
शपथ	सवहो	सबधु, सवधु ।

फ—भ, ह

१७ स्वरथी पर आवेला, असंयुक्त अने एकपदस्थित 'फ' नो प्रयोगानुसार 'भ' अने 'ह' थाय छे

फ—भ—रेफ रेभो । शिफा सिभा ।

फ—ह—मुक्ताफलम् मुत्ताहल ।

फ—भ, ह—गुफति गुभइ, गुहइ । शफरी सभरी, सहरी । सफलम् सभल, सहल । शेफालिका सेभालिआ सेहालिआ ।

फ—भ

(१) अपभ्रंशमा पण 'फ' नो 'भ' थाय छे[१]

सं०	प्रा०	अ०
सफलम्	सभल, सहल	सभलु

[१] आ नियम पहेलामा नियमनो अपवाद छे

ब—प

(१) केटलाक वैयाकरणोने मते चूलिकापैशाचीमां 'ब' ने स्थाने 'प' थाय छे॰

स०	प्रा०	च०पै०
बालक	बालओ	पालओ।
बान्धव	बन्धवो	पन्धवो।

'र—व

१८ स्वरपरवर्ती, एक पदान्वित अने असंयुक्त 'ब' नो 'व' थाय छे

अलाब अलावू। शबलम् सवलं।

म—वँ

(१) अपभ्रंशमां 'म' ने बदले 'वँ' पण बोलाय छे

स०	प्रा०	अ०	
कमलम्	कमल	कवँलु,	कमलु।
तथा	तह तहा,	तिवँ,	तिम।
भ्रमर	भमरो, भसलो,	भवँरु,	भमरु।
यथा	जह जहा,	जिवँ,	जिम।

---

१ जू० पा० प्र० पृ० ६२ (ब=प)

२ ,, ,, ,, ,, ,, (ब=व)

। ,, अलाबु अलाबु।

य–ज[1]

१०. संस्कृत शब्दनी आदिमां आवेल य नो प्राकृतमां ज थाय छे[2]

यम जमो। यश जसो। याति जाइ।

ज–य

(१) मागधीमां 'ज' ना 'य' न थतां 'य' ज रहे छे

सं०	प्रा०	मा०
याति	जाइ	यादि।
यथास्वरूपम्	जहासरूव	यधाशलूव।
यानपात्रम्	जाणवत्त	याणवत्त।

र–ल

(१) मागधीमां 'र' नो 'ल' थाय छे, अने पैशाचीमां तो विकल्पे थाय छे

सं०	प्रा०	मा०	पै०
वर	वरो	वले	वरो वलो।
नर	नरो	नले	नरो नलो।
विचार	विआरो	विआले	विआरो विआलो।

ल–ळ[3]

(१) पैशाचीमां 'ल' नो 'ळ' थाय छे

कमलम्	कमलं	कमळं।
कुलम्	कुलं	कुळं।

---

१ यवस जवसो जवसो पाली० प्र० पृ० ६२

२ आ नियम पछीना शब्दोने पण लागतो नथी यथाख्यातम् अहक्खाय। यथाजातम् अहाजाय। पृ० १०मा जणावेला बीजा नियम प्रमाणे शब्दनी आदिमां पण य लागे छे तेथी अहीं 'यथाख्यात' अने 'यथाजात' नो आदिनो 'य' लोपायलो छे

३ जुओ पा० प्र० पृ० ४३ (ल=ळ)

जलम्	जल	जळ।
शीलम्	सील	सीळ।
सलिलम्	सलिल	सलिळ।

श–स ष–स

२० संस्कृतमा वपराता 'श' अने 'ष' नो प्राकृतमा 'स' थाय छे

श—कुश कुसो। दश दस। नृशंस निससो।

विंशति विसइ। वश वसो। शब्द सद्दो।

श्यामा सामा। शुद्धम् सुद्ध। शोभते सोहइ।

ष—कषाय कसायो। घोषति घोसइ। निकष निहसो।

षण्ड सड्डो।

श, ष—विशेष विसेसो। शेष सेसो।

स–श

(१) मागधीमा तो 'स' नो 'श' थाय छे अने पैशाचीमा तो प्राकृतनी प्रमाणे छे

सं०	प्रा०	मा०
पुरुष	पुरिसो	पुलिशे।
सारस	सारसो	शालशे।
श्रुतम्	सुअ	शुद।
शोभनम्	सोहण	शोभण।
हंस	हसो	हशे

पृ० ६ (श=स, ष=स)

[1]ह–घ

२१. संस्कृतमां अनुस्वारनी पर आवेल 'ह' नो प्राकृतमां विकल्पे 'घ' थाय छे

संहार —संघारो, संहारो। सिंह —सिंघो, सीहो।



1 क्यांक एवा प्रकारना प्रयोग मळे छे, ज्यां स्वरथी पर आवेल 'ह' नो पण 'घ' थाय छे दाह —दाघो, दाहो।

प्रकरण ४

संयुक्त व्यंजनोना सामान्य फेरफारो

२२ संस्कृतना 'क्ष' नो विशेषे करीने प्राकृतमा 'ख' थाय छे अने क्याय क्याय तो प्रयोगानुसारे 'क्ष'नो 'छ' अने 'झ' पण थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'क्ष' नो 'क्ख' 'च्छ' अने 'ज्झ' थाय छे

[1]क्ष=ख क्ष=छ[2] क्ष=झ

क्षय खओ। क्षीणम् खीण। क्षीरम् खीर। क्ष्वेटक खेडओ। क्ष्वोटक खोडओ।

क्षण [3]छणो, [खणो]। क्षतम् छय। [4]क्षमा छमा [खमा]। क्षार छारो। क्षीणम् छीण। क्षीरम् छीर। क्षुण्ण छुण्णो। क्षुतम् छीअ। क्षुध् छुहा। क्षुर छुरो। क्षेत्रम् छेत्त।

क्षीयते झिज्जइ। क्षीणम् झीणं।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० १७ (क्ष=ख, क्ष=छ) क्ष=झ–टिप्पण पृ० १६

२ पालिभाषामा 'क्ष' नो 'च' पण थाय छे –(जु० पा० प्र० पृ० १७ क्ष=च)

३ 'क्षण' शब्दनो 'उत्सव' अर्थ होय त्यारे तेनु रूप 'छण' थाय छे अने समय अर्थ होय तो 'खण' रूप थाय छे जु० पा० प्र० पृ १७–(क्ष=छ, क्षण खणो छणो)

४ 'क्षमा' शब्दनो 'पृथिवी' अर्थ होय त्यारे तेनु 'छमा' रूप थाय छे अने क्षमवु–क्षमाकरवी–अर्थमा तो 'खमा' रूप ज वपराय छे.

[1]क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, क्ष=ज्झ

इक्षु इक्खू। ऋक्ष रिक्खो[2]। ऋक्षम् रिक्ख। मक्षिका मक्खिआ। लक्षणम् लक्खण। प्रक्षीणम् पक्खीण-। प्रक्षेप पक्खेवो। सादृश्यम् सारिक्ख।

अक्षि अच्छि। इक्षु उच्छू। उक्षा उच्छा। ऋक्ष रिच्छो। ऋक्षम् रिच्छ। कक्ष कच्छो। कक्षा कच्छा। कुक्षि कुच्छी। कौक्षेयकम् कुच्छेअय। दक्ष दच्छो। प्रक्षीणम् पच्छीण। मक्षिका मच्छिआ। लक्ष्मी लच्छी। वक्ष वच्छ। वृक्ष वच्छो। सदृक्ष सारिच्छो। सादृक्ष्यम् सारिच्छ।

प्रक्षीणम् पज्झीण।

क्ष=ङ्क

(१) मागधीमा तो 'क्ष' नो ङ्क थाय छे

यक्ष	जक्खो	यङ्के।
राक्षस	रक्खसो	लङ्कशे।

२३ संस्कृतना वस्तुवाचक शब्दना 'ष्क' अने 'स्क' नो प्राकृतमा 'ख' थाय छे तथा पदमध्यस्थित ष्क अने 'स्क' नो 'क्ख' थाय छे

[3]ष्क=ख, क्ख स्क=ख, क्ख

निष्कम् निक्ख। पुष्करम् पोक्खर। पुष्करिणी पोक्खरिणी। अवस्कन्द अवक्खंदो। स्कन्द खंदो। स्कन्धो खंधो। स्कन्धावार खंधावारो।

---

१ जू० पा० प्र० पृ० १७–(क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, क्ष=ज्झ–टिप्पण)

२ ऋक्ष अच्छो, इक्को। धाइल्ल धक्को। गाथा लासा। पा० प्र० पृ० १८

३ जू० पा० प्र० पृ० ३१–३२ (ष्क–क्ख, स्क=ख, स्क=क्ख)

संयुक्त ष, स=स[1]

(१) मागधीमां संयुक्त 'ष' के 'स' ने स्थाने 'स' थाय छे[2]

उष्मा	उम्हा	उस्मा।
कष्टम्	कट्ठ	कस्ट।
धनुष्खण्डम्	धणुक्खड	धनुस्खड।
निष्फलम्	निप्फल	निस्फल।
विष्णु	विण्हू	विस्नू।
शष्पम्	सप्फ	सस्प।
शुष्कम्	सुक्क	सुस्क।
प्रस्खलति	पक्खलइ	पस्खलदि।
बृहस्पति	बुहप्फई	बुहस्पदी।
मस्करी	मक्खरी	मस्कली।
विस्मय	विम्हयो	विस्मये।
हस्ती	हत्थी	हस्ती।

२४ संस्कृत शब्दना 'त्य' नो प्राकृतमा 'च' थाय छे अने पदमध्य-स्थित 'त्य' नो च्च थाय छे[3]

त्य=च[4]

त्याग चाओ। त्यागी चाई। त्यजति चयइ।

त्य=च्च

प्रत्यय पच्चओ। प्रत्यूष पच्चूसो। सत्यम् सच्च।

---

१ जूओ० पा० प्र० पृ० ७१ नि० ६८

२ पण 'ग्रीष्म' शब्दने आ नियम नथी लागतो

३ आ नियम 'चैत्य' शब्दने लागतो नथी चैत्यम चइत्तं, चेइअ–(ऐ=अइ अने अन्त स्वरवृद्धि)

४ जूओ० पा० प्र० पृ० २०–(त्य=च, त्य=च्च)

२५ प्रयोगानुसारे क्यांय 'त्व' नो 'च,' 'थ्व' नो 'छ,' 'द्व' नो 'ज' अने 'ध्व' नो 'झ' थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'त्व' नो च्च, 'थ्व' नो 'च्छ,' 'द्व' नो 'ज्ज' अने 'ध्व' नो 'ज्झ' थाय छे.

[1]त्व=च्च

कृत्वा किच्चा। चत्वरम् चच्चरं। ज्ञात्वा णच्चा। दत्त्वा दच्चा। भुक्त्वा भोच्चा। श्रुत्वा सोच्चा।

थ्व=च्छ — पृथ्वी पिच्छी।

ध्व=झ — ध्वजः[2] झओ।

द्व=ज्ज — विद्वान् विज्ज।

ध्व=ज्झ — बुध्वा बुज्झा। मध्यमम् मज्झम।

२६ संस्कृतमां ह्रस्व स्वरथी पर आवेला 'थ्य', 'श्च', 'त्स' अने 'प्स' नो प्राकृतमां 'च्छ' थाय[3] छे

थ्य—पथ्यम् पच्छं। पथ्या पच्छा। मिथ्या मिच्छा। सामर्थ्यम् सामथ्य—सामच्छ।

[4]श्च—आश्चर्यम् अच्छेरं। पश्चात् पच्छा। पश्चिमम् पच्छिम। वृश्चिक विंछिओ।

---

1 ज० पा० प्र० पृ० ३८ (टिप्पण—चत्वरम् चच्चर)

2 ध्वज धओ—(पा० प्र० पृ० ३२—नि० ३८)

3 जु० पा० प्र० पृ० २१ (थ्य=च्छ) पृ० ३८—(श्च=च्छ) पृ० २९—(त्स=च्छ) पृ० ३८—(प्स=च्छ)

4 पण मात्र 'निश्चल' शब्दने आ नियम लागतो नथी निश्चल=निच्चलो, पाली—निच्च।

त्स—उत्सव उच्छवो। उत्साह उच्छाहो। उत्सुक उच्छुओ। चिकित्सति चिइच्छइ। मत्सर मच्छरो। सवत्सर सवच्छरो।

प्स—अप्सरा अच्छरा। जुगुप्सति जुगुच्छइ। लिप्सति लिच्छइ।

च्छ—श्च

(१) प्राकृतमा 'श्च' नो 'च्छ' थाय छे त्यारे मागधीमा तो एथी उलटु थाय छे एटले 'च्छ' नो 'श्च' थाय छे

उच्छलति	उच्छलइ	उश्चलदि।
गच्छ	गच्छ	गश्च।
तिर्यक्	तिरिच्छि	तिरिश्चि।
पिच्छिल	पिच्छिलो	पिश्चिले।
पृच्छति	पुच्छइ	पुश्चदि।
वत्सल	वच्छलो	वश्चले।

द्य, य्य, र्य—ज

२७ पदनी आदिमा रहेला 'द्य', 'य्य' अने 'र्य' नो 'ज' थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'द्य' 'य्य' अने 'र्य' नो 'ज्ज' थाय छे

द्य—द्युति—जुई। द्योत—जोओ।

द्य—अवद्यम् अज्ज। मद्यम् मज्ज। वैद्य वेज्जो।

य्य—जय्य जज्जो। शय्या सेज्जा।

र्य—कार्यम् कज्ज। पर्याप्तम् पज्जत्त। पर्याय पज्जाओ। भार्या भज्जा। मर्यादा मज्जाया। वर्यम् वज्ज।

---

१ जू० पा० प्र० पृ० १८—(द्य=ज, द्य=ज्ज) पालीमा केटलेक ठेकाणे 'द्य' नो 'य्य' पण थाय छे—पृ० १९—(द्य=य्य टिप्पण)

२ पालीमा तो 'र्य' नो 'यिर' 'य्य' व 'रिय' थाय छे—(जू० पा० प्र० पृ०

र्य—य्य

(१) शौरसेनीमां 'र्य' नो विकल्पे 'य्य' थाय छे

आर्यपुत्र	अज्जउत्तो	अय्यउत्तो, अज्जउत्तो।
कार्यम्	कज्ज	कय्य, कज्ज।
पर्याकुल	पज्जाउलो	पय्याकुलो, पज्जाकुलो।
सूर्य	सुज्जो	सुय्यो, सुज्जो।

द्य—य्य[1]

(१) मागधीमां 'द्य' नो 'य्य' थाय छे

अद्य	अज्ज	अय्य।
मद्यम्	मज्ज	मय्य।
विद्याधर	विज्जाहरो	विय्याहले।

[2]ध्य, ह्य—झ

२८ पदादिभूत 'ध्य' अने 'ह्य' नो 'झ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ध्य' तथा 'ह्य' नो 'ज्झ' थाय छे[3]

ध्य— ध्यानम् झाण। ध्यायति झायइ।

उपाध्याय उवज्झायो। बध्यते बज्झइ। विन्ध्य विंझो[4]।

साध्यम् सज्झ। स्वाध्याय सज्झाओ।

[5]ह्य—गुह्यम् गुज्झ। नह्यति नज्झइ। मह्यम् मज्झ। सह्य सज्झो।

---

१ जुओ टिप्पण २ नु पृ० ३३।

२ जुओ टिप्पण १ नु पृ० ३३।

३ जु० पा० प्र० पृ० १०—(ध्य=झ, ध्य=ज्झ)

४ अनुस्वारथी अने गुरु के दीर्घस्वरथी पर आवेला कोइ पण व्यंजनना स्थानमां अहीं जणावेला द्विरुक्त (ग्ग, ज्झ वगेरे) विधानो थता नथी माटे ज 'विन्ध्य' नु 'विंज्झो' नहि पण 'विंझो' थयु जुओ पा० प्र० पृ० १९ टि० सध्या सझा।

५ पालीमां 'ह्य' नो 'य्ह' थाय छे—(पा० प्र० पृ० २२—ह्य=य्ह)

र्त—ट

२९ संस्कृतना 'र्त'[1] नो प्राकृतमा सामान्य रीते 'ट्ट'[2] थाय छे

कैवर्त केवट्टो। जर्त जट्टो। नर्तकी नट्टई। प्रवर्तते पयट्टइ। राजवर्तकम् रायवट्टय। वर्ती वट्टी। वर्तुलम् वट्टुल। वार्ता वट्टा। सवर्तितम् सवट्टिअ।

न्त=न्द

(१) शौरसेनीमा क्याय क्याय 'न्त' नो 'न्द' थाय छे

अन्त पुरम्	अन्तेउर	अन्देउर।
निश्चिन्त	निच्चितो	निच्चिदो।
महान्	महतो	महदो।

---

१ २९मो नियम नीचे जणावेला शब्दोमा लागतो नथी अर्थात् नीचेना शब्दोमा 'र्त' नो 'ट्ट' थतो नथी

आवर्तक आवत्तओ।	प्रवर्तक पवत्तओ।
आवर्तनम् आवत्तण।	प्रवर्तनम् पवत्तण।
उत्कर्तितम् उक्कत्तिअ।	मुहूर्त मुहुत्तो।
कर्तरी कत्तरी।	मूर्त मुत्तो।
कार्तिक कत्तिओ।	मूर्ति मुत्ती।
कीर्ति कित्ती।	वर्तिका वत्तिआ।
धूर्त धुत्तो।	वार्तिकम् वत्तिअ।
निवर्तक निवत्तओ।	संवर्तक संवत्तओ
निवर्तनम् निवत्तण।	संवर्तनम् संवत्तण।
निवर्तक निव्वत्तओ।	

२ १६ नि० ७, संयुक्त 'लादि' लोप

२ पृ० ५८ (त=ट)

'म्न, ज्ञ–ण

३० संस्कृतना 'म्न' अने 'ज्ञ' नो प्राकृतमां 'ण' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'म्न' अने 'ज्ञ' नो 'ण्ण' थाय छे

म्न–निम्नम् निण्ण। प्रद्युम्नः पज्जुण्णो।

ज्ञ–प्रज्ञा पण्णा। विज्ञानम् विण्णाण। आज्ञा आणा[2]।

ज्ञानम् णाण। सज्ञा सणा[3]।

[4]ज्ञ, ञ्ज, ण्य, न्य—ञ्ञ

(१) प्राकृतमां 'ज्ञ' नो 'ण' थाय छे त्यारे मागधीमां 'ज्ञ' नो 'ञ्ञ' थाय छे अने 'ञ्ज,' 'ण्य' अने 'न्य' नो पण 'ञ्ञ' थाय छे

ज्ञ—अवज्ञा	अवण्णा	अवञ्ञा।
प्रज्ञा	पण्णा	पञ्ञा।
सर्वज्ञ	सव्वण्णू	शव्वञ्ञे।
ञ्ज—अञ्जलि	अञ्जली	अञ्जली।
धनञ्जय	धणजयो	धणञ्ञए।
प्राञ्जल	पंजलो	पञ्ञले।
ण्य—अब्रह्मण्यम्	अबम्हण्ण	अबम्हञ्ञ।
पुण्यम्	पुण्ण	पुञ्ञ।
पुण्यवान्	पुण्णवतो	पुञ्ञवते।
न्य—अभिमन्यु	अहिमन्नू	अहिमञ्ञू।
कन्यका	कन्नया	कञ्ञया।
सामान्यम्	सामन्न	शामञ्ञ।

१ जु० पा० प्र० पृ० ८८ (म्न=न) टिप्पण जु० पा० प्र० पृ० २८ (ज्ञ=ण) । ट वण

२-३ जुओ पृ ८ टिप्पण ४

४ जुओ पा० प्र० पृ २३-२४ (ज्ञ=ञ्ञ, ण्य=ञ्ञ, न्य=ञ्ञ)

[1]स्त–थ

३१ संस्कृतना 'स्त'नो प्राकृतमां 'थ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'स्त' नो 'त्थ' थाय छे [2]

स्तव थवो । स्तम्भ थभो । स्तब्ध थद्धो [ठद्धो] स्तुति थुई । स्तोकम् थोअं । स्तोत्रम् थोत्त । स्त्यानम् थीणं ।

अस्ति अत्थि । पर्यस्त पल्लत्थो । प्रशस्त पसत्थो । प्रस्तर पत्थरो । स्वस्ति सत्थि । हस्त हत्थो ।

र्थ, स्थ—स्त

(१) 'र्थ' अने 'स्थ' नो मागधीमां 'स्त' थाय छे

अर्थपति	अत्थवई	अस्तवदी ।
सार्थवाह	सत्थवाहो	शस्तवाहे ।
उपस्थित	उवट्ठिओ	उवस्तिदे ।
सुस्थित	सुट्ठिओ	सुस्तिदे ।

[3]ष्ट–ठ

३२ संस्कृतना 'ष्ट' नो प्राकृतमां 'ठ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ष्ट' नो 'ट्ठ' थाय छे [4]

---

१ जू० पा० प्र० पृ० २७–(स्त=थ, स्त=त्थ)

२ 'समस्त' अने 'स्तम्ब' शब्दना 'स्त' नो 'थ' थतो नथी समस्तम् समत्तं । स्तम्ब तम्बो ।

३ जू० पा० प्र० पृ० २६ (ष्ट=ठ)

४ इष्टा, उष्ट्र अने संदष्ट शब्दना 'ष्ट' नो 'ठ' थतो नथी इष्टा इट्टा । । संदष्टम् संदट्ट । जुओ पा० प्र० पृ० २९ टिप्पण ।

अनिष्टम् अणिट्ठ । इष्ट इट्ठो । कष्टम् कट्ठ । काष्टम् कट्ठ । दष्ट दट्ठो । दृष्टि दिट्ठी । पुष्ट पुट्ठो । मुष्टि मुट्ठी । यष्टि लट्ठी । सुराष्ट्र सुरट्ठा । सृष्टि सिट्ठी ।

ट्ट, ष्ठ—स्ट

(१) 'ट्ट' अने 'ष्ठ' नो मागधीमां 'स्ट' थाय छे

ट्ट—पट्ट पट्टो पस्टे । भट्टारिका भट्टारिया भस्टालिका

भट्टिनी भट्टिणी भस्टिणी ।

ष्ठ—कोष्ठागारम् कोट्ठागार कोस्टागाल ।

सुष्ठु सुट्ठु शुस्टु ।

ष्ट—सट

(१) पैशाचीमां 'ष्ट' ना स्थाने 'सट' बोलाय छे

कष्टम् कट्ठ कसट ।

दृष्टम् दिट्ठ दिसट ।

[1]ड्म, [2]क्म—प

२३ संस्कृतना 'ड्म अने 'क्म'नो[3] प्राकृतमां 'प' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ड्म' अने 'क्म' नो 'प्प' थाय छे

[4]कुड्मलम् कुपल ।

रुक्मिणी रुप्पिणी ।

१-२ पालीमां तो 'ड्म' नो 'डुम' अने 'क्म' नो 'कुम' थाय छे— (जु० पा प्र० ४०)

३ कोई एक ठेकाणे 'क्म' नो '-म' पण थाय छे —रुक्मी रुम्मी, रुप्पी

४ कुड्मलम्—कुडुमल (पा० प्र० पृ० ४३ टिप्पण)

[1]ष्प, स्प–फ

३४ संस्कृतना 'ष्प' अने 'स्प' नो 'फ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ष्प' तथा 'स्प' नो 'प्फ' [2]थाय छे

ष्प—निष्पाव निप्फावो । निष्पेष निप्फेसो । पुष्पम् पुप्फ । शष्पम् सप्फ ।

स्प—स्पन्दनम् फंदण । प्रतिस्पर्धी पाडिप्फद्धी । बृहस्पति बुहप्फई ।

[3]ह्व–भ

३५ प्राकृतमां 'ह्व' नो 'भ' अने पदमध्यस्थित 'ह्व' नो 'ब्भ' विकल्पे थाय छे

जिह्वा जिब्भा जीहा । विह्वल विब्भलो, विहलो ।

[4]न्म–म्म

३६ संस्कृतना 'न्म' नो 'म्म' थाय छे

जन्म जम्मो । मन्मथ वम्महो । मन्मन मम्मण ।

[5]ग्म–म्म

३७ संस्कृतना 'ग्म' नो 'म्म' विकल्पे थाय छे

तिग्मम् तिम्म, तिग्ग । युग्मम् जुम्म, जुग्ग ।

---

१ जूओ पा० प्र० पृ० ३९ (स्प=फ, स्प=प्फ, ष्प=प्फ)

२ पदमध्यस्थित 'स्प' अने 'ष्प' नो प्राय 'प्प' पण थाय छे

निष्पुंसनम् निप्पुंसण । परस्परम् परोप्पर ।

निष्प्रभ निप्पभो । बृहस्पति बुहप्पइ ।

निस्पृह निप्पिहो । तू० पाली प्र० पृ ३०

३ जूओ पा० प्र० पृ० ३०–(गह्वरम्=गब्भर) टिप्पण तथा पृ० ८४–ह्व=भ)

४ जूओ पा० प्र० पृ० ४८–(न्म=म्म)

५ पालीमा प्राय 'ग्म' नो 'गुम' थाय छे –(जू० पा० प्र० पृ० ४९)

[1]श्म, ष्म, स्म, ह्म, क्ष्म—म्ह

३८ संस्कृतमां प्रयोजाता 'श्म', 'ष्म', 'स्म', 'ह्म' अने पक्ष्मना 'क्ष्म'नो प्राकृतमां 'म्ह' [2]थाय छे

श्म—कश्मीरा कम्हारा । कुश्मान कुम्हाणो ।

ष्म—उष्मा उम्हा । ग्रीष्म गिम्हो ।

स्म—अस्मादृश अम्हारिसो । विस्मय विम्हओ ।

ह्म—ब्रह्मा बम्हा । ब्राह्मण बम्हणो । ब्रह्मचर्यम् बम्हचेर
सुह्मा सुम्हा ।

क्ष्म—पक्ष्मलम् पम्हलं । पक्ष्माणि पम्हाइं ।

(१) अपभ्रंशमां 'स्म' ना स्थाने 'म्भ' पण बोलाय छे

ग्रीष्म	गिम्हो	गिम्भो,	गिम्हो ।
श्लेष्मा	सिम्हो	सिम्भो,	सिम्हो ।

[3]श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण, क्ष्ण, ष्म—ण्ह

३९ संस्कृतमां प्रयोजाता 'श्न', 'ष्ण', 'स्न', 'ह्न', 'ह्ण', 'क्ष्ण' अने सूक्ष्मना 'क्ष्म'नो 'ण्ह' थाय छे

श्न—प्रश्न पण्हो । शिश्न सिण्हो ।

ष्ण—उष्णीषम् उण्हीसं । कृष्ण कण्हो । जिष्णु जिण्हू
विष्णु विण्हू

स्न—ज्योत्स्ना जोण्हा । प्रस्नुत पण्हुओ । स्नात ण्हाओ ।

ह्न— जह्नु जण्हू । वह्नि वण्ही ।

---

१ जुओ पा० प्र० पृ० ५०—(श्म=म्ह, ष्म=म्ह, स्म=म्ह)

२ आ नियम केटलेक ठेकाणे लागतो नथी —रश्मि रस्सी । स्मर सरो—जुओ पालि प्र० पृ० ६०—(स्म=स)

३ जुओ पा० प्र० पृ० ४९ (नियम—६३) तथा पृ० ४७ श्न=ण्ह, स्न ष्ण=ण्ह पृ० ४८ टिप्पण तीक्ष्ण तिक्खिणो, तिक्खो, तिण्हो। पृ० ४० टिप्पण पूर्वाह्ण पुब्बण्हो ।

ह्ण— अपराह्ण अवरण्हो। पूर्वाह्ण पुव्वण्हो।
क्ष्ण— तीक्ष्णम् तिण्हं। श्लक्ष्णम् सण्ह।
क्ष्म— सूक्ष्मम् सण्ह।

¹स्न—सिन

(१) प्राकृतमां 'स्न' नो 'ण्ह' थाय छे त्यारे पैशाचीमां तो क्यांय क्यांय 'स्न' ने बदले 'सिन' बोलाय छे

स्नातम् ण्हायं सिनात।
स्नुषा सुण्हा, ण्हुसा सिनुसा, सुनुसा।

²ह्ल—ल्ह

४० संस्कृतना 'ह्ल'नो प्राकृतमां 'ल्ह' थाय छे:

कह्लारम् कल्हार। प्रह्लाद पल्हाओ।

³ज्ञ—ज

४१ संस्कृतना 'ज्ञ' नो प्राकृतमां 'ज' विकल्पे थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ज्ञ' नो 'ज्ज' थाय छे

अभिज्ञ अहिज्जो, अहिण्णू। आज्ञा अज्जा, आणा। आत्मज्ञ अप्पज्जो, अप्पण्णू। इङ्गितज्ञ इङ्गिअज्जो, इङ्गिअण्णू। दैवज्ञ देवज्जो, देवण्णू। प्रज्ञा पज्जा, पण्णा। प्राज्ञ पज्जो, पण्णो। मनोज्ञम् मणोज्जं, मणुण्णं। सर्वज्ञ सव्वज्जो, सव्वण्णू। संज्ञा सन्ना, सणा।

⁴र्ह—रिह

४२ 'र्ह' व्यंजननो प्राकृतमां 'रिह' थाय छे

अर्हति अरिहइ। अर्ह अरिहो। गर्हा गरिहा। बर्ह बरिहो।

---

१ जुओ प्रा० प्र० पृ० ८६ (नि० ७३) स्नातम् सिनात। स्नुषा सुणिसा, सुण्हा, (ण्हुसा)

२ पालीमां 'ह्ल'नो 'हिल' थाय छे ह्लाद हिलादो—पा० प्र० पृ० ३२

³ पाली प्र० पृ० २४ (प्रज्ञा—पञ्ञा) ... प्रा० प्र० पृ० ११ (नियम १३)

र्श, र्ष-रिस

४७ सस्कृतना 'र्श' अने 'र्ष' नो प्राकृतमां 'रिस' विकल्पे थाय छे

र्श—आदर्श आयरिसो, आयसो । दर्शनम् दरिसण, दसण ।
सुदर्शन सुदरिसणो, सुदसणो ।

र्ष—वर्षम् वरिस, वास । वर्षशतम् वरिससय, वाससय ।
वर्षा वरिसा, वासा ।

ल-इल

४८ सस्कृतना संयुक्त 'ल' नो 'इल' थाय छे

अम्लम् अबिल । क्लाम्यति किलम्मइ । क्लाम्यत् किलन्त । क्लिष्टम् किलिट्ठ । क्लिन्नम् किलिन्न । क्लेश किलेसो । ग्लायति गिलाइ । ग्लानम् गिलाण । प्लुष्टम् पिलुट्ठ । प्लोष पिलोसो । म्लायति मिलाइ । म्लानम् मिलाण । श्लेष सिलेसो । श्लेष्मा सिलिम्हा । श्लोक सिलोओ । श्लिष्टम् सिलिट्ठ । शुक्लम् सुइल ।

र्य-रिअ

४९ सस्कृतना 'र्य' व्यंजनतो प्राकृतमां 'रिअ' थाय छे

आचार्य आयरिओ । गाम्भीर्यम् गभीरिअ । गाम्भीर्यम् गहीरिअ । चौर्यम् चोरिअ । धैर्यम् धीरिअ । ब्रह्मचर्यम् बम्हचारिअ । भार्या भारिआ । वर्यम् वरिअ । वीर्यम् वीरिअ । स्थैर्यम् थेरिअ । सूर्य सूरिओ । सौन्दर्यम् सुन्दरिअ । शौर्यम् सोरिअ ।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० ११ टिप्पण—अद्दं अरिसो । आर्ष आरिस ।

२ ,, ,, ,, ,, ३१ (टि० ३७)

३ आ नियम क्यांय क्यांय लागतो पण नथी —क्लम कमो । प्लव पवो ।

४ जुओ पृ० ३३–७० ना नियम उपरनुं टिप्पण

र्य—रिय

(१) प्राकृतनी पेठे पैशाचीमा पण क्याय क्याय 'र्य' ने बदले 'रिय' बोलाय छे

भार्या भज्जा भारिया, भज्जा।

ह्य—ग्ह[1]

४६ 'ह्य' नो 'ग्ह' प्राकृतमा विकल्पे थाय छे

गुह्यम् गुग्ह, गुज्झ[1]।
सह्य सग्हो, सज्झो।

र्वी—उवी[3]

४७ स्त्रीलिङ्ग पदने अते वर्तता संयुक्त 'र्वी'नो प्राकृतमा 'उवी' थाय छे

गुर्वी गुरुवी। तन्वी तणुवी। पृथ्वी पुहुवी। बह्वी बहुवी। लघ्वी लहुवी। मृद्वी मउवी।

—

१ जूओ पृ० ३८—, मु टिप्पण।
२ जूओ टि० २८—पृ० ३८
[illegible]नी (पालि प्र० पृ ०,० सीप्रत्यय)

प्रकरण ५

उपर एटले प्रकरण २–३–४मा आपेला नियमो सामान्य नियमो कहेवाय छे एटले ज्या कोई बीजो खास नियम न लागतो होय त्या ज नियमो लागू थाय छे आ नीचे जे नियमो आपवामा आवे छे ते विशेष नियमो छे एटले ज्या आ नियमोनी प्राप्ति थती होय त्या सामान्य नियमो न लगाडता प्रथम आ ज नियमो लगाववाना छे

स्वरना विशेष विकारो

४८ 'अ' विकार

(क) [1]अ=आ—

नीचे जणावेला शब्दोमा आदिना 'अ' नो विकल्पे 'आ' थाय छे

अभियाति आहिआई, अहिआई। प्रतिस्पर्धा पाडिप्फद्धी, पाडिप्फद्धी।
अस्पर्श आफसो, अफसो। प्रवचनम् पावयण, पवयण।
चतुरन्तम् चाउरत, चउरत। प्ररोह पारोहो, परोहो।
दक्षिण दाहिणो, दक्खिणो। प्रवासी पावासू, पवासू।
परकीयम् पारकेर, परकेर। प्रसिद्धि पासिद्धी, पसिद्धी।
परकीयम् पारक, परक। प्रसुप्त पासुत्तो, पसुत्तो।
द्रुत दुणा, दुण। मनस्वी माणसी, मणसी।
प्रकटम् पायड, पयड। मनस्विनी माणसिनी, मणसिणी।
प्रतिपत् पाडिवआ, पडिवआ। समृद्धि सामिद्धी, समिद्धी।
प्रतिसिद्धि पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी। सदृक्ष सारिच्छो, सरिच्छो
इत्यादि।

---

[1] पाली प्र० पृ० ९२–(अन्ना)

(ख) [1]अ=इ—

नीचे जणावेला शब्दोमा चिह्नित 'अ' नो 'इ' थाय छे–ते क्याय नित्ये थाय छे अने क्याय विकल्पे थाय छे

ईषत् इसि । उत्तम उत्तिमो । कतम कइमो । कृपण किविणो । दत्तम् दिण्ण । मरिचम् मिरिअ । मध्यम मज्झिमो । मृदङ्ग मुइगो । वेतस वेडिसो । व्यजनम् विअण । व्यलीकम् विलीअ । स्वप्न सिविणो ।

वैकल्पिक उदाहरणो —

अङ्गार इंगारो, अगारो । ललाटम् णिडाल, णडाल ।
पक्वम् पिक्क, पक्क । सप्तपर्ण छत्तिवण्णो छत्तवण्णो ।

(ग) अ=ई—

नीचे आपेला शब्दना आद्य 'अ' नो विकल्पे 'ई' थाय छे

हर हीरो, हरो ।

(घ) [2]अ=उ—

नीचे सूचवेला शब्दोमां चिह्नित 'अ' नो 'उ' थाय छे–ते क्याय नित्य थाय छे अने क्याय विकल्पे थाय छे

अभिज्ञ	अहिण्णू ।	गवय	गउओ ।
आगमज्ञ	आगमण्णू ।	गवया	गउआ
कृतज्ञ	कयण्णू ।	ध्वनि	झुणी ।
विज्ञ	विण्णू ।	विष्वक्	वीसु
सर्वज्ञ	सव्वण्णू ।		[3]इत्यादि ।

---

१ पाली प्र० पृ० ५२–(अन्इ)

२ पाली प्र० पृ० ५२–(अन्उ)

३ प्रयोगानुसारी शब्दो 'आदि' शब्दथी समजवाना छे।

वैकल्पिक उदाहरण।

खण्डित खुडिओ, खडिओ।
चण्डम् चुड, चड।
प्रथमम् पुढम, पढुम, पुढुम, पढम।
स्वपिति सुवइ, सोवइ।

(ह) [1]अ=ए—

नीचे जणावेला शब्दोमा चिह्नित 'अ' नो 'ए' थाय छे-ते क्याय नित्ये थाय छे अने क्याय विकल्पे थाय छे

अत्र एत्थ। ब्रह्मचर्यम् बम्हचेर।
अन्तःपुरम् अंतेउर। [2]शय्या सेज्जा।
अन्तश्चारी अंतेआरी। सौन्दर्यम् सुन्देर।
कन्दुकम् गेन्दुअ।

वैकल्पिक उदाहरणो—

आश्चर्यम् अच्छेर, अच्छरिअ। पर्यन्तः पेरंतो, पज्जंतो।
उत्कर उक्केरो, उक्करो। वल्ली वेल्ली, वल्ली।

(च) अ=ओ—

नीचे जणावेला शब्दोमा चिह्नित 'अ' नो 'ओ' थाय छे—ते क्याय नित्ये थाय छे अने क्याय विकल्पे थाय छे.

नमस्कार नमोक्कारो। पद्मम पोम्म। परस्परम् परोप्परं।

वैकल्पिक उदाहरणो—

अर्पयति ओप्पेइ, अप्पेइ। स्वपिति सोवइ, सुवइ।
अर्पितम् ओप्पिअ, अप्पिअं।

---

१ पाली प्र० पृ० ५२-(अ=ए)
२ शय्या सेय्य (पाली)

(ख) अ=अइ—

'मय' प्रत्ययात शब्दमा आवेला 'म' ना 'अ' नो विकल्पे 'अइ' थाय छे

जलमयम्	जलमइअ,	जलमय ।
विषमयम्	विसमइअ,	विसमअ ।
दुःखमयम्	दुहमइअ,	दुहमय ।
सुखमयम्	सुहमइअ,	सुहमयं ।

(ग) अ=आइ—

न पुन—न [1]उणाइ, न उणो ।
पुन—पुणाइ, पुणो ।

(घ) 'अ' लोप—

अरण्यम्—रण्ण, अरण्ण ।
अलाबू—लाऊ, अलाउ ।

४९ 'आ' विकार—

(क) आ=अ—

नीचे सूचवेला शब्दोमा अने अव्ययोमा चिह्नित 'आ' नो 'अ' थाय छे—ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे

[2]आचार्य आयरिओ ।	महाराष्ट्र मरहट्टो ।
कासिक कसिओ ।	मांसम् मस ।
कांस्यम् कस ।	वाशिक वसिओ ।
पाण्डव पडवो ।	श्यामाक सामओ ।
पांसन पसणो ।	सांयात्रिक सजत्तिओ ।
पांसु पसू ।	सांसिद्धिक, ससिद्धिओ इत्यादि ।

१ अहीं 'पुन' शब्दना आदि 'प' नो लोप थएलो छे— जुओ पृ० २६ टिप्पण २ उ ।

२ पा० १ २ [आ=अ]
नि० ११
(अ=उ) पृ० ४८

वैकल्पिक उदाहरणो—

उत्खातम् उक्खयं, उक्खायं। पूर्वाह्ण पुव्वण्हो, [1]पुव्वाण्हो।
कालक कलओ, कालओ। बलाका बलया, बलाया।
कुमार कुमरो, कुमारो। ब्राह्मण बम्हणो, बाम्हणो।
खादिरम् खइरं, खाइरं। स्थापित ठविओ, ठाविओ।
चामर चमरो, चामरो। (परिष्ठापित परिट्ठविओ, परिट्ठाविओ।
तालवृन्तम् तलवेंटं, तालवेंटं। संस्थापित संठविओ, संठाविओ।)
नाराच नराओ, नाराओ। हालिक हलिओ, हालिओ इत्यादि
प्राकृतम् पययं, पाययं।

अव्ययो—

अथवा अहव, अहवा। तथा तह, तहा।
यथा जह, जहा। वा व, वा। हा ह, हा इत्यादि।

(ख) आ=इ —

नीचेना शब्दोमां चिह्नित 'आ' नो विकल्पे 'इ' थाय छे
आचार्य आइरिओ, आयरिओ।
कूर्पास कुप्पिसो, कुप्पासो।
निशाकरः निसिअरो, निसाअरो।

(ग) आ=ई —

खल्वाट खल्लीडो।
स्त्यानम् ठीणं (थीणं[2])।

(घ) आ=उ—

आर्द्रम् उल्लं। सास्ना सुण्हा। स्तावक थुवओ।

---

१ आ बन्ने रूपो आचार्य हेमचन्द्रे संमत नथी प्रा० व्या० अ० ८-१-६७-पृ० १३

२ जुओ पृ० २७ नि० ३१

(७) आ=ऊ—

आर्या ऊज्जू[1]।

आसार ऊसारो, आसारो (वैकल्पिक)

(ञ) आ[2]=ए—

ग्राह्यम्[3] गेज्झ।

वैकल्पिक—

असहार्ये अमहेज्जो, असहज्जो ।
एतावन्मात्रम् एत्तिअमेत्त, एत्तिअमत्त ।
भोजनमात्रम् भोअणमेत्त, भोअणमत्त ।
द्वारम् देर, दार ।
पारापत पारेवओ, पारावओ ।
पश्चात्कर्म पच्छेकम्म, पच्छाकम्म ।
पुराकर्म पुरेकम्म, पुराकम्म ।

(झ) आ=ओ—

आर्द्रम् ओल्ल । आली ओली[4]।

९० इ—विकार

(क) इ=अ—

इति[6] इअ। तित्तिरि तित्तिर–तित्तिरो । पथिन् पह–

---

१ आ शब्दनो प्रयोग 'सासू' अर्थमा ज थाय छे।

२ पा० प्र० पृ० ५३ [आ=ए]

३ वैदिक 'गृभ्यम्' (ऋ० ३–१–११८) उपरथी प्रा० 'गिज्झ गेज्झ' विशेष सुकर जणाय छे

४ जूओ पृ० ३३ नि० २७

५ आ शब्दने 'पंक्ति' अर्थमा ज वापरवानो छे - ओली– गू० ओळ, ओळखु।

६ पाली प्र० पृ० ५३– (इ=अ)

७ आ अव्ययने वाक्यनी आदिमा ज वापरवानु छे

पहो। पृथिवी पुहई। प्रतिश्रुत् पडसुआ। बिभीतक बहेडओ।
मूषिक मूसओ। हरिद्रा हल्दा।

वैकल्पिक—

इङ्गुदम् अगुअ, इगुअ।
शिथिलम् सढिल, सिढिल।
[प्रशिथिलम् पसढिल, पसिढिल।]

(ख) [1]इ=ई—

जिह्वा जीहा। त्रिंशत् तीसा।
विंशति वीसा। सिंह सीहो।

वैकल्पिक—

निस्सरति नीसरइ, निस्सरइ।
निस्सहम् नीसह, निस्सह।

(ग) [2]इ=उ—

इक्षुः [3]उच्छू। द्विविध दुविहो।
[4]द्वि दु। नि णु
द्विजाति दुआई। नि नु।
द्विधा [5]दुहा। निमज्जति णुमज्जइ।
द्विमात्र दुमत्तो। निमग्न णुमन्नो।
द्विरेख दुरेहो। प्रवासिन् पावासु–पावासू।
द्विवचनम् दुवयण। प्रवासिक पावासुओ।

---

१ समासूचक शब्दोमा आ नियम लागतो नथी —सिंहदत्त सिंहदत्तो। सिंहराज सिंघराओ।

२ पाली प्र० पृ० ७३–(इ=उ)

३ इक्षु =उच्छु (पाली)

४ जु० पाली प्र० पृ० ३२–(टिप्पण)

५ [illegible](इ=ओ)

वैकल्पिक—

युधिष्ठिर	जहुट्ठिलो,	जहिट्ठिलो ।
द्विगुण	दुउणो,	बिउणो ।
द्वितीय	दुइओ,	बिइओ ।

(घ) [1]इ=ए—

मिरा मेरा

वैकल्पिक—

किंशुकम्	केसुअ,	किंसुअ ।

(ङ) [2]इ=ओ—

द्विवचनम्	दोवयण ।

वैकल्पिक—

द्विधा	[3]दोहा,	दुहा ।

(च) नि=ओ—

वैकल्पिक—

निर्झर	ओज्झरो,	निज्झरो ।

५१ ई—विकार

(क) [4]ई=अ—

हरीतकी	[5]हरडई ।

---

१ पाली प्र० पृ० ७३–(इ=ए)

२ पाली प्र० पृ० ७३– (इ=ओ)

३ साधारण रीते आ शब्दनो प्रयोग 'कृ' धातुनी पृथ थाय छे — द्विधा क्रियते दुहा किज्जइ, दोहा किज्जइ । द्विधा कृतम् दुहा इ(कि) अ, दोहा इ(कि) अ ।

४ पाली प्र० पृ० ५३– ई=अ)

[illegible]-की (पाली)

(ख) ई=आ —

कश्मीर कम्हारा ।

(ग) ई=इ —

नीचेना शब्दोमां 'ई' नो 'इ' थाय छे—ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे —

अवसीदत् ओसिअन्त ।	द्वितीयम् दुइअ ।
आनीतम् आणिअ ।	प्रदीपितम् पलिविअ ।
गभीरम् गहिर ।	प्रसीद पसिअ ।
जीवतु जिवउ ।	वल्मीक वम्मिओ ।
तदानीम् तयाणि ।	व्रीडितम् विलिअ ।
तृतीयम् तइअ ।	शिरीष सिरिसो ।

वैकल्पिक —

अलीकम्	अलिअ,	अलीअ ।
उपनीतम्	उवणिअ,	उवणीअ ।
करीष	करिसो,	करीसो ।
जीवति	जिवइ,	जीवइ ।
पानीयम्	पाणिअं,	पाणीअ ।

(घ) ई=उ —

जीर्णम् जुण्ण,[1] जिण्ण ।

(ङ) ई=ऊ —

तीर्थम् तूह[2]

---

१ जुण्ण (पाली)

२ 'तीर्थ' शब्दनुं 'तूह' रूप छे, अन्यथा—'तित्थ'।

वैकल्पिक—

विहीन विहूणो, विहीणो।
हीन हूणो, हीणो।

(च) ई=ए—

आपीड आमेलो। ईदृश एरिसो।
कीदृश केरिसो। पीयूषम् पेऊस।
बिभीतक बहेडओ।

वैकल्पिक—

नीडम् नेड, नीड।
पीठम् पेढ, पीढ।

५२ उ-विकार

(क) [1]उ=अ—

नीचेना शब्दोमां चिह्नित 'उ' नो 'अ' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे'

अगुरु अगर।
गुडूची गलोइ। मुकुल मउलो।
गुर्वी गरुई। मुकुलम् मउल।
मुकुट मउडो। युधिष्ठिर जहुट्ठिलो।
मुकुरम् मउर। सौकुमार्यम् सोअमल्ल।

वैकल्पिक—

उपरि अवरिं, उवरिं। गुरुक गरुओ, गुरुओ।

(ख) उ=इ—

[2]पुरुष पुरिसो। पौरुषम् पउरिस। भ्रुकुटि भिउडी।

---

[1] मुकुलम् मकुल (पाली प्र० पृ० ५३–उ=अ)
[2] पाली प्र० पृ० ५४ (उ=इ)

(ग) उ=ई—

क्षुतम् छीअ।

(घ) उ=ऊ—

दुर्भग दूहवो, दुहओ। दुस्सह दूसहो, दुस्सहो।
मुसलम् मूसल मुसल। सुभग सूहवो, सुहओ।

(ङ) उँ=ओ—

कुतूहलम् कोउहल, कुऊहल।

५२ ऊ-विकार

(क) ऊँ=अ—

दुकूलम् दुअह, दुऊल। सूक्ष्मम् [3]सण्ह, सुण्ह।

(ख) ऊ=इ—

नूपुरम् निउर, नूउर।

(ग) ऊ=ई—

उद्व्यूढम् उव्वीढ, उव्वूढ।

(घ) ऊ=उ—

नीचेना शब्दोमां 'ऊ' नो 'उ' थाय छे—ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे

[4]कण्डूयते कडुअइ। भ्रू भुमया।
कण्डूया कडुया। वातूल वाउलो।
कण्डूयनम् कडुयण। हनूमान् हणुमतो।

---

१ पाली प्र० पृ० ४ (उ=ओ)

२ पाली प्र० पृ० ५ (ऊ=अ) सरखावो भ्रूकुंस भ्रकुंस। भ्रूकुटि भ्रकुटि।

३ 'सूक्ष्म' करतां 'श्लक्ष्ण' शब्द उपरथी 'सण्ह' रूपनुं उतारवुं विशेष सरल लागे छे—("श्लक्ष्ण सूक्ष्म दभ्र कृश तनु" ९१ अमरको० तृतीयकाण्ड)

४ अहीं 'कण्डूय' धातुना बधा रूपो समजवाना छे.

वैकल्पिक—

कुतूहलम् कोउहलं, कोउहल।
मधूकम् महुअं, महुअ।

(ङ) ऊ=ए—

नूपुरम् नेउर, नूउरं।

(च) ऊ=ओ—

नीचेना शब्दोमा 'ऊ' नो 'ओ' थाय छे–ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे—

[1]कूर्परम् कोप्पर। ताम्बूलम् तंबोल।
कूष्माण्डी कोहण्डी। तूणीरम् तोणीर।
[2]गुडूची गलोई। मूल्यम् मोल्ल।
स्थूलम् थोर।

वैकल्पिक—

तूणम् तोण, तूण। स्थूणा थोणा, थूणा।

१४ ऋ—विकार

(क) ऋ=आ—

कृशा कासा, किसा। मृदुत्वम् माउक्क, मउत्तण।
मृदुकम् माउक, मउअ।

(ख) [3]ऋ=इ—

नीचेना शब्दोमा 'ऋ' नो 'इ' थाय छे–ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे

उत्कृष्टम् उक्किट्ठ। ऋद्धिः इड्ढी। ऋषि इसी।

---

१ कूर्पर कप्परो (पाली)
२ गुडूची गोळोचा—पाली प्र० पृ० ८ (ऊ=ओ)
३ पाली प्र० पृ० ७ (ऋ=इ)

कृच्छ्रम् किच्छ । कृति किई । कृत्ति किची । कृत्या किचा । कृप किवो । कृपण किविणो । कृपा किवा । कृपाणम् किवाण । कृश किसो । कृशानु किसाणू । कृपित किसिओ । कृसरा किसरा । गृष्टि गिट्ठी । गृद्धि गिद्धी । घुसृणम् घुसिण । घृणा घिणा । तृणम् तिण । दृष्टम् दिट्ठ । दृष्टि दिट्ठी । धृति धिई । नप्तृक नत्तिओ । नृप निवो । नृशंस निसंसो । पृथक् पिह । पृथ्वी पिच्छी । बृंहित बिंहिओ । भृङ्ग भिंगो । भृङ्गार भिंगारो । भृगु भिऊ । मातृ माई (मातृणाम् माईण) मृदङ्ग मिइंगो । मृष्टम् [1]मिट्ठ । वितृष्ण विइण्हो । वृश्चिक विञ्छुओ । वृत्तम् वित्त । वृत्ति वित्ती । वृद्धकवि विद्धकई । वृष्ट विट्ठो । वृष्टि विट्ठी । वृसी विसी । व्याहृतम् वाहिअ (त) । शृगाल सिआलो । शृङ्गार सिंगारो । सकृत् सइ । समृद्धि समिद्धी । सृष्टम् सिट्ठ । सृष्टि सिट्ठी । स्पृहा छिहा । हृतम् हिअ । हृदयम् हिअय ।-

वैकल्पिक—

घृष्ट घिट्ठो, घट्ठो । पृष्टम् [2]पिट्ठ, पट्ठ । [पृष्टि पिट्ठी, पट्ठी] बृहस्पति बिहप्फई, बहप्फई । मसृणम् मसिण, मसण । [3]मातृगृहम् माइहर, माउहर । मातृमण्डलम् माइमडल, माउमडल । मातृष्वसा माइसिआ, माउसिआ । मृगाङ्क मिअङ्को । मयङ्को ।

---

१ आ शब्द, रसने सूचवे छे मीठो रस रस सिवाय बीजा अर्थमा ए रूप वपरातु नथी

२ आ रूप समासमा पूर्वपद तरीके वपराय छे, उत्तरपद तरीके नथी वपरातु महिपृष्ठम्–महिव(प)ट्ठ ।

३ ज्यारे ' मातृ ' शब्द गौण होय त्यारे तेथी बनेला बधा रूपोमा तेना ' ऋ ' नो ' उ ' अने ' इ ' थाय छे

मृत्यु' मिच्चू, मच्चू । वृद्ध विड्ढो, वुड्ढो । वृन्तम् विंट, वेंट । शृङ्गम् सिंग, सग ।

(ग) [1]ऋ=उ—

नीचेना शब्दोमा 'ऋ' नो 'उ' थाय छे

ऋजु उज्जू । ऋतु उऊ । ऋषभ उसहो । जामातृक जामाउओ । नप्तृक नत्तुओ । निभृतम् निहुअ । निवृतम् निउअ । निर्वृतम् निव्वुअ । निर्वृति निव्वुई । परभृत परहुओ । परामृष्ट परामुट्ठो । पितृक पिउओ । पृथक् पुह । पृथिवी पुहई । पृथ्वी पुहुवी । प्रभृति पहुडि । प्रवृत्ति पउत्ती । प्रवृष्ट पउट्ठो । प्राभृतम् पाहुड । प्रावृत पाउओ । प्रावृष् पाउसो । भृति भुई । भ्रातृक भाउओ । मातृक माउओ । मातृका माउआ । मृणालम् मुणाल । मृदङ्ग मुइंगो । वृत्तान्त वुत्तंतो । वृद्ध वुड्ढो । वृद्धि वुड्ढी । वृन्दम् वुंद । वृन्दावन वुन्दावणो । विवृतम् विउअ । वृष्ट वुट्ठो । वृष्टि वुट्ठी । स्पृष्ट पुट्ठो । संवृतम् संवुअ । इत्यादि ।

वैकल्पिक—

निवृत्तम् निउत्त, निअत्त । बृहस्पति बुहप्फई, बहप्फई । मृषा मुसा, मोसा । वृन्दारका वुंदारया, वंदारया । वृषभ उसहो, वसहो ।

(घ) ऋ=ऊ—

मृषा मूसा, मुसा । (वै०)

(ङ) [2]ऋ=ए—

वृन्तम् वेंट, विंट । (,,)

---

१ पाली प्र० पृ० २ (ऋ=उ)

२ पाली प्र० पृ० ३ (ऋ=ए) टिप्पण ।

(ग) ऋ=गो—

गृषा मोसा, मुसा। गृनम् मोट [?। (वै०)

(छ) ऋ=अरि—

दृप्त -रिओ।

(न) ऋ=?—

आदृत आदिओ।

(ञ) ऋ=रि -

नीचेना शब्दोमा 'ऋ' नो 'रि' थाय छे—ने क्याय नित्य अने क्याय विकल्पे थाय छे

'अन्यादृश अन्नारिसो'। अन्यादृक्ष अन्नारिच्छो। अन्यादृक् अन्नारि। अमूदृश अमूरिसो। अमूदृक्ष अमूरिच्छो। अमूदृक् अमूरि। अस्मादृश अम्हारिसो। अस्मादृक्ष अम्हारिच्छो। अस्मादृक् अम्हारि। ईदृश एरिसो। ईदृक्ष एरिच्छो। ईदृक् एरि। एतादृश एआरिसो। एतादृक्ष एआरिच्छो। एतादृक् एआरि। कीदृश केरिसो। कीदृक्ष केरिच्छो। कीदृक् केरि। तादृश तारिसो। तादृक्ष तारिच्छो। तादृक् तारि। भवादृश भवारिसो। भवादृक्ष भवारिच्छो। भवादृक् भवारि। यादृश जारिसो। यादृक्ष जारिच्छो। यादृक् जारि। युष्मादृश तुम्हारिसो। युष्मादृक्ष तुम्हारिच्छो। युष्मादृक् तुम्हारि। मदृश सरिसो। मदृक्ष सरिच्छो। स...

वैकल्पिक— ऋतु रिउ,

ऋतु -[illegible]

उर्त। ऋषभ रिसहो, उसहो। ऋषि रिसी, इसी।

---

१ अहीं 'अन्यादृश' वगेरे शब्दोमा स्वतन्त्र 'ऋ' नथी किन्तु 'दृ' मा — ने 'ऋ' लोप माटे जुओ पृ १० [?]०२।

ऋ=इ—

(१) उपर्युक्त 'अम्मादृश' थी माडी 'सदृक्' सुधीना बधा शब्दोना 'दृ' ना 'ऋ' नो पैशाचीमां 'इ' थाय छे

अम्मादृश	अम्हारिसो अम्होदिसो—	अम्हातिसो ।
अन्यादृश	अन्नारिसो	अन्नातिसो ।
ईदृश	एरिसो	एतिसो ।
कीदृश.	केरिसो	केतिसो ।
तादृश.	तारिसो	तातिसो ।
भवादृश	भवारिसो	भवातिसो ।
यादृशः	जारिसो	जातिसो ।
युष्मादृश	तुम्हारिसो	तुम्हातिसो
सदृशः	सरिसो	सतिसो

५५ ए—विकार

(क) ए=इ—

केसरम किसर, केसर । चपेटा चविडा, चवेडा । देवर दिअरो, देवरो । वेन्ना विअणा, वेअणा । (वै०)

(ख) ए=ऊ—

स्तेन थूणो, थेणो । (वै०)

५६ ऐ-विकार—

(क) ऐ=अअ—

उच्चैस् उच्चअ । नीचैस् नीचअ ।

---

१ जूओ पृ० १२ (त, द–त)

२ पालि ... णे 'ए' नो 'ओ' थाय छे द्वेष =दोसो— (पा० प्र० ...)

(ग) ऐ=इ—

शनैश्चर सणिच्छरो। सैन्धवम् सिंधवं।

सैन्यम् सिन्नं, मन्न। (वै०)

(ग) ऐ=ई—

धैर्यम् धीरं।

चैत्यवन्दनम् चीवन्दण चेइयवन्दण। (वै०)

(घ) ऐ=अइ—

नीचेना शब्दोमां 'ऐ' ना 'अइ' थाय छे

ऐश्वर्यम् अइसरिअं। कैतवम् कइअवं। चैत्यम् चइत्तं। दैत्य दइच्चो। दैन्यम् दइन्नं। दैवतम् दइअवं। भैरव भइरवो। वैजवन वइजवणो। वैतालीयम् वइआलीअं। वैदर्भ वइदब्भो। वैदेश वइएसो। वैदेह वइएहो। कैलास कइलासो। वैशाल: वइसालो। वैश्वानरः वइस्साणरो। स्वैरम् सइरं। इत्यादि

वैकल्पिक—

वैरम् वइरं, वेरं। कैलास कइलासो, केलासो। चैत्र चइत्तो, चेत्तो। दैवम् दइव्वं, देव्वं। वैतालिक वइआलिओ, वेआलिओ। वैरम् वइरं, वेरं। वैशम्पायन वइसंपायणो, वेसंपायणो। वैश्रवण वइसवणो, वेसवणो। वैशिकम् वइसिअं, वेसिअं। इत्यादि

५७ ओ-विकार—

(क) ओ=अ—

वैकल्पिक—

अन्योन्यम् अन्नुन्नं, अन्नोन्नं। आतोद्यम् आवज्जं, आउज्जं। प्रकोष्ठ पवट्ठो, पउट्ठो,। मनोहरम् मणहरं, मणोहरं।

१ पाली प्र० पृ० ४ (ऐ=इ) २ पाली प्र० पृ० ४ (ए=ई)

३ ज्यारे आ ने इददसा 'ओ' नो 'अ' थाय छे त्यारे ज तेना 'त' अने 'क' नो 'व' पण थाय छे

शिरोवेदना	सिरविअणा,	सिरोविअणा।
सरोरुहम्	सररुह,	सरोरुह।

(ख) ओ=ऊ—

सोच्छ्वास सूसासो।

(ग) ओ=अउ, आअ—

ओ=अउ—गोक गउओ। गोका गउआ। गो गउ–गऊ।

ओ=आअ—गो गाअ–गाओ (पुलिंग)

गो गाअ–गाई (स्त्रीलिंग)

५८ औ-विकार—

(क) औ=अउ—

नीचेना शब्दोना 'औ' नो 'अउ' थाय छे:

कौक्षेयकम्	कउच्छेअय।	पौर	पउरो।
कौरव	कउरवो।	पौरुषम्	पउरिस।
कौल	कउलो।	मौनम्	मउण।
कौशलम्	कउसल।	मौलि	मउली।
गौडः	गउडो।	सौधम्	सउह।
गौरवम्	गउरव।	सौराः	सउरा।

(ख) 'औ=आ—

गौरवम् गारवम्

---

१ पाली प्र० पृ० ५ (औ=आ) टिप्पण, पालीमां कोई कोई ... 'औ' नो 'अ' पण थाय छे (औ=अ)–पालीप्र पृ० २ टिप्पण

(ग) [1]औ=उ

नीचेना शब्दोमां 'औ' नो 'उ' थाय छे.

दौवारिक दुवारिओ। पौलोमी पुलोमी । मौञ्जायन मुंजायणो । शौण्ड सुंडो । शौद्धोदनि सुद्धोअणी । सौगन्ध्यम् सुगंधत्तण । सौन्दर्यम् सुंदेरं । सौवर्णिक सुवण्णिओ ।

कौक्षेयकम् कुच्छेअयं, कोच्छेअयं । (वै०)

(घ) औ=आव—

नौः नावा ।



१ पाली प्र० पृ० ५-(औ=उ)

प्रकरण ६

असंयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफारो

५९ क-विकार—

[1]क=ख—

कर्परम् खप्पर। कील खीलो।
कीलक खीलओ। [2]कुब्ज खुज्जो।

[3]क=ग—

अमुक अमुगो। कन्दुकम् गेंदुअ।
अपुक अमुगो। तीर्थंकर तित्थगरो।
आकर्ष आगरिसो। दुकुल्म् दुगुल्ल।
आकार आगारो। मदकल मयगलो।
उपासक उवासगो। मरकतम् मरगय।
एक एगो। श्रावक सावगो।
एकत्वम् एगत्त। लोक लोगो।

क=च—

[4]किरात चिलाओ।

क=भ—

शीकर सीभरो, सीअरो। (वै०)

क=म—

चन्द्रिका चंदिमा।

---

१ पाली प्र० पृ० ५७ (क=ख)
२ 'खुज' शब्द 'कुबडा' अर्थमां ज वपराय छे
३ पाली प्र० पृ० ५८ (क=ग)
४ 'चिलाअ' शब्द 'भिल्ल' अर्थमां ज वपराय छे

क=व—

[1]प्रकोष्ठ पवट्ठो, पउट्ठो।

क=ह—

निकुर निहुरो। निकष निहसो। स्फटिक फलिहो।

शीकर सीहरो, सीअरो। (वै०)

६० ख-विकार—

ख=क—

शृङ्खलम् सकलं। शृङ्खला सकला।

६१ ग-विकार—

ग=म—

पुनागानि पुनामाइ। भागिनी भामिणी।

ग=ल—

छाग छालो। छागी छाली।

ग=व—

दुर्भग [2]दूहवो। सुभग सूहवो।

६२ च-विकार—

च=ज—

पिशाची पिसाजी, पिसाई। (वै०)

च=ट—

आकुञ्चनम् आउटण।

च=ल—

पिशाच पिसल्लो, पिसाओ। (वै०)

---

१ जुओ पृ० ६०-टिप्पण ३।

२ ज्यारे 'दु'नो 'दू' अने 'सु'नो 'सू' थतो नथी त्यारे 'ग' नो 'व' पण थतो नथी-जुओ उ-विकार (ग) उ=ऊ पृ० ५४

३ पाली प्र० पृ० ५८ (च=ज)

च=स—

[1] खचित, खसिओ, खइओ। (वै०)

६३ ज-विकार

ज=झ—

जटिल झडिलो, जडिलो। (वै०)

६४ ट-विकार

ट=ड—कैटभ केढवो। शकटः सयढो। सटा सढा[2]।

[3]ट=ल—स्फटिक फलिहो।

चपेटा चविला, चविडा। (वै०)

पाटयति फालेइ, फाडेइ। ,,

६५ ठ-विकार

ठ=ल—अङ्कोठ अंकोल्लो।

अङ्कोठतैलम् अंकोल्लतेल्लं।

ठ=ढ—पिठर पिहडो, पिढरो (वै०)

६६ ण-विकार

[1]ण=ल—वेणु वेलू, वेणू। (वै०)

६७ त-विकार

त=च— तुच्छम् चुच्छं।

त=छ— तुच्छम् छुच्छं।

त=ट—तगर टगरो। तूवर टूवरो। त्रसर टसरो।

---

[1] पाली प्र० पृ० ५८—(ट=ल) पालीमां घटलेक ठेकाणे 'ट' नो 'ळ' पण थाय छे। —(ट=ळ पृ० ५८)

[2] अहीं 'पाटि' धातुना बधा रूपो समजवाना छे

[3] पाली प्र० पृ० ५८ (ण=ळ) वेणु=वेळु—पाली

त=ट—

नीचेना शब्दोमां त' नो 'ट' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे –

पताका पडाया।
'प्रति पडि।

[प्रतिकराति पडिकरइ। प्रतिनिवृत्तम् पडिनिअत्त। प्रतिपत्त पडिवया। प्रतिपन्नम् पडिवन्न। प्रतिभास पडिहासो। प्रतिमा पडिमा। प्रतिश्रुत् पडसुआ। प्रतिसारः पडिसारो। प्रतिस्पर्धी पाडिप्फद्धी। प्रतिहासः पडिहासो। प्रतिहार पडिहारो।]

प्रभृति पहुडि।	मृतकम् मडय।
प्राभृतम् पाहुड।	व्यापृत वावडो।
बिभीतक बहेडओ।	मुत्रकृतम् सुय (सुअ) गड।
	हरीतकी हरडई। इत्यादि

वैकल्पिक—

अवहृतम्	अवहड,	अवहय।
अपहृतम्	ओहड,	ओहय।
आहृतम्	आहड,	आहय।
कृतम्	कड,	कय।
दुष्कृतम्	दुक्कड	दुक्कय।
मृतम्	मड,	मय।
वेतस	वेडिसो,	वेअसो।
सुकृतम्	सुकड	सुकय।

१ पति–पटि (१२८) पाली प्र० पृ० ५८

त=ण—

अतिमुक्तकम् अणिउँतय। गर्भित गब्भिणो।

त=र—

सप्ततिः सत्तरी।

त=ल—

अतसी अलसी। सातवाहन सालवाहणो।

सातवाहनी सालआहणी– सालाहणी।

वैकल्पिक—

पलितम् पलिल, पलिअ।

त=व— आतोद्यम् आवज्ज, आउज्ज।

पीतलम् पीवल, पीअल।

त=ह—

[1]वितस्ति विहत्थी।

वैकल्पिक—

कातर काहलो, कायरो।

भरत भरहो, भरओ।

मातुलिङ्गम् माहुलिंग, माउलिंग।

वसति वसही, वसई।

६८ थ-विकार

थ=ढ—

प्रथम पढमो। मेथि मेढी। शिथिर (ल) सिढिलो।

वैकल्पिक—

निशीथ निसीढो, निसीहो।

[2]पृथिवी पुढवी, पुहवी।

[1] जओ पृ० ८, ३ टिप्पण।

[2] विदत्थि–(त=द) पाली प्र० पृ० ४०

पठवी–(थ=ठ) पालि प्र० पृ० ५९

थ=ै—

पृथक् पिधं, पिह ।

६९ द-विकार

द=ड—

दश डस इत्यादि

दह डह इत्यादि

वैकल्पिक—कदनम् कडण, कयण । दग्ध डड्ढो, दड्ढो । दण्ड डंडो, दडो । दम्भ डम्भो, दम्भो । दर्भ डभो, दभो । दष्ट डट्ठो दट्ठो । दर डरो, दरो । दशनम् डमण, दमण । दाह डाहो, दाहो । दोला डोला, दोला । दोहद डोहलो, दोहलो ।

द=ध—दीप्[1] धीप्, दीप् । दीप्यते धिप्पइ, दिप्पइ । (वै०)

(क) द=र—संख्यावाचक शब्दना अनादिभूत, असंयुक्त अने एकपदस्थित एवा 'द' नो 'र' थाय छे

एकादश एआरह । द्वादश बारह । त्रयोदश तेरह ।

(ख) द=र—कदली करली[4] । गद्गदम् गग्गर ।

द=ल—प्रदीपयति पलीवेइ[6] । प्रदीप्तम् पलित्त । दोहद दोहलो । कदम्ब कलम्बो, कयम्बो । (वै०)

द=व—कदर्थित कवट्टिओ ।

द=ह—ककुदम् कउह ।

---

१ पाली प्र० पृ० ७०—(द=ड)

२ अहीं आ धने धातुना बधा रूपो समजवाना छे

३ अहीं 'दीप्' धातुना बधा रूपो समजवाना छे

४ आ शब्दनो अर्थ 'कळ' थतो नथी

५ पाली प्र० पृ० ७०—(द=ळ—दोहद दोहळो)

६ अहीं 'प्रदीप्' धातुना बधा रूपो समजवाना छे,

७० ध-विकार

ध=ढ—निषध निसढो ।

औषधम् ओसढं, ओसह । (वै०)

७१ न-विकार

न=ण्ह—नापित ण्हाविओ, नाविओ । (वै०)

[1]न=ल—निम्ब लिंबो, निंबो । (वै०)

७२ प-विकार

[2]प=फ—पनसः फणसो । परिघ फलिहो । परिखा फलिहा । परुष फरुसो । [3]पाटि फाडि । [पाटयति फाडेइ इत्यादि] पारिभद्र फालिहद्दो ।

प=म—आपीड आमेलो, आवेडो । नीप नीमो, नीवो । (वै०)

प=व—प्रभूतम् वहुत्तं ।

प=र—पापर्द्धि पारद्धी ।

७३ ब-विकार

[4]ब=भ—बिसिनी भिसिणी ।

ब=म—कबन्ध कमन्धो ।

ब=य—कबन्ध कयन्धो । (वै०)

७४ भ-विकार

भ=व—कैटभ केढवो ।

---

१ पालि प्र० पृ० ६४—(न=ल)

२ पृ० ८०—(प=फ) परुष—फरुसा (पाली)

३ धातुना तथा रूपो समजवाना छे

६२—(ब=भ)

৩৭৫ म-विकार

म=व—विषम विमयो, विसमो। (वै०)

म=व—मन्मथ वम्महो।

अभिमन्यु अहिवन्नू, अहिमन्नू। (वै०)

म=स —भ्रमर भमसो, भमरो। (वै०)

७६ म-अनुनासिक

नीचेना शब्दोमां 'मु' ना 'म' नो लोप थाय छे अने 'म'नो लोप थया पछी शेष रहेल ('मु' ना) 'उ' ने स्थाने अनुनासिक 'उ' (उँ) थाय छे

अतिमुक्तकम् अणिउँतय। कामुक काउँओ।

चामुण्डा चाउँण्डा। यमुना जउँणा।

७७ [1]य-विकार

य=आह—कतिपयम् कइवाह।

य=ज्ज—उत्तरीयम् उत्तरिज्ज, उत्तरीअ। (वै०)

तृतीय तइज्जो, तइओ। द्वितीय बिइज्जो, बीओ। (वै०)

य=त—युष्मदीय तुम्हकेरो। युष्मादृश —तुम्हारिसो। [2]यु ष्मद्—तुम्ह। इत्यादि।

[3]य=ल—यष्टि लट्ठी।

[4]य=व—कतिपयम्—कइअव (वै०)

---

१ कोई एकार शब्दमां 'य' नो 'र' पण थई जाय छे स्नायु —ण्हारु—[पाली-सिनेह]

२ अहीं 'युष्मद्' शब्दना बधी जातनां रूपो पण समजवानां छे युष्मत्पुत्र —तुम्हपुत्तो इत्यादि

३ पाली प्र० पृ० ६३-(य=ल)

४ पाली प्र० पृ० ६३-(य=व)

य=ह—अया [1]छाही, छाया । सच्छायम् सच्छाहं, सच्छाय (वै०)

७८ र-विकार

र=ड—गिरि गिडी । [2]पिन्र पिहडो । भेर भेडो ।

र=डा —पर्याणम् पडायाण, पल्लाण ।

र=ण —करवीर कणवीरो ।

[3]र=ल—नीचना शब्दोमां 'र' नो 'ल' थाय छे–ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे

अपद्वारम् अवद्दाल ।	भ्रमर[4] भसलो ।
अङ्गार इंगालो ।	मुखर मुहलो ।
करुण कलुणो ।	युधिष्ठिर जहुट्ठिलो ।
कातर काहलो ।	रुग्ण लुक्को ।
किरात चिलाओ ।	वरुण वलुणो ।
चरण चलणो ।	शिथिर सिढिलो ।
दरिद्र दलिद्दो ।	सत्कार सक्कालो ।
दरिद्राति दलिद्दाइ ।	सुकुमार सोमालो ।
दारिद्र्यम् दालिद्द ।	स्थूर थूलो ।
परिखा फलिहा ।	स्थूरभद्र थूलभद्दो ।
परिघ फलिहो ।	हरिद्र हलिद्दो ।
पारिभद्र फालिहद्दो ।	हरिद्रा हलिद्दा । इत्यादि

---

[1] आ शब्दनो अर्थ 'शोभा' के 'छायो' ज थाय छे

[2] 'पिञ्जर' ना दनु सूत्र 'पिहड' थाय छे, पण 'पिञ्जर' थतु नथी —जुओ पृ० ८९ (ढ=र)

[3] जुओ र ल (पृ० २६)

[4] सूत्र 'भसल' थाय पण 'भमल'

वैकल्पिक—

जठरम् जढलं, जढरं।
निष्ठुर निट्ठुलो, निट्ठुरो।
बर्बर बब्बलो बब्बरो।

७९. ल-विकार

[1]ल-ण—केटलाक शब्दोमां आदिना 'ल' नो नित्य अने विकल्पे 'ण'[2] थाय छे

ललाटम् णडालं, [3]णिडालं।

वैकल्पिक—

लाङ्गलम् णङ्गलं, लङ्गलं।
लाङ्गूलम् णङ्गूलं, लङ्गूलं।
लाहल णाहलो, लाहलो।

ल=र— स्थूलम् थोरं।

८० व-विकार

व-भ—विह्वल भिब्भलो, विब्भलो, विहलो[4]। (वै०)

व=म—शबर समरो। वैश्रवण वेसमणो

नीवी नीमी, नीवी। स्वप्न सिमिणो, सिविणो (वै०)

८१ श-विकार

[5]श=छ—शमी छमी। शाव छावो।

शिरा छिरा, सिरा (वै०)

---

१ पाली प्र० पृ० ३ (ल=न)—ललाटम् नलाट।
२ प्रा० पृ० ८ (ल=र)
३ लाङ्गलम् नाङ्गल पाली [पृ० ३०
४ 'विह्वल' शब्दनुं 'भिब्भल' रूप थयुं तथा—दुग्गो ह्व—भ,
५ पाली प्र० पृ० ३—(श=छ)—शाव छावो।

श=ह—एकादश एआरह, एआरस। दश दह, दश। दशबल दहबलो, दसबलो। दशमुख दहमुहो, दसमुहो। दशरथ दहरहो, दसरहो। द्वादश बारह, बारस। त्रयोदश तेरह, तेरस इत्यादि।

८२ ष-विकार

ष=छ—[1]षट् छ [षट्पद छप्पओ। षण्मुख छमुहो। षष्ठ छट्ठो। षष्ठी छट्ठी]

ष=ण्ह—स्नुषा सुण्हा, सुसा[2]। (पं०)

ष=ह—पाषाण पाहाणो, पासाणो। प्रत्यूष पच्चूहो, पच्चूसो (पं०)

८३ स-विकार

स=छ—सप्तपर्ण छत्तिवण्णो। सुधा छुहा।

स=ह—दिवस दिवहो, दिवसो। (पं०)

८४ ह-विकार

ह=र—उत्साह उत्थारो, उच्छाहो।

८५ लोप

नीचेना शब्दोमां नीचे जणावेला व्यंजनोनो लोप विकल्पे थाय छे

'क' लोप—प्राकार पारो, पायारो।

व्याकरणम् वारणं, वायरणं।

'ग' लोप—आगत आओ, आगओ

---

१ पाली प्र० पृ० ६४–(ष=छ) षट् छ।

२ अहीं 'षट्' शब्दना बधा रूपो समजवाना छे

३ जुओ पृ० ४१ 'स्त-सिण' अने एनुं टिप्पण।

'ज' लोप—दनुज दणू, दणुओ। दनुजवध दणुवहो, दणुअवहो।
भाजनम् भाण, भायण। राजकुलम् राउल, रायउल।
'द' लोप—उदुम्बर उम्बरो, उउबरो। दुर्गादेवी दुग्गावी,
दुग्गा(ए)वी। पादपतनम् पावडण, पायवडण।
पादपीठम् पावीढ, पायवीढ।
'य' लोप—किसलयम् किसल, किसलय।
कालायसम् कालास, कालायस।
हृदयम् हिअ, हिअय। सहृदय सहिओ, सहिअयो।

'व' लोप—

अवट अडो, अवडो। आवर्तमान अत्तमाणो, आवत्तमाणो।
एवमेव एमेव, एवमेव। जीवितम् जीअ, जीविअ। तावत् ता, ताव।
देवकुलम् देउल, देवउल। प्रावारक पारओ, पावारओ। यावत्
जा, जाव।

लोप—

केटलेक ठेकाणे शब्दना आदि व्यंजननो पण लोप थई
जाय छे

च अ। चिह्नम् इध। पुन उणो इत्यादि।

प्रकरण ७

संयुक्त व्यजनोना विशेष फेरफार

[सूचना —आ नीचे सयुक्त व्यजनोना विशेष फेरफारोने आपवामा आवे छे अने साथे जे जे शब्दोना वैकल्पिक बव्वे रूपो थाय छे तेओनु बीजु रूप लक्ष्यमा रहे ए माटे तेने पण अहीं आवा [ ] कौसमा जणावी दीधु छे]

८६ क्क

(क)[1]क्त=क्क—

मुक्त मुक्को [मुत्तो] । शक्त सक्को [सत्तो] ।

(ख) ग्ण=क्क —

[2]रुग्ण लुक्को [लुग्गो] ।

(ग) त्व=क्क—

मृदुत्वम् माउक्क [माउत्तण] ।

(घ) ष्ट=क्क—

दष्ट डक्को [डट्ठो] ।

८७ क्ख, ख

(क) क्ष्ण=क्ख—

तीक्ष्णम् तिक्ख, [तिण्ह] ।

(ख) स्त=ख—

स्तम्भ खभो [थभो]

---

१ पाली प्र० पृ० ६७ (टिप्पण)

२ रुग्ण लुग्गो (पाली प्र० पृ० ६९ टिप्पण ग्ण=ग्ग)

३ जुओ पृ० ४०—३ टिप्पण

'ज' लोप—दनुज दण, दणुओ। दनुजवध दणुवहो, दणुअवहो।
भाजनम् भाण, भायण। राजकुलम् राउल, रायउल।

'द' लोप—उदुम्बर उम्बरो, उउम्बरो। दुर्गादेवी दुग्गावी,
दुग्गाए (व) वी। पादपतनम् पावडण, पायवडण।
पादपीठम् पावीढ, पायवीढ।

'य' लोप—किसलयम् किसल, किसलय।
कालायसम् कालास, कालायस।
हृदयम् हिअ, हिअय। सहृदय सहिओ, सहिअयो।

'व' लोप—

अवट अडो, अवडो। आवर्तमान अत्तमाणो, आवत्तमाणो। एवमेव एमेव, एवमेव। जीवितम् जीअ, जीविअ। तावत् ता, ताव। देवकुलम् देउल, देवउल। प्रावारक पारओ, पावारओ। यावत् जा, जाव।

लोप—

केटलेक ठेकाणे शब्दना आदि व्यंजननो पण लोप थई जाय छे

च अ। चिह्नम् इंध। पुन उणो इत्यादि।

प्रकरण ७

संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफार

[सूचना —आ नीचे संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफारोने आपवामां आवे छे अने साथे जे जे शब्दोना वैकल्पिक बन्ने रूपो थाय छे तेओनु बीजु रूप लक्ष्यमां रहे ए माटे तेने पण अहीं आवा [ ] कौंसमां जणावी दीधु छे]

८६ क्क

(क)[1]क्त=क्क—

मुक्त मुक्को [मुत्तो] । शक्त सक्को [सत्तो] ।

(ख) ग्ण=क्क —

[2]रुग्ण लुक्को [लुग्गो] ।

(ग) त्व=क्क—

मृदुत्वम् माउक्क [माउत्तण] ।

(घ) ष्ट=क्क—

दष्ट डक्को [डट्ठो] ।

८७ क्ख, ख

(क) क्ष्ण=क्ख—

तीक्ष्णम् तिक्खं, [तिण्ह] ।

(ख) स्त=ख—

स्तम्भ खंभो [थंभो]

---

१ पाली प्र० पृ० ६१ (टिप्पण)

२ रुग्ण लुग्गो (पाली प्र० पृ० ६९ टिप्पण ग्ण=ग्ग)

३ जुओ पृ० ४०–३ टिप्पण

(ग) स्थ=ख—

स्थाणुः खाणु।

(घ) स्फ=ख—

स्फेटक खेडओ।

स्फेटिक खेडिओ।

स्फोटक खोडओ।

८८ ग्ग, ङ्ग

(क) क्त=ग्ग—

रक्त रग्गो [रत्तो]

(ख) ल्क=ङ्ग—

शुल्कम् सुङ्गं[2] (चुंगी-हिं०) [सुक्क]

८९ च्च

(क) त्त=च्च—

कृत्ति किच्ची।

(ख) त्य=च्च—

तथ्यम् तच्च [तच्च]

९० च्छ, छ

(क) स्थ=छ—स्थगितम् छइअ [थइअ]

(ख) स्पृ=छ—स्पृहा छिहा।

(ग) स्पृ=च्छ—निस्पृह निच्छिहो [निप्पिहो]।

९१ ज्ज, ञ्ज

[3]न्य=ज्ज, ञ्ज—

अभिमन्यु अहिमज्जू, अहिमञ्जू [अहिमन्नू]

---

१ ज्यारे शब्द 'महादय' न सूचवतो होय त्यारे तेनुं 'स्थाणु' ने बदले 'थाणु' रूप थाय छे।

२ शुल्कम् सुङ्कं—(पाली प्र० पृ० ३०—टिप्पण)

३ अभिमन्यु अभिमञ्ञु (व्यञ्जन—पाली प्र० पृ० ३३)

९२ ज्झा

न्ध=ज्झा—

(धातु) इन्ध् इज्झा (समिन्ध् समिज्झाइ। वि+इ ध विज्झाइ)

९३ न्चु

श्चि=न्चु—

[1]वृश्चिक विन्चुओ, [विंछिओ]

९४ ट्ट

(क) त्त=ट्ट—पत्तनम् पट्टण। मृत्तिका मट्टिआ।

वृत्त वट्टो।

(ख) र्थ=ट्ट—कदर्थित कवट्टिओ।

(ग) स्त=ट्ट—पर्यस्त पल्लट्टो।

९५ ट्ठ, ठ

(क) र्थ=ट्ठ—

[3]अर्थ [4]अट्ठो [अत्थो]

चतुर्थ चउट्ठो [चउत्थो]

(ख) स्त=ठ—

स्तम्भ्यते ठभिज्जइ।

[5]स्तब्ध ठड्ढो [थद्धो]

---

१ वृश्चिक विच्छिको (पाली)

२ पाली प्र० पृ० ५८—(त=ट)

३ अर्थः अत्थो, अट्ठो, अट्टो—(पाली प्र० पृ० १० टिप्पण)

४ 'अट्ठ' शब्दनो प्रयोग 'प्रयोजन' अर्थमां थाय छे अने 'अत्थ' शब्दनो 'धन' अर्थमां थाय छे.

५ स्तब्ध थद्धो। स्तम्भः थम्भो—(स्त=थ पाली प्र० पृ० २७)

[1]स्तम्भ ठंभ (धातु)

[2]स्तम्भ ठंभो ।

स्त्यानम् ठीण । [थीण]

(ग) [3]स्थ=ठ—विसम्थुलम् विसठुल ।

स्थ=ट्ठ— अस्थि[4] अट्ठि ।

९६ ड्ड

(क) र्त=ड्ड—

गर्त गड्डो ।

(ख) र्द=ड्ड—

कपर्दः कवड्डो ।

गर्दभ गड्डहो [गद्दहो]

छर्द छड्ड (धातु)

छर्दयति छड्डेइ ।

छर्दि छड्डी ।

मर्दित मड्डिओ ।

विच्छर्द विच्छड्डो ।

वितर्दि विअड्डी ।

संमर्द समड्डो ।

---

१ आ 'स्तम्भ' धातुने ज्यां असंदार्थक न लेवानो छे

२ 'स्तम्भ' शब्दनो अर्थ पण 'स्तम्भ' धातुनी जेवो ज समजवाना छे

३ पाली प्र० पृ० २८-(स्थ=ठ)

४ अत्थि अट्ठि (पाली प्र० पृ० २९-स्थ=ट्ठ)

९७ [1]ड्ढ, ढ

नीचे जणावेला शब्दोमा संयुक्त 'ध' नो ड्ढ अने ढ थाय छे —

(क) र्ध, द्ध, ग्ध, ब्ध=ड्ढ—

अर्धम्	अड्ढं	[अद्ध]
ऋद्धि	इड्ढी,	[इद्धी]
दग्ध	दड्ढो ।	
विदग्ध	विअड्ढो	
वृद्ध	वुड्ढो,	[विद्धो]
वृद्धि	वुड्ढी ।	
श्रद्धा	सड्ढा,	[सद्धा]
स्तब्ध	ठड्ढो ।	

(ख) र्ध=ढ—मूर्धा मुढा, [मुद्धा]

९८ ण्ट, ण्ड, ण्ण

न्त=ण्ट—

[2]वृन्तम् वेण्ट (तालवृन्तम् तालवेण्ट)

न्द=ण्ड—

कन्दरिका कण्डलिआ ।

भिन्दिपाल भिण्डिवालो ।

(क) ञ्च=ण्ण—

पञ्चदश पण्णरह ।

पञ्चाशत् पण्णासा ।

---

१ पाली प्र पृ० ४२८ (द्ध=ड्ढ, र्ध=ड्ढ, ग्ध=ड्ढ)

२ वृन्त=वण्ट—(पाली प्र० पृ ५८, न्त=ण्ट)

१०४ ल, ट

ण्ड=ल—

कूष्माण्डी कोहली [कोहण्डी]

र्य=ल—

[1]पर्यन्तम् पल्लंत, [पन्तत्थ]

पर्याणम् पल्लाण।

सौकुमार्यम् सोअमल्ल।

१०५ स्म

स्प=स्स—

बृहस्पति बहस्सई [बहप्फई]

[2]वनस्पति वणस्सई [वणप्फई]

१०६ ह

(क) क्ष=ह— दक्षिण दाहिणो [दक्खिणो]

(ख) ख=ह — दुःखम् दुह [[3]दुक्ख]

दुःखित दुहिओ [दुक्खिओ]

(ग) र्थ=ह— तीर्थम् तूह [तित्थ]

(घ) र्घ=ह— दीर्घ दीहो, [दिग्घो]

(ङ) ष=ह— कार्षापण काहावणो।

(च) ष्प=ह— [4]बाष्प बाहो

---

१ पर्यन्तिका पल्लत्थिका-(पाली प्र० पृ० १०-टिप्पण)

२ वनस्पति वनप्पति-(पाली प्र० पृ० ३०-स्प=प्प)

३ पाली प्र० पृ० ८-नियम १० (ग)

४ आ शब्द, बे अर्थमां प्रसिद्ध छे-एक तो आंसु अने बीजो बाफ तेमां ज्यारे ए बाफ-गरमी-नो वाचक होय त्यारे तेनुं 'बाह' ने बदले 'बप्फ' रूप थाय छे।

(छ) ष्म=ह– कुष्माण्डी कोहण्डी।

कुष्माण्डम् कोहण्ड।

१०७ द्विर्भाव

(क) नीचे जणाव्या प्रमाणे चिह्नित व्यञ्जनोनो द्विर्भाव थाय छे– ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे —

ऋजु उज्जू।	यौवनम् जुव्वण।
तैलम् तेल्ल।	विचकिलम् वेइल्ल।
प्रभूतम् बहुत्त।	व्रीडा विड्डा इत्यादि।
प्रेम पेम्म।	
मण्डूक मड्डूको।	

वैकल्पिक —अस्मदीयम्	अम्हक्केर अम्हच्चेर,	अम्हकेर।
एक	एक्को,	एओ।
कर्णिकार	कण्णिआरो,	कणिआरो।
कुतूहलम्	कोउहल्ल,	कोउहल।
चिअ	[1]च्चिअ,	चिअ (एव)
चेअ	च्चेअ,	चेअ (एव)
तूष्णीक	तुण्हिक्को,	तुण्हिओ।
दैवम्	दइव्व,	दइव।
नख	नक्खो,	नहो।
निहितम्	निहित्त,	निहिअ।
नीडम्	नेड्ड,	नीड।

१ 'चिअ' अने 'चेअ' ए बन्ने अवधारण सूचक अव्यय छे (हे० ८–२–१८४) अने संस्कृतमा वपराता 'चैव' साथे विशेष समानता धरावे छे–उच्चारना कारणने लीधे ए बन्ने 'चैव' माथी पण थई शके छे.

मूर	मुणो,	मूओ।
मृदुकम्	माउक,	माउअ।
व्याकुल	वाउलो,	वाउलो।
व्याहृत	वाहित्तो,	वाहिओ।
सेवा	सेवा,	सेवा।
स्रोतम्	सोत्त,	सोअ।
स्त्यानम्	थिण्ण,	थीण।
स्थूल	थुल्लो,	थोरो।
स्थाणु	खण्णू,	थाणू।
दूतम्	दुत्त,	दूअ इत्यादि।

(घ) समासमा आवेला उत्तरपदना आदिना व्यंजननो द्विर्भाव विकल्पे थाय छे —

आलान स्तम्भ	आणाल खम्भो,	आणाल-क्खम्भो।
कुसुम प्रकर	कुसुम पयरो,	कुसुम प्पयरो।
दु सह	दु सहो,	दु स्सहो।
देव-स्तुति	देव थुई,	देव त्थुई।
नदी ग्राम	नइ-गामो,	नइ ग्गामो।
नि -सहम्	नि सह,	नि स्सह।
हर स्कन्दा	हर खंदा,	हर-क्खंदा।

१०८ शब्द विशेष विकार

जे शब्दोमा कोई पण सामान्य के विशेष नियम न लागु पडतां विकृत भागना केटलाक विशेष विकारो थाय छे, ते आ नीचे आपवामा आवे छे —

अपस्कार, एक्कारो।

आश्चर्यम् अच्छअर, अच्छरिअ, अच्छरिज्ज अच्छरीअ।

---

१ जुओ पृ० १-टिप्पण २ जु।

२ आश्चर्यम्=अच्छरिय, अच्छयिर, अच्छेर—(पाली प्र० १८८ टिप्पण)

उदूखल	ओहलो	[उऊहलो]
उलूखलम्	ओक्खल	[उलूहल]
कदलम्	केल,	[कयल]
कदली	केली,	[कयली]
कर्णिकार	कण्णेरो,	[कण्णिआरो]
कुतूहलम्	कोहल,	[कोउहल्ल]
चतुर्गुण	चोग्गुणो,	[चउग्गुणो]
चतुर्थ	चोत्थो,	[चउत्थो]
चतुर्थी	चोत्थी,	[चउत्थी]
चतुर्दश	चोद्दह,	[चउद्दह]
चतुर्दशी	चोद्दसी,	[चउद्दसी]
चतुर्वारः	चोव्वारो,	[चउव्वारो]
त्रयस्त्रिंशत्	तेत्तीसा ।	
त्रयोदश	तेरह ।	
त्रयोविंशति	तेवीसा ।	
त्रिंशत्	तीसा ।	
नवनीतम्	नोणीअ, लोणीअ ।	
॰नवफलिका	नोहलिआ ।	
नवमालिका	नोमालिआ ।	
निषण्ण	णुमण्णो,	[णिसण्णो]
पूगफलम्	पोप्फल ।	
पूगफली	पोप्फली ।	
पूतर	पोरो ।	
प्रावरणम्	पङ्गुरण, पाउरण,	[पावरण]

॰अनुभ्रमो–नाम प्र० पृ० ८४ नि० ८७

बदरम्	बोर ।	
बदरी	बोरी ।	
मयूख	मोहो,	[मऊहो]
रुदितम्	रुण्ण ।	
लवणम्	लोण	[लवण]
विचकिलम्	वेइल्ल ।	
विंशति	वीसा ।	
सुकुमार	सोमालो	[सुउमालो]
[1]स्थविर	थेरो ।	

१०९ शब्द—सर्वथाविकार—

आ नीचे ते शब्दो आपवामा आवे छे जे केटलेक अंशे के सर्वथा (पोताना मूळ रूपथी) अन्य रूपवाळा थई जाय छे —

अधस् हेट्ठ ।
अप ओ, [अव]
अप्सरस् अच्छरसा, अच्छरा ।
अयि ऐ[2] ।
अव ओ, [अव]
आयुः आउस, [आउ]
आरब्ध आढत्तो, [आरद्धो]
इदानीम् एण्हि, एत्ताहे, दाणिं[इआणिं]
शौ० दाणिं ।

तत्रम् हित्थ, तट्ठ [तत्थ]
दिश् दिसा ।
दुहिता धूआ, [दुहिआ]
दग्ध दड्ढ ।
द्रह हरो ।
द्रहक द्दरओ ।
धनुष् धणुह, [धणू]
धृति दिही, [धिइ]

---

१ स्थविर =थरो–(पाली)

२ आ सिवाय बीजे क्याय 'ऐ' नो प्रयोग दृष्ट नथी–(जुओ १–दिग्गण)

[1]ईषत् कूर, [ईसि]	नहिस् णाहि, बाहिर ।
उत ओ, [उअ]	[2]बृहस्पति भयप्फई [बहप्फई]
उप ऊ, ओ, [उव]	भगिनी बहिणी, [भइणी]
उभयम् अवह, उवह, [उभय]	मलिनम् मइल[मलिण]
ककुभ् कउहा ।	मातृष्वसा माउच्छा, माउसिआ ।
क्षिप्तम् छूढ [खित्त]	मार्जारः मजरो, वजरो [मज्जारो]
क्षुर् छुहा ।	वनिता विलया, [वणिआ]
गृहम् घर ।	विद्रुत विद्दाओ ।
छुप्त छिक्को [छुत्तो]	वृक्ष रुक्खो, [वच्छो]
[3]तिर्यक तिरिआ, तिरिच्छि ।	वैडूर्यम् वेरुलिअ, वेडुज्ज ।
पदाति पाइक्को [पयाई]	शुक्ति सिप्पी, [सुत्ती]
प्रावृष् पाउसो ।	[5]स्तोकम् थेव, थोव थोक [थोअ]
[4]पितृष्वसा पिउच्छा, पिउसिआ।	स्त्री इत्थी [थी]
पूर्वम् पुरिम पुव्व । शौ० पुरव ।	[6]श्मशानम् मसाण, सुसाण [मसाण]
	हृदयम् हिअय पै० हितप, हितपक।

१ विशेषणसूचक 'ईषत्' शब्दनु ज 'कूर' रूप थाय छे, किन्तु विशेष्यसूचकनु नहि

२ 'बृहस्पति' शब्दनु 'घरवइ' ने बदले 'गहवइ' रूप थाय छे

३ तिर्यक्=तिरियो-(पालि) पा० प्र० पृ० १८ नि० १०)

४ पितृष्वसा पितुच्छा (पा० प्र० पृ० ३४ टिप्पण)

५ स्तोकम् थोक-(स्त=थ-पा० प्र० पृ० २७)

६ श्मशानम् मसान, सुसान-(पा० प्र० पृ० ५१-टिप्पण)

११० अन्त स्वरवृद्धि—

नीचेना शब्दोमां चिह्नित संयुक्त व्यंजननी वच्चे नीचे जणाव्या प्रमाणे स्वरो उमराय छे —

			उमेरातो स्वर
[1]अग्नि	अगणी	[अग्गी]	अ
अर्हन्	अरहन्तो अरिहन्तो, अरुहन्तो ।		अ, इ, उ
[2]अर्ह	अरह अरिह, अरुह ।		,,
[3]कृत्स्न	कसिणो ।		इ
कृष्ण	[4]कसणो, कसिणो	[किण्हो]	अ, इ
क्रिया	किरिया	[किया]	इ
क्ष्मा	छमा ।		अ
चैत्यम्	चेइअं ।		इ
छद्म	छउम	[छम्म]	उ
[5]ज्या	जीआ ।		ई
तप्त	तविओ	[तत्तो]	इ
[6]द्वारम्	दुवार	[दार]	उ
द्वादश	दुवालस ।		,,
विप्रुषा	विप्पुसा ।		इ
[7]पद्मम्	पउम	[पोम्म]	उ

---

१ अग्नि अग्गि, अगिनि, गिनि–(पा० प्र० पृ० ४६)

२ अहीं 'अर्ह्' धातुना बधा रूपो समजवाना छे

३ कृत्स्न कसिणो, किण्हो, सिण्णो–(पा० प्र० पृ० ४७)

४ आ बन्ने रूपो वर्ण के रंग अर्थमां ज वपराय छे

५ ज्या जिया–(पा० प्र० पृ० ४८–य=इ)

६ द्वार दुवार, दार (पा० प्र० पृ० ३२ टिप्पण)

७ पा० प्र० पृ० ४९–(म=उम्–पद्मम् पदुम)

			उमेरातो स्वर.
[1]प्लक्ष	पलक्खो।		अ
भव्य	भविओ।	[भव्वो]	इ
मूर्ख	मुरुक्खो,	[मुक्खो]	उ
रत्न	रयण।		अ
[2]वज्रम्	वइर	[वज्ज]	इ
शार्ङ्गम्	सारग।		अ
[3]श्री	सिरी।		इ
[4]श्व	सुवे।		उ
[5]श्लाघा	सलाहा।		अ
[6]स्निग्धम्	सणिद्ध, सिणिद्ध,	[निद्ध]	अ, इ
स्नुषा	[7]सुनुसा	[सुण्हा, ण्हुसा सुसा]	उ
[8]सूक्ष्मम्	सुहुम, सुहम।		उ, अ
[9]स्नेह	सणेहो नेहो।		अ
स्याद्	सिआ		इ

---

१ प्लक्ष पिलक्खो–(प्रा० प्र० पृ० ३१ नि० ३७)

२ वज्र वजिरो–(पा० पृ० १३ टिपण)

३ श्री सिरी–(पा० पृ० १३ टिप्पण)

४ श्वः सुवे, स्वे–(पा० पृ० ३३ टिप्पण) श्व सुव=सुवे–जुओ पृ० ४६ अ=ए

५ श्लाघा सिलाघा–(पा० पृ० ३१)

६ स्निग्धम् सिनिद्धो, निद्धो–(पा० पृ० ४६ नि० ५३)

७ जुओ पृ० ७३ तथा ४१

८ सूक्ष्मम्= सुखुम–(पा० पृ० १८ टिप्पण)

९ ... सुहो, स्नेहो, सनेहो–(पा० पृ० ४६ नि० ५...

		उमरातो स्वर
स्याद्वादः	सिआवाओ।	इ
सुघ्नम्	सुग्घ।	उ
[1]स्व	सुवो।	,,
स्वे	सुवे।	,,
स्वप्न	सिविणो।	इ
[2]ह्य	हिओ [ह्यो]	,,
[3]ह्री	हिरी	इ

१११ अक्षर-व्यत्यय—

आ नीचे जे शब्दोमां चिह्नित अक्षरोनो परस्पर व्यत्यय—पूर्वापरभाव—थइ जाय छे ते आपवामां आवे छे —

अचलपुरम्	अलचपुर।	
आलान	आणालो	
करेणू	कणेरू।	
महाराष्ट्रम्	मरहट्ठ।	
लघुकम्	हलुअ	[लहुअ]
[4]ललाटम्	णडाल	[णलाड]
वाराणसी	वाणारसी।	
हरिताल	हलिआरो	[हरिआलो]
ह्रद	द्रहो	[हरो]

१ समासान्तर्गत 'स्व'शब्दनु 'सुव' ने बदले 'स' रूप थाय छे स्वजन सयणो

२ ह्य ह्यीयो, हिय्यो–(पा० पृ० २२ टिप्पण)

३ ह्री हिरी–(पा० पृ० १३ टिप्पण)

४ जुओ पृ० ७२ लक्षण

अपभ्रंश-आदेशो

(१) नीचे जणावेला शब्दोना अपभ्रंश रूपो आ प्रमाणे छे

अन्यादृश	(अन्नादि (इ) स)	अन्नाइस । अवराइस ।
ईदृक्		एह ।
ईदृश	(ईदि (इ) स)	अइस ।
कीदृक्		केह ।
कीदृश	(कीदि (इ) स)	कइस ।
तादृक्		तेह ।
तादृश	(तादि (इ) स)	तइस ।
यादृक्		जेह ।
यादृश	(जादि (इ) स)	जइस ।
वर्त्म		विच ।
विषण्ण		वुन्न ।

अपभ्रंशना उमेरणो

(१) अपभ्रंशमा कोइ कोइ शब्दमा कोइ कोइ अक्षरनो वधारा तरीके उमेरो थइ जाय छे —

उत्तम्	उत्त	वुत्त	('व' नो वधारो)
परस्पर	परोप्पर	अपरोप्पर	('अ' नो वधारो)
व्यासः	वासो	व्रासु, वासु	('र' नो वधारो)

---

१ आ ( ) फाउसमा आपेला रूपो अपभ्रंशरूपोनी पूर्वावस्थाना सूचक छे. आ शब्दोना प्राकृतरूपो जोवा माटे जुओ पृ० ५८ कलम ६ अने पृ० ७९ कलम ६ ।

२ जेम 'अन्य' शब्दनुं 'अन्यादृश' रूप थाय छे तेम आ 'अवराइस' शब्द जोता तेना मूळरूप तरीके 'अपरादृश' रूप पण कल्पी शकाय ।

संधि प्रकरण ८

१ प्राकृतमा जूदा जूदा बे [1]पदोना स्वरोनो संधि थाय छे अने ते पण प्रयोगानुसारे विकल्पे थाय छे —

स्वरसंधि—

अ+अ=आ—मगह+अहिवई=मगहाहिवई, मगहअहिवई [मगधाधिपति]

दंड+अहीसो=दंडाहीसो, दण्डअहीसो [दण्डाधीश]

अ+आ=आ—विसम+आयवो=विसमायवो, विसमआयवो [विषमातप]

आ+अ=आ—रमा+अहीणो=रमाहीणो, रमाअहीणो [रमाधीन]

आ+आ=आ—रमा+आरामो=रमारामो, रमाआरामो [रमाराम]

इ+इ=ई —मुणि+इणो–मुणीणो, मुणिइणो [मुनीन]

इ+ई=ई—मुणि+ईसरो–मुणीसरो, मुणिईसरो [मुनीश्वर]

दहि+ईसरो–दहीसरो, दहिईसरो [दधीश्वर]

---

१ जे बे पदोना स्वरोमा संधि थवानो छे, ते बे पदो सामासिक होय के असामासिक होय अर्थात् कोई प्रकारे जूदा जूदा होवा जोईए जेमके, सामासिक–दंड+अहीसो दंडाहीसो, दंडअहीसो।

असामासिक–दंडस्स+ईसो–दंडस्सेसो, दंडस्स ईसो ।

प्राकृत साहित्यमा विशेषे करीने सामासिक पदोना स्वरोमा संधि थएलो जणाय छे अने असामासिक पदोमा तो तेनो प्रयोग घणो ज विरल थएलो छे असामासिक पदोमा संधि करवा जतां घणे ठेकाणे अवबोध दुर्लभ थई जाय छे माटे ज असामासिक करता सामासिक पदोमा संधि–प्रयोगनो प्रचार बधु थएलो लागे छे अने ए अनुसारे अहीं उदाहरणोमा पण सामासिक पदोनी ज नोंध विशेष करेली छे कोई ठेकाणे तो फक्त एक ज पदमा पण संधि थएलो छे —

— काहि+इ–काही, काहिइ [करिष्यति]

बि+इओ–बीओ बिइओ [द्वितीय]

२ जूओ पालिप्र० संधिकल्प नि० ३–पृ० ५८

ई+इ=ई—गामणी+इइहासो–गामणीइहासो, गामणी इइहासो
[ग्रामणीतिहास]

ई+ई=ई—गामणी+ईसरो–गामणीसरो, गामणीईसरो [ग्रामणीश्वर]

उ+उ=ऊ–भाणु+उवज्झायो–भाणूवज्झायो, भाणुउवज्झायो
[भानूपाध्याय]

साउ+उअय–साऊअय, साउउअय [स्वादूदकम्]

उ+ऊ=ऊ—साहु+ऊसवो,–साहूसवो, साहुऊसवो [साधूत्सवः]

ऊ+उ=ऊ—वहू+उअर–वहूअरं, वहूउअर [वधूदरम्]

ऊ+ऊ=ऊ–कणेरु+ऊसिअ–कणेरूसिअ,कणेरूऊसिअ [करेणूच्छ्रितम्]

अ+इ=ऐं—वास+इसी–वासेसी, वासइसी [व्यासर्षि]

आ+इ=ए—रामा+इअरो,–रामेअरो रामाइअरो [रामेतर]

अ+ई=ए—वासर+ईसरो–वासरेसरो, वासरईसरो [वासरेश्वर]

आ+ई=ए—विलया+ईसो–विलयेसो, विलयाईसो [वनितेश]

अ+उ=ओ–गूढ+उअर–गूढोअर, गूढउअर [गूढोदरम्]

आ+उ=ओ–रमा+उवचिअ–रमोवचिअ,रमाउवचिअं [रमोपचितम्]

अ+ऊ=ओ–सास+ऊसासा–सासोसासा,साससऊसासा,[श्वासोच्छ्वासौ]

आ+ऊ=ओ–विज्जुला+ऊसुमिअ–विज्जुलोसुमिअ,विज्जुलाऊसुमिअ
विद्युदुल्लसितम्]

ह्रस्व–दीर्घ विधान—

२ प्राकृतमा सामासिक शब्दोमा प्रयोगानुसारे (क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे) ह्रस्व स्वरनो दीर्घ स्वर थाय छे अने दीर्घ स्वरनो ह्रस्व स्वर थाय छे —

* पालि प्र० सधि० नि० २ पृ० ५५

ह्रस्वनो दीर्घ—अंत+वेई—अंतावेई [अन्तर्वेदि]

सत्त+वीसा—सत्तावीसा [सप्तविंशति]

पइ+हर— पईहर, पइहर [पतिगृहम्]

भुअ+यत—भुआयत, भुअयत [भुजायतम्]

वारि+मई—वारीमई, वारिमई [वारिमती]

वेलु+वण—वेलूवण, वेलुवण [वेणुवनम्]

दीर्घनो ह्रस्व—गोरी+हर—गोरिहर, गोरीहर [गौरीगृहम्].

---

१ सरनाधो वैदिक प्रयोग—

अष्ट+कपालम्—अष्टाकपालम्।

अष्ट+हिरण्या—अष्टाहिरण्या।

अष्ट+पदी—अष्टापदी (पाणिनि—६—३—१२६)

सरनाधो संस्कृत प्रयोग—

दास+वर्ण—दासावर्ण।

उप+नत्—उपानत्।

केश+केशि—केशाकेशि। वगेरे (पाणिनि—६—३—११६ थी ११९)

सरसानो पाली प्रयोग—

सम्म+धम्मो—सम्माधम्मो।

सम्म+सबुद्धो—सम्मा सबुद्धो। (पा० प्र०पृ० ७४ संधिकल्प, नि० ११ तथा आ नियमनुं टिप्पण)

२ सरसानो वैदिक प्रयोग—

अजा+क्षीरेण—अजक्षीरेण।

ऊर्णा+म्रदा—ऊर्णम्रदा।

अजा+जरम्—अजजरम्।—(पा० ६—३—६३—६४)

सरसाथो संस्कृत प्रयोग—

शिला+वहम्—शिलवहम्

ग्रामणी+पुत्र—ग्रामणिपुत्र।

ब्रह्मबन्धु+पुत्र—ब्रह्मबन्धुपुत्र।

(पा० ६—३—६१ थी ६६ तथा ४३—४५)

जउँणा+यड–जउणयड, जउणायड [यमुनातटम्]
नई+सोत्त–नइसोत्त, नईसोत्त [नदीस्रोत]
मणा+सिला–मणसिला, मणासिला [मन शिला]
वहू+मुह–वहुमुह, वहूमुह [वधूमुखम्]
सिला+खलिअ–सिलखलिअ, सिलाखलिअ
[शिलास्खलितम्]

संधिनिषेध—

३ 'इ' 'ई' के 'उ' 'ऊ' पछी कोई विजातीय स्वर आवे तो संधि थतो नथी अने 'ए' के 'ओ' पछी कोई पण स्वर आवे तो संधि थतो नथी

पहावलि+अरुणो–पहावलिअरुणो [प्रभावल्यरुण]
वहू+अवऊढो–वहुअवऊढो [वध्ववगूढ]
वणे+अडइ–वणे अडइ [वनेऽटति]
अहो+अच्छरिअं—अहो अच्छरिअं [अहो आश्चर्यम्]

४ स्वर पर रहेता क्रियापदमां स्वरनो संधि थतो नथी –
होइ+इह–होइ इह [भवति इह भवतीह]

५ उद्वृत्त स्वर पर रहेता प्रायः पूर्वना स्वरनो संधि थतो नथी
निसा+अरो–निसाअरो [निशाक (च) र]

१ स्वरनी साथे रहेलो व्यंजन लोपाया पछी जे स्वर रहे छे तेनु नाम उद्वृत्त स्वर छे।–(असंयुक्त 'कादि' लोप–पृ० १०)

२ केटलेक ठेकाणे तो उद्वृत्त स्वर पर रहेता पण संधि थई गएलो छे —

कुम्भ+आरो=कुम्भारो (कुम्भकार)
चक्क+आओ=चक्काओ (चक्रवाक)
साल+वाहणो=सालाहणो (सातवाहन)
सु+उरिसो=सूरिसो (सुपुरुष)इत्यादि

[१]स्वरलोप—

६ स्वर पर रहेतां पूर्ववर्ती स्वरनो प्रयोगानुसारे लोप थाय छे

तिअस+ईसो–तिअसीसो [त्रिदशेश]

नीसास+उमासा–नीसासूसासा [निश्श्वासोच्छ्वासौ]

७ पदथी पर आवेला 'अपि' शब्दना 'अ' नो लोप विकल्पे थाय छे

केण+अवि–केणावि, केणावि [केनापि]

कह+अवि–कहवि, कहमवि [कथमपि]

किं+अपि–किं पि, किमवि [किमपि]

तं+अपि–तं पि, तमवि [तदपि]

८ स्वरांत पदथी पर आवेला 'इति' शब्दना 'इ' नो लोप थइ 'ति' ने स्थाने त्ति' थाय छे

तहा+इति–तहात्ति, तहत्ति [तथेति]

पिओ+इति–पिओ त्ति, पिउत्ति [प्रिय इति]

पुरिसो इति पुरिसोत्ति, पुरिसुत्ति [पुरुष इति]

९ व्यंजनांत पदथी पर आवेला 'इति' शब्दना 'इ'नो लोप थाय छे

किं+इति–किंति [किमिति]

जं+इति–जंति [यदिति]

दिट्ठं+इति–दिट्ठंति [दृष्टमिति]

न जुत्तं+इति–न जुत्तं ति [न युक्तमिति]

१० त्यदादि अने अव्ययथी पर आवेला त्यदादि अने अव्ययना आदि स्वरनो प्राय लोप थई जाय छे —

त्यदादि–त्यदादि एस+इमो–एसमो [एषोऽयम्]

---

१ जुओ पालि० स० नि० १ (क) पृ० ५५।

२ जुओ ,, ,, ,, २६ पृ० ८३।

त्यदादि–अव्यय अम्हे[1] एत्थ अम्हेत्थ [वयमत्र]

अव्यय–अव्यय जइ इत्थ जइत्थ [यद्यत्र]

अव्यय–त्यदादि जइ अहं जइहं [यद्यहम्]

जइ इमा जइमा [यदीयम्]

व्यंजनसंधि

विसर्ग=ओ

११ अकारथी पर आवेला ' विसर्ग 'नो ओ थाय छे —

अग्रत =अग्गओ ।

अन्त +विस्रम्भ =अंतोवीसंभो ।

पुरत =पुरओ ।

मन शिला=मणोसिला ।

मार्गत =मग्गओ ।

सर्वत =सव्वओ ।

म्=अनुस्वार

१२ पदने अंते रहेला मकारनो अनुस्वार थाय छे –

गिरिम्=गिरिं । जलम्=जलं । फलम्=फलं । वृक्षम्=वच्छं ।

१३ स्वर पर रहेला अन्त्य 'म' नो अनुस्वार विकल्पे थाय[3] छे

उसभम्+अजिअ=उसभं अजिअं, उसभमजिअं [ऋषभमजितम्]

---

१ पालि प्र० स० नि० १–(ख) पृ० ६५–ते+अहं=तेहं ।

२ कोई ठेकाणे डबल 'म्म' नी आदिमां रहेला 'म्' नो पण अनुस्वार थई जाय छे जेमके–वणम्मि=वणंमि (वने)

३ जूओ पालि प्र० स० पृ० ७७–य+आहु=यमाहु (यदाहु) एक+इध=एकमिध ।

ङ, ञ, ण, न=अनुस्वार

१४ व्यंजन पर रहेता 'ङ', 'ञ', 'ण' अने 'न' ने स्थाने अनुस्वार थाय छे

ङ–पङ्क्ति=पंति–पंती। पराङ्मुख=परंमुह–परंमुहो।
ञ–कञ्चुक=कंचुअ–कंचुओ। लाञ्छन=लंछण–लंछण।
ण–षण्मुख=छंमुह–छंमुहो। उत्कण्ठा=उक्कंठा।
न–विन्ध्य=विंझ–विंझो। सन्ध्या=संझा।

(१) शौरसेनीमां 'इ' अने 'ए' पर रहेता अन्त्य 'म' पछी विकल्पे [1] 'ण' उमेराय छे

युक्तम् इदम् जुत्त+इण / जुत्तमिण = जुत्तं णिण, जुत्तं इण।

सदृशम् इदम् सरिस+इण / सरिसमिण = सरिसं णिण, सरिसं इण।

किम् एतत् किं + एअ / किमेअ = किंणेद किमेद।

एवम् एतत् एवं + एअ / एवमेअ = एवं णेद, एवमेद।

अनुस्वार आगम

१५ नीचे जणावेला शब्दोना अन्त्य व्यंजननो लोप थइ अन्त्य स्वर उपर अनुस्वार थाय छे

ऋधक् इदं। ऋधग्ग् इद्दय। तत् तं। पृथक् पिहं। यत् जं।
विष्वक् वीसुं। सम्यक् सम्मं। साक्षात् सक्खं।

---

१ जुओ पा० प्र० स० नि० २० पृ० ८०—चिर आयति=चिरं णायति, चिरंआयति।

१६ नीचे जणावेला शब्दोना प्रथम स्वर उपर, द्वितीय स्वर उपर अने तृतीय स्वर उपर प्रयोगानुसारे (विकल्पे के नित्ये) अनुस्वार थाय छे

प्रथम स्वर उपर—अश्रु अंसु । कर्कोट कंकोडो । कुड्मलम् कुंपल ।
गुच्छम् गुंछ । गृष्टि गिंठी, गिंट्ठी । त्र्यस्रम् तंस ।
दर्शनम् दंसण । पुच्छम् पुंछ । पर्शु पंसू ।
बुध्नम् बुंध । मार्जार मंजारो, मजारो । मूर्धा मुंढा ।
वक्रम्–वंक । वृश्चिक –विंछिओ । श्मश्रु मंसू ।

द्वितीय स्वर उपर—इह इहं [इहमेगेसिं] प्रतिश्रुत् पडंसुआ ।
मनस्वी–मणंसी । मनस्विनी मणंसिणी ।
मनःशिला मणंसिला, मणासिला । वयस्य वयंसो ।

तृतीय स्वर उपर—अतिमुक्तकम्–अणिउंतय, अइमुंतय, अइमुत्तय ।
उपरि–अवरिं ।

कोई स्थळे मात्र छंदनी पूरवणी माटे पण अनुस्वार थाय छे
देवनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए–
देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए[१] ।
[देवनागसुवर्णकिन्नरगणसद्भूतभावार्चिते]

१७ जे स्थळे स्वरथी शरु थतुं पद बेवडायुं होय त्यां वच्चे 'म' विकल्पे उमेराय छे

एक+एकं एक्कमेक्कं, एक्केक्कं (एकैकम्)
एक+एक्केण एक्कमेक्केण, एक्केक्केण (एकैकेन)
अंग+अंगम्मि अंगमंगम्मि, अंगअंगम्मि (अङ्गेअङ्गे) इत्यादि ।

---

१ जुओ पा० प्र० स० टि० १८ पृ० ३८, टि० २४–पृ० ८१
२ 'अजितशांतिस्तव'ना छट्ठा श्लोकनुं बीजुं चरण छे—
जुओ पुक्खरवरदीवड्ढे–(प्रतिक्रमण)

प्रकरण ९

उपसर्ग-अव्यय निपात

उवसग्गा—

प-प्र—पख्वेइ (प्रज्ञपयति) पभासेइ (प्रभाषते)

परा-परा—पराजाओ (पराजात) पराजिणइ (पराजयते)

ओ, अव-अप— ओसरइ, अवसरइ (अपसरति)

ओसरिअ, अवसरिअ (अपसृतम्)

स-सम्—संखिवइ (संक्षिपति) संखित्त (संक्षिप्तम्)

अणु, अनु-अनु—अणुजाणइ (अनुजानाति) अनुमई (अनुमति)

ओ, अव-अव—ओअरइ (अवतरति) ओआरो (अवतार)

ओआसो, अवयासो (अवकाश)

ओ, नि, नी-निर्[1]—ओमल्लं, निम्मल्लं (निर्माल्यम्)

निग्गओ (निर्गत) नीसहो (निस्सह)

दु, दू-दुर्—दुन्नयो (दुर्नय) दूहवो (दुर्भग)

अभि, अहि-अभि अभिहणइ (अभिहन्ति) अहिप्पाओ (अभिप्राय)

वि-वि —विकुव्वइ (विकुर्वति) विणओ (विनय) वेणइआ (वैनयिकी)

अधि, अहि-अधि—अज्झायो (अध्याय) अहीइ (अधीते)

सु, सू-सु—सुकरं (सुकरम्) सूहवो (सुभग)

उ-उत्—उग्गच्छइ (उद्गच्छति) उग्गओ (उद्गत) उप्प

त्तिआ (औत्पत्तिकी)

अइ, अति-अति—अईओ (अतीत) वइक्कंतो (व्यतिक्रान्त)

अतिसओ (अतिशय) अच्चंत (अत्यन्तम्)

णि, नि-नि—णिवेसो (निवेश) संनिवेसो (संनिवेश) निवि

सइ (निविशते)

---

[1] फक्त 'माल्य' शब्दनी पूर्वना ज 'निर्' नो 'ओ' थाय छे.

पडि, पति, परि–प्रति—पडिमा (प्रतिमा), पतिट्ठा (प्रतिष्ठा)
परिट्ठा (प्रतिष्ठा)

परि, पलि–परि—परिवुडो (परिवृत) पलिहो (परिघ)

इ, पि, वि, अपि अवि–अपि—पिहेइ (पिदधाति) विहित्ता (पिधाय)
त्तिपि, किमवि, किमपि (किमपि) कोइ, कोवि (कोऽपि)

ऊ, ओ, उव–उप—ऊआयो, ओज्झायो, उवज्झायो (उपाध्यायः)

आ–आ—आवासो (आवास) आयतो (आयात)

धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते।
तमेव विशिनष्ट्यन्योऽनर्थकोऽन्य प्रयुज्यते॥

अव्वयाइं (अव्ययानि)

अहो, हहो, हा, हे, नाम, अहह, हीसि, अहह अने अरिरिहो विगेरे अनेक अव्ययो छे अने ते बधानो प्रयोग संस्कृतनी पेठे प्राकृतमां पण थाय छे तो पण अहीं नीचे केटलाक विशेष अव्ययोनी नोंध करीए छीए —

अइ	अति	अतिशय
अइ	अयि	संभावना
अइव	अतीव	विशेष
अओ	अत	आथी, एथी
अकट्टु	अकृत्वा	नहि करीने.
अग्गओ	अग्रत	आगळथी.
अग्गे	अग्रे	आगे, आगळ
अंग	अङ्ग	संबोधन
अज्ज	अद्य	आज

१ फक्त 'स्था' धातुनी पूर्वेना ज 'पति' नो 'परि' थाय छे

अण (नम्)	अन	निषेध
अण्णमण्ण	अन्योऽन्यम्	अन्योन्य.
अण्णहा	अन्यथा	विपरीत
अणंतर	अनन्तरम्	आंतरा विना
अतीव	अतीव	
अत्थ	अस्तम्	अदर्शन, आथमवु
अत्थि	अस्ति	सत्तासूचक
अत्थु	अस्तु	विधिसूचक, निषेधसूचक
अदु	अद	
अदुवा / अदुव	अथवा	पक्षांतर.
अद्धा	अद्धा	समय
अंतर	अन्तरम्	आंतरु
अंतो	अन्तर्	अंदर, वच्चे
अन्नहा	अन्यथा	विपरीत
अन्नु / अन्नह (अप०)	अन्यथा	
अप्पणो	आत्मन	आपणे जाते पोते
अपरज्जु	अपरेद्यु	परमदिवसे
अप्पेव	अप्येवम्	संशय
अभिक्खं	अभीक्ष्णम्	वारंवार.
अभितो	अभित	चारे बाजु
अम्मो		आश्चर्य.
अम्महे (शौ०)		'ए हैं ह' हर्षनुं सूचन
अर	अरे	संभाषण.

अरे	अरति (अरइ)	रतिकलह.
अल	अलम्	सामर्थ्य, निषेध, पूरतु
अलाहि	अलहि	निवारण, निषेध
अवस्स	अवश्यम्	अवश्य
अवसें (अप०)	अवशेन	,,
अवस	अवश्यम	,,
अवरिं	उपरि	उपर
अव्वो		सूचना, पश्चात्ताप, संभाषण, विस्मय, संताप, आदर, भय, अपराध, खेद, दुःख, आनंद
असइ	असकृत्	अनेकवार
अह	अथ	आरंभ
अहत्ता	अधस्तात्	नीचे
अहवइ (अप०)	अथवा	पक्षांतर
अहव / अहवा	अथवा	,,
अहा	यथा	जेम
अहे	अधः	नीचे
अहो	अहो	ओहो (आश्चर्य)
आम	ओम्	स्वीकार
आवि	आविः	प्रकट
आहच्च	आहत्य	बलात्कार
आहरजाहर(अप०)	एहिरेयाहिरे	आवरोजावरो
इ		पादपूरक
इओ	इतः	आथी, एथी, वाक्यारंभ

इअसरिअ	एतस्मृतम् (?)	सम्प्रति.
इत्थत	इत्थन्त्वम	ए प्रकारे
इत्थत्थो	इत्यर्थं	ए अर्थ.
इयाणिं	इदानीम्	हमणा.
एम्वहिं(अप०)	,,	,,
इर	किल	निश्चय
इह	इह	अहीं
इह	ऋतस्	सत्य
इहय	ऋधरस्	
इहरा	इतरथा	अन्यथा
इ	किम्	प्रश्न, गर्हा
ईसिं	ईषत्	थोडु
ईसि	,,	,,
उ	तु	तो
उअ	उत	पश्य-जो
उट्ठवइस (अप०) उविष्टविश		उठवेश.
उत्तरओ	उत्तरत	उत्तरथी, उत्तरमा
उत्तरसुवे	उत्तरश्व	आवती काल पछी
उत	उत	विकल्प, अपि
उताहु	उताहो	विकल्प
उप्पि	उपरि	उपर
उवरिं	,,	,,
उवरि	,,	,,
उ		गर्हा, क्षेप, विस्मय, सूचना
एअ	एतत	

एकइआ एक्कइआ एकया	एकदा	एक वखत
एक्कसरिअ	एकसृतम् (?)	संप्रति
एक्कसि इक्कसि (अप०)	एकशः	एकवार
एक्कसि इक्कसि	एकदा	एक वखत
एक्कसिअ इक्कसिअ	,,	,,
एगइआ एगया	एकदा	एक वखत
एगयओ	एकैकतः	एक एक
एगततो	एकान्ततः	एक तरफी
एगज्झ	ऐकध्यम्	एक प्रकार
एतावता एयावया	एतावता	एटले
एत्थ एत्थ	अत्र	अहीं
एत्थु एत्तहे (अप०)	अत्र	,,
एत्तहे (अप०)	इतः	आथी, एथी, वाक्यारंभ
एव	एव	नक्की, ए ज प्रमाणे
य्येव[1] (शौ०)	,,	,,

---

१ जुओ पा० प्र० पृ० ७८ नि० १७

या + एव= या येव । हेमु + एव=हमु येव ।

न + एव=न येव । ते + एव=ते येव ।

योधि + एव=योधि येव । सो + एव=सो येव ।

मि (अप०)		ज "तासु मि" तनो ज
एव	एवम्	एम, ए प्रमाणे
एम्व (अप०)	"	"
एवमेव	एवमेव	एम ज
एमेव	"	"
एम्वइ (अप०)	"	"
ए	अपि	संभावना
ओ		सूचना, पश्चात्ताप
कओ	कुत	क्यांथी
कउ कहन्तिहु (अप०)	"	"
कत्थइ	कुत्रचित्	कोई ठेकाणे
कल्ल	कल्यम्	काले
कह कहं	कथम्	केम, केवी रीते
केम, केम्व, किम, किम्व किह, किध (अप०)	"	"
कहि कहिं	कुत्र	क्यां
केत्थु (अप०)	"	"
कालओ	कालत	काले करीने, वखते
काहे	काई (?)	कारे
कि		प्रश्न, गर्हा
किंचि	किंचित्	कांई.

किणा किण्णा किणो	किन्नु	प्रश्न ,,
किर	किल	नक्की
किउ	,,	,,
केवचिर	कियच्चिरम्	केटला लांबा समय सुधी
केवचिरेण	कियच्चिरेण	,
केवत्र		एटलुं
केहि (अप०)		तादर्थ्यसूचक "रुग्गहो केहिं" स्वर्गने माटे
खलु		नक्की
खाइअ (दे)		वळी
खाइ (अप०)		अनर्थक—स्थलपूरण
खेत्तओ	क्षेत्रत	क्षेत्रमां, क्षेत्रथी
घु		नक्की
गब्भो	गर्भत	गर्भे
गुणओ	गुणत	गुणे
घइ (अप०)		अनर्थक—स्थलपूरक.
घुग्घ (अप०)		घुघु—चेष्टानु अनुकरण
च	च	अने
च्च		नक्की
च्चिअ च्चेअ	चेव	,,
जइ	यदि	जो.
[illegible] (अप०)	,,	,,
	यत	जेथी,

जणि, जणु (अप०)		जाण्ये, 'इव'नु सूचन.
जत्थ	यत्र	ज्या–जेमा
जेत्थु, जत्तु (अप०)	यत्र	ज्या–जेमा
जति	यदि	जो
जदि	यदि	,,
जह, जहा	यथा	जेम, जे रीते
जेम, जेम्व, जिम, जिम्व, जिह, जिध (अप०)	,	,,
जहेव	यथैव	,,
ज	यत्	जे, के
जाव	यावत्	ज्यासुधी
जाम, जाउ, जामहिं (अप०)	,,	,,
जावज्जीव	यावज्जीवम्	जीवता सुधी.
जुअजुअ	युतयुतम् (?)	पृथक्पृथक्–जूदजुदु
जेण	येन	जे तरफ
जे	ये	पादपूरक.
झगिति		सम्प्रति
झत्ति	झटिति	शीघ्र–झट.
ण	न	निषेध.
णइ		

णं		वाक्यालंकार,
ण (शौ०)	ननु	वितर्क
णमो	नम	नमस्कार,
णवर		केवल,
णवरि		अनतर,
णवर	नवरम्	विशेष,
णवि		विपरीतता,
णाइ	नैव (?)	निषेध,
णाइ	,,	,,
णाणा	नाना	जुदुजुदु
णिच्च	नित्यम्	नित्य,
णूण	नूनम्	नक्की तर्क,
णूण	,,	,,
णो	नो	निषेध,
त	तत्	वाक्यारंभ, ते,
तजहा	तद्यथा	जेमके,
तए	तदा	त्यारे, त्यारपछी,
तओ	तत	तेथी
ततो	,,	,,
तदो	,,	,
तणेण (अप०)		तादर्थ्यसूचन
तत्थ	तत्र	त्यां, तेमां
तेत्तहे (अप०)	,	,,
तप्पभिइ	तत्प्रभृति	त्यारथी
तह } तहा	तथा	तेम, तेवी रीते,

तेम, तेम्व, तिम तिम्व, तिह, तिध	(अप०) तथा	तेम, तेवी रीते
तहेव	तथैव	तेम, तेवी रीते
तहि	तत्र	त्यां-तेमां.
तहिं	,,	,,
ताव	तावत्	त्यांसुधी वाक्यारंभ.
ताउ, ताम, तामहिं (अप०)	तावत्	
तिरिय	तिर्यक्	वांकुं.
तिरो	तिरः	छुपातुं
तीअ	अतीतम्	अतीत
तु	तु	तो
तेण	तेन	ते तरफ.
तेत्थु, तत्तु (अप०)	तत्र	त्यां-तेमां.
तेहि (अप०)		तादर्थ्य सूचक
तो	तु	तो
तो (अप०)	ततः, ततस्	तेथी, त्यारे
थू	थूत्	तिरस्कार.
दर	दर	अल्पु, ओछुं.
दिवारत्त	दिवारात्रम्	रात-दिवस
दिवा, दिआ, दिवा	दिवा	दिवस
दिवे (अप०)	,,	,,
दुट्ठ	दुष्ट	दुष्ट, खराब.

दुहओ	द्विधा	बन्ने बाजुथी
दुहा	,,	बन्ने रीते, बे भागे
दे	,,	समुखीकरण, सबोधन
धणिय		बाढ
धुव	ध्रुवम्	ध्रुव, चोक्कस
ध्रुवु (अप०)	,,	,,
न	न	निषेध
नउ, नाइ, नावइ, न (अप०)	ज्ञायते (?)	गु० नो जाणे, 'इव' अर्थनु सूचन; हिं० नाइ
नत्थि	नास्ति	नथी
नहि	नहि	निषेध
नाहि (अप०)	,,	,,
निच्च	नित्यम	नित्य
नूण, नूनं	नूनम् ,,	वितर्क
नेव	नैव	नहि ज
नो	नो	निषेध
पडुअ	प्रत्युत	उलटु
पच्चलिउ (अप०)	,,	
पगे	प्रगे	प्रात काळे
पच्छा	पश्चात्	पछी
पच्छइ (अप०)		

पडिरूव (प) पतिरूव (प) पडिरूव (प)	प्रतिरूपम	सरखु
परज्जु	परेद्यु	परम दिवसे
पर	परम्	परंतु
पर (अप०)	,,	,,
परमुह	पराङ्मुखम्	पराङ्मुख विमुख
परसुवे	परश्व	आवता परम दिवसे
परितो	परित	चारे बाजु
परोप्पर परप्पर	परस्परम्	परस्पर
अवरोप्पर अवरप्पर (अप०)	,,	,,
पसज्झ	प्रसह्य	हठात्
पाडिक्क पाडिएक्क	प्रत्येकम् ,,	एकएक ,,
पातो	प्रात	सवारे
पायो पाओ	प्राय	प्राय, पण करीने
प्राउ प्राइव प्राइम्व पग्गिम्व (अप०)	,,	,
पिव	अपि+इव	सरखु, जेवु
पि	अपि	पण
पुण	पुन	फरीने वळी

पुणरुत्त	पुनरुक्तम्	,, कृतकरण
पुणो	पुन	फरीने, वळी
पुणु (अप०)	,,	,,
पुणरवि	पुनरपि	फरीपण, वळीपण
पुरओ	पुरत	आगळ
पुरत्था	पुरस्तात्	,,
पुरा	पुरा	पहेला, भूतकाळ
पुढ	पृथक्	जुदु
पिह		,,
पेच्च	प्रेत्य	परलोके
बले	बले	निर्धारण-चटी काढवु, निश्चय
बहिद्धा	बहिर्धा	बहार
बहिया	बहिर्	,,
बहिं	,,	,,
भुज्जो	भूय	फरीने
भो !	भो	आमत्रण
मग्गतो	मार्गत	पाछळ
मणय	मनाक्	थोडु
मणाउ (अप०)	,,	,,
मणे	मने	विमर्श
माइ	माऽति	निषेध
मामि		सखीनु सबोधन
~	मा+इव	जेवु
	मृषा	खोटु

मुहु	मुहु	वारवार
मूसा	मृषा	खोटु
मा	मा	निषेध
म (अप०)	मा	,,
मोग्गडहा	मुधा,	फोकट
मोसा	मृषा	खोटु
य	च	अने
रहो	ह्य.	गई काले
र	र	पादपूरण
रहो	रह	गुप्त
रे	रे	संभाषण
रे	रति+रइ=रे	रतिकलह.
रेसि, रसि (अप०)	,,	तादर्थ्यसूचन.
लहु	लघु	शीघ्र
व	वा	विकल्प, जेवु
व्व	इव	जेवु
वणे	वने	अनुकंपा, निश्चय, विकल्प, संभावना
वहिल्ल (अप०)	शीघ्रम् पल्मिह(?)	वहेलु
वा	वा,	विकल्प, जेवु.
वि	अपि	पण
विअ	इव	जेवु
विणा	विना	वगर.
विणु (अप०)	,,	,,
विव	इव	जेवु
वीसु	विष्वक्	व्याप्ति

वे	वै	निश्चय,
वेव्व		आमन्त्रण
वेव्वे	,,	भय, वारण, विषाद, आमन्त्रण
सइ	सदा	सदा.
सइ	सकृत्	एकवार
सक्ख	साक्षात्	प्रत्यक्ष
सज्जो	सद्य	शीघ्र
सणियं	शनै	धीरे
सद्धिं	सार्धम्	साथे
सपक्खिं	सपक्षम्	बराबर सामे
सपडिदिसिं	सप्रतिदिग्	,,
सम	समम्	साथे
समाणु (अप०)	समानम्	,,
सम्म	सम्यक्	ठीक, सारु
सयं	स्वयम्	जाते पोते
सया	सदा	सदा
सव्वओ	सर्वत	बधे, बधेथी
सव्वत्थ	सर्वत्र	बधे
सव्वेत्तहे (अप०)	,,	,,
सह	सह	साथ
सहु (अप०)	,,	,,
सहसा	सहसा	अविमर्श, शीघ्र, त्वरा.
सायं	सायम्	संध्या, सांज
सिय (अ)	स्यात्	स्यात्

सिया (आ)	,,	,,
सुवत्थि	स्वस्ति	कल्याण
सुवे	श्व	आवती काले
से		अथ, वाक्यारंभ
सेव	तदेव	समाप्ति, स्वीकार
हञ्जे (शौ०)	,	दासीनु आमंत्रण
हंता	हन्त	कोमलामंत्रण हा
हंद	हन्त	गृहाण–ले
हंदि	हन्त	खेद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय, सत्य, गृहाण.
हद्धी	हा धिक्	खेद, निर्वेद
हरे	हारे	क्षेप, संभाषण, रतिकलह
हला		एला–सखीनु संबोधन
हले	हाऽऽले !	सखी– ,,
हव्व	हव्यम्	शीघ्र
हाहा	हाहा	खेद
हिर		निश्चय
हीमाणहे (शौ०)		विस्मय, निर्वेद
हीही (शौ०)		खोसी (विदूषकनु हसवु)
हु		निश्चय, वितर्क, विस्मय, संभावना
हुहुरु (अप०)		'सुरर' के 'मरर' अवा जनु अनुकरण
हुं		दान, पृच्छा, निवारण
हेट्ठा	अधः	नीचे

आ उपरात ते बीजा सर्वादिशब्दजन्य (यथा, तथा विगेर) अव्ययो छे, तेनो उल्लेख तद्धित प्रकरणमा आवनारो छे. म्हरु विचारिए तो—

" इयन्त इति संख्यान निपातानां न विद्यते "



निपात

आगळ जणाव्या प्रमाणे देश्यप्राकृत ए, प्रस्तुत प्राकृतनु एक अग छे तेमा जे जे शब्दोनो प्रयोग थएलो छे ते बधा शब्दो 'निपात' ने नामे ओळखाय छे. कारण के, ए शब्दोनी रचना, कोई जातनी व्युत्पत्ति के वर्णविकारनी अपेक्षा राखती नथी किंतु ए, लौकिक संकेत अने उच्चारण उपर निर्भर छे अहीं एवा—देश्यप्राकृतमा वपराता केटलाक—निपातो आपीए छीए

	अर्थ—	
अगया	असुरा	
अत्थ (क्क) ड	अकाण्डम्	अकाळे
अल्ल		दिन,
*आऊ	आप	पाणी
*आसीसा	आशी	आशिष
*उज्जल्ल	उज्ज्वल –बली	बळवान
कड्ड	कुतूहलम्	कोड
*कत्थइ	क्वचित्	
*कन्दुट्ट	कन्दोत्थम्	उत्पल
*कसुण	कसुणम्	खुष
—सी	श्मशानम	
—डुओ	क्षुल्लक	
	क्षेत्रम्	

*गोणो	गौ	
*गावी	,,	
*घायणो	गायन	
चच्चिक	स्थासक	कुभारनु एक जातनु उपकरण
ठिठि	धिकधिक	
ठिठ्ठर	पुंश्चली	ठिनाळ
*जम्मण	जन्म	
झसुर	ताम्बूलम्	
णामुक्कसिअ	कार्यम्	
णेच्छो	पण्डक	नपुंसक, हीजडो
*तेआलीसा	त्रयश्चत्वारिंशत्	तेंतालीश
*तेवण्णा	त्रिपञ्चाशत्	ते (त्रे) पन
निगिच्छि	पौष्प रजः	पुष्पनी रज
*ढिढि	धिक्धिक	
*धिरत्थु	धिगस्तु	
*निहेलण	निलयनम्	घर
*पक्खो	पक्ष्व	समथ
*पञ्चावण्णा	पञ्चपञ्चाशत्	पचावन
*पणपन्ना	,,	,,
पल्ही	कर्पास	कपास
*पडिसिद्धी / पाडिसिद्धी	प्रतिस्पर्धा	
* भिमोरो	हिमोर	
*बइल्लो	बलीवर्द	बळद
*भट्टिआ	भट्टक	विष्णु

*आ निशानीवाळा शब्दो

भवतो	भवान्	तमे
बहिद्धा	बहिर्धा	मैथुन, बहि
मघोणो	मघवा	इन्द्र
महन्तो	महान्	
मुव्वहइ	उद्वहति	
लज्जालुइणी	लज्जावती	लाजवतीनो छोड.
विउसग्गो	व्युत्सर्ग	त्याग
वोसिरण	व्युत्सर्जनम्	,,
वम्हलो	अपस्मार	रोगविशेष—वाई
वड्डयर	बृहत्तरम्	वडेर
वडो	वट	
सक्खिणो	साक्षी	
साहुली	शाखा	

अपभ्रंशमा आवता केटलाक निपातो—

देश्य शब्दो

अप्पण	आत्मीय	आपणु
कोड्ड	कौतुक	कोड.
खेड्ड	क्रीडा	खेल, रमत
जाइट्ठिआ	यद्दृष्टिका	जे जे जोयु
झकट		
टक्करि	अद्भुत	
दड्वड	अवस्कन्द	दडवडवु
द्रवक्क	भय	
	दृष्टि	

*गोणो	गौ	
*गावी	,,	
*घायणो	गायन	
चषिक	स्थासक	कुभारनु एक जातनु उपकरण
झिझि	झिकभिर	
डिडर	पुश्चली	छिनाळ
*जम्मण	जन्म	
झबुर	ताम्बूलम्	
णामुक्कसिअ	कार्यम्	
णेलच्छो	षण्टक	नपुसक, हीजडो
*तेआलीसा	त्रयश्चत्वारिंशत्	तेंताळीश
*तेवण्णा	त्रिपञ्चाशत्	ते (ने) पन
तिंगिच्छि	पौष्प रज	पुष्पनी रज
*द्धिद्धि	धिक्धिक्	
*धिरत्थु	धिगस्तु	
*निद्देल्लण	निल्यनम्	घर.
*पक्कलो	पक्वल	समर्थ
*पञ्चावण्णा	पञ्चपञ्चाशत्	पचावन
*पणपन्ना	,,	,,
पल्ही	कर्पास	कपास
*पडिमिद्धी / पाडिमिद्धी	प्रतिस्पर्धा	
* भिमोरो	हिमोर	
*बइल्लो	बलीवर्द	बळद
*भट्टिआ	भर्तृक	विष्णु

*आ निशानीवाळा शब्दो संस्कृत शब्दो साथे समानता धरावे छे

नाम प्रकरण १०

नामना प्रकारो

संस्कृत भाषामा नामोना बे विभाग छे. जेमके—स्वरांत नाम अने व्यंजनांत नाम पण प्राकृतभाषामा तेम नथी. कारण के, व्यंजनांत नाममात्र कोइ रीते स्वरांत थया सिवाय प्राकृतभाषामा प्रयोजातु ज नथी, एथी प्राकृतमा बधा नामो स्वरांत होय छे माटे प्राकृत नामोनो विभाग आ प्रमाणे छे

अकारांत, आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत, ऊकारांत, एकारांत अने ओकारांत [संस्कृत ऋकारांत नामो प्राकृतमा रूपाख्यानने प्रसंगे अकारांत, आकारांत, इकारांत के उकारांत थतां होवाथी एने उपरनी गणत्रीमा जूदा गण्या नथी]

नामना अन्त्यस्वरनो फेरफार

१ 'ग्रामणी,' 'खलपू' ए ज प्रकारना बीजा अनेक शब्दो (सेनानी, सुधी, कारभू, कटप्रू वगेरे) नो अन्त्य स्वर रूपाख्यानने प्रसंगे ह्रस्व थाय छे.

२ नान्यतरजातिमा वपराता नामोनो अन्त्य दीर्घ स्वर ह्रस्व थाय छे

नामनी जातिओ

प्राकृत नामोनी जातिओ संस्कृत नामोनी जेवी छे जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे

१ नकारांत अने सकारांत नामो प्राकृतमा नरजातिनां गणाय छे.

२ तरणि, प्रावृष् अने शरद् ए त्रण नामो प्राकृतमां नरजातिमां रहे छे.

नगग	नगर	नोगु, नगु हिं० अनोगा
गालिश	मूढ	
निघट्ट	(निग्घम्म- निघट्ट) गाढ	
मब्भीस	मा भैषी	मा बीश–भय न पाम
रवण्ण	रमण	रम्य
बढ	(बढर)	मूढ
विद्वार¹		गगाल, बन्हाल
सड्डुल		असाधारण
हेहि	(हे आले¹)	हे सखी

आ उपरांत बीजा पण देश्यप्राकृत शब्दो छे अने ते अनेक छे ते बाबतनी विशेष माहिती, हेमचन्द्रकृत 'देशीनाममाला' ने जोवाथी मळी शके तेम छे आवा केटलाक शब्दो 'षड्भाषाचंद्रिका' मा पण नोधाएला छे



---

¹ आ शब्दनो विविध संबंध सं० 'विपरियत' के 'परिवर्त' साथे होई शके बन्लाबु, पन्नाबु ज्ये बन्लाबु ए बन्नेनी उत्पत्ति पण सरखी लागे छे

नाम प्रकरण १०

नामना प्रकारो

संस्कृत भाषामा नामोना बे विभाग छे. जेमके—स्वरांत नाम अने व्यंजनांत नाम पण प्राकृतभाषामा तेम नथी. कारण के, व्यंजनांत नाममात्र कोई रीते स्वरांत थया सिवाय प्राकृतभाषामा प्रयोजातु ज नथी, एथी प्राकृतमा बधा नामो स्वरांत होय छे माटे प्राकृत नामोनो विभाग आ प्रमाणे छे

अकारांत, आकारांत, इकारांत ईकारांत, उकारांत, ऊकारांत, एकारांत अने ओकारांत [संस्कृत ऋकारांत नामो प्राकृतमा रूपाख्यानने प्रसंगे अकारांत, आकारांत, इकारांत के उकारांत थता होवाथी एने उपरनी गणत्रीमा जुदा गण्या नथी]

नामना अन्त्यस्वरनो फेरफार

१ 'ग्रामणी,' 'खलपू' ए ज प्रकारना बीजा अनेक शब्दो (सेनानी, सुधी, कारभू, कटपू वगेरे) नो अन्त्य स्वर रूपाख्यानने प्रसंगे ह्रस्व थाय छे

२ नान्यतरजातिमा वपरातां नामोनो अन्त्य दीर्घ स्वर ह्रस्व थाय छे

नामनी जातिओ

प्राकृत नामोनी जातिओ संस्कृत नामोनी जेवी छे जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे

१ नकारांत अने सकारांत नामो प्राकृतमा नरजातिना गणाय छे

२ तरणि, प्रावृष् अने शरद्‌ ए त्रण नामो प्राकृतमा नरजातिमां रहे छे.

३ नेत्रवाचक शब्दो तेनी खास जाति उपरात नरजातिमा पण वपराय छे

४ वचन, विद्युत, कुल, छन्दस् माहात्म्य दुःख अने भाजन वगेरे शब्दो पोत पोतानी खास जाति उपरात नरजातिमा पण रहे छे.

५ गुण, देव बिंदु, खड्ग, मण्डलाग्र, कररुह अने वृक्ष वगेरे शब्दो पोतानी जाति उपरात नान्यतरजातिमा पण वपराय छे

६ गरिमन्, महिमन् वगेरे 'इमन' छेडावाळा नामोने अने पीणिमा (पीनत्व), पुष्फिमा (पुष्पत्व) वगेरे 'इमा' छेडावाळा नामोने तेओनी खास जाति उपरात नारीजातिमा पण समजवाना छे

७ अञ्जलि, पृष्ठ, अक्षि, प्रश्न, चौर्य, कुक्षि, बलि, निधि, विधि, रश्मि अने ग्रन्थि वगेरे नामो पोत पोतानी जाति उपरात नारी जातिमा पण वपराय छे

वचन—विभक्तिओ

१ गुजरातीनी पेठे प्राकृतमा द्विवचननो प्रयोग ज नथी, तेने बदले सर्वत्र बहुवचनथी काम चलावाय छे अने 'द्वित्व' अर्थनी विशेष स्पष्टता माटे बहुवचनात नामनी साथे तेना विशेषणरूपे विभक्त्यन्त 'द्वि' शब्दनो व्यवहार थाय छे

२ चतुर्थी अने षष्ठी ए बन्ने विभक्तिना प्रत्ययो एक सरखा होवाथी चतुर्थी विभक्ति, षष्ठी विभक्तिमा समाई जाय छे तो पण कोइ स्थळे अर्थविशेषमा नाममात्रनु चतुर्थीनु एकवचन संस्कृतनी जेवु पण थतु होवाथी ए बन्ने विभक्तिओने जुदी जुदी गणावेली छे एथी विभक्तिओनी सख्यामा प्राकृत अने संस्कृतनी समानता छे.

प्रत्ययो

नीचे जणावेला प्रत्ययो नरजातिना अने नान्यतरजातिना दरेक अकारात नामोथी योजी शकाय छे

प्राकृत भाषाना प्रत्ययो

विभक्ति.	एकवचन.	बहुवचन.
पढमा	०	०
बीआ	म्	०
तइआ	ण	हि, हिं, हिँ
चउत्थी } छट्ठी }	स्स, ०	णे
पञ्चमी	त्तो ओ, उ, हि, हिंतो, ०	त्तो, ओ, उ हि, हिंतो, सुंतो.
सत्तमी	मि, म्मि, ०	सु
सम्बोहण (सम्बोधन)	०	०

शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमा प्रत्ययोनी विशेषता आ प्रमाणे छे

शौरसेनी

पञ्चमी	दो, दु.

मागधी

पढमा	०	
चउत्थी } ? }	?	हँ

पैशाची

पंचमी	तो, दु	

अपभ्रंश

प्रथमा	उ, ०	०
द्वितीया	उ, ०	०
तृतीया	ए, ण	हिं
चतुर्थी } षष्ठी }	सु, स्सु, हो, ०	हं, ०
पंचमी	हु, हे	हुं
सप्तमी	०	हिं
संबोधन	उ, ०	हो, ०

प्राकृत व पदान्त रूपना नियमो

अप भ्रंश प्राकृतरूपोना ० ए ज्यां आ रूपो समजवा छे.

प्रथमा—पुल्लिंग अने अकारान्त नामनुं रूपवाचक एकवचन ओकारान्त थाय छे, अने बहुवचन आकारान्त थाय छे.

बीजा—पुल्लिंग अकारान्त नामनुं द्वितीयानुं बहुवचन आकारान्त अने एकारान्त थाय छे.

चतुर्थी—भाव तादर्थ्यने सूचववा माटे अकारान्त नामनुं चोथीनुं एकवचन संस्कृतनी जेम पण थाय छे. भाव तथा 'वध' शब्दथी तादर्थ्य अर्थमां, संस्कृतना 'आय' प्रत्ययनी जेम वधाराना 'आइ' प्रत्यय पण लागे छे. आर्षप्राकृतमां तो केटलेक स्थले आ 'आइ' प्रत्ययने बदले 'आए' प्रत्यय पण वपराय छे अने ते हरकोइ शब्दने लागी शके छे

पचमी—अकारात नामनु पचमीनु एकवचन आकारात पण थाय छे.
सत्तमी—अकारात नामनु सत्तमीनु एकवचन एकारात पण थाय छे.
संबोहण—पुंलिंगी अकारात नामनु संबोधननु एकवचन आकारात अने ओकारात थाय छे तथा संबोधनमा विभक्ति विनानु ए अकारात नाम पण वपराय छे अने संबोधनना बहुवचनना रूपो प्रथमा (पढमा) नी जेवा थाय छे

प्रत्ययो लागता नामना मूळ अगमां थता फेरफारो

तइया—तृतीया विभक्तिना प्रत्ययो पर रहेता अकारात नामना अन्त्य 'अ' नो 'ए' थाय छे

पचमी—पचमीना एकवचननी पूर्वना अकारात नामना अन्त्य 'अ' नो 'आ' थाय छे अने बहुवचनना स्वरादि प्रत्ययो पर रहेता पण अत्य 'अ' नो 'आ' थाय छे.

पचमीना बहुवचनना 'स' अने 'ह' थी शरु थता प्रत्ययो पर रहेता अकारात नामना अन्त्य 'अ' नो 'आ' अने 'ए' थाय छे

तइया, छट्ठी, सत्तमी — तृतीयाना एकवचनना 'ण' उपर अने षष्ठीना तथा सप्तमीना बहुवचन उपर अनुस्वार विकल्पे थाय छे

छट्ठी—छट्ठीना बहुवचननो प्रत्यय पर रहेता पूर्वना नामनो कोइ पण अन्त्य स्वर दीर्घ थाय छे

सत्तमी—सप्तमीना एकवचननो 'सि' प्रत्यय लागता मूळ अगना छेवटना स्वर उपर अनुस्वार थाय छे आ 'सि' प्रत्ययवाळु रूप विशेषे करीने [1]आर्षप्राकृतमा वपरायु छे

---

१ "एयावती सव्वावती लोगसि"—आ० प्र० श्रु० प्र० अ० उ० ३; "लोगसि परमदसी आ० प्र० श्रु० तृ० अ० उ० २

सप्तमीना बहुवचननो प्रत्यय पर रहेता अकारात नामना अन्त्य ' अ ' नो ' ए ' थाय छे

शौरसेनी—प्रत्ययने लगता नियमो

पचमी—प्राकृतमा पचमीना एकवचनना प्रत्ययो लागता मूळ अगनो जे फेरफार जणाव्यो छे ते शौरसेनीमा पण लागु थाय छे बाकी बधा शौरसेनीना रूपाख्यानो प्राकृतनी प्रमाणे छे

मागधी—प्रत्ययने लगता नियमो

पदमा—ज्या शून्य छे त्या मागधीमा पुलिंगी अकारात नामनु प्रथमानु अने सबोधननु एकवचन 'एकारात' थाय छे मागधीनु आ एकारात रूप आर्षप्राकृतमा पण वपरायलु छे अने आ एक ज रूपनी वपराशने लीधे ए आर्षप्राकृतने पण ' अर्धमागधी ' तरीके जणाववामा आवेलु छे[1]

चतुर्थी, छट्ठी मागधीमा चोथी अने छट्ठी विभक्तिमा अकारात के आकारात नामथी एकवचनमा ' ह ' अने बहुवचनमा ' हँ ' प्रत्यय विकल्पे लागे छे अने ते बन्ने प्रत्ययो लागता पूर्वना स्वरनो दीर्घ थाय छे बाकीना बधा मागधी रूपो शौरसेनी प्रमाणे समजी लेवाना छे उपर जणावेलो बहुवचननो ' हँ ' प्रत्यय प्राकृतमा पण वापरी शकाय छे

पैशाची—प्रत्ययने लगता नियमो

पचमी—शौरसेनीमा पचमीना एकवचनमा जे फेरफार जणाव्यो छे ते पैशाचीमा पण समजवानो छे बाकी बधा पैशाचीना रूपाख्यानो शौरसेनी प्रमाणे समजवाना छे

× × × × ×

[1] जुओ हे० प्रा० व्या० अ० ८, पा० ४, सू० २८७

अपभ्रंश—प्रत्ययने लगता नियमो

पढमा } ज्या शून्य छे त्या अपभ्रंशमा प्रथमा अने द्वितीया
बीआ } विभक्तिमा (एकवचन अने बहुवचनमा) अकारात नाम आकारात थइने वपराय छे अने एमने एम पण वपराय छे तथा प्रथमाना एकवचनमा पुलिंगी अकारात नाम प्राकृतनी पेठे ओकारात थइने पण वपराय छे

चउत्थी } ज्या शून्य छे त्या मूळ अग जेमनु तेम वपराय
छट्ठी } छे अने दीर्घांत थइने पण वपराय छे

सत्तमी—ज्या शून्य छे त्या मूळ अग इकारात अने एकारात थइने वपराय छे

सबोहण—ज्या शून्य छे त्या सबोधनना बधा रूपाख्यानो प्रथमा विभक्ति जेवा समजवाना छे

अपभ्रंश-प्रत्यय लागता अगमा थता फेरफारो

तइया—तृतीया विभक्तिना प्राकृत प्रत्ययो लागता मूळ अगमा जे प्रत्ययोमा जे फेरफार थाय छे ते ज फेरफार अपभ्रंशना ए प्रत्ययो लागता पण समजवानो छे अने ए उपरात तृतीयाना बहुवचननो प्रत्यय लागता मूळ अग आकारात थाय छे अने एमनु एम पण वपराय छे

चउत्थी } चोथी, पाचमी अने छट्ठी विभक्तिना एकवचनना
पचमी } अने बहुवचनना प्रत्ययो लागता मूळ अगना अत्यस्वरनो
छट्ठी } दीर्घ विकल्पे थाय छे तथा सातमीना बहुवचननो ज
सत्तमी } प्रत्यय लागता पण मूळ अगमा पूर्वोक्त फेरफार थाय छे

सबोहण—अपभ्रंशनु (एकवचन अने बहुवचननु) सबोधनी रूप प्रथमानी पेठे समजवानु छे अने बहुवचननो 'हो' प्रत्यय लागता मूळ अगना अत्य स्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे



पुंलिंग अने नपुंसकलिंग

अकारांत शब्दना प्राकृत रूपाख्यानो (पुंलिंग–नरजाति)

वीर[1]

	एकव०	बहुव०
प०	वीरो, (वीरे)[2]	वीरा
बी०	वीरं	वीरे, वीरा
त०	वीरेण, वीरेणं	वीरेहि, वीरेहिं, वीरेहिँ
च०छ०	वीरस्स	वीराण, वीराणं, (वीराहँ)
ता० च०	वीराय, वीरम्म	,, ,,

१ 'वीर'ना पालिरूपो

१	वीरो	वीरा (वीरासे)
२	वीरं	वीरे
३	वीरेन	वीरेहि, वीरेभि
४	वीराय वीरस्स	वीरानं
	वीरा, वीरस्मा, वीरम्हा	वीरेहि, वीरेभि
६	वीरस्स	वीरानं
७	वीरे, वीरस्मिं, वीरम्हि	वीरेसु
८ सं०	वीर, वीरा	वीरा

जुओ पालिप्र० नामरूप अकारांत 'बुद्ध' शब्द अने तेनां रूपो उपरनां टिप्पणो

२ ( ) आ निशानमां आपेलां रूपो वैकल्पिक छे

३ वीर+म = वीरं (जुओ प्रकरण ८, म = अनुस्वार– २)

प०	वीरत्तो,	वीरत्तो,
	वीराओ, वीराउ,	वीराओ, वीराउ,
	वीराहि,	वीराहि, वीरेहि,
	वीराहिंतो,	वीराहिंतो, वीरेहिंतो,
	वीरा	वीरासुंतो, वीरेसुंतो
स०	वीरंसि, वीरम्मि,[1]	वीरेसु, वीरेसुं
	वीरे	
सं०	वीरो, (वीरे)	वीरा
	वीर, वीरा	

'वह' (वध) शब्दना रूपो 'वीर' शब्दनी जेवा ज समजी लेवा जे विशेष छे ते आ प्रमाणे

ता० च० वहाय, वहाइ, वहस्स (एकवचन)

आर्षप्राकृतमां जे शब्दने ता० चतुर्थीनो सूचक 'आए' प्रत्यय लागेलो छे तेनुं रूप आ प्रमाणे छे:

ता० च० मोक्ख—मोक्खाए,[3] मोक्खाय, मोक्खस्स (एकवचन)
,, हिअय—हिअयाए[4] हिअयाय, हिअयस्स ,,

---

१ जुओ प्रकरण २, दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर-१

२ जुओ प्रकरण ८, म=अनुस्वार-१२ (टिप्पण)

३ जुओ सूत्रकृतांगसूत्र प्र० श्रु० त० अ० तृ० उ० गा० ११— "उवसग्गे नियामित्ता आमोक्खाए परिव्वएज्जा" इत्यादि

४ जुओ आचारांगसूत्र प्र० श्रु० प्र० अ० प० ८—" से बेमि अप्पेगे अच्चाए वहंति, मंसाए, सोणियाए एवं हिययाए" इत्यादि.

ता० च० मस—मसाए ममाय, ममस्स (पञ्चानन)
, अजिण—अजिणाए, आजिणाय, अजिणस्स ,,

ए प्रमाणे अरिहत (अर्हत्), धम्म (धम), गधव्व (गन्धर्व), मणुस्स (मनुष्य), पिसाअ (पिशाच), नायपुत्त (ज्ञातपुत्र), सुगत, गोण, गउअ, गाअ (गो), भिसअ (भिषज्), सरअ (शरत्), सघ, नर, सुर, असुर, उरग (–ग), नाग (–ग), जक्ख (यक्ष), किंनर वगेरे बधा अकारात पुलिंग शब्दोना रूपो समजी लेवा.

वीर (शौरसेनीरूपो[1])

प० ए० वीराडो, वीरादु

बाकी बधा प्राकृत प्रमाणे

वील[2] (वीर) (मागधीरूपो)

प० ए० वीले

छ० वीलाह वीलस्स वीलाह, वीलाण, वीलाण

बाकी बधा शौरसेनी प्रमाणे

वीर (पैशाचीरूपो[3])

प० ए० वीराती, वीरातु

बाकी बधा शौरसेनी प्रमाणे.

---

१ शौरसेनी, मागधी वगेरेना जे रूपो प्राकृतथी जुदा थाय छे ते ज अहीं जणावेला छे

२ जुओ पृ० २, र–ल

३ पैशाचीमा 'ण' प्रत्ययनो उपयोग करती वखते (पृ० २३) 'ण–न' नियमने जुओ ३ वीर+ण–वीरेन
वीर+ण–वीरान

वीर (अपभ्रंशरूपो)

	एकव०	बहुव०
१	वीरु[1], वीरो, वीर, वीरा	वीर, वीरा
२	वीर, वीर, वीरा,	वीर, वीरा
३	वीरेण, वीरेण, वीरें	वीरेहिं, वीराहिं, वीरहिं
४–६	वीरस्सु, वीरासु, वीरसु वीराहो, वीरहो वीर, वीरा	वीराह, वीरह, वीर, वीरा
५	वीराहु, वीरहु, वीराहे, वीरहे	वीराहु, वीरहु
७	वीरि वीरे	वीराहिं, वीरहिं
८ (सं०)	वीर ! वीरो ! वीर ! वीरा !	वीराहो ! वीरहो ! वीर ! वीरा !

'वीर' शब्दना उपर जणावेला बधी जातना रूपो प्रमाणे प्रत्येक पुलिंगी अकारांत शब्दना शौरसेनी रूपो, मागधीरूपो, पैशाची रूपो अने अपभ्रंश रूपो समजी लेवाना छे



अकारांत शब्दना प्राकृत रूपाख्यानो (नपुंसकलिंग–नान्यतरजाति)

अकारांत नपुंसक नामोना बधी जातना रूपाख्यानो बनाववानी सघळी प्रक्रिया उपर प्रमाणे छे जे काइ खास भेद छे ते आ प्रमाणे छे

---

१ वीर+उ=वीरु–जुओ स्वरलोप–० पृ० ९२

प्रत्ययो

प०	म्	णि इँ, इ
बी०	,,	,, ,, ,,
स०	०	,, ,, ,,

१ अकारांत नान्यतरजातिना नामने लागता उपर जणावेला बधा प्रत्ययो कोई पण नान्यतरजातिना नामने लगाडवाना छे

२ शौरसेनी[1], मागधी अने पैशाचीमां पण ए ज प्रत्ययोनो उपयोग थाय छे

३ 'णि इँ, इ' प्रत्ययोनी पूर्वेना अंगनो अन्त्य स्वर दीर्घ थाय छे

४ संबोधनमां—ज्यां शून्य छे त्यां—एकवचनमां नान्यतर नामोनुं मूळ रूप ज वपराय छे अने बहुवचन प्रथमानी जेवुं थाय छे

कुल

	एकव०	बहुव०
प०	कुलं[2]	कुलाणि, कुलाइँ, कुलाइ
बी०	,,	,, ,, ,,
स०	कुल !	,, ,, ,,

१ शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना रूपाख्यानो करती वखते ते ते भाषाना स्वरविकार अने व्यंजनविकारना नियमो तरफ लक्ष्य राखवुं जोइए

२ नपुंसकलिंगी अकारांतना पालिरूपो

कुल

प०	कुलं	कुला, कुलानि
बी०	कुलं	कुले, कुलानि

शेष 'वीर'ना पालिरूपोना जेवा—जुओ पालिप्र० पृ० ११२, क्लीबलिंग 'चित्त' शब्द

३ कुल+म्=कुलं—जुओ मध्यनुस्वार— १२ पृ० ०१

बाकी बधा रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवा थाय छे

ए रीते गुण, देव, सोमव (सोमपा), गोव (गोपा), कररुह, [1]सिर (शिरस्), नभ, नह (नभस्), दाम (दामन्), सेय (श्रेयस्), वय (वचस्–वयस्), सुमण (सुमनस्), सम्म (शर्मन्), चम्म (चर्मन्) वगेरे शब्दोना रूपो जाणी लेवाना छे

अपभ्रंश

नान्यतरजातिना रूपाख्यानोनी अपभ्रंशमा जे खास विशेषता छे ते आ प्रमाणे

१ प्रथमा अने द्वितीयाना बहुवचनमा प्राकृतनी पेठे त्रण प्रत्ययो न लागता मात्र एक 'इ' प्रत्यय लागे छे अने एनी पूर्वनो स्वर विकल्पे दीर्घ थाय छे

२ जे नान्यतर शब्दने छेडे 'क' प्रत्यय लागेलो होय तेने प्रथमा अने द्वितीयाना एकवचनमा 'उ' प्रत्यय लागे छे.

---

१ जे शब्दो 'अस्' अने 'अन्' छेडावाळा छे ते प्राकृतमा नरजातिना गणाय छे (पृ० १२३–नामना जातिओ) पण पालिमा एवा 'अस्' छेडावाळा शब्दोने (मनोगणने) नरजातिना अने नान्यतरजातिना गणवामा आव्या छे पालिप्र० पृ० १३३–१३४ अने तेनु टिप्पण

प्राकृतमा अने पालिमा ए 'अस्' अने 'अन्' छेडावाळा शब्दोना बधा रूपो 'वीर' अने 'कुल' नी जेवा थाय छे तो पण आर्षप्राकृतमा अने पालिमा ए शब्दोना केटलाक रूपो 'वीर' अने 'कुल' थी जुदा थाय छे जेमके

मण, मन (मनस्)

पालि	आर्षप्रा०	संस्कृत
तृ० प० ष० मनसा	तृ० ए० मणसा	(मनसा)
	प० ष० मणसो	(मनसः)

(एतद्), इम, एक, एग, एअ (एक), दु (द्वि) तुम्ह (युष्मद्), अम्ह (अस्मद्)ई, अप० पवइ, कवण (किम्), भवन्त (भवत्)

१ सर्वादि शब्दो विशेषणरूप होवाथी त्रणे लिंगे वापरी शकाय छे

२ 'अमु' अने 'दु' शब्द सिवाय ए बधा सर्वादि शब्दो अकारान्त छे, तेथी तेना बधी जातना बधा रूपाख्यानो पुंलिंगमां 'वीर' अने नपुंसकमां 'कुल' नी जेम समजवाना छे ज्यां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे

३ प्रथमाना बहुवचनमां सर्वादि शब्दोना अन्त्य 'अ' नो 'ए' थाय छे अने ए एक ज रूप प्रथमाना बहुवचनमां वपराय छे

४ सर्वादि शब्दोने छट्ठीना बहुवचनमां 'एसि' प्रत्यय विकल्पे लागे छे

५ सर्वादि शब्दोने सप्तमीना एकवचनमां 'त्थ' 'म्मि' 'हिं' अने 'स्सिं' प्रत्यय लागे छे.

रूपाख्यानो (नरजाति)

सव्व (माकृत)

	एकव०	बहुव०
प०–	सव्वो (सव्वे)	सव्वे
बी०–	सव्वं	सव्वे, सव्वा.

---

१ संख्यावाचक शब्दोना प्रकरणमां 'उभ' अने 'दु' शब्दनां रूपो आवशे

२ जुओ पृ० ८ १ भरतो।

३ 'सव्व' शब्दना पालि रूपो माटे जुओ पृ० १२० उपरनुं पेटा टिप्पण खास भेद आ छे

प० तथा स० बहुव० सव्वे

छ० „ सब्बेस, सब्बेसानं

तथा पंचमीना एकवचनमां 'वीरा' नी पेठे 'सव्वा' अने सप्तमीना एकवचनमां 'वीरे' नी पेठे 'सव्वे' रूप थता नथी

त०—सव्वेण, सव्वेण	सव्वेहि, सव्वेहि सव्वेहिँ
च० छ०—सव्वस्स	सव्वेसि, सव्वाण, सव्वाण, (सव्वाहँ)
प०—सव्वत्तो,	सव्वत्तो,
सव्वाउ सव्वाओ,	सव्वाउ, सव्वाओ,
सव्वाहि,	सव्वाहि, सव्वेहि,
सव्वाहिंतो,	सव्वाहिंतो, सव्वेहिंतो
सव्वा	सव्वासुंतो, सव्वेसुंतो
स०—सव्वत्थ, सव्वम्सि, सव्वहि, सव्वम्मि	सव्वेसु, सव्वेसुं

सव्व (शौरसेनी)

शौरसेनीमा 'सव्व' शब्दना बधा रूपो 'सव्व' ना प्राकृत रूपो जेवा छे पचमीना एकवचनमा विशेषता छे ते '[1]वीर' ना शौरसेनीरूप प्रमाणे समजवी

शव्व (मागधी)

प्रथमाना एकवचनमा अने छट्ठी विभक्तिमा 'शव्व' ना मागधी रूपो 'वीर'[2] ना मागधी रूपो जेवा जाणवा अने बाकी बधा 'सव्व' ना शौरसेनी रूपो प्रमाणे समजवा

---

१ जुओ पृ० १३२ २ जुओ पृ० १३०

સવ્વ (પૈશાચી)

પંચમીનુ એકવચન 'ત્તીર' ન, પૈશાચીરૂપ પ્રમાણે અને બાકી બધા સવ્વ'ના શૌરસેની રૂપો પ્રમાણે

સવ્વ, સાહ (અપભ્રંશ)

	એકવ૦	બહુવ૦
૧	સવ્વુ, સવ્વો, સવ્વ, સવ્વા	સવ્વે, સવ્વ, સવ્વા
૨	સવ્વુ, સવ્વ, સવ્વા	સવ્વ, સવ્વા
૩	સવ્વેણ, સવ્વેં ણ, સવ્વેં	સવ્વેહિં, સવ્વાહિં, સવ્વહિં
૪–૬	સવ્વસ્સુ, સવ્વાસુ, સવ્વસુ, સવ્વહો, સવ્વાહો, સવ્વ, સવ્વા	સવ્વેસિં, સવ્વહ, સવ્વાહ, સવ્વ, સવ્વા
૫	સવ્વહા, સવ્વાહા	સવ્વહુ, સવ્વાહુ
૭	સવ્વહિં, સવ્વાહિં	સવ્વહિં, સવ્વાહિં

બાકી બીજા બધા સર્વાદિઓના રૂપો પણ એ 'સવ્વ' (પ્રાકૃત, શૌરસેની) શવ્વ (માગધી) અને સવ્વ (અપભ્રંશ) ની પેઠે કરી લેવાના છે તો પણ કેટલાક પ્રસિદ્ધ પ્રસિદ્ધ સર્વાદિના રૂપો નીચે પ્રમાણે આપીએ છીએ

૧ જુઓ પૃ૦ ૧૩૦

૨ અપભ્રંશમાં 'સવ્વ' ને સ્થાને 'સાહ' શબ્દ પણ વપરાય છે અને એના બધા રૂપો 'સવ્વ' ના અપભ્રંશ રૂપોની પેઠે થાય છે

त, णं (तत्)

१	स, सो (मा० शे)	ते, णे
२	त, ण	ते, ता, णे, णा
३	तेण तेण, तिणा	तेहि, तेहिं, तेहिँ
	णेण, णेण	णेहि, णेहिं, णेहिँ
	(पै० नेन)	
४–६	तस्स, तास (मा० ताह)	तास, तेसिं, ताण, ताणं,
	णस्स	णेसिं, णाण णाणं,
	से	सिं (मा० ताहँ)
५	तो, तम्हा, तत्तो	तत्तो,
	ताओ, ताउ,	ताओ, ताउ,
	ताहि,	ताहि, तेहिं,
	ताहितो	ताहितो, तेहितो,
	ता	तासुंतो, तेसुंतो,
	(शौ० मा० तादो, तादु)	
	(पै० तातो, तातु)	

---

१ केटलाक प्रयोगोने अनुसारे 'त' ने बदले 'ण' पण वपराय छे–हे० प्रा० व्या० ८–३–७०–पृ० ९६

'त' ना पालिरूपो माटे जुओ, पालिप्र० पृ० १४१–१४२ त (तद्) शब्द

प०	सो	ते
बी०	त, न	ते, ने
त०	तेन, नेन	तेहि, तेभि,
		नेहि, नेभि इत्यादि

२ आ 'तास' ने बदले 'से' रूप पण कोई वैयाकरण नोंधे छे

	णत्तो	णत्तो,
	णाओ, णाउ,	णाओ, णाउ,
	णाहि,	णाहि, णेहि,
	णाहिंतो,	णाहिंतो णेहिंतो,
	णा	णासुंतो णेसुंतो
७	तोहि, ताग तइआ	तेसु तेसु
	तम्मि, तम्मि तहि तत्थ,	
	णम्मि णम्मि, णहि, णत्थ	णेसु, णसु .

त ' शब्दनां प्राकृतरूपो साथे शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना पण विशेष रूपो जणावेला छे

' सव्व ' ना अपभ्रंशरूपोनी पेठे त ' शब्दनां अपभ्रंशरूपो पण समजी लेवां. जे फेर छे ते आ प्रमाणे

प० ए०	सु सो, स सा, ध्र[1]	
बी० ए०	सु, स सा, ध्र,	



जं (यत्)

प०	जो (मा० जे)	जे
बी०	ज	जा, जे
त०	जेण, जेण, जिणा	जेहि, जेहिं, जेहिँ
च० छ०	जस्स, जास (मा० जाह)	जेसि, जाण, जाण, (मा० जाहँ)

१ आ त्रणे रूपो ' तत् ' ना अर्थमा न वपराय छे

२ आ ' ध्र ' रूप पण लिंगमा काम आवे छे

३ ' ज ' ना पालिरूपो माटे जुओ पालिप्र० पृ० १६१ य (यद्) शब्द

प०	जम्हा, जत्तो,	जत्तो,
	जाओ जाउ	जाओ, जाउ,
	जाहि, जाहिंतो, जा	जाहि, जेहि,
	(शो० मा० जादो, जादु)	जाहितो, जेहितो,
	(पै० जातो, जातु)	जासुतो, जेसुतो
स०	जम्मि, जम्सि, जहिं, जत्थ	
	जाहे जाला, जइआ,	जेसु, जेसु

'ज' ना अपभ्रशरूपो 'सव्व' ना अपभ्रशरूपोनी पेठे करी लेवा. विशेषता आ प्रमाणे.

प० ए०–जु, जो, ज, जा, ध्रु[२]

बी० ए०–,, , ,, ,,

[३](क) किम्

प०–को (मा० के)	के
बी०–क	क, का
त०–केण, केण, किणा	केहि, केहिं, केहिँ
च० छ०–कस्स, कास	कास, केसि, काण, काणं
(मा० काह)	(मा० काहँ)

१ आ त्रणे रूपो 'यदा' ना अर्थमां व वपराय छे

२ आ रूप त्रणे लिगमा सरखु छे

३ जेवा 'सव्व' ना पालिरूपो छे तेवा 'क' ना पण छे विशेषता एटली छे के, च [illegible] किस्स स० ए० किस्मि, किम्हि–आ रूपो वधाराना थाय

प०—कम्हा, किणो, कीस, कत्तो,	काओ,
काओ, काउ,	काओ, काउ,
काहि, काहिंतो, का	काहि, केहि
(शौ० मा० कादो, कादु)	काहिंतो, केहिंतो,
(पै० कातो, कातु)	कासुंतो, केसुंतो
स० कम्मि कस्सि कहिं, कत्थ	
¹काहे, काआ, कइआ	केसु, केसुं

क, कवण, काइ (किम्) अपभ्रंश

अपभ्रंश रूपाख्यानने प्रसंगे 'क' ने स्थाने 'कवण' अने ²'काइ' शब्द पण वपराय छे

'क' ना अपभ्रंशरूपो अने 'सव्व' ना अपभ्रंशरूपो बन्ने सरखां छे जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे

प० ए० कु, को, क, का
कवणु, कवणो, कवण, कवणा
बी० ए० कु, क, का
कवणु, कवण, कवणा
प० ए० किहे कहो, काहो
कवणहे, कवणहो, कवणाहो

---

¹ आ त्रण रूपो 'कदा' ना अर्थमां वपराय छे

² 'काइ' (काद) ना रूपाख्यानो दुवणाना जेवा अपभ्रंश रूपोनी जेवा जाणवाना छे

[1]इम (इदम्)

प०—अय, इमो, (मा० इमे)	इमे
बी०—इम, इण, ण	इमे, इमा, णे, णा
त०—इमेण, इमेणं, इमिणा	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ
णेण, णेणं	(एहि, एहिं, एहिँ)
(पै० नेन)	णेहि, णेहिं, णेहिँ
च० छ०—इमस्स, अस्स, से	सिं, इमेसिं,
(मा० इमाह)	इमाण, इमाणं
	(मा० इमाहँ)
पं०— इमत्तो, इमाउ, इमाओ	इमत्तो, इमाउ, इमाओ,
इमाहि, इमाहिंतो	इमाहि, इमेहि,
इमा	इमाहिंतो, इमेहिंतो
(शौ० मा० इमादो, इमादु)	इमासुंतो, इमेसुंतो
(पै० इमातो, इमातु)	
स०— इमस्सिं, इमम्मि, अस्सिं, इह	इमेसु, इमेसुं,
	(एसु, एसुं)

---

१ 'इम'ना पालिरूपो 'सव्व'ना पालिरूपो जेवा छे 'सव्व'ना रूपो करता जे विशेष छे ते आ छे

प०—अय	
त०—अनेन, इमिना	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि
च० छ० अस्स, इमस्स	एस, एसान, इमेस, इमेसान,
प०—अस्मा, अम्हा	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि
इमस्मा, इमम्हा	
स०—अस्मिं, अम्हि	एसु, इमेसु
इमस्मि, इमम्हि	

—पालिप्र० पृ० १४४-१४५ इम (इदम्) शब्द

आय (इदम्) अपभ्रंश

'सव्व' ना अपभ्रंश रूपोनी पेठे 'आय' ना अपभ्रंश रूपो समजी लेवां

प०—आयु, आयो आये, आय, आया
आय, आया

बी०—आयु, आय, आया आय, आया
आयेण, आयेण, आयेहिं, आयहिं, आयाहिं
आयें वगेरे

एअ[1] (एतद्)

प०—एस, एसो, एए (शौ० मा० एदे)
इण, इणमो
(मा० एशे, एश[2]) (पै० एते)

बी०—एअ एए, एआ
(शौ० मा० एद) (शौ० मा० एदे, एदा)
(पै० एत) (पै० एते, एता)

त०—एएण, एएणं, एइणा एएहि, एएहिं, एएहिँ

---

१ आ 'एअ' शब्दने शौरसेनी अने मागधीमां रूपाख्यानने प्रसंगे 'एद' शब्द समजवानो छे अने पैशाचीमां 'एत' शब्द समजवानो छे

'एत' ना पालिरूपो 'सव्व' ना पालिरूपोनी जेवा छे

प० एसो एते

बी० एतं एते वगेरे

जेम संस्कृतमां अन्वादेशने सूचववा 'एत' ने बदले 'एन' रूप वपराय छे तेम पालिमां पण छे—जूओ पालिप्र० पृ० १४४ एत (एतद्) शब्द अने ए उपरनुं टिप्पण

२ एस=एश—जूओ स—श पृ० २७

(शौ० मा० एदेण, एदेण, एदिणा)	(शौ० मा० एदेहि, एदेहिं, एदेहिँ)
(पै० एतेन, एतिना)	(पै० एतेहि, एतेहिं, एतेहिँ)
च० छ०–से, एअस्स	सिं, एएसिं, एआण, एआण
(शौ० एदस्स)	(शौ० एदेसिं, एदाण, एदाण)
(मा० शे, एदाह)	(मा० शिं, एदाहँ, एदाण, एदाण)
(पै० एतस्स)	(पै० एतेसिं, एतान)
प०–एत्तो, एत्ताहे, एअत्तो एआउ, एआओ, एआहि, एआहिंतो, एआ	एअत्तो, एआउ, एआओ, एआहि, एएहि, एआहिंतो, एएहिंतो,
(शौ० मा० एदादु, एदादो)	एआसुंतो, एएसुंतो
(पै० एतातु, एताता)	
स०–एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि एआम्मि, एआस्सिं	एएसु, एएसु

एद, एअ (एतत्) अपभ्रंश

'सव्व'ना अपभ्रंश रूपोनी पेठे 'एद' के 'एअ' ना अपभ्रंश रूपो करी लेवा जे फेरफार छे ते आ प्रमाणे

प०–एहो	एइ
बी०–,,	,,

अकारांत–सर्वादि–शब्द (नान्यतर जाति)

सर्वादि शब्दना बधी जातना नपुंसकलिंगी रूपाख्यानो पुलिंगी सर्वादि प्रमाणे छे मात्र प्रथमा अने द्वितीयामां जे विशेष छे ते 'कुल'[1] नी पेठे समजी लेवानो छे जेमके,

सव्व (सर्व)

प०–	सव्व	सव्वाणि, सव्वाइँ, सव्वाइ
बी०–	,,	,, ,, ,,

बाकीना, 'सव'[2] ना प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाची रूपो प्रमाणे

सव्व (अपभ्रंश)

प०–	सव्वु, सव्व, सव्वा	सव्वाइं, सव्वइ
बी०–	,, ,, ,,	,, ,,

सव्वअ (सवक–अपभ्रंश)

प०–	सव्वउ,	सव्वआइं, सव्वअइं
बी०–	,,	,, ,,

बाकीना, 'सव' ना [3]अपभ्रंश रूपो प्रमाणे

त (तत्)

प०–	त, ण	ताणि, ताइँ, ताइ
		णाणि, णाइँ, णाइ
बी०–	त ण	,, ,, ,,

बाकी बधा [4]पुलिंगी 'त' प्रमाणे

---

१ जुओ पृ० १३४ २ जुओ पृ० १३८–१४० ३ जुओ पृ० १४० ४ जुओ पृ० १४१

त (अपभ्रंश)

प०—	[1]ग्र, तु, त, ता	ताइ, तइ
स्री०—	,, ,, ,,	,, ,,

तअ (तक–अपभ्रंश)

प०—	ग्र, तउ	तआइ, तअइ
स्री०—	,, ,,	,, ,,

बाकी न्या, 'त' ना अपभ्रंश रूपो प्रमाणे

ज (यत्)

प०—	ज	जाणिं, जाइँ, जाइ
स्री०—	ज	जाणि, जाइं, जाइ

बाकीना, पुल्लिंगी 'ज' प्रमाणे

ज (अपभ्रंश)

प०—	[4]ध्रु, जु, ज, जा	जाइ, जइ
स्री०—	,, ,, ,, ,,	,, ,,

जअ

प०—	ध्रु, जउ	जआइ, जअइ
स्री०—	,, ,,	,, ,,

बाकीना, 'ज' ना अपभ्रंश रूपो प्रमाणे

---

१ जुओ पृ० १४२ २ जुओ पृ० १४२ ३ जुओ पृ० १४२–१४३ ४ जुओ पृ० १४३, ५ जुओ पृ० १६३,

कि

	एकवचन	बहुवचन
प०—	कि	काणि, काइँ, काइ
बी०—	,,	,, ,, ,,

बाकीना, पुलिंगी '[1]क' नी पेठे

कि (अपभ्रंश)

	एकवचन	बहुवचन
प०—	कि, [2]काइ, कवणु, कवण, कवणा	काइ, कइ, कवणाइ, कवणइ, काईइ, काइइ, कीइ[3], किइ
बी०—	कि, काइ, कवणु, कवण, कवणा	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,

बाकी बधा, 'क' ना [4]अपभ्रंश रूपो प्रमाणे

इम (इदम्)

	एकवचन	बहुवचन
प०—	इण, इणमो, इम	इमाणि, इमाइँ, इमाइ
बी०—	,, ,, ,	, ,, ,,

शेष, पुलिंगी '[5]इम' नी जेवा

इम, इमअ (अपभ्रंश)

	एकवचन	बहुवचन
प०—	इमु	आयाइ, आयइ
बी०—	,,	,,

बाकीना, 'इम' ना [6]अपभ्रंश रूपोनी पेठे

---

१ जुओ पृ० १४३–१४८ २ जुओ पृ० १४४ ३ का + इइ=कीइ–जुओ पृ० ९० स्वरलोप ४ जुओ पृ० १४४ ५ जुओ पृ० १४७ ६ जुओ पृ० १४९

एअ (एतत्)

प०— एस, एअ, इण, इंणमो   एआणि, एआईं, एआइ

बी०— एअ   ,,   ,,   ,,

शेष, पुलिंगी 'एअ' नी पेठे

एद, एअ (अपभ्रंश)

प०— एहु   एईइ, एइइ

बी०— ,,   ,,   ,,

शेष 'एअ' ना अपभ्रंश रूपोनी पेठे

'युष्मद्' अने 'अस्मद्' ना रूपो त्रणे लिंगमा एक सरखा थाय छे अने ए आ प्रमाणे छे

[3]तुम्ह (युष्मद्)

प— एकव०—त, तु, तुव, तुह, तुम (त्वम्)

---

१ जूओ पृ० १४८ २ जूओ पृ० १४७

३ तुम्ह (युष्मद्)-पालिरूपो

१ त्व तुव	तुम्हे (वो)
२ त्व (तुम्ह) तुव तव त	तुम्हे, तुम्हाक (तुम्ह) (वो)
३— त्वया, तया (प०—त्वम्हा) (त०—ते)	तुम्हेहि, तुम्हेभि (त०—वो)
४—६ तव, तुय्ह, तुम्ह (ते)	तुम्हाकं (वो)
७ त्वयि, तयि	तुम्हेसु

—जूओ पालिप्र० पृ० १७१

किं

प०–	किं	काणि, काइँ, काइ
बी०–	,,	,, ,,

बाकीना, पुल्लिंगी ' क ' नी पेठे

किं (अपभ्रंश)

प०–	किं, काइं, कवणु, कवण, कवणा	काइं, कइं, कवणाइं, कवणइं, काईइं, काइइं, कीइं, किइं
बी०–	किं, काइं, कवणु, कवण, कवणा	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,

बाकी बधां, ' क ' ना अपभ्रंश रूपो प्रमाणे

इम (इदम)

प०–	इण, इणमो, इद	इमाणि, इमाइँ, इमाइ
बी०–	,, ,, ,	, ,, ,,

शेष, पुल्लिंगी ' इम ' नी जेवां

इम, इमअ (अपभ्रंश)

प०–	इमु	आयाइं, आयइं
बी०–	,,	, ,,

बाकीनां, ' इम ' ना अपभ्रंश रूपोनी पेठे

---

१ जुओ पृ० १४३–१४८ २ जुओ पृ० १४४ ३ का + इइं=कीइं–जुओ पृ० ९ स्वरलोप ४ जुओ पृ० १४४ ५ जुओ पृ० १४५ ६ जुओ पृ० १८

च० छ०—एकव०—तइ, तु, ते तुम्ह, तुह, तुह, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, उब्भ, उय्ह (तुभ्यम् तव ते)

बहुव०—तु, वो, भे, तुब्भ, तुब्भ, तुब्भाण, तुब्भाण, तुवाण, तुवाण, तुमाण, तुमाण, तुहाण, तुहाण, उम्हाण, उम्हाण तुम्हाहँ (युष्मभ्यम्–युष्माकम्–व)

स०— एकव०—तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए (त्वयि) तुम्मि, तुवम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि, तुब्भम्मि

बहुव०—तुसु, तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु, तुब्भेसु (युष्मासु) [1]तुवसु, तुमसु, तुहसु, तुब्भसु, [1]तुब्भासु.

---

[3]अम्ह (अस्मद्)

प— एकव०—म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं, अहयं (अहम्) (मा० हगे)

---

१ २ आ रूपो आ० हेमचंद्रना मते थता नथी–हे० प्रा० व्या० ८–३–१०३, पृ० १०२

३ अम्ह (अस्मद्)–पालिरूपो

१ अहं	मयं, अम्हे (अस्मा) (नो)
२ मं, ममं (अम्हं)	अम्हाकं, अम्हे (अम्हं) (अस्मा) (नो)
३–५–मया (तं०–मे)	अम्हेहि, अम्हेभि (तं०–नो)
४–६–मम, मम (मे) मय्हं, अम्हं	अस्माकं, अम्हाकं (चं०–नो)
७ मयि	अम्हेसु (अस्मासु)

—जुओ पालिप्र० पृ० १५३–१५४

बहुव०—मे, [1]तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे (यूयम्)

दु- एकव०—त, तु, तुम, तुव, तुह, तुमे, तुए (त्वाम्)

बहुव०—वो, तुज्झ, तुब्भे, तुय्हे, उय्हे, भे (युष्मान्-न)

त- एकव०—भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुम, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ (त्वया)

बहुव०—भे, तुब्भेहिं, तुज्झेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं-(युष्माभि)

प- एकव०—तुय्ह, तुब्भ, तहिंतो, (त्वत्)

तइत्तो, तइओ, तइउ, तइहिंतो,

तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, तुवाहि, तुवाहितो, तुवा

तुमत्तो, तुमाओ, तुमाउ, तुमाहि, तुमाहितो, तुमा

तुहत्तो, तुहाओ, तुहाउ, तुहाहि, तुहाहितो, तुहा

तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भाहितो, तुब्भा

बहुव०—तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भेहि, तुब्भाहितो, तुब्भेहिंतो, तुब्भासुतो, तुब्भेसुतो (युष्मत्)

तुय्हत्तो, तुय्हाओ, तुय्हाउ, तुय्हाहि, तुय्हेहि, तुय्हाहिंतो, तुय्हेहिंतो, तुय्हासुतो, तुय्हेसुतो

उय्हत्तो, उय्हाओ, उय्हाउ, उय्हाहि, उय्हेहि, उय्हाहिंतो, उय्हेहिता, उय्हासुतो, उय्हेसुतो

उम्हत्तो, उम्हाओ, उम्हाउ, उम्हाहि, उम्हेहि, उम्हाहिंतो, उम्हेहिंतो उम्हासुतो, उम्हेसुतो

---

[1] युष्मद्-ना दमा रूपोमा आवेला 'ब्भ' नो विकल्पे 'ज्झ' अने 'म्ह' थाय छे तुब्भे, तुज्झे, तुम्हे इत्यादि

बहुव०—[1]अम्हेसु, ममेसु, महेसु, मज्झेसु (अस्मासु)
[2]अम्हसु, ममसु, महसु, मज्झसु, [3]अम्हासु

तुम्ह (युष्मद्) अपभ्रश

	प०—तुहु	तुम्हइ, तुम्हे
	बी०—पइ, तइ	,, ,,
	त०—,, ,,	तुम्हेहिं
च०	छ०—तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हह
	प०—,, ,, ,,	,,
	स०—पइ, तइ	तुम्हासु, तुम्हासु

अम्ह (अस्मद्) अपभ्रश

	प०—हउ	अम्हइ, अम्हे
	बी०—मइ	,, ,,
	त०—मइ	अम्हेहिं
च०	छ०—महु, मज्झु	अम्हह
	प०—,, ,,	,,
	स०—मइ,	अम्हासु, अम्हासु

आकारात शब्दना प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति)

आकारात नामोना रुपाख्यानोनो प्रयोग विशेष विरल छे तो पण प्रसगवशे तेना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जणावीए छीए

---

१ जुओ पृ० १२७–तइया छ ? सत्तमी

२–३ जुओ पृ० १५३ नु टिप्पण है० प्रा० व्या० ८–३–११७, पृ० १०४,

बहुव०—अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वय, मे (वयम्)
(मा० हगे)

द्— एकव०—णे, ण, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, म, मम, मिम,
अह–(माम्–मा)

बहुव०—अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे (अस्मान्–न)

त— एकव०—मि, मे, मम, ममए, ममाइ, मइ, मए, मयाइ, णे (मया)

बहुव०—अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे (अस्माभि)

प— एकव०—मइत्तो, मइओ, मइउ, मईहिंतो (मत्)
ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिंतो, ममा
महत्तो, महाओ, महाउ, महाहि, महाहिंतो, महा
मज्झत्तो, मज्झाओ, मज्झाउ, मज्झाहि, मज्झाहिंतो,
मज्झा

बहुव०—ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममेहि,–(अस्मत्)
ममाहिंतो, ममेहिंतो, ममासुतो, ममेसुतो
अम्हत्तो, अम्हाउ, अम्हाओ, अम्हाहि, अम्हेहि,
अम्हाहिंतो, अम्हेहिंतो, अम्हासुतो, अम्हेसुतो

च, छ— एकव०—मे, मइ, मम, मह, मज्झ, मज्झ, अम्ह, अम्ह
(मह्यम्–मे–मम)

बहुव०—णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्ह अम्हे, अम्हो,
अम्हाण,–ण, ममाण, ण, महाण,–ण, मज्झाण ण,
अम्हाहँ (अस्मभ्यम्–अस्माकम् न)

स— एकव०—मि, मइ, ममाइ, मए, मे (मयि)
अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्झम्मि

नान्यतर जातिमा तो कोइ शब्द आकारात होतो ज नथी (जूओ पृ० १२३–नामना अन्त्यस्वरनो फेरफार–नि० २)

आकारात शब्दना शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना रूपो 'हाहा'ना प्राकृत रूपो जेवा थाय छे, ज्या जे विशेष छे ते 'वीर' नी पेठे समजवानो छे

आकारात शब्दना अपभ्रशना रूपो 'वीर'ना अपभ्रश रूपोनी जेवा प्राय बनाववाना छे

इकारात, उकारात शब्दना प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति) प्रत्ययो.

नरजातिना अने नान्यतरजातिना दरेक इकारात अने उकारात नामोने नीचे जणावेला प्रत्ययो लगाडवाना छे

प्राकृत भाषाना प्रत्ययो.

	एकवचन	बहुवचन
प०—	०	अउ, अओ, णो, ०
बी०—	+	णो, ०

रूप 'किलाल्प' 'गोप' अने 'सोमप' बने छे अने आम थतु होवाथी ए त्रणे शब्दोना रूपो बराबर 'वीर' नी जेवा थाय छे "क्विप" २–२–४७, पृ० ८५ षड्भाषाच०

षड्भा०	हे०
प० ए० किलालवो	प० ए० किलालवा
,, गोवो	,, गोवा
,, सोमवो	,, सोमपा

षड्भाषा०ना उपयुक्त नियमने बदले आ० हेमचद्र जे नियम करे छे ते माटे जूओ पृ० १२३–नामना अत्यस्वरनो फेरफार–नि० १

१ अकारान्त नामने लागता प्रत्ययो आकारान्त नामने लगाडवाथी तेना रूपाख्यानो तैयार थाय छे

२ मात्र एक वचननो 'ङि' प्रत्यय आकारान्त नामने लागतो नथी

३ प्रत्यय विनाने स्थळे एटले ज्यां शून्य छे त्यां मूळ अंगने ज रूपाख्यान तरीके समजवुं

४ संबोधनना रूपो प्रथमानी जेवां थाय छे

हाहा

प०—हाहा	हाहा
बी०—हाहा	,,
त०—हाहाण, हाहाणं	हाहाहि, हाहाहिं, हाहाहिँ
च० छ०—हाहस्स	हाहाण, हाहाणं
[ता० च० हाहे, हाहस्स	,, ,,]
प०—हाहत्तो, हाहाओ, हाहाउ, हाहाहिंतो	हाहत्तो हाहाओ, हाहाउ, हाहाहिंतो हाहासुंतो
स०—हाहा (ह) म्मि	हाहासु, हाहासुं
सं०—हे हाहा !	हे हाहा !

ए रीते किलालवा ('किलालपा) गोवा (गोपा) अने सोमवा (सोमपा) वगेरे शब्दोना रूपो समजवा

---

१ षड्भाषाचंद्रिकाने मते कृदन्तथी बनेला नामनो अन्त्य स्वर ह्रस्व थाय छे एथी 'किलालपा' 'गोपा' अने 'सोमपा' नुं प्राकृत

रूपाख्यानो

इसि (ऋषि)

प०	[1]इसी	इसउ, इसओ, इसिणो, इसी
बी०	इसिं	इसिणो, इसी
त०	इसिणा	इसीहि, इसीहिं, इसीहिँ
च०, छ०	इसिणो, इसिस्स	इसीण, इसीणं

१ कोइने मते इकारांत अने उकारांत शब्दोनु प्रथमानु एक वचन द्वितीयाना एकवचननी जेवु पण थाय छे —जेमके—इसी, इसि। गिरू, गिरु। हे० प्रा० व्या० ८-३-१९, पृ० ८४

इकारांतना पालिरूपो

इसि

१	इसि	इसी, इसयो
२	इसि	इसी, इसयो
३	इसिना	इसीहि, इसीभि
४-६	इसिनो, इसिस्स	इसीनं
५	इसिना, इसिस्मा, इसिम्हा	इसीहि, इसीभि
७	इसिस्मि, इसिम्हि	इसिसु, इसीसु
स०	इसि !, इसे !	इसी !, इसयो !

प्राकृतना 'णो' प्रत्ययनी पेठे पालिमा पण प्रथमाना अने द्वितीयाना बहुवचनमा 'नो' प्रत्यय वपराएलो छे " सारमतिनो, सम्मादिट्ठिनो, मिच्छादिट्ठिनो, वजिरबुद्धिनो, अधिपतिनो, जानिपतिनो" वगेरे

पालिमा अग्गि (अग्नि), मुनि, आदि, गिरि, रंसि (रश्मि) सखि (सखि) अने गामनि (ग्रामणी) शब्दोना रूपोमा विशेषता छे ते आ प्रमाणे

त०—	णा	+
च० छ०—	णो, +	+
प०—	णो +	+
स०—	+	+
सं०—	*	अउ, अओ, णो ०

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो

१ ज्या ज्या ० छे त्या मूळ अगने, अते दीर्घ करीने वापरवानु छे

२ ज्या ज्या + छे त्या अकारात नामने लागता [1]प्रत्ययो पण समजवाना छे मात्र पचमीनो एक 'हि' प्रत्यय लेवानो नथी

३ ज्या * छे त्या (सबोधनना एकवचनमा) मूळ अगने अते विकल्पे दीर्घ करवानो छे

४ पचमीना स्वरादि, सकारादि अने हकारादि प्रत्ययो पर रहेता अत्य 'इ' अने 'उ' नो दीर्घ थाय छे,

५ तृतीया, षष्ठी अने सप्तमीना बहुवचनना प्रत्ययो पर रहेता अत्य 'इ' अने 'उ' नो दीर्घ थाय छे

६ उकारात नामोने प्रथमाना बहुवचनमा एक 'अवो' प्रत्यय पण वधारे लागे छे—भाणु + अवो=भाणवो (सं० भानव)

---

१ जुओ पृ० १२० 'प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो' ना मथाळा नीचे (पृ० १०६ मा) जणावेलु काय अहिं—इकारात अने उकारातमा—थतु नथी

पं०—(शौर० इसिदो, इसिदु)
(माग० इशिदो, इशिदु)
(पैशा० इसितो, इसितु)

स०	[1]इसिंसि, इसिम्मि	इसीसु, इसीसुं
स०	हे इसि ! हे इसी !	हे इसउ ! हे इसओ ! हे इसिणो ! हे इसी !

त० प०—सखिना (पा०—सखारा, सखारस्मा)	सखेहि, सखेभि, सखारेहि, सखारेभि
च० छ०—सखिस्स सखिनो	सखीन, सखारान
स०—सखे	सखेसु, सखारेसु
स०—सख !, सखे !, सखा !, सखि ! सखी !	सखायो !, सखानो !, सखिनो !

गामनी

प० गामनी	गामनी, गामनिनो
बी० गामनीन, गामनिं	,, ,,
प०—गामनिना	
स०—	गामनीसु
स०— गामनि !	गामनी !, गामनिनो !

बाकीना 'इसि' प्रमाणे

ए बधां रूपो माटे जुओ पालिप्र० पृ० ८७–९१ अने त उपरनां टिप्पणो

१ जुओ पृ० १२७, सप्तमीना 'सि' प्रत्ययनं लगतुं उदाहरण— "तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भे" आचारांग सूत्र, बीजी चूलिका-महावीरनो अधिकार

[ता० च० इसये, इसिणो, इसिस्स इसीण, इसीणं]
न० उ०– (माग० इशिए) (मा० इशिहँ)
प० इसिणो, इसित्तो, इसीओ, इसित्तो, इसीओ, इसीउ,
इसीउ, इसीहि`तो इसीहिन्तो, इसीसुंतो

अग्गि

एकव०	बहुव०
प०–अग्गिनि, गिनि	अग्गियो (वधाराना रूपो)
स०–अग्गिनि	,,
स०–अग्गि !	

मुनि

छ०–मुने (मुने)	(वधाराना रूपो)

आदि

स०–आदो (आदौ)	(वधाराना रूपो)
आदु	
आदि	
आदिनि	

गिरि

स०– गिरे	(वधाराना रूपो)

रंसि

त०– रसेन	(वधाराना रूपो)

सखि

प०–सखा	सखायो, सखानो, सखिनो, सखा
बी०–सखार	
सखान	सखानो, सखिनो,
सखाय	सखायो, सखी
सख	

'गामणि (ग्रामणी), पणि (प्रणी), सेणाणि (सेनानी), पहि (प्रधी) अने सुहि (सुधी) वगेरे शब्दोना प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां रूपो समजवाना छे

'भाणु (भानु)

प०—भाणू	भाणुणो, भाणवो, भाणओ, भाणउ, भाणू,
बी०—भाणु	भाणुणो, भाणू
त०—भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिं, भाणूहिँ
च० छ०—भाणूणो, भाणुस्स	भाणूण, भाणूण

---

७ दंडिनि, दण्डिने दण्डिस्मि, दण्डिम्हि	दडीसु, दण्डिनेसु
स० दण्डि !	दडी ! दंडिनो !

—पालिप्र० पृ० १३२ 'दडी' अने तेनु टिप्पण

१ आ छेल्ला पाच शब्दोना सबोधनना एकवचनमा ते ते शब्दनु एकलु मूळ अग ज वपराय छे हे गामणि ! हे पणि ! हे सेणाणि ! वगेरे

२ उकारातना पालिरूपो

भानु

१ भानु	भानू, भानवो
२ भानु	,, ,,
३—५ भानुना	भानूहि, भानूभि
५ भानुस्मा, भानुम्हा	
४—६ भानुनो, भानुस्स	भानून

खास विशेषताः

[शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमा 'इन्' छेडा-वाळा 'इकारांत' नामोना अंत्य 'न्' नो संबोधनना एकवचनमा विकल्पे 'आ' थाय छे

हे दंडिआ ! हे दंडि !
हे सुहिआ ! हे सुहि (सुखिन्)
हे तवस्सिआ ! हे तवस्सि !
हे कंचुइआ ! हे कंचुइ ! (कञ्चुकिन्)
हे मणस्सिआ ! हे मणस्सि ! (मनस्विन्)]

ए प्रमाणे अग्गि (अग्नि), मुणि (मुनि), बोहि (बोधि), साधि, रासि (राशि), गिरि, रवि, कइ (कवि) कवि, (कपि कवि), अरि, तिमि, समाहि (समाधि), निहि (निधि), विहि (विधि), [1]दंडि (दण्डिन्), करि (करिन्), तवस्सि (तपस्विन्),

---

१ प्राकृतमा अने पालिमा 'दंडि' वगेरे 'इन्' छेडावाळा शब्दोना रूपो साधारण इकारांत शब्दनी पेठे थाय छे तो पण पालिमा ए 'इन्' छेडावाळा शब्दोना केटलांक वधाराना रूपो साधारण इकारांत करता जुदा पडे छे अने ते बधा आ प्रमाणे छे (जे रूपो जुदा पडे तेने वधारे मोटा अक्षरोमा मूकेला छे)

१ दंडी	दंडी, **दंडियो, दंडिनो.**
२ **दंडिय, दंडिन,** दंडि	दंडी, **दंडिये, दंडिने, दंडिनो**
३ दंडिना	दंडीहि, दंडीभि
४ दंडिनो, दंडिस्स	दंडीनं
५ दंडिना, दंडिम्हा, दंडिस्मा	दंडीहि, दंडीभि
६ दंडिनो, दंडिस्स	दंडीनं

स०—भाणुसि, भाणुम्मि — भाणूसु, भाणूसु

स०—भाणु ! भाणू ! — भाणुणो ! भाणवो ! भाणओ ! भाणउ ! भाणू !

ए प्रमाणे जउ (यदु) धम्मण्णु (धर्मज्ञ), सव्वण्णु (सर्वज्ञ), दइवण्णु (दैवज्ञ), गुरु, गउ (गो), साहु (साधु), बन्धु, वपु (वपुष्), मेरु, कारु, धणु (धनुष्), सिंधु, केउ (केतु), विज्जु (विद्युत्), राहु, सकु (शङ्कु), उच्छु (इक्षु) पवासु (प्रवासिन्), वेलु (वेणु), सेउ (सेतु), मच्चु (मृत्यु), [1]खलपु (खलपू), गोत्तभु (गोत्रभू), सरभु (शरभू), अभिभु (अभिभू), अने सयभु (स्वयभू) वगेरे शब्दोना प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना रूपो समजवाना छे

---

५ अभिभुना

स० — अभिभू ! अभिभुयो !

नाकीना 'भानु' प्रमाणे

सहभू, सव्वञ्जू

(वधाराना)

१–२–स० बहुवचन — सहभुनो

१–२–स० ,, — सव्वञ्ञू, सव्वञ्ञुनो

—पालिप्र० पृ० ९२–९३

नाकीनां 'अभिभू' प्रमाणे

---

[1] आ छेल्ला पाच शब्दोना सबोधनना एकवचनमा ते ते शब्दनु एकलु मूळ अग ज वपराय छे, हे खलपु ! हे गोत्तभु ! हे सरभु ! वगेरे.

[ता० न०—भाणने भाणुणो, भाणुस्स]

(माग० भाणुह)	(माग० भाणुहँ)
पं०—भाणुणो, भाणुत्तो, भाणूओ,	भाणुत्तो, भाणूओ,
भाणउ, भाणहिंतो	भाणूउ, भाणूहिंतो
	भाणूसुंतो
(शोर० भाणुदो, भाणुदु)	
(माग० भाणुदो, भाणुदु)	
(पैशा० भानुतो, भानुतु)	

---

७ भानुम्मि, भानुम्हि	भानूसु
सं० भानु !	भानू ! भानवे ! भानवो

प्राकृतना 'णो' प्रत्ययनी पेठे पालिमा पण प्रथमाना अने द्वितीयाना बहुवचनमा 'नो' प्रत्यय वपराएलो छे "हेतुनो, जन्तुनो, गरुनो" वगेरे

पालिमा हेतु, जन्तु, अभिभू, सहभू, सयम्भू शब्दोना रूपोमा विशेषता छे ते आ प्रमाणे —

हेतु, जन्तु

बहुवचन

१ हेतुयो, जन्तुयो	(वधाराना रूपो)
२ ,, ,,	

एकवचन

७ हेतो सं० (हेतो)	(वधाराना रूपो)

अभिभू (वधाराना रूपो)

१ अभिभू	अभिभू, अभिभुवो
२ अभिभू	,, ,,

स०—भाणुसि, भाणुम्मि　　　भाणूसु, भाणूसु

स०—भाणु ! भाणू !　　　भाणुणो ! भाणवो ! भाणओ !
भाणउ ! भाणू !

ए प्रमाणे जउ (यदु) धम्मण्णु (धर्मज्ञ), सव्वण्णु (सर्वज्ञ), दइवण्णु (दैवज्ञ), गुरु, गउ (गो), साहु (साधु), बन्धु, वपु (वपुष्), मेरु, कारु, धणु (धनुष्), सिंधु, केउ (केतु), विज्जु (विद्युत्), राहु, सङ्कु (शङ्कु), उच्छु (इक्षु) पवासु (प्रवासिन्), वेलु (वेणु), सेउ (सेतु), मच्चु (मृत्यु), [1]खलपु (खलपू), गोत्तभु (गोत्रभू), सरभु (शरभू), अभिभु (अभिभू), अने सयभु (स्वयंभू) वगेरे शब्दोना प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना रूपो समजवाना छे

---

५ अभिभुना

स०　　　अभिभू ! अभिभूवो !

बाकीना 'भानु' प्रमाणे

सहभू, सब्बञ्ञू

(वधाराना)

१–२–स० बहुवचन　　　सहभुनो

१–२–स० ,,　　　सब्बञ्ञू, सब्बञ्ञुनो

—पालिप्र० पृ० ९२–९३

बाकीनां 'अभिभू' प्रमाणे

---

[1] आ छेल्ला पाच शब्दोना सम्बोधनना एकवचनमा ते ते शब्दनु एकलु मूळ अग ज वपराय छे, जे खलपु ! हे गोत्तभु ! हे सरभु ! वगेरे.

'अमु (अदस्)

[आ शब्द सर्वादिमां छे छतां एना रूपो विशेषे वरीने 'भाणु' ना रूपो साथे मळता आवे छे माटे एने 'भाणु' ना रूपो पछी मूकवामा आव्यो छे]

प०— अह, अमू, 'असौ अमुणो, अमवो, अमउ, अमओ, अमू

बी०— अमु अमुणो, अमू

स०— अयम्मि, अमूसु, अमूसु
इअम्मि,
अमुम्मि

शेष रूपो 'भाणु' नी जेवां

---

१ अमु (अदस्) ना पालिरूपो

१	अमु	अमू, अमुयो
२	अमु	,, ,,
३	अमुना	अमूहि, अमूभि
४–६	अमुनो अमुस्स (स० अमुष्य)	अमूसं, अमूसानं
५	अमुना, अमुस्मा (स० अमुष्मात्) अमुम्हा	अमूहि, अमूभि
७	अमुस्मिं (स० अमुष्मिन्) अमुम्हि	अमूसु

जूओ पालिप्र० पृ० १४७

२ आ आपरूप स० 'असौ' उपरथी थयेलु छे—जूओ पृ० ७ नि० १२ औ=ओ "असो तत्तमकासी य" सूत्रकृ० अ० १, उ० ३, गा० ८

'इसि' अने 'भाणु' शब्दना प्राकृत रूपोनी साथे ज शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना वधाराना रूपो जणावेला छे

अपभ्रशमा जे विशेपता छे ते आ प्रमाणे

अपभ्रशभापाना प्रत्ययो

	एकव०	बहुव०
प०—	०	०
बी०—	०	०
त०—	ण, ए, म्	हिं
च० छ०—	०	हु, ह
प०—	हे	हु
स०—	हि	हिं, हु
स०—	०	हो, ०.

ज्या ज्या ० छे त्या मूळ अगने ज अते विकल्पे दीर्घ करीने वापरवानु छे

अपभ्रशमा बधा प्रत्ययो पर रहेता मूळ अगने अते विकल्पे दीर्घ थाय छे

अपभ्रश–रूपाख्यानो

इसि

प०—	इसि, इसी	इसि, इसी
बी०—	,, ,,	,, ,,
त०—	इसिण, इसिण, इसीण, इसीण, इसिए, इसीए, इसिं, इसीं	इसिहिं, इसीहिं

च० छ०—	इसि, ईसी	इसिहुं, ईसीहुं, इसिहं, ईसीहं
पं०—	इसिहे, ईसिहे	इसिहुं, ईसीहुं
स०—	इसिहि, ईसीहि	इसिहिं, ईसीहिं, (इसिहुं, ईसीहुं)
सं०—	इसि ! ईसी !	इसिहो ! ईसीहो ! इसि ! ईसी !

ए प्रमाणे दरेक इकारांत पुल्लिंगी शब्दना अपभ्रंश रूपो समजवानां छे

भाणु.

प०—	भाणु भाणू	भाणु, भाणू
बी०—	,, ,,	,, ,,
त०—	भाणुण, भाणुणं, भाणूण, भाणूणं, भाणुए, भाणूए, भाणुं, भाणूं	भाणुहिं, भाणूहिं
च० छ०—	भाणु, भाणू	भाणुहुं, भाणूहुं, भाणुहं, भाणूहं
पं०—	भाणुहे, भाणूहे	भाणुहुं, भाणूहुं
स०—	भाणुहि, भाणूहि	भाणुहिं, भाणूहिं, (भाणुहुं, भाणूहुं)
सं०—	भाणु ! भाणू !	भाणुहो ! भाणूहो ! भाणु ! भाणू !

ए प्रमाणे दरेक उकारांत पुल्लिंगी शब्दना अपभ्रंश रूपो समजवानां छे

इकारांत अने उकारांत शब्दना प्राकृत रूपाख्यानो
(नान्यतर जाति)
'दहि (दधि)

१ दहिं	दहीणि, दहीइँ, दहीइं
२ ,,	,, ,, ,,
स०–दहि !	,, ! ,, ! ,, !

बाकी बधा तेते भाषा प्रमाणे इकारांत पुलिंगी 'इसि' नी जेवा

---

१ जूओ अकारांत नपुंसक नामोनुं प्रकरण अने तेने लगता प्रत्ययो तथा नियमो—पृ० १३३–१३४

२ कोइना मते इकारांत अने उकारांत नपुंसक नामोना प्रथमाना अने द्वितीयाना एकवचनमां आवां पण रूपो थाय छे

दहि, दहिँ (स० दधि, दधिँ)

महु, महुँ (स० मधु, मधुँ)

—हे० प्रा० व्या०–८–३–२५, पृ० ८५

तादर्थ्य अर्थमां संस्कृतना रूपने मळतुं 'दहिणे' (दध्ने) अने 'महुणे' (मधुने) रूप पण वपराय छे

नपुंसकलिंगी इकारांतना अने उकारांतना पालिरूपो

'दधि'

१ दधि (दधिं) दधी, दधीनि

२ दधिं ,, ,,

शेष, इकारांत पुल्लिंगी 'इसि' प्रमाणे

---

३ 'गामनी' ना पालिरूपो

गामनि गामनी, गामनानि

गामनि ,, ,,

शेष इकारांत पुल्लिंगी 'गामनी' प्रमाणे

ए प्रमाणे सत्थि (सक्थि), वारि, अच्छि (अक्षि), छुरि (क्षुरि), अइरि (अतिरि) अने गामणि (ग्रामणी) वगेरे शब्दोना रूपो पण समजवा.

महु (मधु)

१	महु	महूणि, महूइँ, महूइ
२	,,	,, ,, ,,
स०	महु !	,, , ,,

बाकी बधां ते ते भाषा प्रमाणे उकारांत पुल्लिंगी 'भाणु' नी जेवा

ए प्रमाणे दारु, वत्थु (वस्तु), चित्तगु (चित्रगु), सुगु, वसु, अंसु, असु-अस्सु (अश्रु) जउ (जतु), बहु अने लहु (लघु) वगेरे शब्दोना रूपो पण समजवा

---

१ 'मधु'

१	मधु	मधू, मधूनि
२	मधु	,, ,,

शेष, उकारांत पुल्लिंगी 'भानु' प्रमाणे

'गोत्रभू' ना पालिरूपो

गोत्रभु	गोत्रभू, गोत्रभूनि
गोत्रभु	गोत्रभू, गोत्रभूनि

शेष, उकारांत पुल्लिंगी 'अभिभू' प्रमाणे –

जुओ पालिप्र० पृ० ११३–११५ अने एना टिप्पण

---

[1]अमु (अदस्)

प०– अह, अमु	अमूइ, अमूइँ, अमूणि	
बी०– अमु	" " "	

बाकी बधा [2]पुलिंगी 'अमु' नी पेठे

दहि (अपभ्रंश)

१ दहि	दहीइ, दहिइ
२ "	" "

बाकी बधा 'इसि' ना अपभ्रंश रूपोनी जेवा

महु (अपभ्रंश)

१ महु	महूइ महुइ
२ "	" "

बाकी बधा 'भाणु' ना अपभ्रंश रूपोनी जेवा

---

[3]ऋकारांत शब्दना प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति)

ऋकारांत नामोनी बे जात छे–केटलाक ऋकारांत नाः विशेष्यरूपे वपराय छे अने केटलाक ऋकारांत नाम विशेषणरूं वपराय छे

---

१ 'अमु' ना पालिरूपो

१ अमु	अमू
२ "	"

शेष पुलिंगी ' 'अमु' पेठे–जुओ पालिप्र० पृ० १४८

२ जुओ पृ० १६६

३ जुओ पृ० १२३ नामना प्रकारो

विशेष्यरूप—जामायर (जामातृ), पियर (पितृ), भायर (भ्रातृ) वगेरे।

विशेषणरूप—कत्तार (कर्तृ), दायार (दातृ), भत्तार (भर्तृ) वगेरे।

[आ भेदने लीधे एक जातना पण ए बंने नामोना रूपोमां विशेष जणाय छे]

ऋकारान्त (विशेष्यवाचक)

१ प्रथमानुं अने द्वितीयानुं एकवचन बाद करतां बधी विभक्तिओमां विशेष्यवाचक ऋकारान्त नामना अन्त्य 'ऋ' नो विकल्पे 'उ' थाय छे

२ प्रथमाथी लईने बधी विभक्तिओमां विशेष्यवाचक ऋकारान्त नामना अन्त्य 'ऋ' नो 'अर' थाय छे

३ प्रथमाना एकवचनमां विशेष्यवाचक ऋकारान्त नामनुं आकारान्त रूप पण विकल्पे वपराय छे

४ संबोधनना एकवचनमां विशेष्यवाचक ऋकारान्त नामना अन्त्य ऋ नो 'अ' अने 'अर' विकल्पे थाय छे

[सूचना—उपर जणाव्या प्रमाणे प्रथमाथी लईने बधी विभक्तिओमां ऋकारान्त नाम अकारान्त अने उकारान्त बने छे माटे तेना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया, 'जिण' अने 'भाणु' ना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जेवी समजवानी छे अहीं तो मात्र सरळता माटे तेना रूपाख्यानो आपीए छीए]

'पिउ, पिअर (पितृ)

– पिआ, पिअरो	पिअरा, पिउणो, पिअवो,
(मा० पिअले)	पिअओ, पिअउ, पिऊ
– पिअर	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ
– पिअरेण, पिअरेण,	पिअरेहि, पिअरेहिं, पिअरेहिँ,
पिउणा	पिऊहि, पिऊहिं, पिऊहिँ
, उ०–पिअरस्स (मा० पिअलाह)	पिअराण, पिअराण,
	(मा० पिअलाहँ)
पिउणो, पिउस्स	पिऊण, पिऊण
– पिउणो, पिउत्तो, पिऊओ,	पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ,
पिऊउ, पिऊहितो,	पिऊहिंतो, पिऊसुंतो

१ ऋकारान्तना पालिरूपो

पितु

१ पिता	पितरो (पिता)
२ पितर	पितरो, पितरे
३ पितरा (पित्या, पेत्या)	पितरेहि, पितरेभि
पितुना	पितूहि, पितूभि
४–६ पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरान, पितान
	पितून, पितुन
५ पितरा (पित्या, पेत्या)	पितरेहि, पितरेभि
पितुना	पितूहि, पितूभि
७ पितरि	पितरेसु,
	पितुसु, पितूसु

स०–हे पित ! पिता !

—जुओ पालिप्र० पृ० ९

पिअरत्तो, पिअराओ,	पिअरत्तो, पिअराओ,
पिअराउ,	पिअराउ,
पिअराहि,	पिअराहि, पिअरेहि,
पिअराहिंतो,	पिअराहिंतो, पिअरेहिंतो,
पिअरा	पिअरासुंतो, पिअरेसुंतो

(शौ० पिअरादो, पिअरादु)
(मा० पिअलादो, पिअलादु)
(पै० पिअरातो, पिअरातु)

स०—	पिअरे,	पिअरेसु, पिअरेसुं,
	पिअरसि, पिअरम्मि,	पिऊसु, पिऊसुं
	पिउंसि पिउम्मि,	
सं०—	हे पिअ ! पिअर ! पिअरो !	पिअरा ! पिउणो ! पिअवो,
	पिअरा ! पिअर !	पिअओ, पिअउ, पिऊ !

ए रीते जामायर, जामाउ (जामातृ), भायर, भाउ, (भ्रातृ) वगेरे शब्दोना रूपो समजवाना छे

ऋकारांत (विशेषणवाचक)

१. प्रथमानुं अने द्वितीयानुं एकवचन बाद करतां बधी विभक्तिओमां विशेषणवाचक ऋकारांत नामना अंत्य 'ऋ'नो विकल्पे 'उ' थाय छे
२. प्रथमाथी लइने बधी विभक्तिओमां ऋकारांत नामना अंत्य 'ऋ'नो 'आर' थाय छे
३. प्रथमाना एकवचनमां विशेषणवाचक ऋकारांत नामनुं आकारांत रूप पण विकल्पे बने छे
४. संबोधनना एकवचनमां विशेषणवाचक ऋकारांत नामना अंत्य 'ऋ' नो विकल्पे 'अ' थाय छे

'दाउ, द[illegible] ([illegible])'

प०—	दाया, दायारो	[illegible]
	(मा० दायले)	[illegible]
बी०—	दायार	[illegible]
त०—	दायारेण, दायारे[illegible].	[illegible]
	दा[illegible]णा	[illegible]
च०, छ०—	दायारम्न	दायारा[illegible], दयरा[illegible]
	(मा० दाय[illegible])	(मा० दायार[illegible]हँ)
	दाउणो, दा[illegible]म्न	दा[illegible], दा[illegible]
प०—	दायारओ दायाराओ.	दायारओ, दायाराओ,
	दायाराउ	दायाराउ
	दायाराहि,	दायाराहि, दायारेहि,
	दायाराहिंतो	दायाराहिंतो दायारेहिंतो.
	दायारा,	दायारासुंतो. दायारेसुंतो

१ ऋकारांत विशेषणना पालिरूपो

दातु

१	दाता	दातारो
२	दातार	दातारो, [illegible]
३	दातारा, दातुना	[illegible]
४–६	दातु, दातुनो, दातुस्स	[illegible]
५	दातारा	[illegible]
७	दातरि	[illegible]
स०	हे दात !	[illegible]
	दाता !	

—जुओ पालि[illegible]

दाउणो दाउणो, दाउणो,
दाउओ, दाउउ, दाउओ, दाउहि,
दाउहिंतो दाउहिंतो, दाउसुंतो
(शौ० दादारादो, दादारादु)
(मा० दादालादो, दादालादु)
(पै० तातारातो, तातारातु)
स०— दायारे, दायारंसि, दायारम्मि, दायारेसु, दायारेसुं,
दाउंसि दाउम्मि दाऊसु, दाऊसुं
सं०— हे दाय!, दायार!, दायारा, दाउणो, दायवो,
दायारा!, दायारा! दाअओ, दायउ, दाऊ

ए रीते कत्तार, कत्तु, (कर्तृ), भत्तार, भत्तु (भर्तृ) वगेरे शब्दोना रूपो समजवाना छे

ऋकारांतना प्राकृत रूपाख्यानोनी माफेज (तेना) शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना पण विशेषतावाळा रूपाख्यानो आपेला छे

ऋकारांतना अपभ्रंशरूपाख्यानो आ प्रमाणे छे

आगळ कह्या प्रमाणे प्रत्येक ऋकारांत अ, अकारांत अने उकारांत थया पछीज प्राकृतमां वपराय छे तो ए—मूळ ऋकारांतना—अकारांत अंगना अपभ्रंशरूपा 'वीर' ना अपभ्रंशरूपो जेवा करवाना छे अने ए उकारांत अंगना, 'भाणु'ना अपभ्रंशरूपो जेवा समजवाना छे कदाच कोई मूळ ऋकारांत अंग प्राकृतमां आवतां इकारांत थतुं होय तो तेना अपभ्रंशरूपो 'इसि' ना अपभ्रंशरूपो जेवा जाणी लेवां

उदाहरण तरीके एक ' पितृ ' शब्दना नीचे जणाव्या प्रमाणे आठ अगो सभवी शके छे –

पिअ, पिद; पिइ, पिदि, पिउ, पिदु, पिअर, पिदर.

ए आठमाना ' पिअ ' अने ' पिद ' तथा ' पिअर ' अने ' पिदर ' ना अपभ्रशरूपो ' वीर 'ना अपभ्रश रूपो जेवा जाणवा ' पिइ ' ' पिदि ' ना अपभ्रशरूपो ' इसि ' ना अपभ्रशरूपो जेवा समजवा अने ' पिउ ' ने ' पिदु ' ना अपभ्रशरूपो ' भाणु ' ना अपभ्रशरूपो जेवा करी लेवा

(कोइ पण [1]ऋकारात शब्दनाँ अपभ्रशअगो करती वखते तेना प्राकृत अगो तरफ अने प्रयोगो तरफ लक्ष्य राखवु)

---

१ केटलाक ऋकारात शब्दोना अपभ्रश अगोने अहीं आपीए छीए –

कर्तृ=	कत्त, कत्ति, कत्तु
	कट्ठ, कट्ठि, कट्ठु
नेतृ=	नेअ, नेइ, नेउ
	नेद, नेदि, नेदु
पोतृ=	पोद, पोदु
	पोअ, पोउ
भर्तृ=	भत्त, भत्ति, भत्तु
	भट्ट, भट्टि, भट्टु
भ्रातृ=	भाय, भाइ, भाउ
	भाद, भादि, भादु
होतृ=	होद, होदु
	होअ, होउ

दाउणो, दाउत्तो, दाउओ,
दाऊओ, दाउउ, दाऊओ, दाऊउ,
दाऊहिंतो दाऊहिंतो, दाऊसुंतो

(शौ० दायारादो, दायारादु)

(मा० दायाराहो दायालादु)

(पै० तायारातो, तायारातु)

स०- दायारे, दायारम्मि, दायारम्मि, दायारेसु, दायारेसुं,
दाउम्मि दाउम्मि दाऊसु, दाऊसुं

सं०- हे दाय!, दायार!, दायारा, दाउणो, दाउवो,
दायारो!, दायारा! दाअओ, दाअउ, दाऊ

ए रीते कत्तार, कत्तु, (कर्तृ), भत्तार, भत्तु (भर्तृ) वगेरे शब्दोना रूपो समजवाना छे



ऋकारांतना प्राकृत रूपाख्यानोनी साथे ज (तेना) शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना पण विशेषतावाळां रूपाख्यानो आपेल छे



ऋकारांतना अपभ्रंशरूपाख्यानो आ प्रमाणे छे

आगळ कह्या प्रमाणे ज्यारे ऋकारांत अंग अकारांत अने उकारांत थया पछी ज प्राकृतमां वापरी शकाय छे तो ए-मूळ ऋकारांतना-अकारांत अंगना अपभ्रंशरूपो 'वीर'ना अपभ्रंशरूपो जेवा करवाना छे अने ए उकारांत अंगना, 'भाणु'ना अपभ्रंशरूपो जेवा समजवाना छे कदाच कोई मूळ ऋकारांत अंग प्राकृतमां आवतां इकारांत थतुं होय तो तेना अपभ्रंशरूपो 'इसि'ना अप-

उदाहरण तरीके एक 'पितृ' शब्दना नीचे जणाव्या प्रमाणे आठ अगो सभवी शके छे –

पिअ, पिद; पिइ, पिदि, पिउ, पिदु, पिअर, पिदर.

ए आठमाना 'पिअ' अने 'पिद' तथा 'पिअर' अने 'पिदर' ना अपभ्रशरूपो 'वीर'ना अपभ्रश रूपो जेवा जाणवा 'पिइ' 'पिदि'ना अपभ्रशरूपो 'इसि'ना अपभ्रशरूपो जेवा समजवा अने 'पिउ'ने 'पिदु' ना अपभ्रशरूपो 'भाणु'ना अपभ्रशरूपो जेवा करी लेवा

(कोइ पण 'ऋकारात शब्दनां अपभ्रशअगो करती वखते तेना प्राकृत अगो तरफ अने प्रयोगो तरफ लक्ष्य राखवु)

---

१ केटलाक ऋकारात शब्दोना अपभ्रश अगोने अहीं आपीए छीए –

कर्तृ=	कत्त, कत्ति, कत्तु
	कट्ट, कट्टि, कट्टु
नेतृ=	नेअ, नेइ, नेउ
	नेद, नेदि, नेदु
पोतृ=	पोद, पोदु
	पोअ, पोउ
भर्तृ=	भत्त, भत्ति, भत्तु
	भट्ट, भट्टि, भट्टु
भ्रातृ=	भाय, भाइ, भाउ
	भाद, भादि, भादु
होतृ=	होद, होदु
	होअ, होउ

ऋकारांत शब्दना प्राकृत रूपाख्यानो (नान्यतरजाति)
सुपिअर, सुपिउ (सुपितृ)

प०—	सुपिअर	सुपिअराइ, सुपिअराइँ, सुपिअराणि, सुपिऊइ, सुपिऊइँ, सुपिऊणि
बी०—	सुपिअर	सुपिअराइ, सुपिअराइँ, सुपिअराणि, सुपिऊइ, सुपिऊइँ, सुपिऊणि
स०—	सुपिअर! सुपिअ! सुपिअर!	सुपिअराइ, सुपिअराइँ, सुपिअराणि, सुपिऊइ, सुपिऊइँ, सुपिऊणि

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे पुल्लिंगी पिउ, पिअर (पितृ)नी जेवा छे

दायार, दाउ (दातृ)

प०—	दायार	दायाराइ, दायाराइँ, दायाराणि, दाऊइ, दाऊइँ, दाऊणि
बी०—	दायार	दायाराइ, दायाराइँ, दायाराणि, दाऊइ, दाऊइँ, दाऊणि
स०—	हे दाय! हे दायार!	दायाराइ, दायाराइँ, दायाराणि, दाऊइ, दाऊइँ, दाऊणि

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे पुल्लिंगी दायार, दाउ (दातृ)नी जेवा छे

नपुंसकलिंगी ऋकारांतना अपभ्रंशरूपो 'कुल', 'दहि', अने 'महु'ना अपभ्रंशरूपो जेवा जाणवाना छे (जूओ पुल्लिंगी ऋकारांतना अपभ्रंशरूपो विषेनु लखाण)

एकारांत अने ¹ओकारांतना प्राकृत रूपाख्यानो

एकारांत अने ओकारांत नामोना रूपाख्यानो प्राकृतमा उपलब्ध थता नथी, तो पण ए शब्दोने छेडे 'अ' (स्वार्थिक-क) लगाड तेना रूपाख्यानो बनावाय छे अने ते ते भाषा प्रमाणे ते बध रूपाख्यानो पुंलिंगमा अकारांत ('जिण') नी जेवा छे, नपुंसकम अकारांत ('कुल') नी जेवा छे अने स्त्रीलिंगमा स्त्रीलिंगनी प्रक्रिय प्रमाणे बने छे

---

१ प्राकृतमा 'गो' शब्दना 'गोण' 'गाअ' 'गउ' एवा त्रण अंगो बने छे (जूओ पृ० १२० पं० १ तथा पृ० ६१ ओ=अउ, आअ) अने रूपाख्यानने प्रसंगे पण ए त्रण अंगो वपराय छे तेम पालिमा 'गो' शब्दना 'गोण' (गोन) 'गु' अने 'गवय' एवा अंगो बने छे (जूओ पालिप्र० पृ० ९८ अ० ३२ अने तेनु टिप्पण) अने रूपाख्यानने प्रसंगे वपराय छे प्राकृतमा रूपाख्यानने प्रसंगे मूळ 'गो' अंग नथी वपरातु आर्षप्राकृतमा मूळ 'गो' अंग अने ते द्वारा थएला रूपो पण (जूओ पृ० १३६ 'कम्म'ना आर्षरूपो माटेनु टिप्पण) मळी आवे छे तेम पालिमा ए मूळ 'गो' अंगना पण रूपो—जे रूपो आर्षप्राकृतमा वपराएला छे—छे अने ते आ प्रमाणे

गो

१	गो	गावो, गवो
२	गाव	गावो,
	गव	गवो
	गावु	
	गवु	
३	गावेन	गोहि, गोभि
	गवेन	
	गवा	

जेमके-स० सुर-प्रा० सुरेअ[1]। स० गो-प्रा० गिरोअ। इत्यादि।

सुरेअ

सुरेओ	सुरेआ।
सुरेअ,	सुरेए, सुरेआ।
सुरेएण, सुरेएणं	सुरेएहि, सुरेएहिं, सुरेएहिँ।

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर'नी समान छे

४-६	गावस्स	गोन, गुन्नं,
	गवस्स	गव
५	गावा, गावस्मा,	गोहि, गोभि
	गावम्हा	
	गवा, गवस्मा, गवम्हा	गवेहि, गवेभि
७	गावे गावस्मि, गावम्हि	गावेसु
	गवे, गवस्मि, गवम्हि	गवेसु
		गोसु
स०-गो !		गावो, गवो-

जुओ पालिप्र० पृ० ९७-९८

आर्षप्राकृतनुं उदाहरण—"अदुवे होइ गव पणोइए"—
सूत्र० प्र० श्रु० अ० २, उ० ३ गा० ५
"गो-महिस-गवलयप्पभूया"—
भगव० शत० २, उ० ५ तुंगियानो
अधिकार (पृ० २७७ रा० जि०)

औकारांत 'नौ' शब्दनुं प्राकृत अंग 'नाव' बने छे (जुओ पृ० ६२ औ=आव) "एग महं नावं सयासवं सहस्सा (ग्गा)ना तेहि"= भगव० श० १, उ० ६ (प्रश्नोत्तर-२२७ पृ० १७१ रा० जि०)

२ जुओ षड्भाषा० पृ० ९६

गिलोअ

गिलोओ	गिलोआ।
गिलोअ	गिलोए, गिलोआ।
गिलोएण, गिलोएणं,	गिलोएहि, गिलोएहिं
	गिलोएहिँ।

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी समान छे

---

२ केटलेक ठेकाणे एकारांत अने ओकारांत नामोनुं प्राकृतरूप, संस्कृतना सिद्धरूप उपरथी पण बनाववामां आवे छे सुराहि (सं० सुराभि) सुरासु (सं० सुरासु) इत्यादि

व्यंजनांत शब्दो

प्राकृतमां रूपाख्यानने प्रसंगे कोइ शब्द व्यंजनांत संभवी शकतो नथी,[1] एथी एना ते ते भाषाना बधा रूपो पूर्वोक्त स्वरांत शब्दनी पेठे समजवाना छे फक्त 'अत्' अने 'अन्' छेडावाळा नामोना रूपोमा विशेषता छे अने ए आ प्रमाणे छे

---

१ जूओ प्रकरण ३–अंत्यव्यंजनलोप षड्भाषाचन्द्रिकाने मते छेडे धातुवाळा व्यंजनांत नामोना छेवटना व्यंजनमां 'अ' उमेराय छे अने बीजा व्यंजनांत नामोने छेडे स्वार्थिक 'अ' (क) प्रत्यय उमेराय छे एथी ए बधा नामोना रूपो अकारांत नामनी जेवा थाय छे (पृ० ११६ "हलोऽक्") धातु–गोदुह् + अ = गोदुह अधातु–सुगिर् + अ = सुगिर सुदिव् + अ = सुदुअ (सुदुक)

'अत्' छेडावाळा नामो (नरजाति)

जे नामो 'मत्वर्थीय 'अत्' छेडावाळा छे के वर्तमानकृदत तरीके वा भविष्यत्कृदत तरीके 'अत्' छेडावाळा छे ते नामोना अंत्य 'अत्'नो प्राकृतमा 'अत' थाय छे, तेथी एना बधा रूपो ते ते भाषा प्रमाणे अकारांत 'वीर'नी जेवा बने छे[1]

फक्त आर्षप्राकृतमा एवा केटलाक नामोना रूपो संस्कृतना सिद्धरूपो उपरथी पण बनाववामा आवेला छे

भगवन्त =	[2]भगवन्तो
भगवता=	भगवया
भगवत =	भगवओ इत्यादि

[3]शौरसेनी

शौरसेनीमां कृतवत्, भवत्, भगवत् अने संपादितवत् शब्दना अंत्य व्यंजननो मात्र प्रथमाना एकवचनमा अनुस्वार थाय छे:

कयवं	(कृतवान्)
भवं	(भवान्)
[4]भगवं	(भगवान्)

---

१ आ 'अत' उपरांत मत्वर्थीय बीजा पण अनेक आदेशो थाय छे ते माटे जूओ तद्धितप्रकरणमा 'मतु'ना आदेशो

२ "थेरा भगवंतो" "भगवया महावीरेण" "भगवओ महावीरस्स"–(भगव० राय० पृ० २३९–२४१–२४८)

३ शौरसेनीने लगती अपवाद विनानी बधी प्रक्रिया मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमा पण समजी लेवी

४ आ रूप आर्षप्राकृतमा प्रथमामा अने द्वितीयामा पण वपराएलु छे "भगवं महावीरे" "भगवं गोयमे"–(भगव० राय० पृ० २३२)

सपाइअव (सपादितवान्)
सपादिद्व

रूपाख्यानो

'भगवत (भगवन्)
भयवत

१	भगवतो	भगवता.
	(शौ० मा० पै० भमव)	
	(मा० भगवते)	
२	भगवत	भगवते, भगवता

अत्' छेडावाळा नामना पालिरूपो

१ भगवत

१	भगवा	भगवतो, भगवता
२	भगवत	भगवते
३	भगवता भगवतेन	भगवतेहि, भगवतेभि
४–६	भगवतो भगवतस्स	भगवत, भगवतान
५	भगवता, भगवता भगवतस्मा, भगवतम्हा	भगवतेहि, भगवतेभि
७	भगवति, भगवते भगवतस्मि, भगवतम्हि	भगवतेसु
स०	भगव, भगव भगवा (भगवत)	भगवतो भगवता

[जुओ पृ० १८२ 'भगवत' ना आपरूपो]

—जुओ पालिप्र० पृ० ११६–११७–११८ अने एना टिप्पण.

३ भगवतेण, भगवतेण	भगवतेहि, भगवतेहिं, भगवतेहिँ .
स०– भगवत !,	भगवता
भगवता !, भगवतो !	

(शौ० मा० पै० भगव, भगव !)

ए प्रमाणे बधा, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी प्रमाणे

---

[1]भवत (भवत्)

१ भवतो	भवते
(शौ० मा० पै० भव)	
(मा० भवते)	
२ भवत	भवते, भवता
३ भवतेण, भवतेण	भवतेहि, भवतेहिं भवतेहिँ,
स० भवत,	भवता !
भवता, भवतो	

---

१ पालिमां 'भवत' शब्दना विशेष रूपो आ प्रमाणे छे

१	भवतो, भोंतो, भवता	(बहुवचन)
३	भवता, भोता, भवतेन	(एकवचन)
४–६	भवतो, भोतो, भवतस्स	(,,)
स०–	भो !, भते !, भोंत !	(,,)
,,	भवतो, भातो, भवता, भोता	(बहुवचन)

'सत' शब्दनु पालिमां (स० 'सद्' उपरथी) 'सङिभ' रूप पण वपराय छे —जुओ पालिप्र० पृ० ११८–११९–१२० अने तेनां टिप्पणी

(शौ० मा० पै० भव, भव)

(मा० भवते, भते)

ए प्रमाणे बधा, ने ते भाषा प्रमाणे 'सत्व' नी पेठे

'भवंत (भवत्–वर्तमानकृदत)

१	भवतो (मा० भवते)	भवता
२	भवत	भवते, भवता.
३	भवतेण, भवतेण	भवतेहि, भवतेहिं, भवतेहिँ
स०	भवन्त ! भवतो ! भवता ! (मा० भवते !)	भवता

ए प्रमाणे बधा ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवां

'अत्' छेडावाळा वर्तमानकृदतना पालिरूपो

१ गच्छत (गच्छत्–वर्तमानकृदत)

१	गच्छ, गच्छतो	गच्छतो (गच्छ) गच्छता
२	गच्छत	गच्छते

शेष बधा 'भगवत' प्रमाणे

केटलाक 'अत्' छेडावाळा नामोना पालिरूपोनी विशेषता आ प्रमाणे छे

'महन' (महत्) अने अरहत (अर्हत्) शब्दना प्रथमाना एकवचनमा 'महा' अने 'अरहा' (आरमा० अरहा) रूप वधारे थाय छे—पालि प्र० पृ० ११८–११९

३	भगवतेण, भगवतेण	भगवतेहि, भगवतेहिं, भगवतेहिँ
स०–	भगवत !, भगवता !, भगवतो !	भगवता

(शौ० मा० पै० भगव, भगव !)

ए प्रमाणे बधा, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी प्रमाणे

---

[1]भवत (भवतु)

१	भवतो (शौ० मा० पै० भव) (मा० भवते)	भवते
२	भवत	भवते, भवता
३	भवतेण, भवतेण	भवतेहि, भवतेहिं भवतेहिँ
स०	भवन्त, भवता, भवतो	भवता !

---

१ पालिमा 'भवत' शब्दना विशेष रूपो आ प्रमाणे छे

१	भवतो, भोंता, भवता	(बहुवचन)
३	भवता, भोंता, भवतेन	(एकवचन)
४–८	भवतो, भोतो, भवतस्स	(,,)
स०–	भो !, भंत !, भोंत !	(,,)
,,	भवतो, भोंतो, भवता, भोंता	(बहुवचन)

'सत' शब्दनुं पालिमा (स० 'सद्भि' उपरथी) 'सब्भि' रूप पण वपराय छे—जूओ पालिप्र० पृ० ११८–११९–१२० अने तेनां टिप्पणी

(मा० भविस्समाणे)

भविस्समाण	भविस्समाणे, भविस्समाणा
भाविस्समाणेण,	भविस्समाणेहि,
भाविस्समाणेण	भविस्समाणेहिं, भविस्समाणेहिँ

शेष, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर'नी पेठे.

नान्यतरजाति

उपर जणावेला नामोना क्लीबलिंगी रूपो प्रथमा अने द्विती यामा बराबर 'कुल'नी जेवा थाय छे अने बाकी बधा ते ते भाषा प्रमाणे पुलिंगी रूपोनी जेवा थाय छे, जेमके,

'भगवंत

१	भगवत	भगवताणि, भगवताइँ, भगवताइ

---

१ 'भगवत'ना पालिरूपो (नान्यतरजाति)

१	भगव, भगवत	भगवता, भगवतानि भगवति
२	भगवत	भगवते, भगवतानि, भगवति

शेष, 'भगवत'नी पेठे

'गच्छत' (गच्छत्)ना पालिरूपो

१	गच्छ, गच्छत	गच्छता, गच्छतानि
२	गच्छत	गच्छते, गच्छतानि

शेष, पुलिंगी 'गच्छत'नी पेठे—जुओ पालिप्र० पृ० १३८ अने एना टिप्पण.

[1]भवमाण (भवत्–वर्तमानकृदंत)

१	भवमाणो,	भवमाणा
	(मा० भवमाणे)	
२	भवमाण	भवमाणे, भवमाणा
३	भवमाणेण,	भवमाणेहि, भवमाणेहिं,
	भवमाणेण	भवमाणेहिँ

शेष, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर'नी जेवा

भविस्सत (भविष्यत्–भविष्यत्कृदत)

१	भविस्सतो	भविस्सता
	(मा० भविस्सते)	
२	भविस्सत	भविस्सते, भविस्सता
३	भविस्सतेण,	भविस्सतेहि,
	भविस्सतेण	भविस्सतेहिं,
		भविस्सतेहिँ
स०	भविस्सत ! भविस्सतो ! भविस्सतो !	भविस्सता

(मा० भविस्सते)

(शौ० मा० पै० भविस्स ![2] भविस्स !)

ए प्रमाणे बधा 'वीर' प्रमाणे

भविस्समाण (भविष्यत्–भविष्यत्कृदत)

भविस्समाणो भविस्समाणा

१ कृदतना आ 'अत्' ने स्थाने 'अत' अने 'माण' एवा बे आदेशो थाय छे–जुओ कृदतप्रकरण

२ संस्कृत 'भविष्यन् !' उपरथी

भगवत (नान्यतरजाति)

१ भगवतु, भगवत, भगवताइ, भगवतइ
भगवता

२ भगवतु, भगवत, भगवताइ, भगवतइ
भगवता

बारी बधा ' भगवत 'ना अपभ्रंशरूपो प्रमाणे

' अन् ' छेडावाळा नामो (नरजाति)

१ ' अन् ' छेडावाळा नामोना नकारांत अंगना छेवटना ' अन् 'नो ' आण ' विकल्पे थाय छे

अद्धाण, अद्ध (अध्वन्), अप्पाण, अप्प (आत्मन्), उच्छाण, उच्छ (उक्षन्), गावाण, गाव (ग्रावन्) जुवाण, जुव (युवन्) तक्खाण, तक्ख (तक्षन्) पूसाण, पूस (पूषन्) बम्हाण, बम्ह (ब्रह्मन्), महवाण, महव (मघवन्), मुद्धाण, मुद्ध (मूर्द्धन्) रायाण, राय (राजन्) साण, स (श्वन्), सुकम्माण, सुकम्म (सुकर्मन्) इत्यादि

२ ' अन् 'नो ' आण ' थया पछी ए ' आण ' छेडावाळा नामोना रूपो तेते भाषा प्रमाणे ' वीर 'नी जेवा जाणवाना छे. जेमके,

अद्धाण

१ अद्धाणो अद्धाणा
(मा० अद्धाणे)

२ अद्धाण अद्धाणे, अद्धाणा इत्यादि

२	भगवत	भगवताणि, भगवताइँ, भगवताइ
स०	भगवत !	भगवताणि, भगवताइँ, भगवताइ

बाकी बधा पुलिंगी 'भगवत'नी पेठे

अपभ्रंशरूपो

अपभ्रंशरूपो पण 'वार' अने 'कुल'नी जेवा थाय छे जेमके,

भगवत (नरजाति)

१	भगवतु, भगवतो भगवत, भगवता	भगवत, भगवता
२	भगवतु, भगवत, भगवता	भगवत, भगवता.
३	भगवतेण, भगवतेण भगवतें	भगवतेहिं, भगवताहिं, भगवतहिं
४–६	भगवतासु, भगवतसु, भगवतस्सु, भगवताहो, भगवतहो, भगवत, भगवता	भगवताह, भगवतह, भगवत, भगवता
५	भगवताहु, भगवतहु, भगवताहे, भगवतहे	भगवताहु, भगवतहु
७	भगवति, भगवते	भगवताहिं, भगवतहिं
स०	भगवतु, भगवतो, भगवत, भगवता	भगवताहो, भगवतहो, भगवत, भगवता

३ 'णो' प्रत्यय पर रहेता पूर्वना स्वरनो दीर्घ थाय छे.

४. 'इणे' प्रत्यय पर रहेता पूर्वनो स्वर लोपाय छे

पूस (पूसन्)

प०—	पूसा, पूसो (मा०—पूशे)	पूसाणो, पूसा।
बी०—	पूसिण, पूस	पूसाणो, पूसे, पूसा।
त०—	पूसणा, पूसेण, पूसेणं	पूसेहि पूसेहिं, पूसेहिँ।
च०, छ०—	पूसाणो, पूसस्स (मा० पूशाह)	पूसिण, पूसाण, पूसाणं। (मा० पूशाहँ)
पं०—	पूसाणो, पूसत्तो, पूसाओ, पूसाउ, पूसाहि, पूसाहिंतो, पूसा (शौ० पूसादो, पूसादु) (मा० पूशादो, पूशादु) (पै० पूसातो, पूसातु)	पूसत्तो, पूसाओ, पूसाउ, पूसाहि, पूसेहि, पूसाहिंतो, पूसेहिंतो, पूसासुंतो, पूसेसुंतो।
स०—	पूसे, पूसम्मि पूससि	पूसेसु, पूसेसुं।
म०—	हे पूसा! हे पूसो, पूस!	हे पूसाणो, हे पूसा।

महव

१	महवा, महवो (शो० [1]महव) (मा० महवे)	महवाणो, महवा

---

१ 'मघव' पण थाय छे आ रूप आर्षप्राकृतमां पण वपराएलुं छे "मघवं पागसासणे"—कल्पसूत्र

रायाण

१ रायाणो रायाणा

(मा० लायाणे)

२ रायाण रायाणे, रायाणा० इत्यादि

सुकम्माण

१ सुकम्माणो सुकम्माणा

(मा० शुकम्माणे)

२ सुकम्माण सुकम्माणे, सुकम्माणा इत्यादि

---

३ ज्यारे 'आण' थतो नथी त्यारे ए 'अन्' छेडावाळा नामोना रूपो बनाववानी रीत आ प्रमाणे छे

प्रत्ययो

प०—	+, ०	णो, ०
बी०—	इण, ०	णो, ०
त०—	णा, ०	०
च०, छ०—	णो, ०	इण, ०
प०—	णो, ०	०
स०—	०	०
स०—	+, ०	णो ०

१ ज्या शून्य छे त्या अकारांत 'वीर'नी जेवी प्रक्रिया समजवानी छे

२ ज्या + आ निशान छे त्या 'अन्' छेडावाळा नामना अंत्य 'न्' नो 'आ' विकल्पे थाय छे.

प०	अप्पा, अप्पो	अप्पाणो, अप्पा।
	(मा० अप्पे)	
बी०	अप्पिण, अप्प	अप्पाणो, अप्पे, अप्पा।
त०	अप्पणिआ, अप्पणइआ, अप्पणा, अप्पेण, अप्पेण	अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिँ।
च०,-छ०-	अप्पाणो अप्पस्स	अप्पिण, अप्पाण, अप्पाण।
	(मा० अप्पाह)	(मा० अप्पाहँ)

इत्यादि बधा रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'पूस' नी समान छे

२ राय (राजन्)

१ तृतीया, पचमी, पष्ठी अने सप्तमीना बहुवचनमा 'राजन्' शब्दनो 'राई' आदेश विकल्पे थाय छे

६	अत्तना, अत्तस्मा, अत्तम्हा, आतुमस्मा, आतुमम्हा	अत्तनेहि, अत्तनेभि, अत्तेहि, अत्तेभि, आतुमेहि, आतुमेभि
७	अत्तनि, अत्ते, अत्तस्मि, अत्तम्हि आतुमे, आतुमस्मि, आतुमम्हि	अत्तनेसु आतुमेसु
८ स०	अत्त! अत्ता! आतुम! आतुमा!	अत्तानो! अत्ता! आतुमानो!

२ राज (राजन्)

१	राजा	राजानो, राजा
२	राजान राज	राजानो
३	रञ्ञा, राजेन, राजिना	राजूहि, राजूभि, राजेहि, राजेभि

२	मह्विण, मह्वं	मह्वाणो, मह्वे, मह्वा
३	मह्वणा, मह्वेण, मह्वेण	मह्वेहि, मह्वेहिं, मह्वेहिँ
४–६	मह्वाणो, मह्वस्स	मह्विण, मह्वाण, मह्वाण
	(मा॰ मह्वाह)	(मा॰ मह्वाहँ)

बाकी बधा 'पूस' प्रमाणे

---

[1]अप्प (आत्मन्)

१ 'आत्मन्' शब्दने तृतीयाना एकवचनमां 'णिआ' अने 'णइआ' प्रत्यय वधारे लागे छे

---

१ 'अन्' छेडावाळा नामोना पालिरूपो

['अन्' छेडावाळा नामोनां पालिरूपो विशेष अनियमित होवाथी अहीं जरा विगतथी आपेलां छे –]

अत्त, आतुम (आत्मन्)

१	अत्ता, आतुमा	अत्ता, अत्तानो, आतुमानो
२	अत्तानं, अत्तं, आतुमानं, आतुमं	अत्तानो, अत्ते, आतुमानो
३	अत्तना, अत्तेन, आतुमेन	अत्तनेहि, अत्तनेभि, अत्तेहि, अत्तेभि, आतुमेहि, आतुमेभि
४–६	अत्तनो, अत्तस्स, आतुमस्स	अत्तानं, आतुमानं

प० अप्पा, अप्पो अप्पाणो, अप्पा ।
(मा० अप्पे)
बी० अप्पिण, अप्प अप्पाणो, अप्पे, अप्पा ।
त० अप्पणिआ, अप्पणइआ, अप्पेहि, अप्पेहिं,
अप्पणा, अप्पेण, अप्पेहिँ ।
अप्पेण
च०,-छ०-अप्पाणो, अप्पस्स अप्पिण, अप्पाण, अप्पाण ।
(मा० अप्पाह) (मा० अप्पाहँ)

इत्यादि बधा रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'पूस' नी समान छे

२ राय (राजन्)

१ तृतीया, पचमी, षष्ठी अने सप्तमीना बहुवचनमा 'राजन्' शब्दनो 'राई' आदेश विकल्पे थाय छे

५	अत्तना	अत्तनेहि, अत्तनेभि,
	अत्तसा, अत्तम्हा,	अत्तेहि, अत्तेभि,
	आतुमस्मा, आतुमम्हा	आतुमेहि, आतुमेभि
७	अत्तनि, अत्ते,	अत्तनेसु
	अत्तस्मि, अत्तम्हि	आतुमेसु
	आतुमे, आतुमस्मि,	
	आतुमम्हि	
८ स०	अत्त ! अत्ता !	अत्तानो ! अत्ता !
	आतुम ! आतुमा !	आतुमानो !

२ राज (राजन्)

१	राजा	राजानो, राजा
२	राजान राज	राजानो
३	रञ्जा, राजेन,	राजूहि, राजूभि,
	राजिना	राजेहि, राजेभि

२	महविण, महवं	महवाणो, महवे, महवा
३	महवणा, महवेण, महवेण	महवेहि, महवेहिं, महवेहिँ
४–६	महवाणो, महवस्स	महविण, महवाण, महवाण
	(मा० महवाह)	(मा० महवाहँ)

बाकी बधा 'पूस' प्रमाणे

अप्प (आत्मन्)

१ 'आत्मन्' शब्दने तृतीयाना एकवचनमां 'णिआ' अने 'णइआ' प्रत्यय वधारे लागे छे

---

१ 'अन्' छेडावाळा नामोना पालिरूपो

['अन्' छेडावाळा नामोना पालिरूपो विशेष अनियमित होवाथी अहीं जरा वीगतथी आपेला छे —]

अत्त, आतुम (आत्मन्)

१	अत्ता, आतुमा	अत्ता, अत्तानो, आतुमानो
२	अत्तान, अत्त, आतुमान, आतुम	अत्तानो, अत्ते, आतुमानो
३	अत्तना, अत्तेन, आतुमेन	अत्तनेहि, अत्तनेभि, अत्तेहि, अत्तेभि, आतुमेहि, आतुमेभि
४–५	अत्तनो, अत्तस्स, आतुमस्स	अत्तान, आतुमान

प०	अप्पा, अप्पो	अप्पाणो, अप्पा ।
	(मा० अप्पे)	
बी०	अप्पिण, अप्प	अप्पाणो, अप्पे, अप्पा ।
त०	अप्पणिआ, अप्पणइआ, अप्पणा, अप्पेण, अप्पेण	अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिँ ।
च०,-छ०	-अप्पाणो. अप्पस्स	अप्पिण, अप्पाण, अप्पाण ।
	(मा० अप्पाह)	(मा० अप्पाहँ)

इत्यादि बधा रूपो ते ते भाषा प्रमाणे ' पूस ' नी समान छे

२ राय (राजन्)

१ *तृतीया, पञ्चमी, षष्ठी अने सप्तमीना बहुवचनमा* ' *राजन्* ' शब्दनो ' राई ' आदेश विकल्पे थाय छे

६	अत्तना, अत्तसा, अत्तम्हा, आतुमस्मा, आतुमम्हा	अत्तनेहि, अत्तनेभि, अत्तेहि, अत्तेभि, आतुमेहि, आतुमेभि
७	अत्तनि, अत्ते, अत्तस्मि, अत्तम्हि, आतुमे, आतुमस्मि, आतुमम्हि	अत्तनेसु, आतुमेसु
८ स०	अत्त ! अत्ता ! आतुम ! आतुमा !	अत्तानो ! अत्ता ! आतुमानो !

२ राज (राजन्)

१	राजा	राजानो, राजा
२	राजान राज	राजानो
३	रञ्ञा, राजेन, राजिना	राजूहि, राजूभि, राजेहि, राजेभि

३ 'णा' अने चतुर्थी तथा षष्ठीना 'णो' प्रत्यय पर रहे 'राजन्' शब्दनो 'राइ' आदेश विकल्पे थाय छे

४-६	रण्णो (राइणो)	राइण,
	राइणो, रायस्स	राईण, रायाण
३	रण्णा	राईहिं, राईहि,
	राइणा, रायेण	राएहिं, राएहि
७	रण्णे, राइणि,	राईसु
	रायम्मि, रायम्मि	राएसु
८ सं०	राय, राया	रायाणो राए

बम्ह (ब्रह्मन् पुं० शब्द)

१	बम्हा	बम्हाणा (बम्हा)
२	बम्हाणं, बम्हं	,,
३-४	बम्हुणा (बम्हणा)	बम्हेहिं, बम्हाणेहि
		(बम्हुहिं बम्हुभि)
४-६	बम्हणस्स	बम्हाण
	बम्हुणो	बम्हूण
७	बम्हणि बम्हे	बम्हेसु
८ सं०	बम्ह (बम्हा)	बम्हाणो (बम्हा)

अद्ध (अध्वन्)

१	अद्धा	अद्धा, अद्धाणा
२	अद्धाणं	अद्धाणे
३-	अद्धुणा	अद्धाणेहिं, अद्धाणेभि
४-६	अद्धुणो	अद्धूण
७	अद्धणि अद्धाणे	अद्धे[illegible]
८ सं०	अद्ध	अ[illegible]

३ 'णो', 'णा' अने सप्तमीना एकवचनमा ' राजन् ' शब्दनो ' राइ ' आदेश विकल्पे थाय छे

विशेषता'

[शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमा ' अन् ' छेडावाळा नामोना अंत्य ' न् ' नो संबोधनना एकवचनमा विकल्पे अनुस्वार थाय छे

युव (युवन्=प्रा० जुव)

१	जुवा (यूनो)	जुवा, जुवानो जुवाना
२	जुवान, जुव	जुवाने, जुवे
३	जुवाना, जुवानेन, जुवेन	जुवानेहि, जुवानेभि जुवेहि, जुवेभि
४–६	जुवानस्स, जुवस्स	जुवानान, जुवान
५	जुवाना, जुवानस्मा, जुवानम्हा	जुवानेहि जुवानेभि जुवेहि, जुवेभि
७	जुवाने, जुवानस्मि, जुवानम्हि, जुवे, जुवस्मि, जुवम्हि	जुवानसु जुवासु, जुवसु
८ स०	जुव, जुवा, जुवान, जुवाना	जुवानो जुवाना

[' मघव ' (मघवन्) नां रूपो 'जुव' जेवा अने ' मघवत ' (मघवन्) ना रूपो ' गुणवत 'नी जेवा]

मुद्ध (मूर्धन्=प्रा० मुद्ध)

१	मुद्धा	मुद्धा, मुद्धानो
२		मुद्धाने,

हे अप्प !, अप्प !

(स० भवन्) भव, भव !]

(स० भगवन्) हे भयव !, भयव !

हे राय !, राय !

हे सुकम्म !, सुकम्म !

३–५ मुद्धना

७ मुद्धनि मुद्धानेसु

शेष 'वीर'नी जेवा

सा (श्वन्=प्रा० स, साण)

१	सा,	सा, सानो
२	स, सान	से, साने
३	सन, साना	सेहि, सेभि (साहि, साभि)
		सानेहि, सानेभि
४–६	सरस	सान
४—साय		
५	सा, सस्मा,	सेहि, सेभि
	सम्हा, साना	सानेहि, सानेभि
७	से, सस्मिं,	सासु
	सम्हि, साने	
८	स० स	सा, सानो

आ उपरांत दळ्हधम्म (दृढधम्म), पचक्कधम्म, गाण्डीवधन्व, विस्सकम्म, विवत्तच्छद (विवृत्तछद्म=विवृतछद्म), पृथुलोम, अथब्बन (अद्दण) अने वत्तह (वृत्रहन्) वगेरे अनेक शब्दो 'अन्' छेडावाळा छे तेमां 'पचक्कधम्म' अने 'गाण्डीवधन्व'ना रूपो 'सा'

प०—	राया, रायो (मा० लाये)	रायाणो, राइणो, राया
बी०—	राइण, राय	रायाणो, 'राइणो, राये, राया
त०—	राइणा, रण्णा रायेण, रायेण	राईहि, राईहिं, राईहिँ रायेहि, रायेहिं, रायेहिँ
च० छ०—	रण्णो, राइणो रायस्स (ता०—रण्णे) (मा० लायाह)	राईण, राईण रायाण रायाण (मा० लायाहँ)
पं०—	रण्णो, राइणो, रायत्तो, रायाओ, रायाउ, रायाहि, रायाहिंतो, राया	राइत्तो, राईओ, राईउ, राईहि, राईहिंतो, राईसुतो, रायत्तो, रायाओ, रायाउ, रायाहि, रायेहि, रायाहिंतो, रायेहिंतो, रायासुतो, रायेसुतो

(श्वन्) नी जेवा थाय छे 'निस्सकम्म'थी 'अद्व्यन' सुधीना शब्दोना रूपो 'वीर'नी जेवा थाय छे अने बाकी रहेला 'दळ्हधम्म' अने 'वसह'ना रूपोमा थोडी विशेषता छे ते पालिप्रकाशथी समजी लेवी—जुओ पालिप्र० पृ० १२१—१२९ अने एना टिप्पणो

१ स० 'राज' उपरथी 'रण्णो' रूप पण थाय छे—जुओ म्न, श—ण पृ० ३८ तथा ९७ विसर्ग—जुओ

(शौ० रायादो, रायादु)
(मा० लायादो, लायादु)
(पै० रायातो, रायातु)

०—	राइसि, राइम्मि	राईसु, राईसु
	रायसि, रायम्मि, राये	रायेसु, रायेसु
०—	राया, रायो, राय	रायाणो, राइणो, राया

(शौ० पै० राय, राय, राया, रायो)
(मा० लाय, लाय, लाया, लाये)

'अन्' छेडावाळा नामोना प्राकृत रूपोनी साथे ज शौरसेनी, गधी अने पैशाचीना साधारण रूपो आपेला छे फक्त 'राजन्' न्ना पैशाचीरूपोमा आ एक खास विशेषता छे

पैशाची

एकवचन		बहुवचन
०—राचिञा, रञ्ञा[2] (राज्ञा)	बी०—	राचिञो, रञ्ञो (राज्ञ)
० छ०—राचिञो, रञ्ञो (राज्ञ)		
०— ,, ,, ,,		
०— राचिञि, रञ्ञि (राज्ञि)		

नान्यतरजाति

उपर जणावेला 'अन' छेडावाळा नामोना नीचर्लिंगी रूपो थमा अने द्वितीयामा बराबर 'कुल'नी जेवा थाय छे अने कारी बधा ते ते भाषा प्रमाणे पुलिंगी रूपोनी जेवा थाय छे जेमके,

---

१ सरखावो 'राजन्' ना पालिरूपो—पृ० १९३

२ जओ कन्ज मागधी (पृ० ३९) मागधीमी पेठे पैशाचीमा पण 'ज,' 'ण्य' अने 'न्य'नो 'ञ्ञ' थाय छे

सुपूस, सुपूसाण (सुपूषन्)

१	[1]सुपूस,	सुपूसाणि, सुपूसाइँ सुपूसाइ
	सुपूसाण	सुपूसाणाणि, सुपूसाणाइँ सुपूसाणाइ
२	सुपूस,	सुपूसाणि, सुपूसाइँ सुपूसाइ
	सुपूसाण	सुपूसाणाणि, सुपूसाणाइँ सुपूसाणाइ

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'पूस' नी पेठे

सुअप्प सुअप्पाण (सुआत्मन्)

१	सुअप्प[2]	सुअप्पाणि, सुअप्पाइँ, सुअप्पाइ
	सुअप्पाण	सुअप्पाणाणि, सुअप्पाणाइँ, सुअप्पाणाइ
२	सुअप्प	सुअप्पाणि, सुअप्पाइँ, सुअप्पाइ
	सुअप्पाण	सुअप्पाणाणि, सुअप्पाणाइँ, सुअप्पाणाइ

शेष, पुल्लिंगी 'अप्प' नी पेठे

---

१ सुपूस गयण
२ सुअप्पं कुलं

सुराय, सुरायाण (सुराजन्)

१	सुराय[1]	सुरायाणि, सुरायाइँ, सुरायाइ
	सुरायाण	सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ, सुरायाणाइ
२	सुराय	सुरायाणि, सुरायाइँ, सुरायाइ
	सुरायाण	सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ, सुरायाणाइ

शेष बधा पुल्लिंगी 'राजन्'नी जेवां

अपभ्रंशरूपो

ए नामोना अपभ्रंशरूपो पण 'वीर' अने 'कुल'नी जेवा थाय छे जेमके,

पूस, पूसाण (पूषन्–नरजाति)

१	पूसु, पूसो, पूस, पूसा, पूसाणु, पूसाणो, पसाण, पूसाणा	पूस, पूसा पूसाण पूसाणा
२	पूसु, पूस, पूसा पूसाणु, पूसाण, पूसाणा	पूस, पूसा पूसाण, पूसाणा
३	पूसेण, पूसेण, पूसें पूसाणेण, पूसाणेण पूसाणें	पूसेहिं, पसाहिं, पूसहिं पूसाणेहिं, पूसाणाहिं पूसाणाहिं

---

१ सुराय नगर

४–६ पूसासु, पूससु, पूसस्सु	पूसाह, पूसह
पूसाहो, पूसहो,	पूस, पूसा
पूस, पूसा,	
पूसाणासु, पूसाणसु,	पूसाणाह, पूसाणह
पूसाणस्सु, पूसाणाहो, पूसाणहो,	पूसाण, पूसाणा
पूसाण, पूसाणा	
५ पूसाहु, पूसहु,	पूसाहु, पूसहु
पूसाहे, पूसहे	पूसाणाहु, पूसाणहु
पूसाणाहु, पूसाणहु,	
पूसाणाहे, पूसाणहे	
७ पूसि, पूसे	पूसाहिं, पूसहिं
पूसाणि, पूसाणे	पूसाणाहिं, पूसाणहिं
८ (स०) पूसु, पूसो,	पूसाहो, पूसहो
पूस, पूसा	पूस, पूसा
पूसाणु, पूसाणो,	पूसाणाहो, पूसाणहो,
पूसाण, पूसाणा	पूसाण, पूसाणा

सुपूस, सुपूसाण (नान्यतरजाति)

१ सुपूसु,	सुपूसाइं, सुपूसइं
सुपूस, सुपूसा	
२ सुपूसु,	सुपूसाइं, सुपूसइं
सुपूस, सुपूसा	

बाकी बधा 'पूस'ना अपभ्रंश रूपो प्रमाणे

---

७ ए प्रमाणे राय, अप्प वगेरे 'अन्' छेडावाळा नामोनां बधां अपभ्रंश रूपो करी लेवाना छे

[पुम, अप्प, राय वगेरे शब्दोना शौरसेनीरूपो पण अपभ्रंशमां उपयोग थइ शके छे]

'अस' छेडावाळां नामो (नरजाति)

प्राकृतमां अने पालिमां 'अस्' छेडावाळां नामोनां रूपो अकारांत शब्दोनी जेवां थाय छे जेमके,

सुमण (सुमनस्)

१	सुमणो	सुमणा
२	सुमणं	सुमणे, सुमणा
३	सुमणेण, सुमणेणं	सुमणेहि, सुमणेहिं, सुमणेहिँ

इत्यादि बधां रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवां समजवां

---

१ जुओ पृ० १२२ (नामनी जातिओ)

२ पृ०१०—अलब्धयत्नलोप

३ पालिमां 'पुमस्' (प्रा० पुमु) शब्दनां रूपोमां विशेषता छे ते आ प्रमाणे

पुम (पुमस्)

१	पुमा	पुमा
	पुमो	पुमानो
२	पुमान	पुमानो
	पुमं	पुमाने, पुमे
३	पुमाना	पुमानेहि,
	पुमुना	पुमानेभि,
	पुमेन	पुमेहि.

ए प्रमाणे सुवय (सुवचस्) सुमेह (ध) (सुमेधस्) विमण (विमनस्) पवय (प्रवयम्) अने दुव्वय (दुर्वचस्) वगेरे शब्दोना रूपो समजवा

स्त्रीलिंग

स्त्रीलिंग नामो पाच प्रकारना छे, जेमके—आकारात, इकारात, ईकारात, उकारात, ऊकारात ।

आकारात

१ प्राकृतमा आकारात नामो वे जातना छे, जेमके—केटलाक आकारात नामोनु मळरूप (सम्कृतमा) अकारात होय छे ते अने केटलाक आकारात नामोनु मूळरूप (सम्कृनमा) अकारात नथी

४–६	पुमुनो	पुमान
	पुमस्स	
५	पुमाना	पुमाहि पुमानेभि
	पुमुना	
	पुमा, पुमस्मा	ुमेहि, पुमेभि
	पुमम्हा	
७	पुमाने	पुमानेसु
	पुमे	पुमासु, पुमेसु
	पुमस्मि, पुमम्हि	
८ स०—	पुम,	पुमानो
	पुम	पुमा

'चन्द्रमस्' शब्दनु प्रथमाना एकवचनमा 'चदिमा' रूप थाय छे अने बाकीना रूपो अकारातनी जेवा थाय छे —जुओ पालिप्र० पृ० १३०–१३१ अने एना टिप्पणो.

होतु ते [ए बने जातना आकारात नामोना रूपोमा थोडुं अंतर छे माटे ज अहीं ए विभाग जणाव्यो छे]

२ स्त्रीलिंगे थनार (संस्कृत) अकारांत नामना छेवटना 'अ' नो 'आ' थाय छे रम=रमा इत्यादि।

३ विद्युत्' शब्दने छोडीने स्त्रीलिंगी व्यंजनांत शब्दना छेवटना व्यंजननो 'आ' के 'या' थाय छे वाच्=वाआ, वाया इत्यादि।

४ स्त्रीलिंगी रकारांत शब्दना छेवटना 'र' नो 'रा' थाय छे गिर्=गिरा। धुर्=धुरा। पुर्=पुरा इत्यादि।

५ नीचेना संस्कृत नामोना प्राकृत रूपो आ रीते थाय छे

[1]अप्सरस्–अच्छरसा। आशिष्–आसिसा। दुहितृ–दुहिआ, धूआ। ननान्द–नणंदा। नौ–नावा। पितृष्वसृ–पिउसिआ, पिउच्छा। बाहु–बाहा। माता–माआ[2], माय (अ) रा[3]। मातृष्वसृ–माउसिआ, माउच्छा। स्वसृ–ससा।

ईकारांत

१ स्त्रीलिंगे थनारा विशेषणवाचक अने व्यक्तिवाचक शब्दो प्राकृतमा आकारांत अने ईकारांत बने छे

नीला, नीली (नीला), हसमाणी, हसमाणा (हसमाना) सव्वी, सव्वा (सर्वा) सुप्पणही, सुप्पणहा (शूर्पनखा) इत्यादि।

२ संस्कृतमा जे शब्दो आ जणावेला (हेम० २–४–२० अने पाणि० ४–१–१५ (सूत्रांक–४७०) सूत्रथी ईकारांत बने छे ते शब्दोने प्राकृतमा आकारांत अने ईकारांत समजवाना छे.

---

१ आ शब्दोमाना केटलाक शब्दो तो आगळ आवी गया छे– जुओ शब्दविशेषाधिकार पृ ८४–८५ नि० १०८–१०९

२ आ शब्दनो माता–जननी–अर्थ छे

३ आ शब्दनो देवी अर्थ छे

ओपगवी, ओपगवा (औपगवी), पेई, वेआ (वैदी), सुप्पणेयी, सुप्पणेया (सौपणर्यी), अक्खिई, अक्खिआ (आक्षिकी), थेणी, थेणा (स्त्रैणी) पुण्ही पण्हा (पाम्नी), साहणी, साहणा (साधनी) कुरुचरी, कुरुचरा (कुरुचरी) इत्यादि ।

३ छाया अने हरिद्रा शब्द प्राकृतमा ईकारान्त पण बने छे छाही, छाया (छाया), हल्दी, हल्दा (हरिद्रा)

स्त्रीलिंगी नामोने लागता प्राकृत प्रत्ययो

प०—	०	[1]आ, उ, ओ, ०
बी०—	म्	[1]आ, उ, ओ, ०
त०—	अ, [2]आ, इ, ए	हि, हिं, हिँ
च०, छ०—	अ, [2]आ, इ ए	ण, णं
प०—	अ, [2]आ, इ, ए, त्तो, ओ, उ, हिंतो	त्तो, ओ, उ, हिंतो सुंतो
स०—	अ, [2]आ, इ, ए	सु, सुं

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो

१ 'त्तो' अने 'म्' सिवायना प्रत्ययो पर रहेता पूर्वनो ह्रस्व स्वर दीर्घ थाय छे

२ 'म् प्रत्यय पर रहेता पूर्वनो दीर्घ स्वर ह्रस्व थाय छे

३ ज्या शून्य (०) छे त्या शब्दोनु मळरूप पण वपराय छे अने जो मूळरूप ह्रस्वान्त होय तो तेने दीर्घान्त करीने वापरवानु छे

१ आ प्रत्यय ईकारान्त नामने ज लागी शके छे

२ आ प्रत्ययने आकारान्त नामने लगाडवानो नथी

४ संबोधनना एकवचनमा ईकारांत अने ऊकारांत नामोनो अंत्य स्वर ह्रस्व थाय छे अने बहुवचन, प्रथमानी जेवुं थाय छे

५ संबोधनना एकवचनमा इकारांत अने उकारांत नामोना अंत्य स्वरनो गीर्घ विकल्पे थाय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखुं थाय छे

६ जे आकारांत शब्दोनु मूळ (संस्कृत) रूप अकारांत होय छे, ते शब्दोना अंत्य 'आ'कारनो, संबोधनना एकवचनमा 'ए' विकल्पे थाय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखु थाय छे

७ संबोधनना एकवचनमा, बीजा आकारांत शब्दोनु मूळ रूप ज वपराय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखु थाय छे

विशेषता

शौरसेनी, पैशाची अने मागधीमा पण स्त्रीलिंगी नामोने प्राकृतना ज प्रत्ययो लगाडवाना छे मात्र मागधीमा छठ्ठी विभक्तिमा फेर छे अने ए आ प्रमाणे छे

फक्त आकारांत नामोने मागधीमा छठ्ठीना एकवचनमा 'ह' प्रत्यय अने बहुवचनमा 'हँ' प्रत्यय लागे छे जेमके,

मालाह	मालाहँ

स्त्रीलिंगी नामोने लागता अपभ्रंश प्रत्ययो

	एक०	बहुव०
प०—	०	उ, ओ, ०
बी०—	०	उ, ओ, ०

---

१ जुओ पृ० २०८ टि० ५

त०—	ए	हिं
च० छ०—	हे, ०	हु, –
प०—	हे	हु
स०	हे	हिं
स०—	०	हो ०

अपभ्रंश प्रत्ययने लगता नियमोः

१ अपभ्रंशना प्रत्ययो लागता नामनो अंत्य स्वर ह्रस्व अने दीर्घ थाय छे

२ ज्या शून्य छे त्या पण उपरनो नियम लागु थाय छे

प्राकृत रूपाख्यानो

माला

प०—	माला	मालाउ, मालाओ, माला
बी०—	माल	मालाउ मालाओ, माला

---

९ आकारांत स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो

माला

१	माला	माला, मालायो
२	माल	माला, मालायो
३—'	मालाय	मालाहि, मालाभि
४—६	मालाय	मालान
७	मालाय मालाय	मालासु
८ स०—माले		माला, मालायो

—जुओ पालिप्र० पृ० ९९—१०७—१०१

त०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाहि, मालाहिं, मालाहिँ
च०,छ०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	[1]मालाण, मालाणं
	(मा० मालाह)	(मा० मालाहँ)
प०—	मालाअ, मालाइ, मालाए, मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो	मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो मालासुंतो
स०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालासु, मालासुं
सं०—	[2]माले !, माला !	मालाउ !, मालाओ !, माला !

ए रीते नावा (नौ) गउआ (गोरा) सद्धा (श्रद्धा), मेहा (मेधा) पण्णा (प्रज्ञा), तण्हा (तृष्णा), विज्जा (विद्या), पुच्छा (पृच्छा) चिंता छुहा (क्षुध् छुह) कउहा (ककुभ् कउह), निसा (निशा) अने दिसा (दिशा) वगेरे आकारांत शब्दोना रूपाख्यानो 'माला' नी पेठे छे

---

१ आकारांत स्त्रीलिंगी शब्दोने षष्ठीना बहुवचनमां मागधीनो 'हँ' प्रत्यय पण लागे छे जेमके–सरिआ + सरिआण, सरिआहँ। माला+ मालाण, मालाहँ।

२ 'अम्मा' शब्दनुं संबोधनुं एकवचन 'अम्मो' पण थाय छे

वाया (वाचा)

प०—	वाया	वायाउ, वायाओ, वाया.
स०—	वाया	वायाउ, वायाओ, वाया

शेष रूपो 'माळा' नी जेवा

ए रीते अच्छरसा (अप्सरस्), आसिसा (आशिष), धूआ, दुहिआ ((दुहितृ), नणदा (ननान्दृ), नावा (नौ), पिउच्छा, पिउसिआ (पितृष्वसृ), बाहा (बाहु), माआ,माअ(य) रा, (मातृ) माउसिआ, माउच्छा (मातृष्वसृ) अने ससा (स्वसृ) वगेरे आकारात शब्दोना रूपाख्यानो समजवाना छे

---

[1]गइ (गति)

प०—	गई	गईउ, गईओ, गई
बी०—	गइ	गईउ, गईओ, गई

---

१ इकारात स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो

रत्ति (रात्रि)

१	रत्ति	रत्ती, रत्तियो
२	रत्ति	,, ,,
३–५	रत्तिया	रत्तीहि, रत्तीभि
४–६	रत्तिया	रत्तीन
७	रत्तिया रत्तियं	रत्तीसु
८	रत्ति	रत्ती, रत्तियो

—जूओ पालिप्र० पृ० १०१–१०२

तृ०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए	गईहि, गईहिं, गईहिँ
च०, छ०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए	गईण, गईणं
पं०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए, गइत्तो, गईओ, गईउ, गईहिंतो	गइत्तो, गईओ, गईउ, गईहिंतो, गईसुंतो
स०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए	गईसु, गईसुं (१गईसु, गईसुं)
सं०—	गइ! गई!	गईउ, गईओ, गई

ए प्रमाणे जुत्ति (युक्ति) माइ (मातृ) भूमि, जुवइ (युवति) धूलि, रइ (रति), बुद्धि, मइ (मति), दिहि, धिइ (धृति) अने सिप्पि, सुत्ति (शुक्ति) वगेरे इकारांत शब्दोना रूपाख्यानो समजवाना छे

[सं० 'रात्रि' उपरथी पालिमां 'रत्यो,' 'रात्या' अने 'रात्या' उपरथी 'रत्या,' 'रात्र्याम्' उपरथी रत्य अने 'रत्ति' तथा 'रात्री' उपरथी 'रत्ती' रूपो पण थाय छे]

१ जुओ हे० प्रा० व्या० ८-३-१६

धेणु (धेनु)

प०	धेणू	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
बी०	धेणु	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
त०	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूहि, धेणूहिं, धेणूहिँ
च०, छ०	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूण, धेणूणं
पं०	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए, धेणूत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिंतो	धेणूत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिंतो, धेणूसुंतो
स०	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूसु, धेणूसुं
सं०	धेणू ! धेणु !	धेणूउ, धेणूओ, धेणू

१ उकारांत स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो

यागु (यवागू)

१	यागु	यागू, यागुयो
२	यागुं	,, ,,
३-५	यागुया	यागूहि, यागूभि
४-६	यागुया	यागूनं
७	यागुया यागुयं	यागूसु
८ सं०	यागु	यागू, यागुयो

—जुओ पालिप्र० पृ० १०६-१०७

ए प्रमाणे गउ, कन्तु, विज्जु (विद्युत्), उज्जु (ऋजु), पियगु (प्रियङ्गु) माउ (मातृ) दद्दु (दद्रु) पड्डु (पटु), गुरु, लहु (लघु) अने धणु वगेरे उकारांत शब्दोना रूपो 'धेणु' नी पेठे समजवाना छे

---

[1]नई (नदी)

प०–	नई	नईआ, नईउ, नईओ, नई
बी०–	नइ	नईआ, नइउ, नईओ, नई
त०–	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईहि, नईहिं, नईहिँ

---

१ इकारांत स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो

नदी

१	नदी	नदी, नदियो (नज्जो)
२	नदिं, नदिय	", ", "
३–	नदिया (नज्जा)	नदीहि, नदीभि
४–६	नदिया (नज्जा)	नदीनं
७	नदिया (नज्जा) (नज्जं)	नदीसु
८ सं०	नदि	नदी, नदियो (नज्जो)

—जूओ पालिप्र० पृ० १०३–१०४–१०५–१०६ तथा एना टिप्पणो

[सं० नद्य, नद्या, नद्या अने नद्याम् उपरथी पालिमा उपर्युक्त नज्जो, नज्जा, नज्जा अने नज्जं रूपो बनेला छे–जूओ पृ० ३३ अ० २७–द्य, ग्य, य=ज]

च०, छ०—	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईण नईण
प०—	नईअ, नईआ, नईइ, नईए, नईत्तो नईओ, नईउ, नईहिंतो	नइत्तो, नईओ, नईउ, नईहिंतो, नईसुंतो
स०—	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईसु, नईसुं
सं०—	नइ !	नईआ, नईउ, नईओ, नई

ए प्रमाणे गाई (गो) वावी (वापी), कयली (कदली), नारी, कुमारी, तरुणी, समणी (श्रमणी), साहुवी, [1]साहुणी (साध्वी), पुहवी (पृथ्वी), वाराणसी, तणुवी (तन्वी), इत्थी, थी (स्त्री) अने बहिणी (भगिनी) वगेरे ईकारांत शब्दोना रूपाख्यानो 'नई' नी पेठे छे

---

[2]वहू (वधू)

प०—	वहू	वहूउ, वहूओ, वहू
बी०—	वहु	वहूउ, वहूओ, वहू

---

१ जुओ पृ० ८३-वी-उवी अने ते उपरनु टिप्पण

२ उकारांत स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो

वधू (प्रा० वहू)

१	वधू	वधू, वधुयो
२	वधु	,, ,,
३—५	वधुया	वधूहि, वधूभि
४—६	वधुया	वधून

त०—	वहूअ, वहूआ, वहूइ वहूए	वहूहि, वहूहिं, वहूहिँ
न०,उ०—	वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए	वहूण, वहूण
प०—	वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए, वहूतो, वहूओ, वहूउ, वहूहितो	वहूतो, वहूओ, वहूउ, वहूहितो, वहूसुंतो
स०—	वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए	वहूसु, वहूसुं
सं०—	वहु !	वहूआ, वहूउ, वहूओ, वहू

ए प्रमाणे अज्जू (आर्या) पङ्गू, करेणू वामोरू, कद्दू (कद्रू) पीणोरू (पीनोरू) अने ककंधू (कर्कन्धू) वगेरे ऊकारांत शब्दोना रूपाख्यानो समजवाना छे

प्राकृतना स्त्रीलिंगी रूपाख्यानोनी पेठे शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना पण रूपाख्यानो समजवाना छे–शौरसेनीमा, मागधीमा अने अपभ्रंशमा पंचमीना एकवचनमा (प्राकृतना 'ओ' अने 'उ'ने बदले) 'दो' अने 'दु' प्रत्यय वापरवाना छे, पैशाचीमा एने बदले 'तो' अने 'तु' वापरवाना छे अने मागधीनी जे खास विशेषता छे ते जणावी छे[1]

---

७ वधुया वधूसु
वधुय

८ स०–वधु वधू, वधुयो

—जुओ पालिप्र० पृ० १०७–१०८

१ जुओ पृ० २०९

अपभ्रंशरूपाख्यानो

माला

१	माला, माल	मालाउ, मालउ, मालाओ, मालओ माल, माला
२	माला, माल	मालाउ, मालउ, मालाओ, मालओ माल, माला
३	मालाए, मालए	मालाहिं, मालहिं
४–६	मालाहे, मालहे माला, माल	मालाहु, मालहु, माला, माल
५	मालाहे, मालहे मालत्तो, मालादो मालादु, मालाहितो,	मालाहु, मालहु मालत्तो, मालादो मालादु मालाहिंतो, मालासुतो
७	मालाहि, मालहि	मालाहि, मालहि
८ सं०	माला, माल	मालाहो, मालहो माल, माला

मइ

१	मइ, मई	मइउ, मईउ मइओ, मईओ मइ, मई
२	मइ, मई	मइउ, मईउ मइओ, मईओ मइ, मई
३	मइए, मईए	मइहिं, मईहिं

४–६	मइहे, मईहे	मइहु, मईहु
	मइ, मई	मइ, मई
५	[1]मइहे, मईहे	मइहु, मईहु
७	मइहि, मईहि	मइहिं, मईहिं
८ सं०	मइ, मई	मइहो, मईहो, मइ, मई

पइट्ठी (प्रविष्टा–पविट्ठा)

१	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठिउ, पइट्ठीउ, पइट्ठिओ, पइट्ठीओ, पइट्ठी, पइट्ठि
२	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठिउ, पइट्ठीउ, पइट्ठिओ, पइट्ठीओ, पइट्ठी, पइट्ठि
३	पइट्ठिए, पइट्ठीए	पइट्ठिहिं, पइट्ठीहिं
४–६	पइट्ठिहे, पइट्ठीहे	पइट्ठिहु, पइट्ठीहु,
	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठी, पइट्ठि
५	पइट्ठिहे, पइट्ठीहे	पइट्ठिहु, पइट्ठीहु
७	पइट्ठिहि, पइट्ठीहि	पइट्ठिहिं, पइट्ठीहिं
८ सं०	पइट्ठि, पइट्ठी	पइट्ठिहो, पइट्ठीहो, पइट्ठी, पइट्ठि

धेणु

१	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ, धेणूओ

१ 'माला'ना पंचमीना रूपोना पेठे अहीं मइत्तो, पइट्ठित्तो वगेरे रूपो पण समजवां–जुओ पृ० २१

		घेणु, घेणू
२	घेणु, घेणू	घेणुउ, घेणूउ
		घेणुओ, घेणूओ
		घेणु, घेणू
३	घेणुए, घेणूए	घेणुहि, घेणूहि
४–६	घेणुहे, घेणूहे	घेणुहु, घेणूहु,
	घेणु, घेणू	घेणु, घेणू
५	घेणुहे, घेणूहे	घेणुहु, घेणूहु
७	घेणुहि, घेणूहि	घेणुहिं, घेणूहिं
८ स०—	घेणु, घेणू	घेणुहो, घेणूहो,
		घेणु, घेणू

वहू

१	वहू, वहु	वहुउ, वहूउ
		वहुओ, वहूओ,
		वहु वहू
२	वहू, वहु	वहुउ, वहूउ
		वहुओ, वहूओ,
		वहु, वहू
३	वहुए, वहूए	वहुहिं, वहूहिं
४–६	वहुहे, वहूहे,	वहुहु, वहूहु,
		वहु, वहू
५	[illegible]	वहुहु, वहूहु

७	वहुहि, वहूहि	वहुहिं, वहूहिं
८	स०—वहु वहू	वहुहो, वहूहो वहु, वहू

ए प्रमाणे बधा आकारात, इकारात, ईकारात, उकारात अने ऊकारात शब्दोना अपभ्रंशरूपो बनावी लेवाना छे

---

[1]सर्वादि (स्त्रीलिंग)

स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना प्राकृतरूपो, शौरसेनीरूपो, मागधीरूपो, पैशाचीरूपो, अने अपभ्रंशरूपो पूर्वे जणावेला साधारण स्त्रीलिंगी शब्दो प्रमाणे समजवाना छे

केटलाक स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना प्राकृत रूपोनी विशेषता आ प्रमाणे छे

[स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना 'आकारात' अगना रूपो 'माला'नी जेवा करवाना छे ईकारात अगना रूपो 'नई'नी जेवा करवाना छे अने उकारात अगना रूपो 'वेणु'नी जेवा करवाना छे]

---

१ स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना पालिरूपो—

सब्बा (सर्वा) ना वधाराना रूपो

४–६ सब्बस्सा (सं० सर्वस्या) सब्बासं (सं० सर्वासाम्)
सब्बासानं

७ सब्बस्सं (सं० सर्वस्याम्)—जुओ पालिप्र० पृ० १४० अने टिप्पण
बाकी बधा 'माला'ना पालिरूपो जेवा छे

[1]ती, ता, [2]णी, णा (तन्[2])

१	सा	तीआ, तीउ, तीओ, ती,
		ताउ, ताओ, ता.

१ पेली अने त्रीजीना एकवचनमां तथा छट्ठीना बहुवचनमां आ ईकारांत अंगनो प्रयोग थतो नथी

२ जूओ पृ० १४१ नुं 'ण' उपरनुं टिप्पण

३ ता (तद्) ना वधाराना रूपो

१	सा	
३–५	तस्सा (स० तस्या)	ताहि, ताभि
	ताय	नाहि, नाभि
	नस्सा	
	नाय	
	अस्सा	
४–६	तस्साय, तस्सा { स० तस्यै } ताय { तस्या }	तास (स० तासाम्) तासान
	नस्साय, नस्सा	नास, नासान
	नाय	
	अस्साय, अस्सा	आस, आसान
	तिस्साय, तिस्सा	सान
७	तस्स (स० तस्याम्)	
	तस्सा	
	नस्स, नस्सा	
	अस्स, अस्सा	
	तिस्स, तिस्सा	
	ताय, नाय	
	नाय, नाय	

बाकी बधा 'माला'नी पेठे

—जूओ पालिप्र० पृ० १४३ अने टिप्पण.

		इमाउ, इमा ओ, इमा
३	इमीअ इमीआ, इमीइ, इमीए, इमाअ, इमाइ, इमाए (पुं० जाण)	इमाहि इमाहिं, इमीहिं इमाहि, इमाहिं, इमाहिँ (आहि, आहिं, आहिँ)
४–६	मे, इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए इमाअ, इमाइ, इमाए	मि इमीण, इमीणं, इमाण, इमाणं,

शेष रूपो 'नई' अने 'माला'नी जेवा

३—.	इमाय	इमाहि, इमाभि
४—.	इमाय, इमिस्सा, इमस्साय अस्सा, (सं० अस्या) अस्साय (सं० अस्यै)	इमास इमासानं
७	इमाय, इमिस्स, अस्स (सं० अस्याम्)	इमासु

—जुओ पालिप्र० पृ० १ १४०

एआ, [1]एई

१	एसा, एस, इण, इणमो	एईआ, एईउ एईओ, एई, एआउ, एआओ एआ
४–६	से, एईअ एईआ, एईइ, एईए एआज, एआइ, एआए	सिं, एईण, एईण, एआण, एआण

शेष रूपो 'नई' अने 'माला' नी जेवा

[2]अमु (अदस्)

१	अह, अमू	अमूउ, अमूओ, अमू

शेष 'धेणु' वत्

---

१ एता (एतद्) ना पालिरूपो

१	एसा	
३–५	एताय, एतिस्सा (स० एतस्या)	
४–६	एताय, एतिस्मा, एतिस्साय { स० एतस्यं एतस्या }	
७	एताय, एताय एतिस्स, एतस्स (स० एतस्याम्)	

बाकी बधा 'माला' नी पेठे

—जुओ पालिप्र० पृ० १४८

[जुओ पृ० १४६, १ टिप्पण]

२ 'अमु' ना पालिरूपो

१	असु, अमु,	अमू, अमुयो
२	अमु	अमू, अमुयो
३–५	अमुया	अमूहि, अमूभि
४–६	अमुया, अमुस्सा	अमूसं, अमूसान

ऋकारांत (स्त्रीलिंग)

ऋकारांत स्त्रीलिंगी 'मातृ' शब्दना 'माआ' अने 'मायरा' वा बे रूपो जूदा जूदा अर्थमा थाय छे ए 'आगळ जणावेलु छे, ो एना शौरसेनी वगेरेना बधा रूपो 'वाया'नी जेवा समजवानां जेमके,

'माआ, मायरा (मातृ)

प० माआ, मायरा	माआउ, माआओ, माआ, मायराउ, मायराओ, मायरा

७ अमुय अमुस्स	अमूसु

—जूओ पालिप्र० पृ० १४८

१ जूओ पृ० २०४, नि० ७—'मायर' ने बदले 'माअर' पण थइ शके छे

२ ऋकारांत स्त्रीलिंगी 'मातृ' शब्दना पालिरूपो

मातु (मातृ)

१ माता	माता, मातरो
२ मातर	माता, मातरे
३-' मातरा मातुया मत्या	मातरेहि, मातरेभि मातूहि, मातूभि
४-६ मातु मातुया मत्या	मातरान, मातान, मातून
७ मातरि मातुया मत्या मातुय, मत्य	मातरेसु, मातूसु
८ स०-मात, माता	माता, मातरो

—जूओ पालिप्र० पृ० १०८-१०९-११० अने एना टिप्पण

		धेणु, धेणू
२	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ
		धेणुओ, धेणूओ,
		धेणु, धेणू
३	धेणुए, धेणूए	धेणुहिं, धेणूहिं
४–६	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु,
	धेणु, धेणू	धेणु, धेणू
५	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु
७	धेणुहि, धेणूहि	धेणुहिं, धेणूहिं
८ सं०—	धेणु, धेणू	धेणुहो, धेणूहो,
		धेणु, धेणू

वहू

१	वहू, वहु	वहुउ, वहूउ
		वहुओ, वहूओ,
		वहु, वहू
२	वहू, वहु	वहुउ, वहूउ
		वहुओ, वहूओ,
		वहु, वहू
३	वहुए, वहूए	वहुहिं, वहूहिं
४–६	वहुहे, वहूहे,	वहुहु, वहूहु,
	वहु, वहू	वहु, वहू
५	वहुहे, वहूहे	वहुहु, वहूहु

		इमाउ, इमाओ, इमा
३	इमीअ इमीआ, इमीइ, इमीए	इमीहि, इमीहिं, इमीहिँ
	इमाअ, इमाइ, इमाए (पै० नाए)	इमाहि, इमाहिं, इमाहिँ (आहि, आहिं, आहिँ)
४–६	से,	सिं
	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए	इमीण, इमीणं,
	इमाअ, इमाइ इमाए	इमाण, इमाणं,

शेष रूपो 'नई' अने 'माला'नी जेम

३–५	इमाय	इमाहि, इमाभि
४–६	इमाय, इमिस्सा, इमिस्साय अस्सा, (सं० अस्याः) अस्साय (सं० अस्यै)	इमासं, इमासानं
७	इमाय, इमिस्सं, अस्सं (सं० अस्याम्)	इमासु

—जुओ पालिप्र० पृ० १४५–१४६

एआ, 'एई

१ एसा, एस, इण, इणमो — एईआ, एईउ, एईओ, एई, एआउ, एआओ एआ

४–६ से, — सिं,

एईअ, एईआ, एईइ, एईए, — एईण, एईण,

एआअ, एआइ, एआए — एआण, एआण

शेष रूपो 'नई' अने 'माला' नी जेवा

'अमु (अदस्)

१ अह, अमू — अमूउ, अमूओ, अमू

शेष 'धेणु' वत्

---

१ एता (एतद्) ना पालिरूपो

१ एसा

३–५ एताय, एतिस्सा (सं० एतस्या)

४–६ एताय, एतिस्सा, एतिस्साय { सं० एतस्यै एतस्या }

७ एताय, एताय

एतिस्स, एतस्स (सं० एतस्याम्)

बाकी बधा 'माला' नी पेठे

—जुओ पालिप्र० पृ० १४४

[जुआ पृ० १४८, १ टिप्पण]

२ 'अमु' ना पालिरूपो

१	अमु, अमू,	अमू, अमुया
२	अमुं	अमू, अमुयो
३–५	अमुया	अमूहि, अमूभि
४–६	अमुया, अमुस्सा	अमूसं, अमूसानं

ऋकारांत (स्त्रीलिंग)

ऋकारांत स्त्रीलिंगी 'मातृ' शब्दनां 'माआ' अने 'मायरा' आवां बे रूपो जुदा जुदा अर्थमां थाय छे ए आगळ जणावेलुं छे, पण एना शौरसेनी वगेरेनां बधां रूपो 'माआ'नी जेवां समजवानां छे, जेमके,

'माआ, मायरा (मातृ)

१०	माआ, मायरा	माआउ, माआओ, माआ, मायराउ, मायराओ, मायरा
५	अमुत्र अमुम्म	अमुम्मु

—जुओ पालि० पृ० १४८

[1] जुओ पृ० २०४, टि० ५—'मायर'ने बदले 'माअर' पण मळे छे

२ ऋकारांत स्त्रीलिंगी 'मातृ' शब्दनां पालिरूपो

मातु (मातृ)

१	माता	माता, मातरो
२	मातरं	माता, मातरे
३—४	मातरा मातुया मत्या	मातरेहि, मातरेभि मातूहि, मातूभि
४—६	मातु मातुया मत्या	मातरान, मातान, मातून
७	मातरि मातुया मत्या मातुयं, मत्यं	मातरेसु, मातूसु
८	सं०—मात, माता	माता, मातरो

—जुओ पालिप्र० पृ० १०८—१०९—११० नां पानांनां टिप्पण

बी०— माअ	माआउ, माआओ, माआ,
मायर	मायराउ, मायराओ, मायरा.
त०—माआअ, माआइ,	माआहि, माआहिं, माआहिँ,
माआए,	मायराहि, मायराहिं, मायराहिँ
मायराअ, मायराइ, मायराए	
च० छ०—माआअ, माआइ,	माआण, माआणं
माआए	([1]माईण)
मायराअ, मायराइ, मायराए	मायराण मायराणं
प०— माआअ, माआइ, माआए,	माअत्तो, माआओ,
माअत्तो, माआओ,	माआउ, माआहिंतो,
माआउ, माआहिंतो	माआसुंतो,
मायराअ, मायराइ,	मायरत्तो, मायराओ,
मायराए,	मायराउ,
मायरत्तो, मायराओ, मायराउ,	मायराहिंतो,
मायराहिंतो	मायरासुंतो
स०— माआअ, माआइ माआए,	माआसु, माआसुं
मायराअ, मायराइ, मायराए	मायरासु, मायरासुं
सं०— माआ,	माआउ, माआओ,
	माआ,
मायरा	मायराउ, मायराओ, मायरा

[माआ (मातृ=माता+माआ) नुं [2]माया बनावीने पण माआ' नी जेवां ज रूपो बनावी शकाय छे]

१ जूओ पृ० ७६ मातृ=माइ+माईण (सं० मातॄणाम्)

२ जूओ पृ० १८ 'कादि' नो 'य' अ० ८

	गोणी	गोणीआ गोणीउ, गोणीओ, गोणी
बी०—	गाइ,	गाईआ, गाईउ, गाईओ, गाई.
	गोणि	गोणीआ, गोणीउ, गोणीओ, गोणी
त०—	गाईअ, गाइआ, गाईइ, गाईए	गाईहि, गाईहिं, गाइहिँ
	गोणीअ, गोणीआ, गोणीइ, गोणीए	गोणीहि, गोणीहिं, गोणीहिँ

इत्यादि बधा 'नई' नी जेवा

'नौ' शब्दनु स्त्रीलिंगी प्राकृत अंग 'नावा' थाय छे अने एना बधा रूपो बराबर 'माला' नी जेवा बने छे, जेमके,

प०—	नावा	नावाउ, नावाओ, नावा
बी०—	नाव	नावाउ, नावाओ, नावा
त०—	नावाअ, नावाइ नावाए	नावाहि नावाहिं, नावाहिँ

इत्यादि बधा 'माला' नी जेवा

३	गावि, गाव, गव	गोहि, गोभि
४	गावि, गाव, गव	गव, गोन, गुन्न
	गावि, गाव, गव	गोहि, गोभि
५	गावि, गाव, गव	गव, गोन, गुन्न
७	गावि, गाव, गव	गोसु
८ सं०	गा!, गाव, गव	गावी, गावो, गवो

—जुओ पालिप्र० पृ० ११? नु टिप्पण

सख्यावाचक शब्दो

विशेषता.

१ अट्ठारस (अष्टादश) सुधीना सख्यावाचक शब्दोने पष्ठीना बहुवचनमा 'ण्ह' अने 'ण्ह' प्रत्यय लागे छे तिण्ह, तिण्ण्ह । दुण्ह, दुण्ह । उभयण्ह, उभयण्ह वगेरे

इक, एक, एग, एअ (एक)

आ शब्दना ते ते भाषाना पुलिंगी रूपो 'सत्व'नी जेवा थाय छे, स्त्रीलिंगी रूपो 'माला'नी जेवा थाय छे अने नपुसकलिंगी रूपो नपुसकी 'सत्व'नी जेवा थाय छे आ प्रमाणे बधा सख्यावाचक शब्दोमा यथासभव समजवानु छे

[1]उभ, उह (उभ)

आ शब्दना रूपो बहुवचनमाज थाय छे अने ते 'सत्व'नी पेठे छे

---

१ सख्यावाचकशब्दना पालिरूपो

(पालिप्रकाशमा पृ० १६७ थी १६८ सुधीमा सख्यावाचक शब्दोना रूपो आपेला छे)

'उभ' ना पालिरूपो

१-२ उभो ।
उभे ।
३-५ उभोहि, उभोभि,
उभेहि, उभेभि ।
४-६ उभिन्न ।
७ उभोसु, उभेसु ।

—जुओ पालिप्र० पृ० १६७

प०— उभे।
बी०— उभे, उभा।
त०— उभेहि, उभेहिं, उभेहिँ।
च० छ०—उभण्ह, उभण्हं।
पं०— उभत्तो, उभाओ, उभाउ,
उभाहि, उभेहि,
उभाहिंतो, उभेहिंतो,
उभासुंतो उभेसुंतो।
स०— उभेसु, उभेसुं।
'उभ'ना अपभ्रंश रूपो 'सव्व'ना अपभ्रंश रूपोनी पेठे छे

---

[१]दु (द्वि) त्रणे लिंगना रूपो

आ शब्दना रूपो बहुवचनमां ज थाय छे

प०— दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे।
बी०— दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि विण्णि, वे, बे।
त०— दोहि, दोहिं, दोहिँ,
बेहि, बेहिं, बेहिँ।

---

१ 'द्वि'ना पालिरूपो

१–२ दुवे,
द्वे।
३— द्वीहि, द्वीभि।
४–६ दुविन्न, द्विन्न।
७ द्वीसु।

—जुओ पालिप्र० पृ० १५६

च० छ०—दोण्ह, दोण्ह, दुण्ह, दुण्ह,
बेण्ह, बेण्ह, विण्ह, विण्ह ।
प०— दुघो, दोओ, दोउ, दोहिंतो, दोसुतो,
विंतो, वेओ, बेउ, वेहिंतो, बेसुतो ।
स०— दोसु, दोसु,
वेसु, वेसु ।

'दु' ना अपभ्रंश वगेरेना रूपो 'भाणु' ना बहुवचनात रूपो जेवा छे

'ति (त्रि) त्रणे लिंगना रूपो

प०— } तिण्णि ।
बी०— }

च० छ०— तिण्ह, तिण्ह ।

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'इसि' ना बहुवचन रूपो जेवा छे.

---

१ पालिमा तो 'ति' (त्रि) शब्दना रूपो पुलिंगमा, स्त्रीलिंगमा अने नपुसकलिंगमा जुदा जुदा थाय छे, जेमक

	ति (पुलिंग)	ति (स्त्रीलिंग)	ति (नपुसकलिंग)
१–२	तयो ।	तिस्सो ।	तीणि
३–५	तीहि,	तीहि,	तीहि,
	तीभि ।	तीभि ।	तीभि ।
४–६	तिण्ण	(तिस्स)	तिण्ण
	तिण्णन्न	तिस्सन्न ।	तिण्णन्न ।
७	तीसु ।	तीसु ।	तीसु ।

—जुओ पालिप्र० पृ० १५७

'चउ' (चतुर्) त्रणे लिंगनां रूपो

तृतीया, पंचमी अने सप्तमीना प्रत्ययो पर रहेतां आ शब्दना अंत्य 'उ' नो दीर्घ विकल्पे थाय छे

प०— } चत्तारो, चउरो, चत्तारि ।
बी०— }

त०— चउहि, चउहिं, चउहिँ,

चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ ।

च० छ०—चउण्ह, चउण्हं

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'भाणु'ना बहुवचनना रूपो जेवा छे

---

१ पालिमां 'चतु' (चतुर्) शब्दनां पण त्रण लिंगमां रूपो जुदां जुदां थाय छे, जेमके

	चतु (पुंलिंग)	चतु (स्त्रीलिंग)	चतु (नपुंसकलिंग)
१–२	चत्तारो, चतुरो ।	चतस्सो ।	चत्तारि ।
३–५	चतूहि, चतूभि ।	चतूहि चतूभि ।	चतूहि, चतूभि ।
४–६	चतुन्नं ।	चतस्सन्नं ।	चतुन्नं ।
७	चतूसु ।	चतूसु ।	चतूसु ।

—जुओ पालिप्र० पृ० १५७–१५८

'पंच (पञ्च) त्रणे लिंगना रूपो

प०— } पंच ।
बी०— }

त०— पंचेहि, पंचेहिं, पंचेहिँ,
'पंचहि, पंचहिं, पंचेहिँ ।

च० छ०—पंचण्ह, पंचण्हं ।

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'जिण' ना बहुवचनात रूपो जेवा छे

ए रीते छ (षट्), सत्त (सप्तन्), अट्ठ (अष्टन्), नव (नवन्), दह, दस (दशन्), एआरह, एगारह, एआरस (एकादश), दुवालस, बारह, बारस (द्वादश), तेरह, तेरस (त्रयोदश), चोद्दह, चोद्दस, चउद्दह, चउद्दस (चतुर्दश), पण्णरह, पण्णरस (पञ्चदश)

---

१ पंच (त्रणे लिंगे सरखा)

१–२ पंच ।
३– पंचभि, पंचभि ।
४ पंचनं ।
७ पंचसु ।

—जूओ पालिप्र० पृ० १०८

२ व्याकरणनो नियम जोतां तो 'पंचेहि' वगेरे 'ए' कार वाळां रूपो ज थई शके छे, आर्षप्राकृतमां 'पंचहि' वगेरे 'ए'कार विनाना पण रूपो वपराएलां छे जेमके,

[" पंचहिं कामगुणेहिं "
" पंचहि महव्वएहिं "
" पंचहिं सिरिआहिं "
हिं समईहिं "—श्रमणसूत्र]

माटे  साथे देखाडेला छे

प्रा०

सोलस, सोल्ह (षोडश), सत्तरस, सत्तरह (सप्तदश) अने अट्ठारस, अट्ठारह (अष्टादश) ए बधा शब्दोना रूपो 'पच'नी पेठ समजवाना छे

कइ (कति)

(आ शब्दना रूपो बहुवचनमां ज थाय छे)

प०—
बी०— } कई

च० छ०—कइण्ह, कइण्ह

शेषरूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'इसि'ना बहुवचनांत रूपो जेवा छे

नीचे जणावेला शब्दोमा जे शब्दो आकारात छे तेना रूपो 'माला'नी जेवा जाणवाना छे अने जे शब्दो इकारात छे तेना रूपो 'गइ'नी जेवा जाणवाना छे

एगूणवीसा	(एकोनविंशति)	एगवीसा इक्कवीसा एक्कवीसा	(एकविंशति)
वीसा	(विंशति)		

---

१ 'कति'ना पालिरूपो (त्रणे लिंगे)

कति।

कतीहि,

कतीभि।

कतीनं,

कतिन्नं।

कतीसु।

—जुओ पालिप्र० पृ० १५।

२ जुओ पालिप्र० पृ० १५९–१६५

बावीसा (द्वाविंशति)
तेवीसा (त्रयोविंशति)
¹चउवीसा, चोवीसा (चतुर्विंशति)
पणवीसा (पञ्चविंशति)
छव्वीसा (षड्विंशति)
सत्तावीसा (सप्तविंशति)
अट्ठावीसा, अट्ठवीसा, अटवीसा (अष्टाविंशति)
एगूणतीसा (एकोनत्रिंशत्)
तीसा (त्रिंशत्)
एगतीसा, एकतीसा, एक्तीसा (एकत्रिंशत्)
बत्तीसा (द्वात्रिंशत्)

तेत्तीसा, तित्तीसा (त्रयस्त्रिंशत्)
चउतीसा, चोत्तीसा (चतुस्त्रिंशत्)
पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्)
छत्तीसा (षट्त्रिंशत्)
सत्तीसा (सप्तत्रिंशत)
अट्ठतीसा, अडतीसा (अष्टत्रिंशत्)
एगूणचत्तालिसा (एकोनचत्वारिंशत्)
चत्तालिसा (चत्वारिंशत)
एगचत्तालिसा, इक्कचत्तालिसा, एक्कचत्तालिसा, इगयाला (एकचत्वारिंशत्)

---

१ पालिभाषामां 'चउवीसा' शब्दनुं प्रथमानुं एकवचन 'चउवीसं' थाय छे (जुओ पालिप्र० पृ० १६० नि० १०७) अने ए रूप प्राकृतसाहित्यमां पण वपराएलुं छे जेमके, "चउवीसं पि जिणवरा" (चतुर्विंशतिस्तव)

आचार्य हेमचंद्र ए 'चउवीसं' रूपने 'द्वितीया विभक्ति'मां समजे छे अने उपर्युक्त वाक्यमां 'द्वितीया' नो अर्थ घटतो नथी पण 'प्रथमा'नो अर्थ घटे छे तेथी "क्याय प्रथमाने बदले 'द्वितीया' पण वपराय छे" एम ए वाक्य आपीने ज जणावे छे -(जुओ हे० प्रा० व्या० ८-३-१३७, पृ० १०८)

बेआलिसा, बेआला, दुचत्तालिसा	(द्विचत्वारिंशत्)
तिचत्तालिसा, तेआलिसा, तेआला	(त्रिचत्वारिंशत्)
चउचत्तालिसा, चोआलिसा, चोआला, चउआला	(चतुश्चत्वारिंशत्)
पणचत्तालिसा, पणयाला	(पञ्चचत्वारिंशत्)
छचत्तालिसा, छायाला	(षट्चत्वारिंशत्)
सत्तचत्तालिसा, सगयाला	(सप्तचत्वारिंशत्)
अट्ठचत्तालिसा, अडयाला	(अष्टचत्वारिंशत्)
एगूणपण्णासा	(एकोनपञ्चाशत्)
पण्णासा	(पञ्चाशत्)
एगपण्णासा, इक्कपण्णासा, एक्कपण्णासा, एगावण्णा	(एकपञ्चाशत्)
बावण्णा, दुपण्णासा	(द्विपञ्चाशत्)
तेवण्णा, तिपण्णासा	(त्रिपञ्चाशत्)
चोवण्णा, चउपण्णासा	(चतुष्पञ्चाशत्)
पणपण्णा, पणपण्णासा, पणावण्णा	(पञ्चपञ्चाशत्)
छप्पण्णा, छप्पणासा	(षट्पञ्चाशत्)
सत्तावन्ना, सत्तपण्णासा	(सप्तपञ्चाशत्)
अट्ठावन्ना, अडवन्ना, अट्ठपण्णासा	(अष्टपञ्चाशत्)
एगूणसट्ठि	(एकोनषष्टि)
सट्ठि	(षष्टि)
एगसट्ठि, इगसट्ठि	(एकषष्टि)
बासट्ठि	(द्विषष्टि)
तेसट्ठि	(त्रिषष्टि)
चउसट्ठि, चोसट्ठि	(चतुष्षष्टि)
पणसट्ठि	(पञ्चषष्टि)
छासट्ठि	(षट्षष्टि)
सत्तसट्ठि	(सप्तषष्टि)
अडसट्ठि, अट्ठसट्ठि	(अष्टषष्टि)
एगूणसत्तरि	(एकोनसप्तति)

सत्तरि	(सप्तति)	सत्तासीइ	(सप्ताशीति)
एग'सत्तरि / इक्सत्तरि	(एकसप्तति)	अट्ठासीइ	(अष्टाशीति)
		नवासीइ	(नवाशीति)
बा(बि)सत्तरि / बावत्तरि	(द्विसप्तति)	एगूणनवइ	(एकोननवति)
		नवइ	(नवति)
तिसत्तरि	(त्रिसप्तति)	एगणवइ / इगणवइ	(एकनवति)
चोसत्तरि / चउसत्तरि	(चतुस्सप्तति)	बाणवइ	(द्विनवति)
पण्णसत्तरि	(पञ्चसप्तति)	तेणवइ	(त्रिनवति)
छसत्तरि	(षट्सप्तति)	चउणवइ / चोणवइ	(चतुर्नवति)
सत्तसत्तरि	(सप्तसप्तति)	पण्णणवइ / पञ्चणवइ	(पञ्चनवति)
अट्ठसत्तरि	(अष्टसप्तति)		
एगूणासीइ	(एकोनाऽशीति)	छण्णवइ	(षण्णवति)
असीइ	(अशीति)	सत्त(त्ता)णवइ	(सप्तनवति)
एगासीइ	(एकाशीति)	अट्ठ(ड)णवइ	(अष्टनवति)
बासीइ	(द्व्यशीति)	ण(न)वणवइ	(नवनवति)
तेसीइ	(त्र्यशीति)	एगूणसय	(एकोनशत)
चउरासीइ / चोरासीइ	(चतुरशीति)	सय	(शत)
		दुसय	(द्विशत)
पणसीइ	(पञ्चाशीति)	तिसय	(त्रिशत)
छासीइ	(षडशीति)	बे सयाइ—बसें—	(द्विशत)

१ 'सत्तरि' ने बदले 'हत्तरि' शब्द पण प्रयोगानुसारे वपराय छे

तिण्णि सयाइ–त्रणसें	(त्रिशत)	लक्ख	(लक्ष)
चत्तारि सयाइ–चारसें	(चतुश्शत) इत्यादि	दस(ह)लक्ख	(दशलक्ष)
सहस्स	(सहस्र)	पयुअ(त)	(प्रयुत)
दह(स)सहस्स	(दशसहस्र)	कोडि	(कोटि)
अयुअ(त)	(अयुत)	कोडाकोडि	(कोटाकोटि)

प्रकरण ११

कारक–विभक्त्यर्थ

जेम सम्कृतमा छ कारक छे तेम अहीं प्राकृतमा पण छे अने तेनी बधी व्यवस्था सस्कृतने अनुसारे समजी लेवानी छे परतु जे केटलाक खास विभक्त्यथो छे तेने अहीं जणावी दईए छीए

१ प्राकृतमा केटलेक ठेकाणे द्वितीया, तृतीया, पचमी अने सप्तमीने स्थाने पण षष्ठी[1] विभक्ति वपराय छे –

सीमाधरस्स वदे [सीमाधर वन्दे]

धणस्स लद्धो [धनेन लब्ध]

चोरस्स बीहइ [चौराद् बिभेति]

[1]अंतेउरस्स रमिउ आगओ [अन्त पुरे रन्तुमागत]

२ कोई कोई ठेकाणे द्वितीया अने तृतीयाने बदले सप्तमी वपराय छे –

---

१ सस्कृतमा पण षष्ठी विभक्तिनो आवो ज उपयोग थएलो छे

मातर स्मरति	ने बदले	मातु स्मरति ।
अन्न नो देहि	,,	अन्नस्य नो देहि ।
फलैस्तृप्त	,,	फलाना तृप्त ।
अक्षैर्दीव्यति	,,	अक्षाणा दीव्यति ।
वृक्षात् पर्ण पतति	,,	वृक्षस्य पर्ण पतति ।
महत्सु बिभापत	,,	महता बिभापत ।

—जुओ ' षष्ठी शेषे ' (पाणि० २–३–५०) तथा " शेषे ' (हे० श० २–२–८१)

२ जूओ षड्भाषाचन्द्रिका ' क्वचिद्द्वाद्ये " २–३–३८ पृ० १६२ ।

[1]नयरं न जामि [नगरं न यामि]

[2]तेसु अलंकिआ पुहवी [तैरलंकृता पृथ्वी]

३ क्याय क्याय पंचमीने बदले तृतीया अने सप्तमी वपराय छे —

[3]चोरेण बीहइ [चौराद् बिभेति]

[4]अंतेउरे रमिउं आगओ राया [अन्तःपुराद् रन्त्वा आगतो राजा]

४ कोई ठेकाण तो सप्तमीने स्थाने द्वितीया पण वपराय छे —

विज्जुज्जोयं भरइ रत्तिं [विद्युदुद्योते स्मरति रात्रिम्]

---

१ संस्कृतनी रीते पण आ वाक्यमां 'नगर'ने 'कर्म' कही शकाय अने 'आधार' पण कही शकाय एटले 'नगरे न यामि' अने 'नगरं न यामि' ए बन्ने वाक्यो शिष्टसंमत छे

२ आ वाक्यमां जो 'तेषु सत्सु' ('तेओनी विद्यमानतामां') एवो अर्थ विवक्षित होय तो संस्कृतमां पण 'तैः अलंकृता पृथ्वी' आ वाक्यने बदले 'तेषु अलंकृता पृथ्वी' आवुं सप्तमीवाळुं वाक्य थई शके छे

३–४ ज्यां जो 'चौर'ने 'भयना कारण' तरीके अने 'अंतःपुर'ने रमनारना 'आधार' तरीके कहेवानो आशय होय तो संस्कृतमां पण 'चौरेण बिभेति' अने 'अन्तःपुरे रन्त्वा' वगेरे वाक्य थई शके छे

५ आर्षप्राकृतमां ठेकठेकाणे 'तेणं कालेणं तेणं समएणं' प्रयोग वपराएलो छे, एनो अर्थ 'ते काले अने ते समये' थाय छे, तेथी आ अने आवा बीजा प्रयोगोमां 'सप्तमी' विभक्तिने बदले 'तृतीया' विभक्ति वपराएली छे एम आचार्य हेमचन्द्र जणावे छे —(जुओ हे० प्रा० व्या० ८-३-१३७ पृ० १०८) त्यारे आ प्रयोगनुं

विवरण करता नवांगी टीकाकार आचार्य अभयदेव ए प्रयोगमा आवेला 'ण'ने वाक्यालंकाररूपे मानी ए प्रयोगने 'सप्तमी' विभक्तिवाळो पण जणावे छे आचार्य अभयदेवनी दृष्टिए ए पदोनो पदच्छेद आ प्रमाणे छे 'ते ण काले ण, ते ण समए ण'–' 'ते' इति प्राकृतशैलीवशात् 'तस्मिन्' × × × 'ण' कारोऽन्यत्रापि वाक्यालंकारार्थ, × × काले × अवसर्पिणीचतुर्थविभागलक्षणे, × × × समये कालस्यैव विशिष्टे भागे"–जूओ भगवती सूत्र रा० पृ० १८ टीका, ज्ञाता० सूत्र टीका पृ० १ समिति, उपासकदशाङ्ग टीका पृ० २ समिति

ए प्रयोगनुं विवरण करता आचार्य मलयगिरि पण आचार्य अभयदेवनी पेठे पूर्व प्रमाणे जणावे छे –जूओ सूर्यप्रज्ञप्तिनी टीका पृ० १ समिति

आचार्य अभयदेव ए पदोनुं संस्कृत 'तेन कालेन तेन समयेन' पण [illegible] पक्षमा तेओ आ वाक्यमा तृतीयानो अर्थ घटावे छे पण 'तृतीया'ने स्थाने 'सप्तमी' होवानी सूचना करता नथी – "अथवा तृतीयैवेयम्, तत 'तेन कालेन हेतुभूतेन, तेन समयेन हेतुभूतेनैव"–जूओ भगवतीसूत्र रा० पृ० १८ टीका

प्रकरण १२

आख्यात

संस्कृतभाषामां धातुओना अनेक प्रकार छे, जेमके, पेला *गणना, त्रीजा गणना, चोथा गणना, छट्ठा गणना* वगेरे तेमां पण प्रत्येक गणमां धातुओना त्रण पेटा प्रकार छे परस्मैपदी, आत्मनेपदी अने उभयपदी आम होवाथी संस्कृतमां धातुनां रूपाख्यानो अनेक प्रकारना थाय छे कारण के, तेमां प्रत्येक गणनी निशानीओ (विकरण प्रत्ययो) जुदी जुदी छे, प्रक्रियाओ जुदी जुदी छे, आत्मनेपद तथा परस्मैपदना प्रत्ययो पण जुदा जुदा छे

पालिमां केटलुंक संस्कृतनी जेवुं छे पण तेमां वैदिक संस्कृतनी पेठे आत्मनेपद अने परस्मैपदनो नियम अचोक्कस छे. प्राकृतमां तो आत्मनेपद अने परस्मैपदनो कोई नियम ज नथी जो के प्राकृतमां वर्तमानकाळना केटलाक प्रत्ययो संस्कृतना आत्मनेपदी प्रत्ययो साथे मळता आवे छे पण ए प्रत्ययो दरेक धातुने लगाडी शकाय छे

पालिव्याकरणमां[1] आपेला नियमो उपरथी समजी शकाय छे के, *संस्कृतनी पेठे गणभेदने लीधे पालिमां ते ते धातुनां* रूपो जुदां जुदां बने छे पण प्राकृत व्याकरणना नियमोमां तेम नथी प्राकृतव्याकरणमां तो पेला गणना के चोथा गण[illegible] जेवी प्रक्रिया छे, पण एटलुं खरुं के, ते ते धातुन[illegible]णने लीधे आपणे संस्कृतमां वपराता ए धातुनो गण जरूर कळी शकीए[2]

---

१ जुओ कात्यायननुं पालिव्याकरण—आख्यातकल्प

२ दिब्बइ (दीव्यति)
चिणइ (चिनोति)
जाणइ (जानाति)

एकदर रीते संस्कृत करता पालिनी आख्यातप्रक्रिया सरळ छे अने प्राकृतमा तो ए सविशेष सरळ छे

विभक्तिओ

वर्तमाना, सप्तमी, पचमी, ह्यस्तनी, अद्यतनी, परोक्षा, आशी (आशिरर्थ), श्वस्तनी, भविष्यन्ती अने क्रियातिपत्ति एम [1]दस विभक्तिओ सस्कृतमा छे, पालिमा आशिरर्थ अने श्वस्तनीनो प्रयोग नथी अने प्राकृतमा पचमी अने सप्तमी एक सरखी छे, ह्यस्तनी, अद्यतनी अने परोक्षा एक सरखी छे, श्वस्तनी अने भविष्यन्ती एक सरखी छे एटले वर्तमाना, आज्ञार्थ-विध्यर्थ, भूतकाळ, भविष्यत्काळ अने क्रियातिपत्ति ए पाच ज विभक्तिओ क्रियापदने लगती छे आख्यातने लगतो विभक्तिप्रयोग सस्कृतमा जे झीणवटथी करवामा आवे छे तेवी झीणवट पालि के प्राकृतमा नथी पालिमा ए दरेक विभक्तिना प्रत्ययो जुदा जुदा छे पण प्राकृतमा तो आगळ जणाव्या प्रमाणे ए पाच विभक्तिओमा ज सस्कृतनी बधी विभक्तिओ समाएली छे

आ चालु प्रकरणमा आख्यात विषे अने केटलाक कृदत विषे समजाववानु छे पण धातुओथी बनता दरेक नामो विषे काई कहेवानु नथी माटे ज धातुना उपयोगनो विभाग करता अहीं जणाववामा आवे छे के, साहित्यमा धातुओनो उपयोग खास करीने बे प्रकारे थएलो छे क्रियापदरूपे अने कृदंतरूपे.

---

१ पाणिनिना संकेत प्रमाणे ए दस विभक्तिओना नाम आ प्रमाणे छे लट्, विधिलिङ्, लोट, लङ्, लिट्, आशीर्लिङ्, लुट्, लृट्, लङ्, अने लुङ्

क्रियापदरूपे वपराता धातुना रूपाख्याननु नाम 'आख्यात' छे अने कृदतरूपे वपराता धातुना रूपाख्यानने 'नाम' कहेवामा आवे छे

आख्यातरूपे वपराता धातुना रूपाख्याननी विविधता आ प्रमाणे छे

कर्तरिरूप, कर्मणिरूप, भावेरूप (सह्यभेद), प्रेरककर्तरिरूप, प्रेरककर्मणिरूप, प्रेरकभावेरूप (प्रेरक सह्यभेद) इत्यादि ।

कृन्तरूपे वपराता धातुना रूपाख्यानना अनेक प्रकार आ रीते छे

कर्तरि	वर्तमानकृदत, प्रेरकवर्तमानकृदत, कर्तृसूचकरूप, भविष्यत्कृदत, प्रेरकभविष्यत्कृदत ।
कर्मणि अने भावे सह्यभेद	वर्तमानकृदत, भविष्यत्कृदत, प्रेरकवर्तमानकृदत, प्रेरकभविष्यत्कृदत, भूतकृदत, विध्यर्थकृदत, प्रेरक-भूतकृदत, प्रेरकविध्यर्थकृन्त ।
भावेरूप	हेत्वर्थकृदत अने सबधकभूतकृदत ।

आ प्रकरणमा अहीं जणावेला क्रम प्रमाणे रूपाख्यानोनी सम जूती आपवानी छे

कर्तरिरूप

प्राकृतमा धातुओनी बे जात छे व्यजनात धातु अने स्व रात धातु

१ व्यजनात धातुना छेवटना व्यजनमा 'अ'कार उमेरायो पछी ज तेना रूपाख्यानो थाय छे अने ए उमेरातो 'अ'कार विकरण-रूप लेखाय छे

भण् + अ–भण–भणइ (भणति)
कह् + अ–कह–कहइ (कथयति)
सम् + अ–समइ (शाम्यति)
हस् + अ–हस–हसइ (हसति)
आव् + अ–आव–आवइ (आप्नोति)
सिंच् + अ–सिंच–सिंचइ (सिञ्चति)
रुन्ध् + अ–रुन्ध–रुन्धइ (रुणद्धि)
मुस् + अ–मुस–मुसइ (मुष्णाति)
तण् + अ–तण–तणइ (तनोति)

२ अकारांत सिवाय बाकीना स्वरांत धातुओने पण विकरण 'अ' विकल्पे लागे छे

पा + अ–पाअ–पाअइ, पाइ (पाति)
जा + अ–जाअ–जाअइ, जाइ (याति)
धा + अ–धाअ–धाअइ, धाइ (धयति, धावति, दधाति)
झा + अ–झाअ–झाअइ, झाइ (ध्यायति)
जम्भा + अ–जम्भाअ–जम्भाइ (जृम्भते)
वाअ + अ–वाअ–वाअइ, वाइ (वाति)
मिला + अ–मिलाअ–मिलाअइ, मिलाइ–(म्लायति)
विक्की+विके + विकेअ–विकेअइ, विकेइ (विक्रीणाति)
हो + अ–होअ–होअइ, होइ (भवति)
हो + अ–होअ–होइउण, होउण (भूत्वा)

३ उवर्णांत धातुना अंत्य उवर्णनो 'अव्' थाय छे

ण्हु–ण्हव्+अ–ण्हव–ण्हवइ (ह्नुते)
निण्हवइ (निह्नुते)

हु–हव्– हव–हवइ (जुहोति)
निहवइ (निजुहोति)
चु–चव्–चव–चवइ (च्यवते)
रु–रव्–रव–रवइ (रौति)
कु–कव्–कव–कवइ (कौति)
सु–सव्–सव–सवइ (सुते)
पसवइ (प्रसूते)

४ ऋवर्णांत धातुना अंत्य ऋवर्णनो 'अर्' थाय छे

कृ–कर्–कर–करइ (करोति)
धृ–धर्–धर–धरइ (धरति)
मृ–मर्–मर–मरइ (म्रियते)
वृ–वर्–वर–वरइ (वृणोति, वृणुते)
सृ–सर्–सर–सरइ (सरति)
हृ–हर्–हर–हरइ (हरति)
तॄ–तर्–तर–तरइ (तरति)
जॄ–जर्–जर–जरइ (जीर्यति)

५ उपांत्यमा ऋवर्णवाळा धातुना ऋवर्णनो 'अरि' थाय छे

कृष्–करिस्–करिस–करिसइ (कर्षति)
मृष्–मरिस्–मरिस–मरिसइ (मृष्यते)
वृष्–वरिस्–वरिस–वरिसइ (वर्षति)
हृष्–हरिस्–हरिस–हरिसइ (हृष्यति)

६ धातुना 'इवर्ण' अने 'उवर्ण'नो अनुक्रमे 'ए' अने 'ओ' थाय छे

नी–नेइ (नयति)
नेंति (नयन्ति)

उड्डी—उड्डेइ (उड्डयते)

उड्डेंति (उड्डयन्ते)

जि—जेऊण (जित्वा)

नी—नेऊण (नीत्वा)

७ केटलाक धातुना उपान्त्य स्वरनो दीर्घ थाय छे

रुष्—रूस्—रूस—रूसइ (रुष्यति)

तुष्—तूस्—तूस—तूसइ (तुष्यति)

शुष्—सूस्—सूस—सूसइ (शुष्यति)

दुष्—दूस्—दूस—दूसइ (दुष्यति)

पुष्—पूस्—पूस—पूसइ (पुष्यति)

सीसइ (शिष्यते) इत्यादि ।

८ धातुना नियत स्वरने स्थाने प्रयोगानुसारे बीजो स्वर पण थाय छे

वि०—हवइ—हिवइ (भवति)

चिणइ—चुणइ (चिनोति)

सद्दहण—सद्दहाण (श्रद्धानम्)

धावइ—धुवइ (धावति),

रुवइ—रोवइ (रोदीति) इत्यादि ।

नि०—दा—दे—देइ (ददाति, दाति, द्यति)

ला—ले—लेइ (लाति)

विहा—विहे—विहेइ (विदधाति, विभाति)

ब्रू—बे—बेमि (ब्रवीमि) इत्यादि ।

९ केटलाक धातुओनो अंत्य व्यंजन प्रयोगानुसारे बेवडो थाय छे

फुट्टइ (स्फुटति)

चल्लइ (चलति)

पमीलइ पमिल्लइ (प्रमीलति)

निमीलइ, निमिल्लइ (निमीलति)

समीलइ, समिलइ, (समीलति),

उम्मीलइ, उम्मिल्लइ (उन्मीलति) इत्यादि ।

नि०—जिम्मइ (जेमति) परिअट्टइ (पर्यटति)

सक्कइ (शक्नोति) पलोट्टइ (प्रलोटति)

लग्गइ (लगति) वुट्टइ (त्रुटति)

मग्गइ (मृगयते) । नट्टइ (नटति)

नस्सइ (नश्यति) सिव्वइ (सीव्यति)

कुप्पइ (कुप्यति) इत्यादि ।

१- केटलाक धातुओना (प्राय संस्कृतनो विकरण उमेराया पछी 'य' छेडावाळा धातुओना) अत्य व्यजननो प्रयोगानुसारे 'ज्ज' थाय छे

सपज्जइ (संपद्यते) सिज्जइ (स्विद्यति)

खिज्जइ (खिद्यते) सिज्जिरी (स्वेत्त्री, स्वेदयित्री)

इत्यादि ।

११ उपरना नियमोथी तैयार थएला धातुना अगने वर्तमानकाळमा नीचे जणावेला कर्तृबोधक प्रत्ययो लागे छे –

---

१ जुओ पृ० ३३—द्य, य्य, र्य—ज (नि० २७)

२ पालिमा 'वतमाना'ना प्रत्ययो आ प्रमाणे छे

	परस्मैपद		आत्मनेपद	
	एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
१	मि	म	ए	म्हे
२	सि	थ	से	व्हे
३	ति	अति	ते	अन्ते (रे

—जुओ पालिप्र० पृ० १७१ नि० ११

		एकव० —	बहुव० —
१	पुरुष	[1]मि,	मो, मु, म
२	पुरुष	सि, से,[2]	इत्था, ह
३	पुरुष	इ, ए	न्ति, न्ते, इरे[3]

सर्वपुरुष—सर्ववचन—ज्ज, ज्जा

१ 'मि' प्रत्यय पर रहेता धातुना अकारात अगना अत्य 'अ' नो विकल्पे 'आ' थाय छे

२ 'मो', 'मु' अने 'म' प्रत्यय पर रहेता धातुना अकारात अगना अत्य 'अ' नो विकल्पे 'आ' अने 'इ' थाय छे

३ उपर जणावेला बधा प्रत्ययो पर रहेता धातुना अकारात अगना अत्य 'अ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे

[नामना रूपोमा पालिमा अने प्राकृतमा सविशेष समानता छे तेथी नामना प्रकरणमा स्थळे स्थळे समानता बताववा पालिना रूपो सविस्तर मूकेला छे पण धातुना रूपोमा तेम नथी, तेथी आ प्रकरणमा ज्या ज्या जेटली समानता छे तेटलो उल्लेख करवामा आवशे पण धातुना पालिरूपोनी वीगतथी नोंध नहि करवामा आवे]

१ केटलेक ठेकाण 'मि' प्रत्ययने बदले 'मू' प्रत्यय पण वपरायलो छे —मर, मरामि (म्रिये) । सक्क, सक्कामि (शक्नोमि) ।

२ 'स' अने 'ए' तथा शौरसेनीनो 'दे' अने पैशाचीनो 'ते' प्रत्यय, धातुना अकारात अगनेज लगाडवाना छे अर्थात् अकारात सिवायना धातुना अगने ए बन्ने प्रत्ययो लागता नथी —

पा — सि—पासि । पा + इ—पाइ (पासे, अने पाए, रूप थाय नहि)

३ कोइ ठेकाणे आ 'इत्था' प्रत्यय त्रीजा पुरुषना एकवचनमा पण वपराएलो छे —रोइत्था, रोयइ, रोयए—(रोचते)

[illegible] प्रत्यय क्वचित् क्वचित् त्रीजा पुरुषना

नमा जेमके—तूसइ, तूसेइरे—(तुष्यति)

४ 'ज्ज' अने 'ज्जा' प्रत्यय पर रहेता तो धातुना अकारांत अगना अत्य 'अ' नो 'ए' थाय छे

शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रशभाषामा वर्तमान-काळने लगती विशेषतावाळी प्रक्रिया आ प्रमाणे छे —

शौरसेनी–मागधी

१ पु०	मि	मो, मु, म ।
२ पु०	[1]सि, से[2]	इत्था, ध, ह ।
३ पु०	दि, दे	ति, न्ते, इरे ।

पैशाची

१ पु० शौरसेनी प्रमाणे

२ पु० ,,

३ पु० ति, ते शौरसेनी प्रमाणे

अपभ्रश

१ पु०	उ, मि	हु, मो, मु, म ।
२ पु०	हि, सि, से	हु, ह, ध, इत्था ।
३ पु०	दि, दे, इ, ए	हिं ति, न्ते, इरे ।

प्राकृतमा वर्तमानकाळना प्रत्ययो लागता धातुना अगमा जे जे फेरफार थवानु जणाव्यु छे ते बधु शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रशना वर्तमानकाळना प्रत्ययो लागता पण समजी लेवानु छे

धातुने लागता कोई पण प्रत्ययो लगाडया पहेला पण प्राकृतमा धातुने लगती जे जे प्रक्रिया (विकरण वगेरेनी प्रक्रिया)

---

१ जुओ पृ० २७ ग-घ

२ जुओ पृ० २४९, २ टिप्पण

जणावी छे ते बधी शौरसेनी, पैशाची, मागधी अने अपभ्रंशमा समजी लेवानी छे.

व्यंजनांत धातुना रूपाख्यानो

हस्

एकवचन

	प्राकृतरू०–	शौरसेनीरू०– मागधीरू०–	पैशाचीरू०–	अपभ्रंशरू०–
१ पुरुष–	हसमि, हसामि, हसेमि, हसेज्ज, हसेज्जा ।	प्राकृत प्रमाणे	प्राकृत प्रमाणे	हसउं, हसेउं, हसमि, हसामि, हसेमि, हसेज्ज, हसेज्जा ।
२ पुरुष–	हससि, हसेसि, हससे, हसेसे, हसेज्ज, हसेज्जा ।	प्राकृत प्रमाणे	प्राकृत प्रमाणे	हसहि, हसेहि, हससि, हसेसि, हससे, हसेसे, हसेज्ज, हसेज्जा ।
३ पुरुष–	हसइ, हसेइ,	हसदि, हसेदि,	हसति, हसेति,	हसदि, हसेदि,

१ जुओ स–ग पृ० २७ नि० (१)–हसामि वगेरे

हसए,	हसदे,	हसते,	हसदे,
हसेए,	हसेदे,	हसेते,	हसेदे,
हसेज्ज,	हसेज्ज,	हसेज्ज,	हसइ,
हसेज्जा।	हसेज्जा।	हसेज्जा।	हसेइ,
			हसए,
			हसेए,
			हसेज्ज,
			हसेज्जा।

बहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष–हसमो,	प्राकृत	प्राकृत	हसहु,
हसामो,	रूपो	प्रमाणे	हसेहु,
हसिमो,	प्रमाणे		हसमो,
हसेमो,			हसामो,
हसमु,			हसिमो,
हसामु,			हसेमो,
हसिमु,			हसमु,
हसेमु,			हसामु,
हसम,			हसिमु,
हसाम,			हसेमु,
हसिम,			हसम,
हसेम,			हसाम,

हसेज्ज,			हसिम,
हसेज्जा।			हसेम,
			हसेज्ज,
			हसेज्जा।
२ पुरुष–हसइत्था,	हसइत्था,	शौरसेनी	हसइत्था,
[1]हसित्था,	हसित्था,	प्रमाणे	हसित्था,
हसेइत्था,	हसेत्था,		हसेत्था,
हसह,	हसध,		हसध,
हसेह,	हसेध,		हसेध,
हसेज्ज,	हसह,		हसह,
हसेज्जा।	हसेह,		हसेह,
	हसेज्ज,		हसहु,
	हसेज्जा।		हसेहु,
			हसेज्ज,
			हसेज्जा।
३ पुरुष–हसन्ति,	[2]प्राकृत	शौरसेनी	हसहिं,
हसेंति,	रूपो	रूपो	हसेहिं,
[3]हसिंति,	प्रमाणे	प्रमाणे	हसति,
हसते,			हसेंति,

---

१ जुओ पृ० १६ स्वरलोप नि० ६–हस + इत्था=हसित्था।

२ प्राकृतना हसति, हसते वगेरे रूपो उपरथी शौरसेनीमां हसदि, वगेरे रूपो पण प्राय यथासंभव थइ शके छे–जुओ पृ० ३५ नि० (१) न्त=न्द।

३ ४ नि० १–हसेंति + हसिंति।

हमंते,	हसिंति,
हसिंते,	हसते,
हसइरे,	हसंते
हसिरे,	हसिंते,
हसेइरे	हसइरे,
हसेज्ज,	हसिरे,
हसेज्जा ।	हसेइरे,
	हसेज्ज,
	हसेज्जा ।

आ रीते आगळ जणावेल बधा व्यंजनांत (धातुना) अंगोना वर्तमानकाळनां रूपो समजवाना छे

स्वरांत धातुनां रूपाख्यानो

हो (भू)

स्वरांत धातुओनी प्रक्रिया व्यंजनांत धातुनी ('हस्' नी) सरखी छे मात्र फेर आ छे

स्वरांत धातु अने पुरुषबोधक प्रत्यय—ए बेनी—वच्चे पण 'ज्ज' 'ज्जा' विकल्पे उमेराय छे

एकवचन

प्राकृतरू०— शौरसेनीरू०— पैशाचीरू०— अपभ्रंशरू०— मागधीरू०—

१ पुरुष—[1]होअमि,	प्राकृत	प्राकृत	होअउ
होआमि,	रूपो	रूपो	होएउ
होएमि,	प्रमाणे	प्रमाणे	होअमि

१ पेलेथी सव रूपो विकरणवाळा छे अने बाकी बधा विकरण विनाना छे विकरण माटे जुओ पृ० २४५ नि० २

(ञ) होएज्जमि, — होआमि

होएज्जामि, — होएमि

होएज्जेमि, — होएज्जउ, होएज्जमि

होएज्ज, — होएज्जामि

(ज्ञा) होएज्जामि, — होएज्जेउ, होएज्जेमि

होएज्जा, — होएज्ज

होमि, — होएज्जाउ, होएज्जामि

(ज्ञ) होज्जमि, (हुज्जमि) — होएज्जा

होज्जामि, — होउ

होज्जेमि, — होमि

होज्ज (हुज्ज) — होज्जउ, होज्जमि

(ज्ञा) होज्जामि — होज्जामि

होज्जा (हुज्जा) — होज्जेउ, होज्जेमि

होज्ज

होज्जाउ, होज्जामि

होज्जा।

एकवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
२ पुरुष-होअसि	प्राकृत	प्राकृत	होअहि,
होएसि	रूपो	रूपो	होएहि,
होअसे	प्रमाणे	प्रमाणे	होआमि
होएसे			होएमि
होएज्जासि			होअमे
होएज्जेसि			होअहे

होएज्जमे	होएज्जाहि
होएज्जेमे	होएज्जेहि
होएज्जासि	होएज्जामि
होसि	होएज्जेमि
होज्जासि	होएज्जासे
होज्जेमि	होएज्जेमे
होज्जासे	होएज्जाहि
होज्जेसे	होएज्जामि
होज्जासि	होहि,
होज्ज	होसि
होज्जा	होज्जाहि, होज्जासि
	होज्जेहि, होज्जेमि
	होज्जासे
	होज्जेसे
	होज्जाहि, होज्जासि
	होज्ज
	होज्जा।

३ परुप—होअइ	होअदि	हाअति	हाअइ, होअदि
होएइ	होएदि	होएति	होएइ, होएदि
होअए	होअदे	होअते	होअए, होअदे
होएए	होएदे	होएते	होएए, होएदे
होएज्जइ	होएज्जदि	होएज्जति	होएज्जइ, होएज्जदि
होएज्जेइ	होएज्जेदि	होएज्जेति	होएज्जेइ, होएज्जेदि
होएज्जए	होएज्जदे	होएज्जते	होएज्जए, होएज्जदे
होएज्जेए	होएज्जेदे	होएज्जेते	होएज्जेए, होएज्जेदे

होएज्जाइ	होएज्जादि	होएज्जाति	होएज्जाइ,	होएज्जादि
होइ	होदि	होति	होइ,	होदि
होज्जइ	होज्जदि	होज्जति	होज्जइ,	होज्जदि
होज्जेइ	होज्जेदि	होज्जेति	होज्जेइ,	होज्जेदि
होज्जए	होज्जदे	होज्जते	होज्जए,	होज्जदे
होज्जेए	होज्जेदे	होज्जेते	होज्जेए,	होज्जेदे
होज्जाइ	होज्जादि	होज्जाति	होज्जाइ,	होज्जादि
होज्ज	होज्ज	होज्ज		होज्ज
होज्जा	होज्जा	होज्जा		होज्जा

बहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—होअमु	प्राकृत	प्राकृत	होअहु
होआमु	रूपो	रूपो	होएहु
होइमु, होएमु	प्रमाणे	प्रमाणे	होअमु
होअमो			होआमु
होआमो			होइमु
होइमो, होएमो			होएमु
होअम			होअमो
होआम			होआमो
होइम, होएम			होइमो
होएज्जमु			होएमो
होएज्जामु			होअम
होएज्जिमु			होआम

होएज्जेमु
होएज्जमो
होएज्जामो
होएज्जिमो
होएज्जेमो
होएज्जम
होएज्जाम
होएज्जिम
होएज्जेम
होमु
होमो
होम
होज्जमु
होज्जामु
होज्जिमु
होज्जेमु
होज्जमो
होज्जामो
होज्जिमो
होज्जेमो
होज्जम
होज्जाम
होज्जिम
होज्जेम
होज्ज

हाइम
होएम
होएज्जहु
होएज्जेहुं
होएज्जमु
होएज्जामु
होएज्जिमु
होएज्जेमु
होएज्जमो
होएज्जामो
होएज्जिमो
होएज्जेमो
होएज्जम
होएज्जाम
होएज्जिम
होएज्जेम
होहु
होमु
होमो
होम
होज्जहुं
होज्जेहु
होज्जमु
होज्जामु
होज्जिमु

होज्जा होज्जेमु

होज्जमो

होज्जामो

होज्जिमो

होज्जेमो

होज्जम

होज्जाम

होज्जिम

होज्जेम

होज्जाहु

होज्ज

होज्जा।

वहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
२ पुरुष–होअह	होअह, होअध	शौरसेनी	होअहु
होएह	होएह, होएध	प्रमाणे	होएहु
होएज्जह	होएज्जह, होएज्जध		होएज्जहु, होएज्जेहु
होएज्जेह	होएज्जेह, होएज्जेध		होएज्जाहु
होएज्जाह	होएज्जाह, होएज्जाध		होज्जहु, होज्जेहु
होज्जह	होज्जह, होज्जध		होज्जाहु
होज्जेह	होज्जेह, होज्जेध		होहु
होज्जाह	होज्जाह, होज्जाध		होअह, होअध
होह	होह, होध		होएह, होएध
होअइत्था	होअइत्था		होएज्जह, होएज्जध

होएइत्था	होएइत्था	होएज्जेह, होएज्जेध
होएज्जइत्था	होएज्जइत्था	होएज्जाह, होएज्जाध
होएज्जेइत्था	होएज्जेइत्था	होज्जह, होज्जध
होएज्जाइत्था	होएज्जाइत्था	होज्जेह, होज्जेध
होज्जइत्था	होज्जेइत्था	होज्जाह, होज्जाध
होज्जेइत्था	होज्जइत्था	होह, होध
होज्जाइत्था	होज्जाइत्था	होअइत्था
होइत्था (होत्था[1])	होइत्था	होएइत्था
होज्ज	होज्ज, होज्जा	होएज्जइत्था
होज्जा		होएज्जेइत्था
		होएज्जाइत्था
		होज्जेइत्था
		होज्जइत्था
		होज्जाइत्था
		होइत्था

३ पुरुष–होअति	[2]प्राकृत	शौरसेनी	होअहिं
होएति	रूपो	प्रमाणे	होएहिं
होअते	प्रमाणे		होएज्जहिं
होएते			होएज्जेहिं
होअइरे			होएज्जाहिं
होएइरे			होज्जहिं
होएज्जन्ति			होज्जेहिं

---

१ आ प्रयोग आगमग्रंथोमा 'अभूत्' अर्थमां वपरायेलो छे—जूओ भूतकाळनुं प्रकरण पृ० २६४

२ जूओ पृ० २५३, २ टिप्पण

होएज्जेंति
होएज्जमेते
होएज्जेंते
होएज्जइरे
होएज्जेइरे
होएज्जाति
होएज्जाते
होएज्जाइरे
होंति (हुति)
होंते (हुते)
होइरे
होज्जति, होज्जेंति
होज्जते, होज्जेंते
होज्जइरे, होज्जेइरे
होज्जाति
होज्जाते
होज्जाइरे
होज्ज
होज्जा ।

होज्जाहिं
होहिं
होअंति, होएंति
होअते, होएते
होअइरे, होएइरे
होएज्जति, होएज्जेंति
होएज्जते, होएज्जेंते
होएज्जइरे, होएज्जेइरे
होएज्जाति
होएज्जाते
होएज्जाइरे
होंति (हुति)
होंते (हुते)
होइरे
होज्जति, होज्जेंति
होज्जते, होज्जेंते
होज्जइरे, होज्जेइरे
होज्जाति
होज्जाते
होज्जाइरे
होज्ज
होज्जा

ए रीते दरेक स्वरात धातुनी (दा, पा, नी, …
… बधी प्रक्रिया ' हो 'नी पेठे …

भूतकाळ

(स्वरात अने व्यजनात धातुने लागता प्रत्ययो)

१ सस्कृतमा भूतकाळना त्रण प्रकार छे, जेमके–ह्यस्तनभूत, अद्यतनभूत अने परोक्षभूत. ए त्रणे काळना प्रत्ययो अने प्रक्रिया पण सस्कृतमां तद्दन जूदां जूदा छे परतु प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची के अपभ्रश भाषामा तेम नथी तेमा तो ते त्रणे काळ माटे एक सरखा ज प्रत्ययो छे एटलु ज नहि पण ते त्रणे काळना, त्रणे पुरुषोना अने त्रणे वचनोना पण एक सरखा ज प्रत्ययो छे अर्थात् भूतकाळनी प्रक्रिया के रूपमा प्राकृत, शौरसेनी वगेरे भाषामा क्याय कशो भेद जणातो नथी

प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रशमा भूतकाळना ए प्रत्ययो आ प्रमाणे छे –

१ पु०
२ पु० } ईअ[2] (व्यजनात धातुने लागतो प्रत्यय)
३ पु०

" } सी[3], ही, हीअ (स्वरात धातुने लागता प्रत्ययो)

---

१ कोइनो मत एवो छे के, वर्तमानकाळनी पेठे भूतकाळमा पण 'ज' अने 'जा' प्रत्यय वपराय छे –होज, होजा–(अभूत्)

२ पालिमा त्रीजा पुरुषना एकवचनमां ' ई ' अने ' इ ' एम बे परस्मैपदी प्रत्ययो छे अने ए, प्राकृतना ' इअ ' प्रत्यय साथे मळता आवे छे पालिप्र० पृ० २१७ नि० १७६

३ पालिमा बीजा पुरुषना अने त्रीजा पुरुषना एकवचनमा परस्मैपदी 'सि' प्रत्यय वपराएलो छे अने ए, प्राकृतना ' सी ' प्रत्यय साथे मळतो आवे छे जेम प्राकृतमा त्रणे पुरुषमा एक सरखो ' सी ' प्रत्यय स्वरात धातुने लगाडवामा आवे छे तेम पालिमा त्रणे पुरुषमा एक सरखो ' सि ' प्रत्यय स्वरात धातुने लगाडवामा आवे छे मात्र पालिनो ए ' सि ' प्रत्यय प्रथम पुरुषना एकवचनमा अनुस्वारवाळो (सिं) वपराय छे एटलो ज भेद छे पालिप्र० २१८ नि० १७९

व्यंजनांत धातु–हस + ईअ–हसीअ ।
कर + ईअ–करीअ ।
भण् + ईअ–भणीअ ।

ए रीते व्यंजनांत धातुना भूतकाळना रूपो साधवाना छे

स्वरांत धातु–	हो + सी–होसी, होअसी	हो + ही–होही, होअही	हो+हीअ–होहीअ, होअहीअ
	पा + सी–पासी, पाअसी	पा + ही–पाही, पाअही	पा + हीअ–पाहीअ, पाअहीअ
	ठा + सी–ठासी, ठाअसी	ठा + ही–ठाही, ठाअही	ठा + हीअ–ठाहीअ, ठाअहीअ
	ने + सी–नेसी, नेअसी	ने + ही–नेही, नेअही	ने + हीअ–नेहीअ, नेअहीअ

लासी, लाही, लाहीअ, लाअसी, लाअही, लाअहीअ ।

उड्डे + सी–उड्डेसी, उड्डेअसी, उड्डेही, उड्डेअही, उड्डेहीअ, उड्डेअहीअ ।

ए रीते स्वरांत धातुना भूतकाळना रूपो साधवाना छे

[उपर जणावेला भूतकाळना प्रत्ययो करता केटलाक जूदा प्रत्ययो पण आर्षग्रंथोमा वपराएला छे, आर्षरूपोमा विशेषे करीने

पालिरूपो

एकव०

१ अहोसि
२ अहोसि
३ अहोसि

—जुओ पालिप्र० [illegible] पृ० २१३ नि० १८१

त्था, इत्थ, इत्था, इमु अने अमु, ए चार प्रत्ययो वपराएला छे तेमा 'त्था' अने 'इत्था,' घणे ठेकाणे एकवचनमां वपराया छे अने 'इमु' तथा 'अमु' घणे ठेकाणे बहुवचनमां वपराया छे ए जातना केटलाएक आर्षरूपो जोवाथी एवु अनुमान थाथी शकाय छे के, त्रीजा पुरुषना एकवचनमा 'त्था' अने 'इत्था' वपराया छे अने बहुवचनमा 'इमु' अने 'अमु' वपराया छे जेमके.—

*हो + त्था–होत्था (अभवत्, अभूत्, बभूव)

भुञ्ज + इत्था–भुञ्जित्था (भुक्तवान्)

* आ 'होत्था' 'पहारित्थ' 'विहरित्था' वगेरे एकवचनी रूपोनी अने 'करिंसु' 'पुच्छिंसु' 'आहंसु' वगेरे बहुवचनी रूपोनी साधना पालिव्याकरण द्वारा शोधी शकाय छे पालिभाषामां त्रीजा पुरुषना एकवचनमा आत्मनपदी 'इत्थ' अने बहुवचनमा परस्मैपदी 'इंसु,' 'इसु,' अने 'अंसु' प्रत्ययो वपराएला छे उपयुक्त आर्षरूपोमा वपराएलो 'इत्था' पालिना ए 'इत्थ'नु रूपांतर जणाय छे, 'पहारित्थ' रूपमा तो पालिनो जेवोने तेवो 'इत्थ' प्रत्यय ज वपराएलो छे अने पालिना 'इंसु' अने 'अंसु' ए बे प्रत्ययो एमने एम ए आर्ष रूपोमा वपराया छे जेम संस्कृतमा ह्यस्तनी, अद्यतनी अने क्रियातिपत्तिना रूपाख्यानोमा धातुनी पूर्वे 'अ' उमेराय छे तेम पालिमा छे पण प्राकृतमा नथी

पालिरूपो भू

एकव० ३ अभवित्थ ('इत्थ' प्रत्ययवाळु)

बहुव० ३ अभविंसु, अभवंसु ('इंसु' अने 'अंसु' प्रत्ययवाळु)

—जुओ पालिप्र० पृ० २१७ नि० १७८–१७७ तथा पृ० २२० 'गम'नां रूपो अने टिप्पण.

री + इत्था–रीइत्था (अरयिष्ट)

विहर् + इत्था–विहरित्था (विहृतवान्)

सेव् + इत्था–सेवित्था (सेवितवान्)

पहार् + इत्थ=पहारेत्थ (प्रधारितवान्)

गम्–गच्छ + इसु–गच्छिसु (अगच्छन्, अगमन्, जग्मु)

प्रच्छ–पुच्छ + इसु–पुच्छिसु (पृष्टवन्त)

कृ–कर + इसु–करिंसु (अकुर्वन्, अकार्षु, चक्रु)

नृत्य्–नच + इसु–नच्चिसु (नृत्तवन्त)

ब्रू–आह + असु-आहसु (आहु)

सस्कृतमा भूतकाळना जे रूपाख्यानो तैयार थाय छे, ते उपरथी सीधी रीते पण वर्णविकारना नियमो द्वारा प्राकृतरूपाख्यानो बनावी शकाय छे जेमके —

स०– अब्रवीत्–	अब्बवी (प्रा०)	
अकार्षीत्–	अकासी (,,)	
अभूत्–	अहू (,,)	
अवोचत्–	अवोच (,,)	
अद्राक्षु –	अदक्खु (,,)	
अकार्षम्–	अकरिस्स (,,)	इत्यादि

प्राचीन प्राकृतमा–आर्षग्रथोमा–आवा रूपाख्यानो घणा वपराएला छे

---

१ श्रीहेमचद्रे पोताना प्राकृत–व्याकरणमा आ आर्षरूपो माटे कोई जातनो उल्लेख कर्यो जणातो

त्था, इत्थ, इत्था, इसु अने असु, ए चार प्रत्ययो वपराएला छे तेमा 'त्था' अने 'इत्था,' घणे ठेकाणे एकवचनमा वपराया छे अने 'इसु' तथा 'असु' घणे ठेकाणे बहुवचनमा वपराया छे ए जातना केटलाएक आर्षरूपो जोवाथी एवु अनुमान बाधी शकाय छे के, त्रीजा पुरुषना एकवचनमा 'त्था' अने 'इत्था' वपराया छे अने बहुवचनमा 'इसु' अने 'असु' वपराया छे जेमके —

हो[1] + त्था–होत्था (अभवत्, अभूत्, बभूव)

भुञ्ज + इत्था–भुञ्जित्था (भुक्तवान्)

---

१ आ 'होत्था' 'पहारित्थ' 'विहरित्था' वगेरे एकवचनी रूपोनी अने 'करिंसु' 'पुच्छिंसु' 'आहंसु' वगेरे बहुवचनी रूपोनी साधना पालिव्याकरण द्वारा शोधी शकाय छे पालिभाषामां त्रीजा पुरुषना एकवचनमा आत्मनेपदी 'इत्थ' अने बहुवचनमा परस्मैपदी 'इसु,' 'इंसु,' अने 'असु' प्रत्ययो वपराएला छे उपयुक्त आर्षरूपोमां वपराएलो 'इत्था' पालिना ए 'इत्थ'नु रूपातर जणाय छे, 'पहारित्थ' रूपमा तो पालिनो जेवोने तेवो 'इत्थ' प्रत्यय ज वपराएलो छे अने पालिना 'इंसु' अने 'असु' ए बे प्रत्ययो एमने एम ए आर्ष रूपोमा वपराया छे जेम सस्कृतमा ह्यस्तनी, अद्यतनी अने क्रियातिपत्तिना रूपाख्यानोमा धातुनी पूर्वे 'अ' उमेराय छे तेम पालिमा छे पण प्राकृतमा नथी

पालिरूपो भू

एकव० ३ अभवित्थ ('इत्थ' प्रत्ययवालु)

बहुव० ३ अगमिंसु, अगमसु ('इंसु' अने 'असु' प्रत्ययवालु)

—जुओ पालिप्र० पृ० २१७ नि० १७८–१७७ तथा पृ० २२० 'गम'नां रूपो अने टिप्पण.

री + इत्था–रीइत्था (अरयिष्ट)

विहर् + इत्था–विहरित्था (विहृतवान्)

सेव् + इत्था–सेवित्था (सेवितवान्)

पहार् + इत्थ=पहारेत्थ (प्रधारितवान्)

गम्–गच्छ + इसु–गच्छिसु (अगच्छन्, अगमन्, जग्मु)

प्रच्छ–पुच्छ + इसु–पुच्छिसु (पृष्टवन्त)

कृ–कर + इसु–करिंसु (अकुर्वन्, अकार्षु, चक्रु)

नृत्य्–नच्च + इसु–नच्चिसु (नृत्तवन्त)

ब्रू–आह + अंसु–आहंसु (आहु)

संस्कृतमा भूतकाळना जे रूपाख्यानो तैयार थाय छे, ते उपरथी सीधी रीते पण वर्णविकारना नियमो द्वारा प्राकृतरूपाख्यानो बनावी शकाय छे जेमके —

सं०– अब्रवीत्– अब्बवी (प्रा०)
अकार्षीत्– अकासी (,,)
अभूत्– अहू (,,)
अवोचत्– अवोच (,,)
अद्राक्षु – अदक्खु (,,)
अकार्षम्– अकरिस्स (,,) इत्यादि

प्राचीन प्राकृतमा–आर्षप्रयोगमा–आवा रूपाख्यानो घणा वपराएला छे

---

१ श्रीहेमचंद्रे पोताना प्राकृत–व्याकरणमा आ आर्षरूपो माटे कोइ जातनो उल्लेख कर्या जणातो नथी

भविष्यत्काळ

संस्कृतमां भविष्यत्काळना त्रण प्रकार छे, जेमके—श्वस्तन-भविष्य, अद्यतनभविष्य अने परोक्षभविष्य (क्रियातिपत्ति) ए त्रणे भविष्यना पुरुषबोधक प्रत्ययो अने प्रक्रिया पण जूदां जूदां छे परंतु प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची के अपभ्रंशमां तेम नथी—तेमां तो मात्र परोक्षभविष्यना ज प्रत्ययो अने प्रक्रिया नोखां नोखां छे अने श्वस्तन तथा अद्यतन भविष्यनी प्रक्रिया, प्रत्ययो तो तद्दन सरखा छे

प्राकृतना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

१ पु०	स्स, स्सामि, हामि, हिमि[1]	स्सामो, हामो, हिमो,
		स्सामु, हामु, हिमु,
		स्साम, हाम, हिम,
		हिस्सा, हित्था

१ भविष्यत्काळना उपर जणावेला प्रत्ययो धातुमात्रने लागे छे त्यारे पालिमां तो एवा प्रत्ययो मात्र 'भू' धातुने ज लागेला छे—

भू पालिरूपो (भविष्यत्काळ)

१	होहामि,	होहाम,
	होहिस्सामि	होहिस्साम
२	होहिसि,	होहिथ,
	होहिस्ससि	होहिस्सथ
३	होहिति,	होहिंति,
	होहिस्सति	होहिस्सन्ति – वगेरे

जुओ पालिप्र० पृ० २०८ 'होहिति' वगेरे रूपो

२ पु०	हिसि, हिसे[1]	हित्था, हिह
३ पु०	हिइ, हिए	हिंति, हिंते, हिइरे
सर्वपुरुष सर्ववचन	ज्ज, ज्जा	

शौरसेनी अने मागधीना भविष्यत्काळना प्रत्ययो

शौरसेनीना वर्तमानकाळना प्रत्ययोनी आदिमा 'स्सि' उमेरवाथी ते बधा प्रत्ययो भविष्यत्काळना थाय छे ए उपरात पहेला पुरुषना एकवचनमा एक 'स्स' प्रत्यय जुदो पण छे. जेमके,

१ पु०	स्स, स्सिमि[2]	स्सिमो, स्सिमु, स्सिम ।
२ पु०	स्सिसि, स्सिसे	स्सिह, स्सिध, स्सिइत्था ।
३ पु०	स्सिदि, स्सिदे	स्सिंति, स्सिंते, स्सिइरे ।

---

१ प्राकृत, शौरसेनी वगेरेना 'से' 'ए' तथा 'दे' प्रत्ययो माटे जूओ पृ० २४९, २ टिप्पण

२ सस्कृतना भविष्यत्काळना प्रत्ययो अने पालिना भविष्यत्काळना प्रत्ययो एक सरखा छे, मात्र सस्कृतना 'स्य'ने बदले पालिमा 'स्स' वपराय छे

परस्मैपद	१	स्सामि	स्साम
	२	स्ससि	स्सथ
	३	स्सति	स्सति
आत्मनेपद	१	स्सं	स्साम्हे
	२	स्ससे	स्सव्हे
	३	स्सते	स्सते

शौरसेनीना उपर जणावेला प्रत्ययो साथे पालिना आ प्रत्ययो मळता आवे छे —

जूओ पालिप्र० २०४ नि० १३०

पैशाचीना भविष्यत्काळना प्रत्ययो

१ पु०	शौरसेनी प्रमाणे		
२ पु०	,,		
३ पु०	एग्य		शौरसेनी प्रमाणे

अपभ्रंशना भविष्यत्काळना प्रत्ययो'

अपभ्रंशना वर्तमानकाळना प्रत्ययोनी आदिमां 'स' अने 'सि' उमेरवाथी ते बधा प्रत्ययो भविष्यत्काळना थाय छे जेमके,

१ पु०	सउ, स्सिउ, समि, स्सिमि	सहु, स्सिहु, समो, स्सिमो, समु, स्सिमु, सम, स्सिम ।
२ पु०	सहि, स्सिहि, ससि, स्सिसि, ससे, स्सिसे	सहु, स्सिहु, सह, स्सिह, सध, स्सिध, सइत्था, स्सिइत्था ।
३ पु०	सदि, सदे, सइ, सए, स्सिदि, स्सिदे, स्सिइ, स्सिए	सहिं, संति, संते, सइरे । स्सिहिं, स्सिंते, स्सिंते, स्सिइरे,

---

उपर जणावेला भविष्यत्काळना बधा प्रत्ययो पर रहेता पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' थाय छे

रूपाख्यानो—

भण

एकवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—भणिस्स,	भणिस्स	शौरसेनी	भणिसउ,
भणेस्स,	भणेस्स	प्रमाणे	भणेसउ,
भणिस्सामि,	भणिस्सिमि		भणिस्सिउ
भणेस्सामि,	भणेस्सिमि		भणेम्सिउ
भणिहामि,			भणिसमि
भणेहामि,			भणेसमि
भणिहिमि,			भणिम्सिमि
भणेहिमि			भणेम्सिमि
सर्व पुरुष अने सर्व वचन } भणेज्ज भणेज्जा			
२ पुरुष—भणिहिसि	भणिस्सिसि	शौरसेनी	भणिसहि,
भणेहिसि	भणेस्सिसि	प्रमाणे	भणेसहि,
भणिहिसे	भणिम्सिसे		भणिस्सिहि
भणेहिसे	भणेस्सिसे		भणेम्सिहि
			भणिससि
			भणेससि
			भणिस्मिसि
			भणेम्सिमि
			भणिससे
			भणेससे

			भणिम्सिसे
			भणेम्सिसे
३ पुरुष—भणिहिइ	भणिस्सिदि	भनेय्य[1]	भणिसदि
भणेहिइ	भणेम्सिदि		भणेसदि
भणिहिए	भणिस्सिदे		भणिसदे
भणेहिए	भणेम्सिदे		भणेसदे
			भणिसइ
			भणेसइ
			भणिसए
			भणेसए
			भणिस्सिदि
			भणेस्सिदि
			भणिम्सिदे
			भणेस्सिदे
			भणिस्सिइ
			भणेम्सिइ
			भणिम्सिए
			भणेस्सिए

बहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—भणिस्सामो	भणिस्सिमो	शौरसेनी	भणिसहु
भणेस्सामो	भणेम्सिमो	प्रमाणे	भणेसहु
भणिहामो	भणिस्सिमु		भणिस्सिहु
भणेहामो	भणेस्सिमु		भणेस्सिहु

---

१ जूओ पृ० २३ नि० (१)

			भणेस्सिह
			भणिसध
			भणेसध
			भणिस्सिध
			भणेस्सिध
			भणिसइत्था
			भणेसइत्था
			भणिस्सिइत्था
			भणेस्सिइत्था
३ पुरुष—भणिहिंति	भणिस्सिति	शौरसेनी	भणिसहिं
भणेहिंति	भणेस्सिति	प्रमाणे	भणेसहिं
भणिहिंते	भणिस्सिते		भणिस्सिहिं
भणेहिंते	भणेस्सिते		भणेस्सिहिं
भणिहिइरे	भणिस्सिइरे		भणिसत्ति
भणेहिइरे	भणेस्सिइरे		भणेसति
			भणिस्सिति
			भणेम्सिति
			भणिसते
			भणेसते
			भणिम्सिते
			भणेम्सिते
			भणिसइरे
			भणेसइरे
			भणिम्सिइरे
			भणेम्सिइरे

['ज्ज' अने 'ज्जा' नो उपयोग प्राकृतनी पेठे शौरसेनी वगेरे बधी भाषाओमा करवानो छे]

ए रीते, व्यजनात धातुनां भविष्यत्काळना बधी जातनां रूपो समजवाना छे अने प्राकृतरूपोनो (भणिहिइ वगेरेनो) उपयोग अपभ्रशमा यथासभव थइ शके छे

हो (भू)

स्वरात धातु अने पुरुषबोधक प्रत्यय—ए बेनी—वच्चे भविष्यत्काळमा पण 'ज्ज' अने 'ज्जा' विकल्पे आवे छे.

आगळ जणावेला नियमो प्रमाणे 'हो' धातुना (बधा स्वरात धातुना) छ अगो थाय छे अने ते छ अगोने भविष्यत्काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी अने ए प्रत्ययनिमित्तक थतो फेरफार ए अगोमा करवाथी स्वरात धातुना बधा रूपाख्यानो तैयार थाय छे

छ अगो हो—हो, होअ, होएज्ज, होएज्जा, होज्ज, होज्जा

पा—पा, पाअ, पाएज्ज, पाएज्जा, पाज्ज, पाज्जा

नी—नी, नीअ, नीएज्ज, नीएज्जा, निज्ज, निज्जा

[बधा स्वरात धातुना छ छ अगो उपर्युक्त रीते करी लेवाना छे]

जे रीते 'भण्' ना बधी जातना रूपो आगळ बताववामा आव्या छे ते ज रीते आ छ ए अगना प्रत्येकना बधी जातना रूपो बनावी लेवाना छे जेमके,

एकवचन

प्राकृतरू० —	शौरसेनीरू० — मागधीरू० —	पैशाचीरू० —	अपभ्रशरू० —
१ पुरुष—होस्स	होस्सिमि	शौरसेनी	होसउ
होइस्स	होइस्सिमि	प्रमाणे	होइसउ

होएम्स	होएस्सिमि	होएसउ
होएज्जिम्स	होएज्जिम्सिमि	होएज्जिमउ
होएज्जेम्म	होएज्जेम्सिमि	होएज्जेमउ
होएज्जाम्स (ज्जम्स)	होएज्जा (ज्ज) स्सिमि	होएज्जासउ
होज्जिम्स	होज्जिम्सिमि	होज्जिमउ
होज्जेम्स	होज्जेम्सिमि	होज्जेसउ
होज्जाम्स (ज्जम्स)	होज्जा (ज्ज) म्सिमि	होज्जासउ

[प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशनो मात्र एक ज प्रत्यय लगाडीने नमूनारूपे 'हो' ना ए उए आगना रूपो उपर आपेल छे, ए ज प्रकारे दरेक प्रत्यय लगाडीने 'हो' ना (स्वरांत धातुना) बधा रूपो समजी लेवाना छे]

ए ज रीते 'हो' नी पेठे पा, ला, दा, मिला, गिला अने था वगेरे स्वरांत धातुओना दरेकना छ छ अगो करी बधा रूपाख्यानो बनावी लेवाना छे

भविष्यत्काळनां सम्कृत सिद्धरूपोने पण वर्णविकारना नियमो लगाडी प्राकृतमा वापरी शकाय छे जेमके –

स०– मोक्ष्याम =भोक्खामो (प्रा०)
भविष्यति=भविस्सइ (,,)
करिष्यति=करिस्सइ (,,)
चरिष्यति=चरिस्सइ (,,)
भविष्यामि=भविस्सामि (,,) इत्यादि

आर्षप्रयोगमा केटलाक रूपो तो आ ज प्रकारना वपराएला छे

क्रियातिपत्ति-(परोक्षभविष्य)

ज्यारे शरतवाळा बे वाक्योनु एक संयुक्त वाक्य बनेलु होय अने तेमा देखाती बन्ने क्रियाओ कोइ सांकेतिक क्रिया जेवी जणाती होय त्यारे आ 'क्रियातिपत्ति' नो प्रयोग थाय छे

प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना प्रत्ययो:

सर्व पुरुष, सर्व वचन } ज्ज, ज्जा, न्त, माण

धातुने 'न्त,' 'माण' प्रत्यय लाग्या पछी तैयार थएल अकारांत अंगना ते ते भाषा प्रमाणे नामनी प्रथमा विभक्ति जेवा ज रूपाख्यानो थाय छे

व्यंजनांत—भणेज्ज, भणेज्जा, भणंतो, भणमाणो } सर्व पुरुष, सर्व वचन

स्वरांत—होज्ज, होज्जा, होंतो, होमाणो } „ „

---

[1]आज्ञार्थ

१ पुरुष— मु मो

---

१ पालिमा वपराता आज्ञार्थ अने विध्यर्थ प्रत्ययो आ प्रमाणे छे

	आज्ञार्थ		विध्यर्थ	
परस्मैपद	१ मि	म	एय्यामि (प्रा० एज्जामि) ए,	एय्याम (प्रा० एज्जाम)
	२ हि	थ	एय्यासि (प्रा० एज्जासि) ए,	एय्याथ (प्रा० एज्जाह)
	३ तु	अतु	एय्य (प्रा० एज्ज) ए,	एय्यु
आत्मनेपद	१ ए	आमसे	एय्य, ए	एय्यामे
	२ स्सु	व्हो	एथो	एय्यव्हो
	३ त	अंत	एथ	एर

—जूओ पालिप्र० पृ० १९१ पंचमी तथा पृ० १०४ सप्तमी

२ पुरुष— सु, *इज्जसु, *इज्जहि, *इज्जे हि ह
(अप० ?, उ, ए)

३ पुरुष— उ (शौ० दु) न्तु

सर्व पुरुष, सर्व वचन—ज्ज, ज्जा

उपरना बधा प्रत्ययो पर रहेता धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' थाय छे

'मु' अने 'मो' प्रत्यय पर रहेता धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'आ' अने 'इ' विकल्पे थाय छे

अकारांत अंगने लागेला 'हि' प्रत्ययनो लोप थाय छे.

हस—

१ पु०—	हसामु, हसिमु, हसेमु, हसमु	हसामो, हसिमो, हसेमो, हसमो
२ पु०—	हसमु, हसेसु, हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे, हस	हसह, हसेह.
३ पु०—	हसउ, हसेउ	हसन्तु, हसेन्तु

सर्व पु० सर्व वचन—हसेज्ज, हसेज्जा

पालिना विध्यर्थप्रत्ययो थोडा रूपांतर साथे प्राकृतमां वपराया छे. प्राकृतमां धातुना विध्यर्थक रूपोमां जे 'एज्ज' अने 'एज्जा' नो अंश आवे छे ते पालिना 'एय्य' अने 'एय्या' नुं जकारवालुं रूपांतरमात्र छे अने ए पालिप्रत्ययो साथे बतावेलुं छे

* आ बधे प्रत्ययो धातुना अकारांत अंगने ज लागे छे

? कोइ ठेकाणे तो 'ए' ने बदले 'आ' पण थई जाय छे जेमके—सुण—'सुणेउ' ने बदले सुणाउ (शृणोतु)

हो–

१ पु०– होआमु, होइमु,	होआमो, होइमो,
होएमु, होअमु,	होएमो, होअमो,
*होएज्जामु, होएज्जिमु,	होएज्जामो, होएज्जिमो,
होएज्जेमु, होएज्जमु,	होएज्जेमो, होएज्जमो,
होज्जामु, होज्जिमु,	होज्जामो, होज्जिमो,
होज्जेमु, होज्जमु,	होज्जेमो होज्जमो,
होमु, होज्ज, होज्जा	होमो, होज्ज, होज्जा

पूर्वे प्रमाणे 'हो' ना छ अंगो बनावी आज्ञार्थना बधा रूपाख्यानो 'हस'नी पेठे साधवाना छे अने ए रीते बधा स्वरांत धातुना (दा, ला, पा वगेरेना) रूपाख्यानो समजवाना छे

[शौरसेनीनो प्रत्यय मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां पण वापरवानो छे]

शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना रूपाख्यानो

हस्

१ पु०	हसामु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	हसामो वगेरे प्राकृत प्रमाणे
२ पु०	हससु वगेरे ,, ,,	हसह वगेरे ,, ,,
३ पु०	हसदु, हसेदु	हसदु वगेरे ,, ,,

अपभ्रंशनां रूपाख्यानो

१ पु०	हसामु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	हसामो वगेरे प्राकृत प्रमाणे
२ पु०	हसि, हसु, हसे, हससु	हसह वगेरे ,, ,
	*वगेरे प्राकृत प्रमाणे	

---

* पृ० २८४ 'ज्ज' अने 'ज्जा'

३ पु०	हसद[1], हसेदु, हसउ, हसेउ	हसतु वगेरे प्राकृत प्रमाणे

हो

१ पु०	होआमु वगेरे प्राकृत प्रमाणे होइ, होउ, होए,	होआमो वगेरे प्राकृत प्रमाणे
२ पु०	होअसु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	होअह वगेरे प्राकृत प्रमाणे
३ पु०	होअदु, होएदु होअउ, होएउ	होअतु वगेरे प्राकृत प्रमाणे

ए रीते दरेक व्यंजनांत अने स्वरांत धातुओनां रूपो करी लेवानां छे

विध्यर्थनी बधी प्रक्रिया आज्ञार्थना जेवी छे, विशेष ए छे के, सर्वपुरुष अने सर्ववचनमां एक 'ज्जइ' प्रत्यय वधारे लागे छे, ए 'ज्जइ' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना 'अ' 'ए' थाय छे

सर्वपुरुष | होज्जइ, होज्ज, होज्जा (भवेत्)
सर्ववचन | हसेज्जइ, हसेज्ज, हसेज्जा (हसेत्)

[आर्षप्रयोगोमां विध्यर्थसूचक केटलांक खास रूपो मळी आवे छे, ते आ छे –

१ जूओ पृ० १० असंयुक्त 'कादि' लोप–हसदु=हसउ
२ जूओ पृ० ३५ नान्द नि० (१)

सिया	(स्यात्)
'चरे	(चरेत्)
पढे	(पठेत्)
अच्छे	(आच्छिन्द्यात्)
अब्भे	(आभिन्द्यात्)

आ रूपो विपर्ययसूचक संस्कृत सिद्ध रूपो उपरथी सीधी रीते वर्णविकारना नियमो द्वारा सधाएला छे ते हकीकत तेने पडखे ( ) आ निशानमा आपेला रूपो उपरथी जणाइ आवे छे ए रीते बीजा संस्कृतरूपो उपरथी पण प्राकृतरूपो साधी शकाय छे]

अनियमित रूपाख्यान

[2]अस्–थवु

वर्तमानकाळ

१ पुरुष	अत्थि, म्हि, [3]अंसि	अत्थि, म्हो, म्ह
२ पुरुष	अत्थि, सि	अत्थि
३ पुरुष	अत्थि	अत्थि

---

१ पालिमा पण त्रणे पुरुषना एकवचनमा विपर्ययसूचक 'ए' प्रत्यय वपराएलो छे (जुओ पृ० २७५ १ टिप्पण) ए अनुसारे पण आ रूपो साधी शकाय छे

२ प्राकृतमा 'अस्' धातुना घणा थोडा रूपो थाय छे, भूतकाळ सिवाय बीजा अथवा एक मात्र 'अत्थि' रूपथी पण काम चाली शके छे पालिमा 'अस्' ना दरेक काळवार नोखा नोखा रूपो थाय छे अने पालिना ए रूपो, संस्कृत रूपो साथे घणां मळतां आवे छे

भूतकाल

सर्व पुरुष, सर्व वचन— } आसि, अहेसि ।

विध्यर्थ, आज्ञार्थ, भविष्यत्काल

सर्व पुरुष, सर्व वचन— } अत्थि ।

अस् (पालिरूपो)

वर्तमाना—	१	अस्मि, अम्हि	अस्म, अम्ह (अम्हसे)
	२	असि, अत्थि	अत्थ
	३	अत्थि	सन्ति
सप्तमी—	१	अस्सं	अस्साम
(विध्यर्थ)	२	अस्स	अस्सथ
	३	अस्स,	अस्सु,
		सिया	सियु
पञ्चमी—	१	अस्मि, अम्हि	अस्म, अम्ह
(आज्ञार्थ)	२	आहि,	अत्थ,
	३	अत्थु,	सन्तु
अद्यतनी—	१	आसिं	आसिम्ह
(भूतकाल)	२	आसि	आसित्थ
	३	आसि	आसुं, आसिंसु (आसु)

—जुओ पालिप्र० पृ० १७८–१९८–१९२–२२३

'अस्' ना रूपो

३ जुओ आचारांगसूत्रनो आरंभ—

“पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहं असि” इत्यादि आ आर्षरूप संस्कृतना 'अस्मि' रूपनुं रूपांतर जणाय छे

[1]कृ—करवु

मात्र भूतकाळ अने भविष्यत्काळमा 'कृ' धातुनो 'का' आदेश थाय छे

भूतकाळ

कासी, काही, काहीअ, काअसी, काअही, काअहीअ

भविष्यत्काळ

फक्त प्रथम पुरुषना एकवचनमा 'काह' रूप वधारे थाय छे, बाकी बधा रूपो 'हो' धातुनी सरखा छे

[2]काहिइ, काहिसि, काहिमि इत्यादि ।

दा—देवु

मात्र भविष्यत्काळमा प्रथम पुरुषना एकवचनमा 'दा' धातुनु 'दाह' रूप वधारे थाय छे, बाकी बधा रूपो 'हो' धातुनी सरखा छे

दाह, दाहिमि, दाहिसि, दाहिइ, इत्यादि ।

---

१ 'कृ' नु भूतकाळसूचक 'अकासि' अने 'अकासि' (त्रीजा पुरुषनु एकवचन अने प्रथम पुरुषनु एकवचन) रूप पालिमा थाय छे, ए, प्राकृतना 'कासी' रूप साथे मळतु गणाय एम —जूओ पालिप्र० पृ० २२५ 'कृ'ना रूपो

२ प्राकृतरूपो साथे मळता आवता 'कृ'ना भविष्यत्काळना पालिरूपो आ प्रमाणे छे

१	काहामि	काहाम
२	काहिसि	काहिथ
३	काहिति	काहिंति

—जूओ पालिप्र० पृ० २०९ 'कृ' ना रूपो

मात्र भविष्यत्काळमा नीचेना धातुओना नीचे प्रमाणे आदेशो थाय छे

[1]श्रु– सोच्छ।	दृश–दच्छ।	भिद्–भेच्छ।
गम– गच्छ।	मुच–मोच्छ।	भुज्–भोच्छ।
रुद– रोच्छ।	वच–वोच्छ।	
विद– वेच्छ।	छिद्–छेच्छ।	

आ धातुओना भविष्यत्काळ सबंधी रूपाख्यानो 'भण' धातुनी जेवा थाय छे विशेषता ए छे के, आ धातुओने लागता भविष्यत्का-

---

[1] प्राकृतमा 'श्रु' वगेरे धातुओना 'सोच्छ' वगेरे अगो बने छे तेम पालिमा पण बने छे

पालिअगो

श्रु—	सोस्स–	प्रथम पुरुषनु एकवचन–	सोस्स
गम —	गच्छ–		
रुद—	रुच्छ	,,	गच्छिस्सामि
		,,	रुच्छिस्सामि
दृश	{ दक्ख { दिच्छ	तृतीय पुरुषनु एकवचन–	दिच्छति
मुच	मोक्ख	,,	मोक्खति
वच	वक्ख	,,	वक्खति
छिद	छेच्छ	,,	छेच्छति
भुज्	भोक्ख	,,	भोक्खति

—जूओ पालिप्र० पृ० २०६–२०७

[वर्णपरिवर्तनना नियमद्वारा 'श्रु' वगेरेना सस्कृत रूपोमाथी पण उपर जणावेला प्राकृत अने पालिअगो नीपजावी शकाय छे द्रक्ष्यति, मोक्ष्यति, भोक्ष्यते, वक्ष्यति, छेत्स्यति, रुत्स्यति (रुदिष्यति) श्रोष्यति– जूओ क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, नि० २२ पृ० ३ त्स=च्छ नि० २६, पृ० ३२ अने सयुक्त 'मादि' लोप पृ० १५]

ळना जेटला प्रत्ययो 'हि' आदिवाळा छे तेमाना 'हि' नो लोप विकल्पे थाय छे तथा प्रथम पुरुषना एकवचनमा ए बधा धातुओनु एक अनुस्वारात रूप पण वधारे थाय छे

१ पुरुष–सोच्छं, सोच्छिमि, सोच्छेमि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि, सोच्छिस्सं, सोच्छेस्सं, सोच्छिस्सामि, सोच्छेस्सामि, सोच्छिहामि, सोच्छेहामि ।

२ पुरुष–सोच्छिसि, सोच्छेसि, सोच्छिहिसि, सोच्छेहिसि, सोच्छिसे, सोच्छेसे, सोच्छिहिसे, सोच्छेहिसे ।

३ पुरुष–सोच्छिइ, सोच्छेइ, सोच्छिहिइ, सोच्छेहिइ । सोच्छिए, सोच्छेए, सोच्छिहिए, सोच्छेहिए । इत्यादि ।

[सूचना–आख्यातने लगता बधी भाषाना (प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रशना) प्रत्ययो आगळ जणावेला छे, आ चालु प्रकरणमा प्रेरकभेदी, सन्नभेदी वगेरे आख्यातने लगती हकीकत जणाववानी छे, तेमा मात्र प्राकृतना ज एक एक प्रत्ययद्वारा बधा उदाहरणो देखाडेला छे तो अभ्यासीए पोतानी मेळे प्रेरकभेदी, सन्नभेदी वगेरे अगोने शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रश भाषाना प्रत्ययो लगाडी ते ते भाषाना रूपो बनावी लेवा]

प्रेरकरूप

प्रेरकअग बनाववानी रीत

१ धातुने अ, ए, आव अने आवे [1]प्रत्यय लगाडवाथी तेनु प्रेरक अग तैयार थाय छे

---

१ पालिमा पण साधारण रीते प्रेरणाना अर्थमा 'अ,' 'ए,' 'आप' अने 'आपे' लगाडवाथी धातुमाथना चार अगो बने छे –

नामधातु

प्रेरकप्रक्रिया सिवाय संस्कृतमां बीजी पण अनेक प्रक्रियाओ छे, जेमके–[1]सन्नतप्रक्रिया, यङन्तप्रक्रिया, यङ्लुगन्तप्रक्रिया अने नामधातुप्रक्रिया परंतु प्राकृतमां ए प्रक्रियाओ माटे कोई खास विशेष

---

[1] पालिमां पण सन्नत, यङन्त, यङ्लुगन्त अने नामधातुनी प्रक्रिया संस्कृतनी पेठे थाय छे —

सन्नत–	जिगुच्छति	(जुगुप्सते)
	जिघच्छति	(जिघत्सति)
	पिपासति	(पिपासति)
	जिगिसति	(जिगीषति)
		(जिहीर्षति)
	तितिच्छति / तिकिच्छति	(चिकित्सति)
	वीमंसते	(मीमांसते)
सन्नतप्रेरक–	जुगुच्छयति	(जुगुप्सयति)
यङन्त–	लालप्पति	(लालप्यते)
	दद्दल्लति	(दादल्यते)
यङ्लुगन्त–	चङ्कमति	(चङ्क्रमीति)
	जङ्गमति	(जङ्गमीति)
	लालपति	(लालपीति)
नामधातु–	पब्बतायति	(पर्वतायते–पर्वत इव आचरति)
	छत्तीयति	(छत्रीयति पुत्रम्)
	अतिहत्थयति	(अतिहस्तयति–हस्तिना अतिक्रामति)
	उपवीणयति	(वीणया उपगायति)
	कुसलयति	(कुशलं पृच्छति)

–पालि० पृ० २२९–२३३

विधान तो नथी अने प्राकृत साहित्यमा ए प्रक्रियाना रूपाख्याने उपलब्ध थाय छे एथी कल्पी शकाय छेके, ते ते प्रक्रियाना(संस्कृत) सिद्ध रूपोमा, आगळ जणावेल वर्णविकारना नियमानुसार फेरफार करी ते रूपोनो प्रयोग करवामा आवे (ल) छे जेमके—

संस्कृत	प्राकृत
शुश्रूषति—	सुस्सूसइ। (सन्नत)
लालप्यते—	लालप्पइ। (यङत)
चङ्क्रमीति—	चकमइ। (यङ्लुबत) चक्रमण। (चङ्क्रमणम्)
	इत्यादि।

मात्र नामधातु माटे विशेषता आ छे

नामधातुओने लागेल 'य' प्रत्ययनो लोप विकल्पे थाय छे

गुरुकायते—गरुआइ, गरुआअइ (गुरुरिव आचरति–गुरुनी जेवुं आचरण करे छे)

दमदमायते—दमदमाइ दमदमाअइ (दम दम थाय छे)

लोहितायते— लोहिआए–इ, लोहिआअए–इ। (लाल थाय छे)

हसायते— हसाए–इ, हसाअए,–इ। (हसनी जेम आचरे छे)

तमायते— तमाए–इ, तमाअए–इ। (अंधारा जेवु छे)

अप्सरायते— अच्छराए,–इ, अच्छराअए–इ।
(अप्सरानी जेम आचरे छे)

उन्मनायते— उम्मणाए–इ, उम्मणाअए,–इ।(उन्मना थाय छे)

कष्टायते— कट्ठाए,–इ, कट्ठाअए,–इ।
(कष्टने माटे क्रमण करे छे)

धूमायते धूमाए-इ, धूमाअए-इ। (धूमने उद्गमे छे)
सुखायते सुहाए-इ, सुहाअए,-इ। (सुखने अनुभवे छे)
शब्दायते सद्दाए, इ, सद्दाअए-इ। (शब्द करे छे-बोलावे छे)

इत्यादि.

सगभेद

वर्तमानकाळ, विध्यर्थ, आज्ञार्थ अने (ह्यस्तन) भूतकाळमां धातुने 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं सक्षभेदी अंग

---

१ पालिमां सक्षभेदी अंग बनाववा माटे 'य' 'इय' अने 'ईय' तथा क्याय 'इस्य' (प्रा० इअ, इज्ज) प्रत्ययनो व्यवहार थाय छे —

य—	पच्चते, पच्चति	(पच्यते)
	बुज्झते, बुज्झति	(बुध्यते)
	वुच्चते, वुच्चति	(उच्यते)
य अने इय—	तुस्सते, तुसियति	(तुष्यते)
	पुच्छते, पुच्छियति	(पृच्छयते)
	भजियति	(भज्यते)
इस्य—	करिस्यति, करिस्यते	(क्रियते)
ईय—	महीयति	(मह्यते)
	मथीयति	(मथ्यते)
	करीयति	(क्रियते)
	कय्यति	
	कायरति	

—जूओ पालिप्र० पृ० २३४–२३७

बने छे अने ते आगने प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रश भाषाना ते ते पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी तेना रूपाख्यानो थाय छे

पैशाचीनी विशेषता

पैशाचीमा धातुनु सप्रभेदी अग बनाववु होय तो पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडता पहेला धातुने 'ईअ' 'इज्ज' ने बदले 'इय्य' प्रत्यय लगाडवो जोईए जेमके,

स०	प्रा०	शौ० मा०	पै०
गीयते	गिज्जए	गिज्जदे	गिय्यते
दीयते	दिज्जए	दिज्जदे	दिय्यते
रम्यते	रमिज्जए	रमिज्जदे	रमिय्यते
पठ्यते	पढिज्जए	पढिज्जदे	पढिय्यते

कृ

'कृ' धातुनु सप्रभेदी अग बनाववु होय तो पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडता पहेला एने ('कृ' धातुने) ज 'इय्य' ने बदले 'ईर' प्रत्यय लगाडवो जोईए

स० क्रियते प्रा० करिज्जए शौ० मा० [1]करिज्जदे पै० कीरते
करीअए करीअदे

अपभ्रशनी विशेषता

सस्कृतमा थता प्रथम पुरुषना 'क्रिये' रूपने बदले अपभ्रशमा 'कीसु' रूप पण वपराय छे अने पक्षे यथाप्राप्त

---

१ कारिज्जदे, करीअदे—जुओ पृ० २६ ८-९.

साधारण सत्त्वभेदी अंगो

धातु	सत्त्वभेदी अंग	धातु	सत्त्वभेदी अंग
भण्–	भणीअ, भणिज्ज ।	पा–	पाईअ, पाइज्ज ।
हस्–	हसीअ, हसिज्ज ।	दा–	दाईअ, दाइज्ज ।
रच्–रय्–	रयीअ, रयिज्ज ।	ला–	लाईअ, लाइज्ज ।
पत्–पड्–	पडीअ पडिज्ज ।	ध्या–झा–	झाईअ, झाइज्ज ।
कथ्–बोह	बोहीअ, बोहिज्ज ।	हो–	होईअ, होइज्ज ।
		सु–	सुईअ, सुइज्ज ।

इत्यादि ।

ए रीते धातुमात्रनां सत्त्वभेदी अंगो बनावी लेवाना छे आ अंगोना रूपाख्यानो बनाववानी प्रक्रिया, कर्तरिरूपाधिकारमा जणावेल प्रक्रिया जेवी छे जेमके–

वर्तमानकाळ

(भण्यते ग्रन्थः)

३ पु०–(गयो) भणीअइ,–एइ, अए, एए, एज्ज, एज्जा
भणिज्जइ, ज्जेइ, ज्जए, ज्जेए, ज्जेज्ज, ज्जेज्जा ।

(भण्यन्ते ग्रन्था)

(गया) भणीअंति, न्ते, एंति, एन्ते, भणीअइरे, एइरे
भणिज्जंति, न्ते, ज्जेंति, ज्जेन्ते, ज्जइरे, ज्जेइरे,
भणीएज्ज, एज्जा, भणिज्जेज्ज, ज्जेज्जा ।

इत्यादि ।

(कथ्यसे त्वम्)

२ पु०–(तुम) बोहीअसि, एसि, असे, एसे,
बोहिज्जसि, ज्जेसि, ज्जसे, ज्जेसे

(कृत्य वे यूयम्)

(तुम्हे) बोहीअह, एह, बोहीएइत्था, अइत्था ।

(त्वया अह सूये)	त्वया वय सूमहे
१ पु०–(अह) सूईआमि, एमि, आमि,	(अम्हे) सूईआमो, मु, म,
सूइज्जामि, ज्जेमि ज्जमि	सूईइमो, मु, म,
सूईएज्ज, एज्जा	सूईएमो, मु, म,
सूइज्जेज्ज, ज्जेज्ज ।	सूईअमा, मु, म,
	सूइज्जामो, मु, म,
	सूइज्जिमो, मु, म,
	सूइज्जेमो, मु, म,
	सूइज्जमो, मु, म,
	सूईएज्ज, ज्जा,
	सूइज्जेज्ज, ज्जा ।

विध्यर्थ

भणीअउ, एउ	भणीअतु एतु ।
भणिज्जउ, ज्जेउ	भणिज्जतु, ज्जेतु ।
भणीएज्ज, ज्जा	भणीएज्ज, ज्जा, ज्जइ ।
भणीएज्जइ	
भणिज्जेज्ज, ज्जा	भणिज्जेज्ज, ज्जा, ज्जइ ।
भणिज्जेज्जइ	

आज्ञार्थ

भणीअउ, एउ	भणीअतु, एतु ।
भणिज्जउ, ज्जेउ	भणिज्जतु, ज्जेतु ।
भणीएज्ज, ज्जा	भणीएज्ज, ज्जा ।
भणिज्जेज्ज, ज्जा	भणिज्जेज्ज, ज्जा ।

भूत–(गस्तनभूत)

भणीअमी, ही, हीअँ ।

भणिज्जमी, ही, हीअ ।

१ जे काळमा सद्यभेदसूचक 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय धातुने नथी लागता ते काळमा तेना सद्यभेदी रूपो कर्तरिरूपो जेवा समजवाना छे, जेमके–

(अद्यतन) भूतकाळ–भण–भणीअ ।

भविष्यत्काळ–भण–भणिहिइ, भणिहिए, इत्यादि ।

क्रियातिपत्ति–भण–भणेज्ज, ज्जा, भणतो, भणमाणो, इत्यादि ।

प्रेरक सद्यभेद

१ धातुनु प्रेरक सद्यभेदी रूप करवु होय त्यारे धातुने प्रेरणासूचक एक मात्र 'आवि' प्रत्यय लगाडी, ते तैयार थएल अगने सद्यभेदसूचक 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त काळमा लगाडी प्रत्येक धातुनु प्रेरक सद्यभेदी अग बनाववानु छे

२ प्रेरणासूचक कोइ पण प्रत्यय लगाड्या विना मात्र उपान्त्य 'अ' नो दीर्घ करी अने सद्यभेदसूचक 'इअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त काळमा लगाडीने पण प्रत्येक धातुनु प्रेरक सद्यभेदी अग तैयार थाय छे

(आ सिवाय बीजी रीते प्रेरक सद्यभेदी अग बनी शकतु नथी)

ए रीते तैयार थएल प्रेरक सद्यभेदी अगना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया कर्तरि रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जेवी छे

प्रे० सह्य० प्रे०स०अग–

कर + आवि–करावि + ईअ– करावीअ– करावीअइ, ए, सि, से,
इत्यादि

कर– कार + ईअ– कारीअ– कारीअइ, ए, सि, से,
इत्यादि

कर + आवि–करावि + इज्ज–कराविज्ज–कराविज्जइ, ए, सि, से,
इत्यादि

कर– कार + इज्ज– कारिज्ज– कारिज्जइ, ए, सि, से,
इत्यादि

हस + आवि–हसावि + ईअ– हसावीअ– हसावीअइ, ए, सि, से
इत्यादि

हस + हास + ईअ– हासीअ– हासीअमि, आमि, एमि
इत्यादि

हस + हसावि + इज्ज–हसाविज्ज–हसाविज्जित्था, विज्जेह,
ज्जह, इत्यादि

हस + हास + इज्ज–हासिज्ज–हासिज्जति, न्ते, ज्जइरे,
इत्यादि

ए रीते धातु मात्रना प्रेरक सह्यभेदी अंगो तैयार करी सर्व काळना रूपाख्यानो समजी लेवाना छे

ज्या प्रेरक अंगने 'ईअ' अने 'इज्ज'प्रत्यय नथी लागता त्या प्रेरक अगथी सीधा पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी कर्तरिरूपाख्यानोनी पेठे प्रेरक सह्यभेदी रूपाख्यानो समजवाना छे

जेमके–भविष्यत्काळ

प्रे०

कर + आवि–करावि–कराविहि-इ, ए, -सि, से, -मि,
विहामि, विस्सामि, विस्स

ज़–जीर–जीरइ, जीरेहिइ, जीराविइ, जीराविहिइ, इत्यादि
अर्ज विढप्प विढप्पइ, विढप्पेहिइ, विढप्पाविइ, विढप्पाविहिइ, इत्यादि
ज्ञा–णव–णव्वइ, णव्वेहिइ, णव्वाविइ, णव्वाविहिइ, इत्यादि
ज्ञा–णज्ज णज्जइ, णज्जेहिइ, णज्जाविइ, णज्जाविहिइ, इत्यादि
वि+आ–ह्या+ह–वाहिप्प–वाहिप्पइ, वाहिप्पेहिइ, वाहिप्पाविइ,
वाहिप्पाविहिइ, इत्यादि
ग्रह्–घेप्प–घेप्पइ, घेप्पेहिइ, घेप्पाविइ, घेप्पाविहिइ, इत्यादि,
स्पृश–छिप्प–छिप्पइ, छिप्पेहिइ, छिप्पाविइ, छिप्पाविहिइ, इत्यादि,
सिच् / स्निह् } सिप्प सिप्पए, सिप्पेहिए, सिप्पाविइ, सिप्पाविहिइ, इत्यादि,
आरभ् -आढप्प आढप्पेइ, आढप्पेहिए, आढप्पाविइ, आढप्पाविहिइ,
इत्यादि
जि–जिव्व–जिव्वए, जिव्वेहिए, जिव्वाविइ जिव्वाविहिइ इत्यादि
श्रु–सुव्व–सुव्वए, सुव्वेहिए, सुव्वाविइ, सुव्वाविहिइ इत्यादि
हु–हुव्व–हुव्वए हुव्वेहिइ, हुव्वाविइ, हुव्वाविहिइ, इत्यादि
स्तु–थुव्व–थुव्वइ, थुव्वेहिइ, थुव्वाविइ, थुव्वाविहिइ, इत्यादि.
लू–लुव्व–लुव्वइ, लुव्वेहिइ, लुव्वाविइ, लुव्वाविहिइ, इत्यादि
पू–पुव्व–पुव्वइ, पुव्वेहिइ, पुव्वाविइ, पुव्वाविहिइ, इत्यादि.
धू–धुव्व–धुव्वए, धुव्वेहिइ, धुव्वाविइ, धुव्वाविहिइ, इत्यादि.

प्रकरण १३

कृदत

[1]वर्तमानकृदत

१ धातुना अगने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु कर्तरि-वर्तमान-कृदत बने छे

२ धातुना प्रेरक अगने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु प्रेरक-कर्तरि-वर्तमान-कृदंत बने छे

३ धातुना सह्यभेदी अगने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु सह्यभेदी-वर्तमान-कृदत बने छे

४ धातुना प्रेरक सह्यभेदी अगने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु प्रेरक-सह्यभेदी-वर्तमान-कृदत बने छे

५ वर्तमान कृदतना 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय पर रहेता पूर्वना 'अ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे

कर्तरि वर्तमान कृन्त

पु०	न०	स्त्री०
मण्-भणतो, भणमाणो ।	भणत भणमाण ।	भणती, भणता ।

(शौ० मा० भणदो)

---

[1] कृदन्ना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया नामनी जेवी छे

[2] पालिमा पण वर्तमान कृदत बनाववा माटे सत्त 'न्त' अने 'मान' प्रत्ययनो उपयोग थाय छे —

गच्छतो, गच्छमानो स्त्री गच्छती, गच्छती

करोतो, कुब्बतो, कुरुमानो, करानो

खादंतो, खादमानो

—पालिप्र० पृ० २४८-२४९

[3] आ प्रत्ययवाळु रूप स्त्रीलिंगमा ज वपराय छे

[1]भणेंतो, भणेमाणो। भणेंत, भणेमाण। भणेंती, भणेंता।
भणमाणी, भणमाणा।
भणेमाणी, भणेमाणा।
भणई, भणेई।

पा– पाअंतो, पाअमाणो। पाअंत, पाअमाण। पाअंती, पाअंता।
(शौ० मा० पाअंदो)
पाएंतो, पाएमाणो। पाएंत, पाएमाण। पाएंती, पाएंता।
पातो, पामाणो। पात, पामाण। पाती, पाता।
पाअमाणी, पाअमाणा।
पाएमाणी, पाएमाणा।
पामाणी, पामाणा।
पाअई, पाएई।
पाई।

रु–रुवंतो, (शौ० मा० [2]रुवंदो) रुवमाणो। रुवंत, रुवमाण। रुवंती, रुवंता।
रुवेंतो, रुवेमाणो। रुवेंत, रुवेमाण। रुवेंती रुवेंता।
रुवमाणी, रुवमाणा।
रुवेमाणी, रुवेमाणा।
रुवई, रुवेई।

हृ० हरंतो (शौ० मा० हरंदो) हरमाणो। हरंत, हरमाणं। हरंती, हरंता।
हरेंतो हरेमाणो। हरेंत हरेमाण। हरेंती, हरेंता।
हरमाणी, हरमाणा।
हरेमाणी, हरेमाणा।
हरई, हरेई।

---

१ भणिता– जुओ दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर पृ० ४
२ रुवंतो + रुवंदो जुओ पृ० ३५ त=द,

वृष्–वरिसंतो, (शौ०मा०वरिसंदो) वरिसमाणो । वरिसत, वरिसमाण। वरिसती,वरिसंता ।

वरिसेंतो,वरिसेमाणो । वरिसेंत,वरिसेमाण । वरिसेंती,वरिसेंता । वरिसमाणी, वरिसमाणा । वरिसेमाणी, वरिसेमाणा । वरिसई, वरिसेई ।

नी–नेंतो, [2](नेंतो शो०मा०) नेमाणो। नत,नेमाण । नेंती, नेंत. । नेमाणी, नेमाणा । नेई ।

तुस्–तूसतो, (शौ०मा०तूसदो) तूसमाणो । तूसत, तूसमाण । तूसती, तूसता ।

तूसेंतो, तूसेमाणो । तूसेंत, तूसेमाण । तूसेंती, तूसेंता । तूसमाणी, तूसमाणा । तूसेमाणी, तूसेमाणा । तूसई तूसेई ।

दा–[3]देंतो (शौ०मा०देंदो) देमाणो । देंत, देमाण । देंती, देंता । देमाणी, देमाणा । देई ।

---

१ वरिसतो + वरिशदो – जूओ पृ० २७ स–श ए प्रमाणे तूसदो, सुस्सूसदो, शोशर्यिदो वगेरे।

२ जूओ पृ० २४६ नि० ६

३ दा+अ+अतो=दा+ए–न्तो=देंतो ।
दा+अँ+माणो=दा+ए+माणो=देमाणो ।

चल्–चलन्तो, चलमाणो। चलन्त, चलमाण। चलन्ती, चलन्ता।
(शौ० मा० चलन्दो)
चलेन्तो, चलेमाणो। चलेन्त, चलेमाण। चलेन्ती, चलेन्ता।
चलमाणी, चलमाणा।
चलेमाणी, चलेमाणा।
चलई, चलेई।

गिद्–गिज्झन्तो, गिज्झमाणो। गिज्झन्त, गिज्झमाण। गिज्झन्ती, गिज्झन्ता।
(शौ० मा० गिज्झन्दो)
गिज्झेन्तो, गिज्झेमाणो। गिज्झेन्त, गिज्झेमाण। गिज्झेन्ती, गिज्झेन्ता।
गिज्झमाणी गिज्झमाणा।
गिज्झेमाणी, गिज्झेमाणा।
गिज्झई गिज्झेई।

२३२ { तुर्–[1]तुरन्तो, तुरमाणो। तुरन्त, तुरमाण। तुरन्ती, तुरन्ता।
{ त्वर (शौ० मा० तुरन्दो)
तुरेन्तो, तुरेमाणो। तुरेन्त तुरेमाण। तुरेन्ती, तुरेन्ता।
तुरमाणी, तुरमाणा।
तुरेमाणी, तुरेमाणा।
तुरई, तुरेई।

शुश्रूष्–सुस्सूसन्तो, (शौ० मा० सुस्सूसन्दो) [2]सुस्सूसमाणो।
लालप्य्–लालप्पन्तो, (शौ० मा० लालप्पन्दो) लालप्पमाणो।
(पै० [3]लाळप्पन्तो)
गुरुकाय[4]–गरुअन्तो, (शौ० मा० गरुअन्दो) गरुअमाणो।

---

१ 'तुरन्तो' नी पेठे 'तूरन्तो' वगेरे रूपो पण करी लेवां

२ सुस्सूसन्त, सुस्सूसन्ती वगेरे रूपो पण करी लेवां

३ जुओ पृ० २६ ल–ळ

४ 'गुरुकायते' नामधातुनुं रूप छे, ए उपरथी 'गुरुकाय' ए वर्तमान कृदन्तनुं अंग बन्युं छे,

प्रेरक कर्तरि वर्तमान कृदंत

कर—कारतो[1], (शौ० मा० कारदो) कारमाणो ।
कारेंतो, कारेमाणो ।
करावतो, करावमाणो ।
करावेंतो, करावेमाणो ।
शुष—सोसविंतो, (शौ० मा० सोसविंदो) सोसतो, सोसेंतो,
सोसावतो, सोसावंतो
सोसविमाणो, सोसमाणो सोसेमाणो, सोसावमाणो,
सोसावेमाणो इत्यादि

सत्वभेदी वर्तमान कृदत

भण—भणिज्जतो, भणिज्जमाणो, भणीअतो, भणीअमाणो । पु०—
(शौ० मा० भणिज्जदो) ([2]प० भनिय्यतो)
भणिज्जत,–ज्जमाण, भणीअत,–अमाण । न०—
भणिज्जती,–ता, जई, भणीअती,–ता, –णीअई } स्त्री०—
भणिज्जमाणी–णा, भणीअमाणी, भणीअमाणा । }

पु०— न०— स्त्री०—

हन्—हम्मतो, हम्ममाणो, हम्मत, हम्ममाण, हम्मती, ता,
हम्ममाणी,णा,हम्मई ।

---

१ 'कार' अग उपरथी कारती, कारेइ, कारमाणी, कारत वगेरे रूपो उपजावी लेवा

२ जुओ पृ० २६१ पैशाचीनी विशेषता.

३ जुओ पृ० २३ ण–न

प्रेरक सह्यभेदी कृदंत

(प्रेरक सह्यभेदी अग बनाववानी प्रक्रिया 'प्रेरकसह्यभेद'[1] ने जणावता जणावी छे')

कर—करावि +ईअ—करावीअतो,—अमाणो, इत्यादि।

(शौ० मा० करावीअने) (पै० कराविय्यतो)

कर—करावि + इज्ज— कराविज्जतो, कराविज्जमाणो, इत्यादि।

कर—कार + ईअ— कारीअतो, कारीअमाणो, इत्यादि।

कर—कार + इज्ज— कारिज्जतो, कारिज्जमाणो, इत्यादि।

चि— चिव्व + आवि— चिव्वावितो, चिव्वाविज्जमाणो, इत्यादि।

प्राकृत अने पैशाचीमा वर्तमान कृदतना रूपो सरखा थाय छे, शौरसेनी अने मागधीमा जे विशेषता छे ते उदाहरणो साथे जणावी छे, अपभ्रशमा शौरसेनी अने प्राकृत प्रमाणे समजवानु छे

शौरसेनी, मागधी के पैशाचीना उदाहरणो मात्र एक ज लिंगमा मूकेला छे पण अभ्यासिए एना त्रणे लिंगी रूपो पोतानी मेळे समजी लेवा

पशाचीना सह्यभेदी वर्तमान कृदतनी विशेषता जणावेली छे

(कोइ पण भाषानु रूप करती वखते 'वर्ण-विकार' ना नियमो लक्ष्यमा राखवा)

- भूतकृदत --

कर्तरि भूतकृदत—सह्यभेदी भूतकृदत

---

१ जुओ पृ० २९४ प्रेरकसह्यभेद.

१ धातुना अगने 'अ' 'द' अने 'त' लागवाथी तेनु (बन्ने जातनु) भूतकृदत बने छे

२ 'अ' 'द' अने 'त' प्रत्यय पर रहेता पूर्वना 'अ' नो 'इ' थाय छे ('उ' शौरसेनी, मागधी अने अपभ्रशमा वपराय छे अने 'त' पैशाचीमा वपराय छे)

कर्तरि भू०कृ०—गम+अ=गमिओ गमिदो, गमितो (गत)

चल+अ=चलिओ चलिदो, चलितो(चलित)इत्यादि

सह्यभेदी भू०कृ०—कर+अ=करिओ करिदो, करितो कडो (कृत कट)

पढ+अ=पढिओ पढिदो, पढितो गथो (पठितो ग्रन्थ) इत्यादि

हस+अ=हसिअ हसिद, हसित (हसितम्)

लस+अ=लसिअ लसिद, लसित (लसितम्)

तुर+अ=तुरिअ तुरिद, तुरित (त्वरितम्) इत्यादि

सुस्सूस+अ=सुस्सूसिअ सुस्सूसिद, सस्सूसित (शुश्रूषितम्)

चकम+अ=चकमिअ चकमिद, चकमित (चङ्क्रमितम्)

झा +अ=झाय झाद, झात (ध्यातम्)

---

१ प्राकृतमा भूतकृदतने माटे मात्र 'त (अ)' प्रत्यय वपराय छे, पालिमा ए 'त' उपरात सस्कृतना 'क्तवतु' नी पेठे बीजो 'तवतु' प्रत्यय पण वपराय छे

त—हुतो (हुत)

तवतु हुतवा (हुतवान्) स्त्री० हुतवती (हुतवती)

—भूतकृदतो लगती पालिनी प्रक्रिया सस्कृतनी प्रक्रिया साथे मळती आवे छे—पालि प्र० पृ० २५१–२५२

लु +अ=लुअ लुद, लुत (लूनम्)
हू +अ=हूअ हूद, हूत (भूतम्)

प्रेरक भू० कृ०—

१ धातुने प्रेरणासूचक 'आवि' प्रत्यय लगाड्या पछी अथवा धातुना उपान्त्य 'अ' नो दीर्घ कर्या पछी भूतकृदतनो 'अ' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु प्रेरक भूतकृदत बने छे

कर– करावि+अ–कराविअ करावित, करावित (कारितम्)
कारि+अ–कारिअ कारिद, कारित

हस– हसावि+अ–हसाविअ हसाविद, हसावित (हासितम्)
हासि+अ–हासिअ हासिद, हासित इत्यादि

आर्ष प्रयोगो के अर्वाचीन प्राकृतमा केटलेक स्थळे संस्कृतना सिद्धरूपो उपरथी पण भूतकृदतना रूपो बनाववामा आव्या छे

गतम्– गय ।
मतम्– मय ।
कृतम्– [१]कड ।
हतम्– हड ।
मृतम्– मड ।
जितम्– जिअ ।
तप्तम्– तत्त । वगेरे

भविष्यत्कृदत—

[२]धातुना अगने 'स्सत' 'स्समाण' अने 'स्सई' प्रत्यय लगा

१ जुओ पानु ६'–त=ड

२ स्स + अत = स्सत । स्स + माण = स्समाण ।
स्स + ई = स्सई जुओ पृ० २९९ वर्तमानकृदत

डवाथी तेनु भविष्यत्कृदन्त[1] बने छे

करिष्यन्–करिस्सतो (शौ० मा० करिस्सन्तो) इत्यादि ।

करिष्यमाण –करिस्समाणो इत्यादि ।

हेत्वर्थकृदत

१ धातुना अगने 'तु' 'दु' अने 'त्तए' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु हेत्वर्थकृदत[2] बने छे

२ उपर जणावेला त्रणे प्रत्ययो ('तु' 'दु' अने 'त्तए') पर रहेता पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' थाय छे

('दु' शौरसेनी, मागधी अने अपभ्रशमा वपराय छे अने प्राकृत तथा पैशाचीमा 'तु' वपराय छे)

---

१ भविष्यत्कृदतना पालिरूपो आ प्रमाणे छे

–गमिस्स (गमिष्यन्) स्त्री–गमिस्सती

गमिस्सती

करिस्स (करिष्यन्)

चरिस्स (चरिष्यन्)

'गमिष्यन्' वगेरे सिद्धरूपोने छेडे रहेला 'न्' नो अनुस्वार कर वाथी पालिना 'गमिस्स' वगेरे रूपो तैयार थयेला छे–पालिप्र० पृ० २४८–२४९

२ पालिभाषामा हेत्वर्थकृदत करवाने माटे धातुने 'तु' 'तवे' 'ताये' अने 'तुये' प्रत्ययो लगाडवामा आवे छे

मतु । कातवे (कर्तुम्) नेतवे (नेतुम्)

दक्खिताये (द्रष्टुम्) गणेतुये (गणयितुम्) वगेरे

—जुओ पालिप्र० पृ० २५७–२५८

तु—दु—

भण्–भण+तु–भणिउ भणेउ, भणिदु, भनितु (भणितुम्–भणवाने माटे)
हस्–हस+तु–हसिउ, हसेउ हसिदु, हासितु (हसितुम्–हसवाने माटे)
हो–होअ–तु–होइउ, होएउ होइदु, होइतु (भवितुम्–थवाने माटे)
भण् भणावि+तु भणाविउ भणाविदु, भनावितु (भणाववा माटे)
कर-करावि+तु–कराविउ कराविदु, करावितु (कराववा माटे)
कर कार+तु कारिउ, कारेउ कारिदु, कारिउं (कराववा माटे)
हस्-हास+तु–हासिउ, हासेउ हासिदु, हासितु (हसाववा माटे)
शुश्रूष् सुस्सूस+तु–सुस्सूसिउ, सुस्सूसेउ सुस्सूसिदु, सुस्सूसितु
(शुश्रूषा करवा माटे)
चङ्क्रम्य चक्कम+तु–चक्कमिउं, चक्कमेउ चक्कमिदु, चक्कमितु
(चक्रमण करवा माटे) इत्यादि

अनियमित हेत्वर्थकृदंत

कृ	+	तु	–	का	+	उ	=	काउ	(कर्तुम्)
ग्रह्	+	तु	–	घेत्	+	तु	=	घेत्तु	(ग्रहीतुम्)
त्वर्	+	तु	–	तुर्	+	इउ	=	तुरिउ	(त्वरितुम्)
				तुर्	+	एउ	=	तुरेउ	
दृश्	+	तु	–	दट्ठ्	+	उ	=	दट्ठु	(द्रष्टुम्)
भुज्	+	तु	–	भोत्	+	तु	=	भोत्तु	(भोक्तुम्)
मुच्	+	तु	–	मोत्	+	तु	=	मोत्तु	(मोक्तुम्)
रुद्	+	तु	–	रोत्	+	तु	=	रोत्तु	(रोदितुम्)
वच्	+	तु	=	वोत्	+	तु	=	वोत्तु	(वक्तुम्)

१ प्रेरकहेत्वर्थकृदंतनी रचना प्रेरक भूतकृदंतनी जेवी ज छे

[1]त्तए

[2]कर्	–	कर	+	त्तए	=	करेत्तए करित्तए } (कर्तुम्)
सिज्झ्	–	सिज्झ	+	त्तए	=	सिज्झित्तए (सेद्धुम्)
उववज्ज्	–	उववज्ज	+	त्तए	=	उववज्जित्तए (उपपत्तुम्)
विहर्	–	विहर	+	त्तए	=	विहरित्तए (विहर्तुम्)
[3]पास्	–	पास	+	त्तए	=	पासित्तए (द्रष्टुम्)
गम्	–	गम	+	त्तए	=	गमित्तए (गन्तुम्)
[4]पव्वज्	–	पव्वज	+	त्तए	=	पव्वइत्तए (प्रव्रजितुम्)
आहर्	–	[5]आहार	+	त्तए	=	आहारित्तए (आहर्तुम्)
दल्	–	दल	+	इत्तए	=	[6]दलइत्तए (दातुम्)
[7]अच्चासाद्–		अच्चासाद	+	त्तए	=	अच्चासादेत्तए (अत्याशातयितुम्)

---

१ विशेषे करीने आ प्रत्ययनो उपयोग आर्षग्रंथोमा थएलो छे वैदिक सस्कृतना अने पालिना तुमर्थक 'तवे' प्रत्ययनी साथे आ 'त्तए' प्रत्ययनी विशेष समानता छे (जूओ पाणिनि–३–४–९ वैदिक प्र० तथा पृ० ३०७ नी १ टिप्पणी

२ "अत करेत्तए" "सिज्झित्तए" "देवत्ताए उववज्जित्तए" "भुजमाणे विहरित्तए"–भगवतीसू० श० ७, उ० ७ पृ० ३११ स०

३ रूवाइ पासित्तए" देवलोग गमित्तए"–भगवतीसू० श० ७, उ० ७ पृ० ३१२ स०

४ "पवज्जाए पव्वइत्तए" "अप्पणा आहारित्तए" "–सुणयाण दलइत्तए"–भगवतीसू० श० ३, उ० २ पृ० १७१ स०

५ आर्षताने लीधे 'हर्' नो 'हार' थयो छे

६ आर्षताने लीधे अहीं 'इ' आगमरूपे थयो छे

७ "सयमेव अच्चासादेत्तए"–भगवतीसू० श० ३, उ० २ पृ० १७२ स०

[८]समभिलोक्– समभिलोक + त्तए = समभिलोएत्तए (समभिलोकितुम्)

अपभ्रंश

धातुना अगने ' एव ' ' अण ' ' अणह ' 'अणहिं' 'एप्पि' ' एप्पिणु ' ' एवि ' अने ' एविणु ' प्रत्यय लगाडवाथी अपभ्रंशनु हेत्वर्थकृदंत बने छे

एव—

चय्	+	एव	=	चएव		(त्यक्तुम्)
दा	+	एव	=	देव		(दातुम्)

अण—

भुंज्	+	अण	=	भुंजण		(भोक्तुम्)
कर	+	अण	=	करण		(कर्तुम्)

अणह—

सेव्	+	अणह	=	सेवणह		(सेवितुम्)
भुंज्	+	अणह	=	भुंजणह		(भोक्तुम्)

अणहिं—

मुच्	+	अणहिं	=	मुचणहिं		(मोक्तुम्)
भुंज्	+	अणहिं	=	भुंजणहिं		(भोक्तुम्)

एप्पि—

कर्	+	एप्पि	=	करेप्पि		(कर्तुम्)
जि	+	एप्पि	=	जेप्पि		(जेतुम्)

---

८ " सप्पडिदिसिं समभिलोएत्तए "–भगवतीसू० श० ३, उ० २ पृ० १६८ स०,

एप्पिणु—

कर्	+	एप्पिणु	=	करेप्पिणु	(कर्तुम्)
चय्	+	एप्पिणु	=	चएप्पिणु	(त्यक्तुम्)

एवि—

कर्	+	एवि	=	करेवि	(कर्तुम्)
पाल्	+	एवि	=	पालेवि	(पालयितुम्)

एविणु—

कर्	+	एविणु	=	करेविणु	(कर्तुम्)
ला	+	एविणु	=	लेविणु	(लातुम्)

केटलेक स्थळे संस्कृतना सिद्ध रूपो उपरथी पण हेत्वर्थकृद तना रूपोने बनावेला छे

लब्धुम्	–	लद्धु ।	
रोद्धुम्	–	रोद्धु ।	
योद्धुम्	–	जोद्धु ।	
कर्तुम्	–	[1]कट्टु ।	वगेरे

सबधकभूतकृदत—

१ धातुना अगने 'तु' 'अ' 'तूण' 'तुआण' 'इत्ता'

---

१ जूओ पानु ३५ तं–ट नि० २९

२ 'इत्ता', 'इत्ताण', 'आय' अन 'आए' प्रत्ययनो उपयोग खास करीने आर्षप्राकृतमा थएलो छे पालिमा आ अर्थमा 'त्वा' (क्याय 'इत्वा' (आर्षप्रा०–'इत्ता') 'त्वान' (क्याय 'इत्वान') (आषप्रा०–'इत्ताण') अने 'तून' (प्रा० 'तून' के 'ऊण') प्रत्ययनो उपयोग थाय छे—

त्वा–कत्वा, करित्वा (आर्षप्रा० करित्ता) (कृत्वा)

गत्वा (गत्वा)

' इत्ताण ' ' आय ' अने ' आए ' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु सबंधक भूतकृदंत बने छे

शौरसेनी अने मागधीमा सबंधकभूतकृदंत करवा माटे धातुने ' इय ' अने ' दूण ' प्रत्यय लागे छे तथा प्राकृतना ' त 'कारादि प्रत्ययो पण ' द 'कारादि करीने लगाडाय छे अने ' इत्ता '

हत्वा	(हत्वा)
जहित्वा	(हित्वा)
जहत्वा	(हात्वा)
छिदित्वा (आर्षप्रा० छिंदित्ता)	(छित्वा)
सुणित्वा (,, सुणित्ता)	(श्रुत्वा)
जिनित्वा (,, जिणित्ता)	(जित्वा)
पापुणित्वा (आर्षप्रा० पापुणित्ता)	(प्राप्य)

त्वान— कत्वान
गत्वान
हत्वान
जहित्वान (आर्षप्रा० जहित्ताण)

तून— कत्तून
गत्तून
हत्तून

संस्कृतमा जेम उपसर्गवाळा धातुने माटे ' क्त्वा ' ने बदले ' य ' प्रत्यय छे तेम पालिमा (पालिमा उपसर्ग होवानो काइ नियम नथी) पण थोडु छे उपनीय (नी + त्वा)
अभिवन्दिय (वन्द् + इत्वा)
अभिञ्ञाय (ज्ञा + त्वा)

आर्षप्राकृतमा पण ' आय ' अने ' आए ' छेडावाळा सबंधक भूतकृदंतो मळे छे ते आ पालि मा ' य ' छेडावाळा-रूपो साथे मळता आवे छे —पालि प्रा० पृ० २५५–२५६

' इत्ताण ' प्रत्ययो पण वपराय छे

पैशाचीमा ए अर्थमा ' तून ' प्रत्यय वपराय छे

अपभ्रंशमा ए अर्थमा ' इ ' ' इउ ' ' इवि ' अने ' अवि ' तथा ' एप्पि, ' ' एप्पिणु, ' ' एवि ' अने ' एविणु ' प्रत्ययनो व्यवहार थाय छे

२ अपभ्रंश सिवायना उपर जणावेला बीजा प्रत्ययो पर रहेता प्रयोगानुसारे पूर्वना ' अ ' नो ' इ ' अने ' ए ' थाय छे

३ केटलेक ठेकाणे प्राकृतना ' त 'कारादि प्रत्ययोना ' त ' नो लोप पण थइ जाय छे (जूओ असंयुक्त ' कादि ' लोप पृ० १० नि० २)

४ उपर जणावेला प्रत्ययोमा जे प्रत्ययो ' ण ' छेडावाळा छे तेने अंते विकल्पे अनुस्वार थाय छे

अपवाद–शौरसेनी

शौरसेनीमा ' कृ ' अने ' गम् ' धातुनु सबधक भूतकृदत ' कडुअ ' अने ' गडुअ ' बने छे (कृ + अडुअ = कडुअ–कृत्वा (गम् + अडुअ = गडुअ–गत्वा)

अपवाद–पैशाची

' ष्ट्वा ' छेडावाळा संस्कृत रूपोनु सबधक भूतकृदत करवा माटे पैशाचीमा ए ' ष्ट्वा ' ने बदले ' द्धून ' अने ' त्थून ' वापरवामा आवे छे

नद्धून, नत्थून (स० नष्ट्वा)

तद्धून, तत्थून (स० तष्ट्वा) वगेरे

अपवाद–अपभ्रंश

मात्र एक ' गम् ' धातुनु संबधक भूतकृदत करवा माटे अप-

अंशना उपर्युक्त प्रत्ययो लगाडवा उपरांत 'प्पि' अने 'प्पिणु' प्रत्ययो पण लगाडवाना छे

गम् + प्पि = गम्पि – गत्वा ।

गम् + प्पिणु = गम्पिणु – गत्वा ।

भाषावार उदाहरणो

प्राकृत

हस– हस + तु = हसिउ, हसेउ, (हसित्वा)

हो– होअ + तु = होइउ, होएउ, (भूत्वा)

हस्– हस + अ = हसिअ, हसेअ, (हसित्वा)

हो– होअ + अ = होइअ, होएअ, (भूत्वा)

हस्– हस + तूण = हसिऊण, हसिऊण, हसेऊण, हसेऊण (हसित्वा)

हो– होअ + तूण = होइउण, होइउण, होएउण, होएउण (भूत्वा)

हस्– हस + तुआण = हसिउआण, हसिउआण, हसेउआण, हसेउआण (हसित्वा)

हो– होअ + तुआण = होइउआण, होइउआण, होएउआण होएउआण (भूत्वा)

मण्–भणावि + तु = भणाविउं (भाणयित्वा)

, + अ = भणाविअ

, + तूण = भणाविऊण, भणाविउण

,, + तुआण = भणाविउआण, भणाविउआण

१ आ प्रेरक संबंधक भूतकृदंत छे अने एनी रचना प्रेरक भूत कृदंतनी जेवी छे.

भण्–भाण + तु = भाणिउ, भाणेउ

,, + अ = भाणिअ, भाणेअ

,, + तूण= भाणिउण, भाणिऊण, भाणेउण, भाणेऊण

,, + तुआण, = भाणिउआण, भाणिउआण, भाणेउआण, भाणेउआण

कर–करावि + तु = करावेउ (कारयित्वा)

,, + अ = कराविअ

,, + तूण= कराविऊण, कराविऊण

,, + तुआण =कराविउआण, कराविउआण

,, कार + तु = कारिउ, कारेउ

,, + अ = कारिअ, कारेअ

,, +तूण = कारिउण,कारिउण, कारेउण, कारेउण

,, तुआण,कारिउआण कारिउआण कारेउआण,कारेउआण

शुश्रूष्–सुस्सूस + तु = सुस्सूसिउ, सुस्सूसेउ

,, + अ = सुस्सूसिअ, सुस्सूसेअ

,, + तूण= सुस्सूसिऊण सुस्सूसिउण, सुस्सूसेउण, सुस्सूसेउण

,, +तुआण=सुस्सूसिउआण, सुस्सूसिउआण सुस्सूसेउआण सुस्सूसेउआण

चङ्क्रम्य–चकम+ तु = चकमिउ, चकमेउ

,, + अ = चकमिअ, चकमेअ

,, + तूण = चकमिउण, चकमिउण, चकमेउण, चकमेउण

,, +तुआण=चकमिउआण, चकमिउआण, चकमेउआण, चकमेउआण

३ विध्यर्थ–कृदतने लागेल संस्कृत 'य' प्रत्ययने स्थाने प्राकृतमा 'ज्ज' पण लागे छे

सिद्ध रूपो उपरथी बनतां विध्यर्थ–कृदतो—

कार्यम् — कज्ज ।	वाच्यम् — वच्च ।
कृत्यम् — किच्च ।	वाक्यम् — वक्क ।
ग्राह्यम् — गेज्झ ।	जन्यम् — जन्न ।
गुह्यम् — गुज्झ ।	भृत्य — भिच्चो ।
वर्ज्यम् — वज्ज ।	भार्या — भज्जा ।
वद्यम् — वज्ज ।	अर्य — अज्जो ।
भव्यम् — भव्व ।	आर्यम् — अज्ज ।
अवद्यम्– अवज्ज ।	पाच्यम् — पच्च । इत्यादि ।

तव्य–हस–हसिअव्व, हसेअव्व, हसितव्व, हसेतव्व । हसाविअव्व, हसावितव्व ।

शौ० हसिदव्व, हसेदव्व, हसाविदव्व ।

सुस्सूसितव्व, सुस्सूसेतव्व, सुस्सूसिअव्व, सुस्सूसेअव्व ।

चकमितव्व, चकमेतव्व, चकमिअव्व, चकमेअव्व ।

हो–होतव्व, होअव्व । चि–चिणिअव्व, चिव्वेअव्व,

ज्ञा–नातव्व, नायव्व । चिणितव्व, चिणेतव्व ।

अणिज्ज } हसणिज्ज, हसणीअ, हसावणिज्ज, हसावणीअ,
अणीअ } करणिज्ज, करणीअ,

सुस्सूसणिज्ज, सुस्सूसणीअ,

चकमणिज्ज, चकमणीअ,

वच–वयणिज्ज, वयणीअ । इत्यादि ।

य–पेयम्–पेज्ज, पेअ । पेया–पेज्जा, पेआ ।

गेयम्–गेज्ज, गेअ । इत्यादि ।

—अनियमित विध्यर्थ कृदंत—

ग्रह्–तव्व–घेत्तव्व ।	रुद्–तव्व–रोत्तव्व ।
भुज्–तव्व–भोत्तव्व ।	कृ–तव्व–कातव्व
वच्–तव्व–वोत्तव्व ।	कायव्व
मुच्–तव्व–मोत्तव्व ।	त्वर–तव्व–तुरिअव्व, तुरेअव्व ।
दृश्–तव्व–दट्ठव्व ।	तुरितव्व, तुरेतव्व ।

विध्यर्थ कृदंत (अपभ्रंश)—

प्राकृतमां वपराता 'तव्व' प्रत्ययने बदले अपभ्रंशमां 'इएव्वउ,' एव्वउ' अने 'एवा' प्रत्यय वपराय छे

कर + इएव्वउ	= करिएव्वउ	–	कर्तव्यम् ।
कर + एव्वउ	= करेव्वउ		
कर + एवा	= करेवा		
मर + इएव्वउ	= मरिएव्वउ	–	मर्तव्यम् ।
मर + एव्वउ	= मरेव्वउ		
मर + एवा	= मरेवा		
सह + इएव्वउ	= सहिएव्वउ	–	सोढव्यम् ।
सह + एव्वउ	= सहेव्वउ		
सह + एवा	= सहेवा		
सो + एवा	= सोएवा	–	स्वप्तव्यम् ।
जग्ग + एवा	= जग्गेवा	–	जागरितव्यम् ।

कर्तरिकृदंत[1]

धातुने 'इर' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं कर्तृसूचक कृदन्त बने छे

हस–इर–हसिरो (हसनार), हसिरा, री (हसनारी), हसिरं
(हसनारुं)।

हसाव–इर–हसाविरो (हसावनार)–रा, री (हसावनारी) रं
(हसावनारुं)।

त्वर–इर–तुरिरो (त्वरा करनार) इत्यादि.

कर्तृसूचक कृदन्तनी साधना, कर्तृसूचक कृदन्तना संस्कृत सिद्ध रूपो उपरथी पण थाय छे

पाचक–पायगो, पायओ। नायक–नायगो, नायओ। नेता–नेआ। कर्ता–कत्ता। वक्ता–वत्ता। भर्ता–भत्ता। कुम्भकार–कुंभआरो। कर्मकर–कम्मगरो। स्तनन्धय–थणवयो। परंतप–परंतवो।
लेहक–लेहओ इत्यादि।

कर्तरिकृदंत (अपभ्रंश)

प्राकृतमां वपरायेला 'इर' ने बदले अपभ्रंशमां 'अणअ' प्रत्यय लगाडवाथी कर्तृसूचक कृदंत बने छे

मार + अणअ = मारणअ = मारणउ – मारनार
बोल्ल + अणअ = बोल्लणअ = बोल्लणउ – बोलनार

---

१ कर्तरिकृदंतनुं रूप बनाववा माटे पालिमां प्राकृतना 'इर' ने बदले केटलाक खास धातुथी 'ऊ' प्रत्यय वपराय छे अने एज अर्थनुं भूतकाळनुं रूप साधवा माटे साधारण रीते 'तावी' प्रत्यय वपराय छे –

ऊ– विदू (वेत्ता) स्त्री॰ विदुनी
तावी– भुत्तावी (भुक्तवान्) स्त्री॰ भुत्ताविनी

–पालिप्र॰ पृ॰ २१०–२५१

वज्ज + अणअ = वज्जणअ = वज्जणउ — वादक
भस + अणअ = भसणअ = भसणउ — भषक
जा + अणअ = जाणअ = जाणउ — ज्ञायक

प्रकरण १४

तद्धित

१ '[1]तेनु आ' ए अर्थमा नामने 'केर' प्रत्यय लागे छे अने अपभ्रंशमा '[2]आर' प्रत्यय लागे छे

अस्मद् + केर = अम्हकेर (अस्माकमिदम् अस्मदीयम्)
अप० अम्हारु, महारु,
युष्मद् + केर = तुम्हकेर (युष्माकमिदम् युष्मदीयम्)
अप० तुम्हार, तुहारु,
पर + केर = परकेर (परस्य इदम् परकीयम्)
राज + केर = रायक्केर (राज्ञ इदम् राजकीयम्)

२ '[3]तेमा थएल' ए अर्थमा नामने 'इल्ल' अने 'उल्ल' प्रत्यय लागे छे

इल्ल—गाम + इल्ल = गामिल्ल (ग्रामे भवम्) स्त्री० गामिल्ली।

---

१ संस्कृतनी पेठे पालिमा आ अर्थमा 'इय' प्रत्यय वपराय छे
मदनीय (मदनस्य स्थानम्)—
पालिप्र० पृ० २६०

२ आ 'आर' प्रत्यय प्राय 'युष्मद्' 'अस्मद्' 'त्वत्' अने 'मत्' शब्दोने लागे छे

३ 'तन्निश्रित' अर्थमा पालिमा 'इल्ल' प्रत्यय वपराय छे
दुट्ठु निश्रितम् = दुट्ठुल्ल
वेदनिश्रितम् = वेदल्ल
पालिप्र० पृ० २६०

पुर + इल्ल = 'पुरिल्ल (पुरे भवम्) स्त्री० पुरिल्ली।
अधस् + इल्ल = हेट्ठिल्ल (अधो भवम्) स्त्री० हेट्ठिल्ली।
उपरि + इल्ल = उवरिल्ल (उपरि भवम्)
उल्ल—आत्म + उल्ल = अप्पुल्ल (आत्मनि भवम्)
तरु + उल्ल = तरुल्ल (तरौ भवम्)
नगर + उल्ल = नयरुल्ल (नगरे भवम्)
इत्यादि।

३ 'तेनी जेवु' ए अर्थमा नामने 'व्व' प्रत्यय लागे छे
महुरव्व पाडलिपुत्ते पासाया (मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादा)

४ 'पणु' अर्थमा नामने 'इमा' 'त्त' अने 'त्तण' प्रत्यय लागे छे अने अपभ्रंशमा 'प्पण' प्रत्यय पण लागे छे

पीण + इमा = पीणिमा (पीनत्वम्)
पीण + त्तण = पीणत्तण, पीण + त्त = पीणत्त।
पुप्फ + इमा = पुप्फिमा (पुष्पत्वम्)
पुप्फ + त्तण = पुप्फत्तण, पुप्फ + त्त = पुप्फत्त।
अप० वड्ड + प्पण = वड्डप्पणु, वड्डत्तणु वगेरे (वृद्धत्वम्)
विहु + प्पण = विहुप्पणु, विहुत्तणु वगेरे (विभुत्वम्)

---

१ 'जात' अर्थमा पालिमा 'इम' प्रत्यय आवे छे—
पश्चात् जात = पच्छिमो। उपरि जात = उपरिमो।
पुरा जात = पुरिमो। अधो जात = हेट्ठिमो।
मध्ये जात = मज्झिमो—
पालिप्र० पृ० २५९-२६०

२ आ अर्थमा पालिमा 'त्तन' (प्रा० त्तण) प्रत्यय आवे छे
पुथुज्जनस्स भावो पुथुज्जनत्तन (पृथग्जनत्वम्)
पालिप्र० पृ० २६१

९ 'वार' अर्थमा नामने 'हुत्त' (आर्प-खुत्त[2]) प्रत्यय लागे छे

एक + हुत्त = एगहुत्त (एककृत्व –एकवारम्)

द्वि + हुत्त = दुहुत्त (द्विवारम्)

त्रि + हुत्त = तिहुत्त (त्रिवारम्)

शत + हुत्त = सयहुत्त (शतवारम्)

सहस्र + हुत्त = सहस्सहुत्त (सहस्रवारम्)

६ 'वाळु' अर्थमा आवता नामने लागता 'मतु' प्रत्ययने स्थाने 'आल' 'आलु' 'इत' 'इर' 'इल्ल' 'उल्ल' 'मण' 'मत' अने 'वत' प्रत्यय वपराय छे

आल– रस + आल = रसालो (रसवान्)

जटा + आल = जडालो (जटावान्)

ज्योत्स्ना+ आल = जोण्हालो (ज्योत्स्नावान्)

शब्द + आल = सद्दालो (शब्दवान्)

फटा + आल = फडालो (फटावान्)

---

१ स० कृत्वस्–क्षुत्त–खुत्त–हुत्त–जुओ ग्यादिनो 'ह' पृ० १९

२ 'वार' अर्थमा पालिमा 'क्खत्तु' (स० कृत्वस) प्रत्यय वपराय छे

एकक्खत्तु (एकवारम्)
द्विक्खत्तु (द्विवारम्)
तिक्खत्तु (त्रिवारम्)

पालिप्र० पृ० २६१

आर्षप्राकृतमा आ अर्थमा 'खुत्त' (पालि–क्खत्तु) प्रत्यय पण आवे छे तिक्खुत्तो–

"तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ"–
भग० श० पृ० २३५ प० २

"महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ"–
(सू० द्वि० श्रु० अ० ७ पृ० ४२५ प० २ स०)

"पत्तो अणतक्खुत्तो" जीवविचारनी छेटी गाथा.

पितृ + उल्ल = पिउल्लो, पिआ (पिता)

हस्त + उल्ल = हत्थुल्लो, हत्थो (हस्त)

विशेषता

पैशाचीमा स्वार्थिक 'अ' ने बदले संस्कृतनी पेठे 'क' वपराय छे

स० वदनकम्– प्रा० वयणय– पै० वतनक ।

" वतनके वतनकं समप्पेत्तून "

प्रा० व्या० पा० ४ सू० ३१४ पृ० ७०

अपभ्रंशमा स्वार्थमा 'अ,' 'अड,' 'उल्ल' 'अडअ', 'उल्लअ' अने 'उल्लडअ' प्रत्ययो[1] वपराय छे

दिट्ठ	+ अ	= दिट्ठउ		(दृष्ट)
दोस	+ अड	= दोसडु		(दोषक)
कुटी	+ उल्ल	= कुडुल्ली		(कुटिका)
हिअय	+ अडअ	= हिअडउ		(हृदयकम्)
चूड	+ उल्लअ	चूडुल्लओ		(चूडक)
बाहुबल	+ उल्लडअ	=बाहुबलुल्लडउ		(बाहुबलक)

११ संस्कृतमा वपराता 'पणु' अर्थवाळा (त्व, तल्) प्रत्ययो नामने लागया पछी तैयार थएल ए ज नामने स्वार्थमा एना ए ज प्रत्ययो फरीवार पण लागे छे –

मृदुक + त्व = मउअत्त + ता = { मउअत्तता / मउअत्तया (मृदुकत्वता)

१ प्राकृतरूपावतारमा 'अडट' 'टटज' 'अटल्ल' 'डुल्लज' 'टटडुल्ल' 'डुल्लटड' 'अवटडुल्ल' 'अडुल्लडड' 'डडअडुल्ल' 'डुल्लअटड' 'डडडुल्लअ' 'डुल्लडडअ' आ रीते बार प्रत्ययो पण जणावेला छे। पृ० ९५–९६–सू० ५

अनियमित तद्धितांत रूपो

एक + सि = एक्कसि
एक + सिअ = एक्कसिअ } (एकदा)
एक + इआ = एक्कइआ

भ्रू + मया = भुमया
भमया } (भ्रू)

शनै + इअ = सणिअ (शनै)

उपरि + छ = अवरिल्लो (उपरि)

ज + एत्तिअ = जेत्तिअ
ज + एत्तिल = जेत्तिल } (यावत्)
ज + एद्दह = जेद्दह

अप० जेवडु, जेत्तुलो

त + एत्तिअ = तेत्तिअ
त + एत्तिल = तेत्तिल } (तावत्)
त + एद्दह = तेद्दह

अप० तेवडु, तेत्तुलो

एत + एत्तिअ = एत्तिअ
एत + एत्तिल = एत्तिल } (एतावत्) (इयत्)
एत + एद्दह = एद्दह

अप० एवडु, एत्तुलो

क + एत्तिअ = केत्तिअ
क + एत्तिल = केत्तिल } (कियत्)
क + एद्दह = केद्दह

अप० केवडु, केत्तुलो

पर + क = परक्क (परकीयम्)
राय + क = राइक्क (राजकीयम्)
अम्ह + एच्चय = अम्हेच्चय (अस्मदीयम्)
तुम्ह + एच्चय = तुम्हेच्चय (युष्मदीयम्)
सव्वग + इअ = सव्वगिओ (सर्वाङ्गीण)
पह + इअ = पहिओ (पान्थ)
अप्प + णय = अप्पणय (आत्मीयम्)

वैकल्पिक रूपो

नव + ल्ल = नवल्लो, नवो (नवक)
एक + ल्ल = एक्कल्लो, एको (एकक)
मनाक् + अय = मणय
मनाक् + इय = मणिय, मणा } (मनाक्)
मिश्र + आलिअ = मीसालिअ, मीस (मिश्रम्)
दीर्घ + र = दीहर, दीह (दीर्घम्)
विद्युत् + ल = विज्जुला, विज्जू (विद्युत्)
पत्र + ल = पत्तल, पत्त (पत्रम्)
पीत + ल = पीअल
पीवल, पीअ } (पीतम्)
अंध + ल = अंधलो, अंधो (अन्ध)

संस्कृतना सिद्ध तद्धितांत रूपो उपरथी पण प्राकृत रूपो बने छे —

धनिन् = धनी-धणी ।
आर्थिक = अत्थिओ

आस्तिक = अत्थिओ । आर्षम् = आरिस ।
कानीन = काणीणो । भैक्षम् = भिक्ख ।
मदीयम् = मईय । वाङ्मयम् = वम्मय ।
पीनता = पीणया(शौ० पीणदा) कौशेयम् = कोसेय ।
(पै० पीनता) पितामह = पिआमहो ।

यथा = जया । तथा = तया ।
कथा = कया । अन्यथा = अण्णहा ।
सर्वथा = सव्वया । सर्वथा = सव्वहा ।

इत्यादि

धातुपाठ (परिशिष्ट)

आठमा अध्यायना चोथा पादमा आचार्य हेमचंद्र प्राकृत धातु-ओने आ रीते आपे छे

सूत्रांक	अर्थनी दृष्टिए हेमचंद्रे मूकेलु मूळ रूप	मूळ रूपना आदेशो
२	कथ् प्रा० कह्	वज्जर पज्जर उप्पाल पिसुण सघ बोल्ल चव जप सिंघ (दु खकथने)

४	जुगुप्स प्रा० जुगुच्छ	झुण दुगुच्छ दुगुञ्छ
५	बुभुक्ष प्रा० बुहुक्ख	णीरव
	वीज	वोज्ज
६	ध्या प्रा० झा	झा
	गै	गा
७	ज्ञा	जाण मुण
८	उत् + ध्मा	उद्धुमा
९	श्रत् + धा	सद्दह
१०	पा प्रा० पि	पिज्ज डल्ल पट्ट घोट्ट
११	उत् + वा प्रा० उव्वा	ओरुम्मा वसुआ
१२	नि + द्रा प्रा० निद्दा	ओहीर उङ्घ
१३	आ + घ्रा प्रा० अग्घा	आइग्घ
१४	स्ना प्रा० ण्हा	अब्भुत्त
१५	सम् + स्त्या	खा
१६	स्था	ठा थक्क चिट्ठ तिष्ठ (मा० चिष्ठ) निरप्प

३९	अर्प प्रा० अप्प	अल्लिव चच्चुप्प पणाम
४०	याप प्रा० जाव	जव
४१	प्लाव प्रा० पाव	ओम्वाल पव्वाल
४२	विक्रोश प्रा० विकोस	पक्खोड
४३	रोमन्थ	ओग्गाल वग्गोल
४४	कम प्रा० काम	णिहुव
४५	प्र+काश प्रा० पयास	णुव्व
४६	कम्प	विच्छोल
४७	आ+रोप प्रा० आरोव	वल
४८	दोल	रंखोल
४९	रञ्ज	राव
५०	घट प्रा० घड	परिवाड
५१	वेष्ट प्रा० वेढ	परिआल
५२	क्री	किण
	वि+क्री प्रा० विक्की	विके विक्किण
५३	भी	भा बीह
५४	आ+ली	अल्ली

२९	उत् + धूल प्रा० उद्धूल	गुठ
३०	भ्राम प्रा० भाम	ताळिअट तमाड
३१	नाश प्रा० नास	विउड नासव हारव विप्पगाळ पळाव
३२	दर्श प्रा० दरिस	दाव दस दक्खव
३३	उत् + घट प्रा० उग्घाड	उग्ग
३४	स्पृह	सिह
३५	सम् + भाव	आसघ
३६	उत् + नम् प्रा० उन्नाम	उत्थघ उल्लाल गुलुगुछ उप्पेल
३७	प्र + स्थाप प्रा० पट्ठव	पट्ठव पेण्डव
३८	वि+ज्ञप प्रा० विण्णव	वोक्क अवुक्क

		लम्बने च)
७१	कृ „	णीलुञ्छ (निष्पाते आच्छोटने च)
७२	कृ „	कम्म (क्षुरकर्मणे)
७३	कृ „	गुलल (चाटुकरणे)
७४	स्मर प्रा० सर	झर झूर भर भल लढ विम्हर सुमर पयर पम्हुह
७५	वि+स्मृ	पम्हुस विम्हर वीसर
७६	व्या+हृ प्रा० वाहर	कोक्क, कुक्क पोक्क
७७	प्र+सृ प्रा० पसर	पयल्ल उवेल्ल
७८	„	महमह (गन्धप्रसरणे)
७९	नि+सृ प्रा० नीसर	णीहर नील धाड वरहाड

५५	नि+ली	णिलीअ णिलुघ णिरिग्ग लुक्क लिक्क लिहुघ
५६	वि+ली	विरा
५७	रु प्रा० रव	रुञ्ज रुण्ट
५८	श्रु प्रा० सुण	हण
५९	धू प्रा० धुण	धुव
६०	भू	हो हुव (शौ० भू, भुव) हव भव)
६२	,,	णिव्वड (पृथग्भवने, स्पष्टभवने च)
६३	,	हुप्प (प्रभवने)
६५	कृ प्रा० कर	कुण
६६	कृ	णिआर (काणेक्षित-करणे)
६७	कृ	णिट्ठुह (निष्टम्भे) सन्दाण (अवष्टम्भे)
६८	कृ	वावम्फ (श्रमकरणे)
६९	कृ	णिव्वोल (क्रोधपूर्व ओष्ठमालिन्ये)

९२	,,	णिव्वल (दु:खमोचने)
९३	वञ्च	वेहव वेलव जूरव उमच्छ
९४	रच	उग्गह अवह विडविड्ड
९५	समा + रच	उवहत्थ सारव समार केलाय
९६	सिच	सिंच सिंप
९७	प्रच्छ	पुच्छ
९८	गर्ज	बुक्क
९९	,,	ढिक्क (वृषगर्जने)
१००	राज	अग्घ छज्ज सह रीर रेह
१०१	मस्ज	आउड्ड णिउड्ड बुड्ड खुप्प

८०	जागृ प्रा० जागर	जग्ग
८१	व्या + पृ प्रा० वावर	आअड्ड
८२	स + वृ प्रा० सवर	साहर साहट्ट
८३	आ + द प्रा० आदर	मन्नाम
८४	प्र + हृ प्रा० पहर	सार
८५	अव + तृ + ओअर	ओह ओरस
८६	शक	चय तर तीर पार
८७	फक्क	थक्क
८८	श्लाघ	सलह
८९	खच	वेअड
९०	पच	सोल्ल पउल्ल
९१	मुच	छड्ड अवहेड मेल्ल उस्सिक्क रेअव णिल्लुञ्छ धसाड

११०	भुज	भुञ्ज जिम जेम कम्म अण्ह समाण चमढ चड्ड
१११	उप + भुज	कम्मव
११२	घट	गढ
११३	सम् + घट	संगल
११४	स्फुट	मुर (हासस्फुटिते)
११५	मण्ड	चिंच चिंचअ चिंचिल्ल रीड टिविडिक्क
११६	तुड	तोड तुट्ट खुट्ट खुड उक्खुड उल्लुक्क णिलुक्क लुक्क उल्लूर

१०२	पुन्न	आरोल कमा?
१०३	लग्न	नीह
१०४	तिम	ओसुक्क
१०५	मृज प्रा० मज	उग्गुस लुउ पुउ पुस फुस पुस लुह हुल रोसाण
१०६	भज	वेमय मुसुमूर मूर सूर सूड विर पविरन करज नीरज
१०७	अनु + नम प्रा० अणुवच्च	पडिअग्ग
१०८	अर्म	विढव
१०९	युज	जुंज जुज्ज जुप्प

११०	भुज	भुज जिम जेम कम्म अण्ह समाण चमढ चड्डु
१११	उप + भुज	कम्मव
११२	घट	गढ
११३	सम् + घट	सगल
११४	स्फुट	मुर (हासस्फुटिते)
११५	मण्ड	चिञ्च चिञ्चअ चिञ्चिल्ल रीड टिविडिक्क
११६	तुड	तोड तुट्ट खुट्ट खुड उक्खुड उल्लुक्क णिलुक्क लुक्क उल्लूर

११७	घूण	घुल घोल घुम्म पहल्ल
११८	वि + वृत् प्रा० विवट्ट	ढंस
११९	क्वथ प्रा० कढ	अट्ट
१२०	ग्रन्थ	गण्ठ
१२१	मन्थ	घुसल विरोल
१२२	ह्लाद	अवअच्छ
१२३	नि + सद	णुमज्ज
१२४	छिद प्रा० छिंद	दुहाव णिच्छल्ल णिज्झोड णिव्वर णिल्लूर लूर
१२५	आ + छिद "	ओअंद उद्दाल
१२६	मृद	मल मढ परिहट्ट खड्ड चड्ड मड्ड पन्नाड

१२७	सन्द प्रा० फद	चुलुचुल
१२८	निर् + पद प्रा० निप्पज्ज	निव्वल
१२९	विस + वद	विअट्ट विलोट्ट फंस
१३०	शद	झड पक्खोड
१३१	आ + क्रन्द	णीहर
१३२	खिद	जूर विसूर
१३३	रुध प्रा० रुंध	उत्थंघ
१३४	नि + षेध	हक्क
१३५	क्रुध प्रा० कुज्झ	जूर
१३६	जन	जा जम्म
१३७	तन	तड तड्ड तड्डव विरल्ल
१३८	तृप	थिप्प
१३९	उप + सृप	अल्लिअ
१४०	स + तप	झख
१४१	वि + आप	ओअग्ग
१४२		समाग

१४३	क्षिप	गलत्थ अड्डक्ख सोल्ल पेल्ल णोल्ल छुह हुल परी घत्त
१४४	उत् + क्षिप	गुलुगुञ्छ उत्थंघ अल्लत्थ उब्भुत्त उस्सिक्क हक्खुव
१४५	आ + क्षिप	णीरव
१४६	स्वप	कमवस लिस लोट्ट
१४७	वेप	लोट्ट आयज्झ
१४८	वि + लप	झङ्ख वडवड
१४९	लिप	लिम्प
१५०	गुप	विर णड

१५१	क्रुप	अवहाव
१५२	प्र + दीप प्रा० पलीव	तेअव सदुम सधुक अब्भुत्त
१५२	लुभ	सभाव
१५४	क्षुभ	खउर पड्डुह
१५५	आ + रभ	आरभ आढव
१५६	उपा + लभ	झंख पचार वेलव
१५७	जृम्भ विजृम्भ (वअम्भ)	जम्भा
१५८	नम	णिसुढ (भारपूर्वकनमने)
१५९	वि + श्रम प्रा० वीसाम	णिव्वा
१६०	आ + क्रम	ओहाव उत्थार छुन्द

१६१ भ्रम

- टिरिटिल्ल
- ढुण्दुल्ल
- ढण्ढल्ल
- चक्कम
- भम्मड
- भमड
- भमाड
- तलअंट
- झंट
- झंप
- भुम
- गुम
- फुम
- फुस
- ढुम
- ढुस
- परी
- पर

१६२ गम्

- अई
- अइच्छ
- अणुवज्ज
- अवज्जस
- उक्कुस
- अक्कुस
- पच्चड्ड
- पच्छंद
- णिम्मह
- णी

		णीण णीरुंघ पडअ रंभ परिअड्ड वोल परिअल णिरिणास णिवह अवसेह अवहर
१६३	आ + गम्	अहिपच्चुअ
१६४	सम् + गम्	अब्भिड
१६५	अभ्या + गम्	उम्मत्थ
१६६	प्रत्या + गम्	पलोट्ट
१६७	शम	पडिसा परिसाम
१६८	रम	सङ्खुड्ड खेड्ड उब्भाव किलिकिंच कोट्टुम मोट्टाय णीसर वेल्ल

१६९	पूर	अग्घाट, अग्घव, उद्धूमा, अगुम, अहिरेम
१७०	त्वर	तुवर, जअट
१७३	क्षर	खिर, झर, पज्झर, पच्चड, णिच्चल, णिट्टुअ
१७४	उत् + छल	उत्थल्ल
१७५	नि + गल	थिप्प, णिट्टुह
१७६	दल	विसट्ट
	वल	वफ
१७७	भ्रंश	फिड, फिट्ट, फुड, फुट्ट, चुक्क, भुल्ल
१७८	नश	णिरणास, णिवह, अवसेह, पडिसा, अवहर

१७९	अव + काश	ओवास
१८०	स + दिश	अप्पाह
१८१	दश	निअच्छ
		पेच्छ
		अवयच्छ
		अवयज्झ
		वज्ज
		सव्वव
		देक्ख
		ओअक्ख
		अवक्ख
		अवअक्ख
		पुलोअ
		पुलअ
		निअ
		अवयास
		पास
१८२	स्पृश	फास
		फस
		फरिस
		छिव
		छिह
		आलुख
		आलिह
१८३	प्र + विश	रिअ
१८४	प्र + मृश	म्हुस
	प्र + मुष	

१८५	पिष	णिवह णिरिणास णिरिणज्ज रोञ्च चड्ड
१८६	भष	भुक्क
१८७	कृष्	कड्ड साअड्ढ अञ्च अणच्छ अयञ्छ आइञ्छ
१८८	,,	अक्खोड (असिकर्षणे)
१८९	गवेष	ढुढुल्ल ढंढोल गमेस घत्त
१९०	श्लिष प्रा० सिलेस	सामग्ग अवयास परिअंत
१९१	म्रक्ष	चोप्पड
१९२	काङ्क्ष	आह अहिलंघ अहिलंख वच्च वम्फ मह सिह विलुम्प

१९३	प्रति + ईक्ष्	सामय विहीर विरमाल
१९४	तक्ष	तच्छ चच्छ रम्प रम्फ
१९५	वि + कस	कोआस वोसट्ट
१९६	हस्र	गुज
१९७	ग्रस	रिहम डिभ
१९८	त्रस	डर वोज्ज वज्ज
१९९	नि + अस	णिम णुम
२००	परि + अस्	पलोट्ट पल्लट्ट पल्हत्थ
२०१	नि + श्वस	झंख
२०२	उत् + लस	ऊसल ऊसुभ णिल्लस पुलआअ गुंजोल्ल आरोअ

२०३	भास	भिस
२०४	ग्रस	घिस
२०५	अव + गाह	ओवाह
२०६	आ + रुह	चड
		वलग्ग
२०७	मुह	गुम्म
		गुम्मड
२०८	दह	अहिऊल
		आलुख
२०९	ग्रह	वल
		गेण्ह
		हर
		पग
		निरुवार
		अहिपच्चुअ
२१६	छिद	छिन्द
	भिद	भिन्द
२१७	युध	जुज्झ
	बुध	बुज्झ
	गृध	गिज्झ
	क्रुध	कुज्झ
	सिध	सिज्झ
	मुह	मुज्झ
२१८	रुध	रुन्ध
		रुम्भ

२१९	सट	सड
	पत	पट
२२०	क्वथ	कड्ढ
	वर्ध	वड्ढ
२२१	वेष्ट	वेढ
२२२	स + वेष्ट	स + वेल्ल

मागधीना धातु

२९७ प्र + ईक्ष = प्रेक्ष प्रा० पेख्ख मा० पेस्क

आ + चक्ष प्रा० आचक्ख मा० आचस्क

केटलाक अपभ्रंश धातुओ

३९०	भू	हुच्च (पर्याप्त)
३९१	ब्रू	ब्रुव
३९२	व्रज	वुज्र
३९३	दृश	प्रस
३९४	ग्रह	गृण्ह
३९५	तक्ष	छोल्ल

देश्य धातुओ

खुड्डक	गू० खटकवु
घुड्डक	,, घडकवु
झलक	,, झळकवु
चप	,, चापवु

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ તરફથી પ્રકાશિત

પુરાતત્ત્વ મંદિર ગ્રંથાવલી

પ્રાકૃત અને પાલી ભાષાના અભ્યાસ માટે

૧. પ્રાકૃત વ્યાકરણ — લે પં બેચરદાસ જી દોશી — ૪—૦—૦

૨ પ્રાકૃતકથાસંગ્રહ — સં મુનિ જિનવિજય — ૦—૧૨—૦

૩ પાલીપાઠાવલી — સં „ — ૦—૧૪—૦

૪ અભિધાનપ્પદીપિકા — સં „ — ૫—૦—૦
(પાલીનો શબ્દકોષ)

૫. અભિધમ્મત્થસંગહો — સં અ ધર્માનંદ કોસંબી — ૨—૮—૦

૬. ધમ્મપદ (મૂળ, અનુવાદ, કોષ ઇ) અ ધર્માનંદ
કોસંબી અને અ રા વિ પાઠક — ૧—૦—૦

૭ ઉપનિષત્ પાઠાવલી સં અ દ બા કાલેલકર — ૦—૧૨—૦

૮ સમ્મતિતર્કપ્રકરણ. તત્ત્વબોધિની સાથે ભા. ૧
સં પં સુખલાલજી તથા
પં બેચરદાસ જી દોશી — ૧૦—૦—૦

ગૂજરાતી પુસ્તકો

૯ આર્યવિદ્યાવ્યાખ્યાનમાળા — ૨—૦—૦
ચામડાની પૂંઠી — ૨—૮—૦

૧૦ પ્રાચીન સાહિત્ય — અનુવાદકો શ્રીમહાદેવ દેસાઈ
તથા શ્રીનરહરિ દ્વા. પરીખ — ૦—૧૨—૦

૧૧ આર્યોના તહેવારોનો ઇતિહાસ લે જુગ્વેદી. — ૩—૦—૦

૧૨ બુદ્ધલીલાસારસંગ્રહ. લે અ ધર્માનંદ કોસંબી — ૨—૮—૦

૧૩ બૌદ્ધસંઘનો પરિચય, „ — ૨—૦—૦

૧૪ સમાધિમાર્ગ „ — ૦—૮—૦

૧૫ા કાવ્યપ્રકાશ — અનુવાદ ઉ ૧—૬ અનુવાદકો
અ રા વિ પાઠક
અ. ૨ છો પરીખ. — ૧—૮—૦

છપાય છે

વૈદિક પાઠાવલી (અનુવાદ સાથે) સં. અ. ર. છો. પરીખ
પ્રાચીન ગુજરાતી ગદ્ય સંદર્ભ   સં. મુનિ જિનવિજય.
સમ્મતિતર્ક ભા. ૨   સં. પં. સુખલાલજી તથા
પં. બેચરદાસ

તૈયાર છે

પુરાતત્ત્વ પુસ્તક ૧ લું
પુરાતત્ત્વ પુસ્તક ૨ જું
પુરાતત્ત્વ પુસ્તક ૩ જું